सच्ची गीता खण्ड -1

No.	Topic	MU/AV Points	Download
1	श्रीमत क्या है और किसकी है	एक ईश्वर के मत को ही श्रीमत कहेंगे। (मु.8.3.73 पृ.1 आदि)	Download
2	श्रीमत क्या है और किसकी है	बच्चों को हमेशा समझना चाहिए हमको श्रीमत मिलती है। श्रीमत पर चलेंगे फिर रिस्पॉन्सिबल शिव बाबा है। बाप कहते हैं, मैं इन द्वारा मत देता हूँ। समझो, कुछ उल्टा भी हो जाता है, तो रिस्पॉन्सिबल मैं हूँ। मैं इनको सुल्टा कर दूँगा। (मु.6.2.70 पृ.2 अंत)	Download
3	श्रीमत क्या है और किसकी है	ऐसे नहीं, बाप-दादा, माँ को कोई बच्चों की मत पर चलना है। नहीं। बच्चों को श्रीमत पर चलना है। बाप को अपनी मत नहीं देनी है। ऐसे भी कई समझते हैं, मात-पिता अथवा बाप-दादा हमारी मत पर चलें; परंतु यह तो हो नहीं सकता। (मु.9.4.73 पृ.2 आदि)	Download
4	श्रीमत क्या है और किसकी है	बाप तो तुम्हारे कल्याण के लिए ही आए हैं; परंतु बाप के श्रीमत पर चल नहीं सकते। श्रीमत कहे, यहाँ जाओ, तो जावेंगे नहीं। कहेंगे, यहाँ गर्मी है, यहाँ ठण्डी है। कुछ भी बाप की पहचान नहीं है। इनमें कौन हमको कहते हैं यह भी समझते नहीं हैं। यह साधारण रथ ही बुद्धि में आता है। दो बाप बुद्धि में आता ही नहीं। बड़े-2 राजाओं का कितना सबको डर रहता है। उनके आगे जाने में ही थर-2 हो जाते हैं।(मु.20.2.68 पृ.1 अंत)	Download
5	श्रीमत क्या है और किसकी है	कदम पिछाड़ी कदम चलना है। तुम बेहद बाप की बन्नी बनती हो न। फिर वह जैसे कहे करना पड़े। बाबा ने कहा है चिट्ठी लिखो तो भी अंडर में करो- शिवबाबा मार्फत ब्रह्माकुमारीज़।(मु.20.12.73 पृ.3 मध्य)	Download
6	श्रीमत क्या है और किसकी है	मेरे सिवाय और कोई की नहीं सुनो। .....मनुष्य मत न सुनो, एक ही ईश्वर की मत पर चलो। जो ईश्वर कहे वह राइट है। जो मनुष्य कहे वह रॉंग है। (मु.23.3.68 पृ.1 मध्य)	Download
7	श्रीमत क्या है और किसकी है	बाप कहते हैं, सदैव श्रीमत पर चलो। अपनी मत पर चलने से धोखा खावेंगे। सच्ची कमाई होती है सच्चे बाप के मत पर चलने से। (मु.17.1.73 पृ.2 मध्य) मु.15.1.78 पृ.2 मध्यांत,	Download
8	श्रीमत क्या है और किसकी है	बाप का कब सामना नहीं करना चाहिए। बाप का कहा कब भी मना नहीं करना चाहिए। (मु.6.9.69 पृ.1 मध्य)	Download
9	श्रीमत क्या है और किसकी है	कहेंगे- बाबा, जैसे आप चलाओ। बाप भी मत तो इन द्वारा ही देंगे ना; परंतु इनकी मत भी लेते नहीं हैं, फिर भी पुरानी सड़ी हुई मनुष्य मत पर चलते हैं। देखते भी हैं शिवबाबा इस रथ से आकर मत देते हैं, फिर भी अपनी मत पर चलते हैं। जिसको पाई-पैसे की मत (कहें उस) पर चलते हैं। रावण के(की) मत पर चलते-2 इस समय कौड़ी मिसल बन गए हैं। (मु.10.12.68 पृ.2 मध्यादि)	Download

10	श्रीमत क्या है और किसकी है	आसुरी मत पर चलने से मनुष्य नीचे ही गिरते रहेंगे। श्रीमत तो एक ही बाप की है। बाकी सब हैं आसुरी मत देने वाली आसुरी सम्प्रदाय। आसुरी मत देने वाला रावण है। (मु.19.5.73 पृ.2 आदि)	Download
11	श्रीमत क्या है और किसकी है	शिवबाबा आकर तुमको अपना बनाते हैं। कहते हैं- सिर हथेली पर रख {कर} बाप के बने हैं उनके डायरैक्शन पर चलने {के लिए}। बच्चों को उनको मत देने की दरकार नहीं रहती। वह खुद मत देने वाला है। ऐसे नहीं, यह क्यों करते {कहते}? गोद में क्यों लेते? नहीं। यह तो सब बच्चे हैं। शिवबाबा नामी-ग्रामी है। वह जो मत देंगे, जो कुछ करेंगे, राइट्स ही करेंगे। इस (साकार ब्रह्मा) से भी जो कुछ कराते हैं, राइट्स ही कराते हैं; क्योंकि करन-करावनहार है न।(मु.24.5.64 पृ.1 मध्यादि)	Download
12	श्रीमत क्या है और किसकी है	एक के(की) मत पर ही चलने से कल्याण हो सकता है। जिसको तुमने आधा कल्प याद किया, अभी वह तुमको मिला है तो उनको पकड़ लेना चाहिए। इसमें मूँझते क्यों हो? बाबा कहते ड्रामा अनुसार फिर से राज्य-भाग्य देने आया हूँ। मेरी मत पर चलना होगा। बुद्धि से याद करो। (मु.13.4.77 पृ.3 मध्यादि)	Download
13	श्रीमत क्या है और किसकी है	श्रीमत है ही एक परमपिता परमात्मा की। बाकी सभी (की) है आसुरी मत। (मु.2.6.73 पृ.3 मध्य)	Download
14	श्रीमत क्या है और किसकी है	लौकिक सम्बंधियों से कुछ न पढ़ना(पूछना) है, न उनकी मत पर चलना है। एक (की) ही मत पर चलना है। (मु.16.2.68 पृ.1 मध्यादि)	Download
15	श्रीमत क्या है और किसकी है	ब्रह्मा की मत भी मशहूर है। शिवबाबा की श्रीमत भी मशहूर है। तो ब्रह्मा वा शिवबाबा के साथ उन्हों की औलाद की मत मशहूर होनी चाहिए। तुमको शिवबाबा और ब्रह्मा दोनों की मत पर चलना चाहिए। (मु.21.3.73 पृ.1,2)	Download
16	श्रीमत क्या है और किसकी है	अब मैं सम्मुख हूँ। मैं भी ट्रस्टी बन फिर तुमको ट्रस्टी बनाता हूँ। जो कुछ करो पूछ कर करो। मैं तो जीता-जागता हूँ ना। बाबा हर बात में राय देते रहेंगे। (मु.14.3.70 पृ.3 आदि)	Download
17	श्रीमत क्या है और किसकी है	एक के श्रीमत पर चलना है। अपनी मनमत पर चला तो यह मरा। श्रीमत पर चलेंगे तो श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मनुष्य अर्थात् देवता बनेंगे। (मु.28.8.73 पृ.3 मध्यांत)	Download
18	श्रीमत क्या है और किसकी है	इतना वफादार और फरमानबरदार बनना है जो एक सेकेंड भी, एक संकल्प भी फरमान के सिवाय न चले। (अ॰वा॰22.6.71 पृ.114 मध्य)	Download
19	श्रीमत क्या है और किसकी है	भल मुरली बहुत अच्छी चलाते हैं वा चलाती हैं; परंतु देह का अभिमान बहुत है। थोड़ा भी बाबा सावधानी देंगे तो झट टूट पड़ेंगे। नहीं तो गायन है मारो चाहे प्यार करो..। यहाँ बाप राइट बात कहते हैं तो भी गुस्सा चढ़ जाता है। ऐसे-2 बच्चे भी हैं। कोई तो अंदर में बहुत शुक्रिया मानते हैं, कोई अंदर जल मरते हैं। (मु.18.3.70 पृ.3 आदि)	Download

20	श्रीमत क्या है और किसकी है	तुम बेहद के बाप के सम्मुख बैठे हो। श्रीमत पर चलना होता है कदम-2 पर और चलेंगे भी वह जिनका सारा समाचार बाप को मालूम होगा। बच्चों की तो रहनी-करनी आदि का पूरा समाचार हरेक का बाप पास आना चाहिए तो बाप को भी मालूम पड़े और उस रीति फिर समय प्रति समय मत देते रहें। कदम-2 पर मत लेनी पड़े। (मु.29.2.72 पृ.1 मध्यादि)	Download
21	श्रीमत क्या है और किसकी है	जो बिगर कहे काम करे वह देवता, कहने से करे वह मनुष्य, कहने से भी न करे तो उसे गधा कहेंगे। (मु.17.4.73 पृ.2 अंत)	Download
22	श्रीमत क्या है और किसकी है	मुखवंशावली है तो जो बाबा मुख से जो कहे वो मानना पड़े। (मु.8.10.73 पृ.3 मध्यांत)	Download
23	श्रीमत क्या है और किसकी है	माया कोई मुख से मत नहीं देती, एक्ट ऐसी करते हैं। अब बाप मुख से बैठ समझाते हैं। (मु.9.10.73 पृ.2 आदि)	Download
24	श्रीमत क्या है और किसकी है	श्रीमत पर ज़रूर चलना चाहिए। अपनी मत नहीं चलानी है। मित्र-सम्बंधियों को श्रीमत पर चिट्ठी लिखनी है। श्रीमत पर न चलेंगे तो उसका कल्याण ही नहीं करेंगे। बहुत हैं जो छिपाकर चिट्ठियाँ लिखते हैं। बाप शिक्षक बैठे हैं, बताना चाहिए- बाबा, हम ऐसे लिखते हैं। बाबा तुमको ऐसी चिट्ठियाँ लिखना सिखाएँगे जो पढ़ने वाले की रोमाँच खड़े हो जावेंगे। चिट्ठी कैसे लिखनी चाहिए, तुम बच्चों को एक को भी मालूम नहीं। बाबा मना नहीं करते हैं। तोड़ निभाना है, नहीं तो चैरिटी बिगन्स कैसे होगी! (मु.24.4.72 पृ.1 अंत, 2 आदि) मु.25.4.77 पृ.1 अंत, 2 आदि,	Download
25	श्रीमत क्या है और किसकी है	श्रीमत लेने बगैर तो काम न चले। बिगर गाइड अकेला पहुँच न सके। कोई रास्ता जानते ही नहीं तो जा कैसे सकते? गाइड का ज़रूर हाथ चाहिए। (मु.5.8.73 पृ.2 आदि)	Download
26	श्रीमत क्या है और किसकी है	बाप की श्रीमत पर चलना है फिर रिस्पॉन्सिबल वह रहेगा। ब्रह्मा की मत भी गाई हुई है। उल्टी मत देंगे तो भी रिस्पॉन्सिबल यह हो जावेगा। (मु.11.4.73 पृ.3 आदि)	Download
27	श्रीमत क्या है और किसकी है	अब बाप के मत पर तो ज़रूर चलना चाहिए। बाप डायरैक्शन देते हैं फिर कुछ उल्टा भी हो गया तो आपे ही उसको सुल्टा बना देंगे। राय देते हैं तो फिर ज़िम्मेवार वह है। (मु.14.12.71 पृ.3 अंत)	Download
28	श्रीमत क्या है और किसकी है	कदम-2 पर बाप से राय लेनी है। कोई कहते हैं- बाबा, धंधे में झूठ बोलनी पड़ती है। बाप कहते हैं, वह तो धंधे में होता ही है। तुम बाप को याद करते रहो। उसका मतलब यह नहीं कि विकार में जाओ, फिर कहो मैं याद में था। (मु.29.10.76 पृ.3 अंत)	Download
29	श्रीमत क्या है और किसकी है	भल कितना भी कहे हमारा बाप में प्यार है; परंतु ईश्वरीय कायदे के बरखिलाफ बात की तो रावण सम्प्रदाय का ही समझो। (मु.24.2.69 पृ.1 अंत)	Download

30	श्रीमत क्या है और किसकी है	तुम बच्चों को भी कब भी सुनी-सुनाई बात पर विश्वास नहीं करना चाहिए। ....धूतियाँ ही ऐसे-2 खराब काम करती हैं, झूठी बातें बनाकर औरों की भी दिल खराब कर देती हैं। (मु.18.8.68 पृ.3 आदि) मु.18.8.74 पृ.2अंत, 3आदि,	Download
31	श्रीमत क्या है और किसकी है	हमेशा समझो कि शिवबाबा इन द्वारा डायरैक्शन देते हैं। .... अगर ईश्वरीय डायरैक्शन न समझ, मनुष्य का डायरैक्शन समझा तो मूँझ पड़ेंगे। बाबा कहते हैं मेरे डायरैक्शन पर चलने से फिर मैं रिस्पॉन्सिबल हूँ। इन द्वारा जो कुछ होता है उनकी एक्टिविटी का मैं रिस्पॉन्सिबल हूँ। इसको हम राइट कर ही देंगे। तुम सिर्फ हमारे डायरैक्शन पर चलो। (मु.13.1.70 पृ.1 आदि)	Download
32	श्रीमत क्या है और किसकी है	बाप सम्मुख आकर श्रीमत देते हैं। .....यहाँ तो बाप मत देते हैं, जैसे स्कूल में टीचर पढ़ाते हैं। (मु.17.3.73 पृ.3 मध्य)	Download
33	श्रीमत क्या है और किसकी है	अनेक मत हैं ना। अनेक मत से दुर्गति होती है। .....यह तो बहुत अच्छा स्लोगन है- 'मनुष्य, मनुष्य को दुर्गति में ले जाते हैं, एक ईश्वर सभी मनुष्यों को सद्गति देते हैं।' (मु.11.3.69 पृ.1 अंत) मु.21.2.04 पृ.2 आदि,	Download
34	श्रीमत क्या है और किसकी है	इन रत्नों के लिए ही कहा जाता है- एक-2 रत्न लाखों का है। कदम-2 पर पदम देने वाला तो बाप ही है ना। (मु.26.8.68 पृ.3 आदि)	Download
35	श्रीमत क्या है और किसकी है	ज्ञान सागर तो एक ही बाप है। .....ज्ञान जब मेरे से सुनें तब ही ज्ञानी कहा जाए। बाकी सभी हैं भक्त। .....श्रीमत ही श्रेष्ठ है। बाकी वह सभी हैं मनुष्य मत। (मु.23.3.68 पृ.1 अंत) मु.12.3.99 पृ.1 अंत,	Download
36	श्रीमत क्या है और किसकी है	गवर्मेण्ट का कोई भी आर्डर हुआ तो उसमें कोई आनाकानी नहीं। यह मैं कर नहीं सकता हूँ, इसको ही कहा जाता है नाफरमानबरदार। श्रीमत मिलती ही है ऐसे-2 कार्य के लिए तो समझना चाहिए शिवबाबा की श्रेष्ठ मत है। ....उनकी मत कब उल्टी होती ही नहीं है। तो सब शिवबाबा का समझ ही करना है। शिवबाबा है ही सद्गति दाता। कब भी उल्टी मत नहीं देंगे। (मु.3.10.69 पृ.2 आदि) मु.18.10.00 पृ.2 अंत,	Download
37	श्रीमत क्या है और किसकी है	वहाँ तो अनेक मतें मिलती हैं। यहाँ तो एक ही मत मिलती है। वह है वंडरफुल मत। (मु.7.4.69 पृ.1 आदि)	Download
38	श्रीमत क्या है और किसकी है	जो भी डायरैक्शन मिलते हैं, डायरैक्ट बाप द्वारा मिलते हैं। चाहे निमित्त आत्माएँ दादियों द्वारा मिलते हैं, उसको रिगार्ड देना अति आवश्यक है। इसमें न बहाना देना, न अलबेलापन करना। (अ॰वा॰30.3.98 पृ.146 आदि)	Download
39	श्रीमत क्या है और किसकी है	सेन्सिबुल बच्चे जो होंगे उनको कोई भी राय पूछनी होगी तो श्रीमत लेंगे। श्रीमत पर चलने से कब धोखा नहीं खावेंगे। शिवबाबा की ही श्रीमत है। यह कोई दूर थोड़े ही है। (मु.11.12.77 पृ.2 मध्यादि)	Download

40	श्रीमत क्या है और किसकी है	बी॰के॰ की मत मिलती है सो भी जाँच करनी होती है कि यह मत राइट है वा राँग है? तुम बच्चों को राइट और राँग समझ भी अभी मिली है।(मु.27.1.95 पृ.3 मध्य)	Download
41	श्रीमत क्या है और किसकी है	बाप कहते हैं अभी मुझे याद करो और ट्रस्टी (धरोहर का संरक्षक) बनकर श्रीमत पर चलो। हर बात में राय लेते रहो। बच्चों आदि की शादी करानी है, मना थोड़े ही है। हर एक का हिसाब-किताब अलग है। जैसा-2 जो बच्चा होगा उनका हिसाब देख राय दी जाती है। ....पैसा तुम्हारे पास है तो मकान भल बनाओ, मना नहीं है। मकान आदि बनाकर बच्चों की शादी आदि कराकर हिसाब चुक्तू कर फिर आकर तुम बाबा के बनो।(मु.14.9.73 पृ.3 मध्य)	Download
42	श्रीमत क्या है और किसकी है	हम हैं सच्चे-2 मुखवंशावली ब्राह्मण। तो बच्चों को बाप जो मुख से कहे वह मानना पड़े। (मु.15.9.71 पृ.3 आदि) मु.22.10.96 पृ.3 मध्यांत ,	Download
43	श्रीमत क्या है और किसकी है	डायरैक्ट ईश्वर मत देते हैं कि यह करो, रिस्पॉन्सिबल हम हैं। .....हमेशा समझो यह डायरैक्शन ईश्वर हमको देते हैं। (मु.13.1.70 पृ.1 अंत)	Download
44	श्रीमत से लाभ-हानि	सिवाय श्रीमत के कोई भी श्रेष्ठाचारी बन नहीं सकता। (मु.31.10.73 पृ.3 मध्य)	Download
45	श्रीमत से लाभ-हानि	बाप तुम्हारी सभी कामनाएँ बिगर माँगे पूरी कर देते हैं, अगर बाप की आज्ञा पर चलते हैं तो। अगर बाप की आज्ञा का उल्लंघन कर उल्टा रास्ता लिया तो हो सकता है स्वर्ग में जाने के बदली नर्क में गिर जाये।(मु.2.1.71 पृ.1 मध्य)	Download
46	श्रीमत से लाभ-हानि	बेहद की बाप की श्रीमत पर न चलेंगे तो जानवरों मिसल मर पड़ेंगे। (मु.18.2.69 पृ.2 मध्यादि)	Download
47	श्रीमत से लाभ-हानि	श्रीमत को(का) उल्लंघन किया तो लम्पट, वैश्या बन जावेंगे। पता भी नहीं पड़ेगा। बाप तो बच्चों (को) सावधान करते हैं। श्रीमत को(का) उल्लंघन न करना है। आसुरी मत पर चलने से ही तुम्हारी यह बुरी गति हुई है। (मु.2.1.69 पृ.1 मध्यांत)	Download
48	श्रीमत से लाभ-हानि	बाबा कहे यह काम न करो, मानेंगे नहीं। ज़रूर उल्टा काम करके दिखावेंगे। राजधानी स्थापन हो रही है, उसमें तो हर प्रकार की(के) चाहिए ना। (मु.10.12.68 पृ.3 मध्यांत)	Download
49	श्रीमत से लाभ-हानि	बहुत गोप हैं आपस में कमिटियाँ आदि बनाते हैं। जो कुछ करते हैं श्रीमत के आधार बिगर करते हैं, तो डिससर्विस करते हैं। बिगर श्रीमत करेंगे तो गिरते ही जावेंगे। बाबा ने शुरू में भी कमिटी बनाई थी तो माताओं की ही बनाई थी। (मु.2.1.69 पृ.1 अंत)	Download
50	श्रीमत से लाभ-हानि	जब किसी न किसी ईश्वरीय मर्यादा वा श्रीमत के डायरैक्शन को संकल्प में वा वाणी में वा कर्म में उल्लंघन करते हो तब कन्फ़्यूज़ होते हो। (अ॰वा॰14.1.84 पृ.101 मध्य)	Download

51	श्रीमत से लाभ-हानि	मेहनत तब करनी पड़ती है जब मर्यादाओं की लकीर से संकल्प, बोल वा कर्म से बाहर निकल आते हैं। मर्यादाएँ हर कदम के लिए बाप-दादा द्वारा मिली हुई हैं, उसी प्रमाण कदम उठाने से स्वतः ही मर्यादा पुरुषोत्तम बन जाते हैं। (अ॰वा॰21.4.83 पृ.156 मध्य)	Download
52	श्रीमत से लाभ-हानि	श्रीमत पर चलने वाले ही समझदार बनते हैं। वह फिर छिपे नहीं रह सकते। वह सदैव श्रेष्ठाचारी ही काम करेंगे।(मु.9.8.71 पृ.3 मध्यादि)	Download
53	श्रीमत से लाभ-हानि	अपना हठ करते हो। जैसे बाल हठ होता है ना। बाल-हठ करके अपनी मनमत पर चल पड़ते हो; इसीलिए अपने आपको परेशान करते हो। यह बाल-हठ नहीं करो। श्रीमत में अगर मनमत मिक्स करते हो तो ऐसे मिक्स करने वालों को सज़ा मिलती है। सज़ा बाप नहीं देता; लेकिन स्वयं, स्वयं को सज़ा के भागी बना देते हैं। खुशी, शक्ति गायब हो जाना ही सज़ा है ना।(अ॰वा॰3.5.77 पृ.123 मध्य)	Download
54	श्रीमत से लाभ-हानि	अगर श्रीमत पर कदम होगा तो कभी भी अपना मन असंतुष्ट नहीं होगा। मन में किसी प्रकार की हलचल नहीं होगी। स्वतः श्रीमत पर चलने से नैचुरल खुशी रहेगी। .....मनमत पर चलने वाले के मन में हलचल होगी। श्रीमत पर चलने वाला सदा हल्का और खुश होगा। (अ॰वा॰29.5.77 पृ.194 आदि)	Download
55	श्रीमत से लाभ-हानि	कदम-2 श्रीमत पर चलना ज़रूरी है। आपस में भी बहुत मीठा रहना है, नहीं तो बापदादा का नाम बदनाम करेंगे। (मु.9.2.73 पृ.2 अंत)	Download
56	श्रीमत से लाभ-हानि	श्रीमत पर चलने से सदा सलामत रहेंगे। सदा सलामत का अर्थ भी बड़ा भारी है। तुमको चोट नहीं लगेगी, कोई तकलीफ नहीं होगी- इतना तुमको सदा सलामत बनाते हैं। निरोगी काया रहेगी। (मु.23.5.73 पृ.3 मध्यांत)	Download
57	श्रीमत से लाभ-हानि	और सभी की मत है कुमत, कलियुगी आसुरी मत। उनसे कुमत ही बनेंगे। अब मैं तुमको सुमत बनाता हूँ। और कोई की भी मत पर न चलो। मैं श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ हूँ, ज़रूर ऊँच बनाऊँगा। तो वह श्रीमत पकड़नी चाहिए। और कोई की मत ली तो धोखा खाया। (मु.2.4.73 पृ.2 अंत, 3 आदि)	Download
58	श्रीमत से लाभ-हानि	जो बाबा बोले वह करते चलो, फिर बाबा जाने, बाबा का काम जाने। जैसे बाबा कहे वैसे चलो तो उसमें कल्याण भरा हुआ है। बाबा कहे ऐसे चलो, ऐसे रहो- जी हाज़िर, ऐसे क्यों? नहीं, जी हाज़िर। समझा- जी हज़ूर वा जी हाज़िर। तो सदा उड़ती कला में जाते रहेंगे।(अ॰वा॰12.10.81 पृ.40 अंत, 41 आदि)	Download

59	श्रीमत से लाभ-हानि	बड़ा बाबा जो कहे वह मानना चाहिए ना। ..... उनकी बात तो आँख बंद कर माननी चाहिए; परंतु ऐसे निश्चय बुद्धि हैं नहीं। भल उसमें नुकसान हो वा फायदा हो, मान लेना चाहिए। भल नुकसान भी हो जाय फिर भी बाबा कहते हैं ना हमेशा ऐसे समझो शिवबाबा कहते हैं, ब्रह्मा के लिए मत समझो। रिस्पॉन्सिबल शिवबाबा हो गया। उनका यह रथ है। वह आपे ही ठीक कर देंगे। कहेंगे मैं बैठा हूँ। हमेशा समझो शिवबाबा ही कहते हैं। (मु.4.4.71 पृ.3 मध्यादि)	Download
60	श्रीमत से लाभ-हानि	जो बाप के फरमान पर चलेंगे उन्हों की ही सद्गति होगी। (मु.12.5.77 पृ.2 मध्य)	Download
61	श्रीमत से लाभ-हानि	अब मेरी श्रीमत पर चलो। अपनी आसुरी मत बंद कर दो। अपनी मत पर चला गोया वह दुर्गति को पाने का पुरुषार्थ करते हैं। आखिर अधोगति को पा लेते हैं। (मु.25.1.73 पृ.2 मध्य)	Download
62	श्रीमत से लाभ-हानि	जो श्रीमत पर नहीं चलते उनके लिए समझना चाहिए यह तो अजामिल में भी (अजामिलों से भी ज़्यादा) अजामिल हैं। (मु.16.4.73 पृ.1 मध्यादि)	Download
63	श्रीमत से लाभ-हानि	ईश्वर तो मालिक है न। वह श्रीमत देते हैं कि यह करो। अगर वह नहीं करते तो नास्तिक ठहरे न। (मु.18.12.73 पृ.3 आदि)	Download
64	श्रीमत से लाभ-हानि	अब मेरी मत पर एक्युरेट चलो। मम्मा-बाबा चलते हैं; इसलिए पहली बादशाही उन्हों को ही मिलती है। मु.5.3.97 पृ.2 अंत ,	Download
65	श्रीमत से लाभ-हानि	श्रीमत देने वाला बाबा साजन बैठा है ना। ....कदम-2 श्रीमत पर न चले तो रोला पड़ जावेगा। बाबा कोई दूर थोड़े ही है। सम्मुख आकर पूछना चाहिए। (मु.3.1.78 पृ.2 अंत)	Download
66	श्रीमत से लाभ-हानि	दूसरे की मत (पर) चला तो यह मरा। बाबा को लिखते हैं- बाबा, माया को कहो हम पर क्षमा करे। बाबा कहते- नहीं, अभी तो माया को हम आर्डर करते हैं कि खूब तूफान मचाओ। दुःख की, विकर्मों की एकदम पहाड़ गिरा दो। अच्छी तरह नाक से फथकाओ। (मु.7.5.73 पृ.3,4) मु.11.4.03 पृ.4 आदि,	Download
67	श्रीमत से लाभ-हानि	चंडिकाएँ भी हैं ना जो बाप की श्रीमत पर नहीं चलते हैं। बाप के बच्चे आज्ञाकारी नहीं होते हैं तो उनको चंडाल कह देते हैं। (मु.13.2.68 पृ.2 मध्य)	Download
68	श्रीमत से लाभ-हानि	जो बच्चा हजूर की हर श्रीमत पर हाज़िर हजूर कर चलता है उसके आगे सर्व शक्तियाँ भी हजूर हाज़िर करती हैं। (अ॰वा॰2.11.04 पृ.19 अंत)	Download
69	श्रीमत से लाभ-हानि	बाप के फरमान पर न चलेंगे तो बड़ा धक्का आ जावेगा। बाबा खुद कहते हैं अगर मेरी आज्ञा न मानेंगे, हमारे बच्चे बन भारत को पावन बनाने मदद करने बदली विघ्न डालेंगे तो फिर सज़ा बहुत कड़ी मिलेगी। मंज़िल बड़ी भारी है। (मु.23.9.71 पृ.3 आदि)	Download

70	श्रीमत से लाभ-हानि	कहते हैं अगर तुम मेरी मत पर चलेंगे तो मैं तुमको स्वर्ग का मालिक बनाऊँगा। कल्प-2 तुम मेरी श्रीमत से ऐसे श्रेष्ठ बनते हो। आधा कल्प बाद जब मेरी मत पूरी हो आसुरी मत होती है तो तुम कंगाल, कौड़ी तुल्य बन पड़ते हो। (मु.7.4.73 पृ.4 आदि)	Download
71	त्रिमूर्ति	ब्रह्मा वा विष्णु वा शिव तो विनाश नहीं करेंगे। शंकर द्वारा विनाश गाया हुआ है। इसलिए त्रिमूर्ति का चित्र है मुख्य। (मु.26.11.72 पृ.1 अंत)	Download
72	त्रिमूर्ति	ज्ञानदाता, सर्व की सद्गति दाता त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव ही है। ब्र°वि°शं° तीनों का जन्म इकट्ठा है। सिर्फ शिवजयंती नहीं है; परंतु त्रिमूर्ति शिवजयंती। (मु.27.9.75 पृ.3 आदि)	Download
73	त्रिमूर्ति	बाबा कितना सहज करके समझाते हैं, सिर्फ त्रिमूर्ति चित्र के सामने जाकर बैठो तो बुद्धि में सारा चक्र आ जावेगा। यह शिवबाबा है, यह ब्रह्मा है। (मु.9.9.77 पृ.3 आदि)	Download
74	त्रिमूर्ति	त्रिमूर्ति दिखाते हैं; परंतु शिवबाबा को उड़ा दिया है। फिर कहते ब्रह्मा को तो 3 मुख होते हैं। यह एक मुख वाला फिर कौन है? (मु.12.4.72 पृ.2 अंत)	Download
75	त्रिमूर्ति	बच्चे, तुम त्रिमूर्ति शिवजयंती अक्षर लिखते हो; परंतु इस समय 3 मूर्तियाँ तो हैं नहीं। तुम कहेंगे शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा सृष्टि रचते (हैं) तो ब्रह्मा ज़रूर साकार में चाहिए ना। बाकी विष्णु और शंकर इस समय कहाँ हैं जो तुम त्रिमूर्ति कहते हो? यह बहुत समझने की बातें हैं। त्रिमूर्ति का अर्थ ही ब्र°वि°शं° है। त्रिमूर्ति ब्र°वि°शं° के राज़ को तुम ही जानते हो। (मु.18.2.76 पृ.1 अंत)	Download
76	त्रिमूर्ति	यह त्रिमूर्ति जो दिखाया जाता है, उसमें वास्तव में होना चाहिए ब्र°वि° और शिव, न कि शंकर; परंतु बाजू में शिव को कैसे रखें ? तो फिर शंकर को रख दिया है और शिव को ऊपर में रखा है। इससे शोभा भी अच्छी होती है। सिर्फ दो से शोभा न हो। नहीं तो वास्तव में शंकर का कोई पार्ट है नहीं। (मु.16.4.68 पृ.1 मध्यांत) मु.7.5.69 पृ.1 मध्य,	Download
77	त्रिमूर्ति	कहते भी हैं त्रिमूर्ति ब्रह्मा। त्रिमूर्ति शंकर वा त्रिमूर्ति विष्णु नहीं कहेंगे। देव देव महादेव तो शंकर को कहते फिर त्रिमूर्ति ब्रह्मा क्यों कहते? इनसे प्रजा रचते हैं तो यह उनकी बन्नी बनती है। शंकर वा विष्णु बन्नी नहीं बनते। यह बहुत वंडरफुल बातें समझने की हैं।(मु.11.1.73 पृ.3 मध्य)	Download
78	त्रिमूर्ति	त्रिमूर्ति भी दिखाते हैं। सिर्फ शिव को उड़ा दिया है, उनका विनाश कर दिया है। ठिक्कर-भित्तर में ठोक उनका(उनकी) लाश गुम कर दिया है। वह है तो आत्मा ही खाती भी है, वह ज्ञान का सागर भी है। (मु.10.9.73 पृ.1 मध्य)	Download
79	त्रिमूर्ति	ब्रह्मा द्वारा वाइसलेस वर्ल्ड देवताओं की स्थापना हो रही है। शंकर द्वारा विनाश भी होने वाला है फिर वैष्णो राज्य होगा।(मु.22.1.78 पृ.2 मध्यादि)	Download

80	त्रिमूर्ति	प्रदर्शनी में पहले-2 त्रिमूर्ति पर ही सारा समझाना है। यह तुम्हारा बाबा है। वह डाडा है। (मु.31.10.71 पृ.2 मध्य)	Download
81	त्रिमूर्ति	उन्होंने तो त्रिमूर्ति से शिव को निकाल खण्डन कर दिया है। जैसे चित्र खण्डन करने वाले भी होते हैं ना। एक मुस्लिम राजा था जो देवताओं के चित्र एकदम तोड़ डालता था। अब तुम बच्चे समझते हो इन त्रिमूर्ति के चित्र में कितना राज़ है। (मु.17.11.76 पृ.1 मध्यादि)	Download
82	त्रिमूर्ति	यह ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी अपना पार्ट बजाकर फिर वापस चले जावेंगे।(मु.22.5.71 पृ.2 मध्यादि)	Download
83	त्रिमूर्ति	भारत में त्रिमूर्ति का चित्र भी बनाते हैं; परंतु उससे शिव का चित्र गुम कर दिया है। जैसे मनुष्यों की सिर काटी जाती है वैसे त्रिमूर्ति से शिव सिर काट दिया है। (मु.26.6.71 पृ.2 अंत)	Download
84	त्रिमूर्ति	जैसे बाप को भी तीन मूर्तियों द्वारा कार्य कराना पड़ता है; इसलिए त्रिमूर्ति का विशेष गायन और पूजन है। त्रिमूर्ति शिव कहते हो। एक बाप के तीन विशेष कार्यकर्ता हैं जिन द्वारा विश्व का कार्य कराते हैं। (अ॰वा॰4.1.80 पृ.173 अंत)	Download
85	त्रिमूर्ति	त्रिमूर्ति शिव के चित्र में सारी नॉलेज है। सिर्फ त्रिमूर्ति के चित्र में नॉलेज देने वाले (शिव) का चित्र है नहीं। नॉलेज लेने वाले (ब्रह्मा) का चित्र है। (मु.23.1.70 पृ.2 मध्यादि)	Download
86	त्रिमूर्ति	अभी शिवजयंती आती है, तुमको त्रिमूर्ति शिव का चित्र निकालना चाहिए। त्रिमूर्ति ब्र॰वि॰शं॰ का एक्युरेट क्यों न निकालें। (मु.19.1.75 पृ.3 मध्यादि)	Download
87	त्रिमूर्ति	शंकर को भी प्रजापिता नहीं कहेंगे। शंकर का तो एक बार पार्ट है। (मु.9.9.77 पृ.2 मध्यांत)	Download
88	त्रिमूर्ति	त्रिमूर्ति की महिमा को कोई जान नहीं सकते हैं।.... जो अनन्य बच्चे हैं वह समझाते हैं हमारी सब मनोकामना पूरी हो रही है। (रात्रि मु.10.3.92 पृ.3 मध्य)	Download
89	त्रिमूर्ति	उन्होंने तो त्रिमूर्ति से शिव को निकाल खण्डन कर दिया है। .....अब तुम बच्चे समझते हो इन त्रिमूर्ति के चित्र में कितना राज़ है। (मु.17.11.76 पृ.1 मध्यादि) मु.20.11.96 पृ.1 मध्य,	Download
90	त्रिमूर्ति	शिवबाबा सभी को बैठ समझते हैं। न समझने कारण त्रिमूर्ति में शिव रखते ही नहीं हैं, ब्रह्मा को दिखाते हैं, जिसको प्र॰ ब्रह्मा कहते हैं।(मु.13.10.68 पृ.1 अंत) मु.18.9.04 पृ.2 आदि,	Download
91	त्रिमूर्ति	बाप जब आते हैं तो ब्र॰वि॰शं॰ भी ज़रूर चाहिए। कहते हैं त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। अब तीनों द्वारा (एक साथ) तो नहीं बोलेंगे ना। (मु.26.2.67 पृ.1 आदि)	Download
92	त्रिमूर्ति	उनकी शिवजयंती मनाते हैं। वास्तव में शिव के साथ त्रिमूर्ति भी होना चाहिए। त्रिमूर्ति शिवजयंती मनाते हैं। सिर्फ शिवजयंती मनाने से कोई बात सिद्ध न होगी। (मु.19.1.75 पृ.2,3)	Download

93	त्रिमूर्ति	नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश करने वाला बाप के सिवाय और कोई हो नहीं सकता है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना- यह भी लिखते हैं। यहाँ के लिए ही है। (मु.9.10.70 पृ.3 मध्य)	Download
94	त्रिमूर्ति	परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना, शंकर द्वारा पुरानी दुनिया का विनाश कराते हैं। त्रिमूर्ति का अर्थ ही यह है- ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना।(मु.15.1.67 पृ.1 अंत) मु.17.1.90 पृ.1 अंत,	Download
95	त्रिमूर्ति	ब्र°वि°शं° को भी याद करते हैं, वह तो इन आँखों से देखने में आते हैं। (मु.19.8.73 पृ.1 मध्य)	Download
96	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	शंकर कहते मेरा विनाश का पार्ट है। तत्वों को भी प्रेरणा करता हूँ- तुम अर्थक्वेक करो, मूसलाधार बरसात करो। यह विनाश का डायरैक्शन शंकर द्वारा मिलता है, स्थापना का डायरैक्शन ब्रह्मा द्वारा। (मु.7.4.73 पृ.3 अंत)	Download
97	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	कुमारका बताओ शिवबाबा को कितने बच्चे हैं? कोई कहते हैं 500 करोड़, कोई कहते एक बच्चा ब्रह्मा है। क्या शंकर बच्चा नहीं है? तब शंकर किसका बच्चा है? यह भी गुंजाइश है। मैं कहता हूँ शिवबाबा को दो बच्चे हैं; क्योंकि ब्रह्मा वह तो विष्णु बन जाते हैं। बाकी रहा शंकर तो दो हुए ना। तुम शंकर को क्यों छोड़ देती हो? भल त्रिमूर्ति कहते हैं; परंतु ऑक्युपेशन तो अलग-2 है ना। (मु.14.5.72 पृ.2 अंत)	Download
98	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	जो-2 मैंने काम किए हैं वह नाम रख दिए हैं। कहते हैं हर-2 महादेव। सभी के दुःख काटने वाला। वह भी मैं ही हूँ। शंकर नहीं है। शंकर भी मेरी प्रेरणा से सर्विस पर हाज़िर है। ब्रह्मा भी सर्विस पर हाज़िर है। (मु.4.11.73 पृ.2 मध्य)	Download
99	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	शंकर क्या करते हैं? उनका पार्ट ऐसा वण्डरफुल है जो तुम विश्वास कर न सको। (मु.14.5.70 पृ.2 आदि)	Download
100	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	शंकर न होता तो हमको (शिवबाबा को) शंकर के साथ मिलाते भी नहीं। चित्र बनाया है तो मुझे भी शंकर साथ मिला दिया है। शिव-शंकर महादेव कह देते तो महादेव बड़ा हो जाता। (मु.26.6.70 पृ.2 अंत)	Download
101	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	वास्तव में ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को देव-2 महादेव कहते हैं; क्योंकि शिव के बाद है शंकर। ब्रह्मा और विष्णु पुनर्जन्म में आते हैं, बाकी शंकर नहीं आता। जैसे शिवबाबा सूक्ष्म है वैसे शंकर भी सूक्ष्म है। (मु.29.9.77 पृ.2 अंत)	Download
102	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	बाप ने समझाया है शंकर का इतना पार्ट नहीं है। वह नेक्स्ट टू शिव है। (मु.8.3.76 पृ.2 मध्य)	Download
103	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	विष्णु को, शंकर को भी देह का अहंकार हो सकता है। (मु.7.4.72 पृ.1 मध्य)	Download

104	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	तुम्हारा मार्शल है ही शंकर। उनका काम है ही विनाश कराना। हथियार-पवार तो न तुम चलाते हो, न वह चलाते हैं। शंकर का काम है विनाश कराना। शिवबाबा का काम है स्थापना का कार्य कराना। शिव और शंकर तो एक नहीं हैं। वह शंकर तो शिवबाबा का बच्चा है। (मु.20.12.73 पृ.2 मध्य)	Download
105	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	मुख्य शिवबाबा है। फिर ब्र॰वि॰शं॰। इनकी डिनायस्टी 84 जन्म भोगती है। शंकर है विनाश के लिए तो वह हुआ नेक्स्ट टू शिव। (मु.21.2.71 पृ.4 अंत)	Download
106	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	ऐसी कोई बात है नहीं शंकर-पार्वती है ही नहीं। यह तो स्थूलवतन है। (मु.8.5.70 पृ.2 आदि)	Download
107	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	बाप तो एवर पूज्य है। वह कब पुजारी बनते नहीं हैं। अच्छा, फिर सेकंड नम्बर में कहेंगे शंकर भी एवर पूज्य है। वह कब पुजारी बनते नहीं। उनका पार्ट यहाँ है नहीं। (मु.28.8.71 पृ.2 मध्य)	Download
108	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	ब्रह्मा के संकल्प से सृष्टि रची और ब्रह्मा के संकल्प से ही गेट खुलेगा। अब शंकर कौन हुआ? यह भी गुह्य रहस्य है। जब ब्रह्मा ही विष्णु है तो शंकर कौन? इस पर भी रूह-रूहान करना। (अ॰वा॰1.1.79 पृ.166 आदि)	Download
109	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	शंकर के लिए कहते हैं ना एक सेकेंड में आँख खोली और विनाश। यह संहारकारीमूर्त के कर्तव्य की निशानी है। (अ॰वा॰4.11.76 पृ.1 अंत)	Download
110	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	शंकर का वास्तव में इतना पार्ट है नहीं। विनाश तो होना ही है। बाप विनाश उनसे कराते हैं जिस पर कोई पाप न लगे। अगर कहें भगवान विनाश करता है तो उस (पर) दोश पड़ जाए। (मु.29.4.70 पृ.1 मध्य) मु.11.5.90,	Download
111	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	बहुत मनुष्य पूछते हैं शंकर का क्या पार्ट है? प्रेरणा से कैसे विनाश कराते हैं? बोलो, यह तो गाया हुआ है। चित्र भी है। तो इस पर समझाया जाता है। वास्तव में तुम्हारा कोई इन बातों से कनेक्शन है नहीं। (मु.20.3.73 पृ.3 आदि)	Download
112	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	पहले तो समझो हमको बाप से वर्सा लेना है। मन्मनाभव हो जाओ। शंकर क्या करता, फलाना क्या करता, इनमें जाने की दरकार क्या है? तुम सिर्फ दो अक्षर पकड़ लो- बाप और वर्से को याद करो तो राजधानी मिल जावेगी। बाकी शंकर को गले में साँप क्यों दिया है, योग में ऐसे क्यों बैठता, इन बातों से कुछ कनेक्शन नहीं। मुख्य बात है ही बाप को याद करना। बाकी ऐसे-2 तो ढेर प्रश्न उठेंगे। इनसे तुम्हारा क्या फायदा? तुम सभी बातें भूल जाओ। .... उल्टे-सुल्टे प्रश्न कोई पूछे तो बोलो पहले नॉलेज तो समझो, अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाकी सभी बातें छोड़ दो। आगे चल समझते जावेंगे। (मु.20.3.73 पृ.3 आदि) मु.14.3.88 पृ.2 अंत, 3 आदि,	Download

113	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	शंकर द्वारा विनाश होना है। वह भी अपना कर्तव्य कर रहे हैं। ज़रूर शंकर भी है तब तो साक्षात्कार होता है। (मु.26.2.73 पृ.1 अंत)	Download
114	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	शंकर देवता है। इन्होंने फिर शिव-शंकर इकट्ठे कर दिए हैं। अभी बाप कहते हैं हमने इसमें प्रवेश किया है तो तुम कहते हो बाप-दादा। वो फिर कहते हैं शिवशंकर। शंकर-शिव नहीं कहते, शिव-शंकर कहते हैं। (मु.11.2.67 पृ.2 आदि) मु.11.2.75,	Download
115	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	शंकर से अगर पूछेंगे, पूछ नहीं सकते; परंतु समझो करके सूक्ष्मवतन में पूछो तो कहेंगे यह सूक्ष्म शरीर हमारा है। शिवबाबा कहते हैं यह हमारा नहीं है, यह हमने उधार लिया है। (मु.16.4.71 पृ.1 आदि)	Download
116	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	गॉड इज़ वन, उनका बच्चा भी वन। कहा जाता है त्रिमूर्ति ब्रह्मा। देवी-देवताओं में बड़ा कौन? महादेव शंकर को कहते हैं। (मु.10.2.72 पृ.4 मध्यांत)	Download
117	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	शंकर का भी समझाया है कि उनका कोई पार्ट नहीं है। इसका मतलब यह नहीं है कि शंकर को उड़ा देना है। .....एक तरफ तो गाते भी हैं देव-2 महादेव..। महादेव तो शंकर को कहा जाता है। महादेव तो बड़ा हो गया ना। (मु.24.9.69 पृ.2 आदि)	Download
118	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	ऊँच ते ऊँच भगवान का भी विचित्र पार्ट है। ब्रह्मा और विष्णु का विचित्र पार्ट नहीं कहेंगे। दोनों ही 84 का चक्र लगाते हैं, बाकी शंकर का इतना पार्ट है नहीं।(मु.26.8.69 पृ.1 मध्यादि)	Download
119	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	वह तो सिर्फ 3 हैं। उनमें भी वास्तव में ब्रह्मा तो स्थूल ही है, विष्णु भी स्थूल है। सिर्फ शंकर ही सूक्ष्म है। (मु.10.12.83 पृ.1 आदि)	Download
120	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	अब शंकर तो है सूक्ष्मवतनवासी। सूक्ष्मवतन में बैल आदि तो होते ही नहीं। बैल अर्थात् मेल। भागीरथ मेल को दिखाते हैं। (मु.22.10.71 पृ.3 मध्यांत)	Download
121	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	वह तो भोला भंडारी शिव-शंकर कह देते हैं। शंकर को भोलानाथ समझ लेते हैं। वास्तव में भोलानाथ शंकर तो लगता नहीं। (मु.20.3.69 पृ.1,2) मु.11.2.99 पृ.2 मध्य,	Download
122	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	शंकर तो जन्म-मरण से न्यारा है। (मु.14.5.70 पृ.2 आदि)	Download
123	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	युगल तो वास्तव में सिर्फ विष्णु ही है। .....शंकर भी युगल नहीं है। इस कारण ....शिव-शंकर कह देते। अब शंकर क्या करते हैं? विनाश तो होना ही है एटम बॉम्ब से। बाप कैसे बैठ बच्चों का मौत करावेगा! यह तो पाप हो जाए। (मु.21.10.75 पृ.3 मध्यादि) मु.17.11.00 पृ.3 अंत,	Download
124	शंकर यहाँ ही है (अव्यक्त स्टेज में व्यक्त पार्टधारी)	ब्रह्मा द्वारा स्थापना नई दुनिया की, शंकर द्वारा .....अनेक धर्मों का विनाश कराते हैं। (मु.4.6.66 पृ.1 मध्य)	Download

125	बाप की प्रत्यक्षता	सारी विश्व की आत्माओं को चाहे स्वप्न में, चाहे एक सेकेण्ड की झलक में, चाहे प्रत्यक्षता के चारों ओर के आवाज़ द्वारा यह ज़रूर साक्षात्कार होना है कि इस ड्रामा के हीरो पार्टधारी स्टेज पर प्रत्यक्ष हो गए, धरती के सितारे धरती पर प्रत्यक्ष हो गए। सब अपने-2 ईष्टदेव को प्राप्त कर बहुत खुश होंगे। सहारा मिलेगा। (अ॰वा॰20.2.86 पृ.200 मध्य)	Download
126	बाप की प्रत्यक्षता	लास्ट बॉम्ब अर्थात् परमात्म बॉम्ब है बाप की प्रत्यक्षता का। जो देखे, जो सम्पर्क में आ करके सुने उन्हीं द्वारा यह आवाज़ निकले कि बाप आ गए हैं। डायरैक्ट ऑलमाइटी अथॉरिटी का कर्तव्य चल रहा है। .... सिखाने वाला डायरैक्ट ऑलमाइटी है, ज्ञान सूर्य साकार सृष्टि पर उदय हुआ है यह अभी गुप्त है। ..... इस अंतिम बॉम्ब द्वारा..... हरेक के बीच बाप प्रत्यक्ष होगा। विश्व में विश्वपिता स्पष्ट दिखाई देगा। (अ॰वा॰28.12.78 पृ.159 आदि, 161 मध्य)	Download
127	बाप की प्रत्यक्षता	प्रत्यक्षता का पर्दा खुलने का भी आरम्भ हो गया है। चारों ओर की आत्माओं में अभी इच्छा उत्पन्न हो रही है कि नज़दीक जाकर देखें। सुनी-सुनाई बातें अभी देखने के परिवर्तन में बदल रही हैं। .... अभी तक बाप और कुछ निमित्त बनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं के शक्तिशाली प्रभाव का परिणाम यह दिखाई दे रहा है। अगर मेजोरिटी इस विधि से सिद्धि को प्राप्त करें तो बहुत जल्दी सर्व ब्राह्मण सिद्धि-स्वरूप में प्रत्यक्ष हो जाएँगे। (अ॰वा॰2.11.87 पृ.113 मध्य)	Download
128	बाप की प्रत्यक्षता	डायमण्ड जुबली अर्थात् प्रत्यक्षता का नारा बुलन्द करना। तो इस वर्ष से प्रत्यक्षता का पर्दा अभी खुलने आरम्भ हुआ है। एक तरफ विदेश द्वारा भारत में प्रत्यक्षता हुई, दूसरे तरफ निमित्त महामण्डलेश्वरों द्वारा कार्य की श्रेष्ठता की सफलता। विदेश में यू॰एन॰ वाले निमित्त बने, वे भी विशेष नामीग्रामी और भारत में भी नामीग्रामी धर्मसत्ता है। तो धर्मसत्ता वालों द्वारा धर्म-आत्माओं की प्रत्यक्षता हो- यह है प्रत्यक्षता का पर्दा खुलना आरम्भ होना। अजुन खुलना आरम्भ हुआ है। ..... विदेश के बच्चे जो कार्य के निमित्त बने, यह भी विशेष कार्य रहा। प्रत्यक्षता के विशेष कार्य में इस कार्य के कारण निमित्त बन गए। तो बापदादा विदेश के बच्चों को इस अंतिम प्रत्यक्षता के हीरो पार्ट में निमित्त बनने के सेवा की भी विशेष मुबारक दे रहे हैं।(अ॰वा॰1.10.87 पृ.63अंत,64आदि)	Download
129	बाप की प्रत्यक्षता	यह ईश्वरीय कार्य चल रहा है, कोई साधारण बात नहीं है। यह अनुभव यहाँ आकर करना चाहिए। .... सभी प्रकार के साधनों से बाप के प्रैक्टिकल पार्ट की प्रत्यक्षता अवतरण भूमि पर तो प्रत्यक्ष मिलनी चाहिए। (अ॰वा॰17.5.72 पृ.280 अंत)	Download

130	बाप की प्रत्यक्षता	बापदादा कब प्रत्यक्ष दिखाई देते, कब पर्दे के अंदर छिपा हुआ दिखाई देते; लेकिन बापदादा सदा बच्चों के आगे प्रत्यक्ष हैं। .... बाबा चला गया यह कह अविनाशी सम्बंधों को विनाशी क्यों बनाते हो? सिर्फ पार्ट परिवर्तन हुआ है। जैसे आप लोग भी सेवा स्थान चेंज करते हो ना। तो ब्रह्मा बाप ने भी सेवा स्थान चेंज किया है। रूप वही, सेवा वही है। हज़ार भुजा वाले ब्रह्मा के रूप का वर्तमान समय पार्ट चल रहा है तब तो साकार सृष्टि में इस रूप का गायन और यादगार है। भुजाएँ बाप के बिना कर्तव्य नहीं कर सकतीं। भुजाएँ बाप को प्रत्यक्ष करा रही हैं। कराने वाला है तब तो कर रहे हैं।(अ॰वा॰18.1.78 पृ.34 अंत, 35 आदि)	Download
131	बाप की प्रत्यक्षता	इस वर्ष में कोई नई बात ज़रूर होनी है। सन् 76 में जिसका प्लैन बनाया है; लेकिन निमित्त बनना पड़ता है; परंतु होना तो ड्रामानुसार है; लेकिन जो निमित्त बनता है उसका सारे ब्राह्मण कुल में नाम बाला होता है। यह भी प्राइज़ है। (अ॰वा॰31.10.75 पृ.255 अंत)	Download
132	बाप की प्रत्यक्षता	ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में अंत तक नूँधा हुआ है। जब तक स्थापना का कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है तब तक निमित्त बनी हुई आत्मा (प्रजापिता ब्रह्मा) का पार्ट समाप्त नहीं होना है। वह तब तक दूसरा पार्ट नहीं बजा सकते। जगतपिता का नए जगत की रचना सम्पन्न करने का पार्ट ड्रामा में नूँधा हुआ है। मनुष्य सृष्टि की सर्व वंशावली रचने का सिर्फ ब्रह्मा के लिए ही गायन है। ग्रेट-2 ग्रैंड फादर इसीलिए गाया हुआ है। सिर्फ स्थिति, स्थान और गति (स्पीड) का परिवर्तन हुआ है; लेकिन पार्ट ब्रह्मा का अभी तक वही है। (अ॰वा॰30.6.74 पृ.83 मध्य)	Download
133	बाप की प्रत्यक्षता	जैसे आदि में स्थापना के कार्य प्रति साकार रूप में निमित्त एक ही बने, अल्फ की तार पहले एक (लेखराज ब्रह्मा) को आई, सेवा अर्थ सर्वस्व त्यागमूर्त एक अकेले बने..... अब अंत में भी बच्चों को ऊँचा उठाने के लिए वा अव्यक्त बनाने के लिए बाप को ही अव्यक्तवतनवासी बनना पड़ा। इस साकारी दुनिया से ऊँचा स्थान अव्यक्त वतन अपनाना पड़ा। अभी बाप कहते हैं बाप समान स्वयं को और सेवा को सम्पन्न करो, बाप समान अव्यक्तवतनवासी बन जाओ। (अ॰वा॰18.1.79 पृ.228 आदि)	Download
134	बाप की प्रत्यक्षता	अभी तक महान आत्माओं तक पहुँचे हैं, परमात्मा तक नहीं। परमात्मा से मिलाने वाले हैं यह भी समझते हैं; लेकिन परमात्मा से मिलकर जो करना है वह प्लैन बनाना पड़े। (अ॰वा॰23.2.78 पृ.2 अंत, 3 आदि)	Download
135	बाप की प्रत्यक्षता	विधाता द्वारा अविनाशी तकदीर की लकीर खिंचवा सकते हो; क्योंकि भाग्यविधाता दोनों बाप इस समय बच्चों के लिए हाज़िर-नाजिर हैं। (अ॰वा॰14.10.81 पृ.55 अंत, 56 आदि)	Download

136	बाप की प्रत्यक्षता	व्यक्त में भी अब भी सहारा है। जैसे पहले भी निमित्त बना हुआ साकार तन सहारा था वैसे ही अब भी ड्रामा में निमित्त बने हुए साकार में सहारा है। पहले भी निमित्त ही थे, अब भी निमित्त है। यह पूरा (एडवांस) परिवार का साकार सहारा बहुत श्रेष्ठ है। अव्यक्त में तो साथ है ही। .... साकार से स्नेह अर्थात् सारे सिजरे से स्नेह। साकार अकेला नहीं है, प्रजापिता ब्रह्मा तो उनके साथ परिवार है।(अ॰वा॰18.1.70 पृ.166 अंत)	Download
137	बाप की प्रत्यक्षता	भारत में किस तरफ और कौन आध्यात्मिक लाइट देने के निमित्त है, अभी यह स्पष्ट होना है। सभी के अंदर अभी यह खोज है कि भारत में अनेक आध्यात्मिक आत्माएँ कहलाने वाली हैं, आखिर भी इनमें धर्मात्मा कौन और परमात्मा कौन है? यह तो नहीं है, यह तो नहीं है- इसी सोच में लगे हुए हैं। "यही है" इसी फैसले पर अभी तक पहुँच नहीं पाए हैं।(अ॰वा॰28.12.82 पृ.15 अंत)	Download
138	बाप की प्रत्यक्षता	सबके मुख से वा मन से यही आवाज निकले कि यह वही है। ऐसे अनुभव करें बस इन्हों से मिले तो बाप से मिले। जो कुछ मिला है इन्हों द्वारा ही मिला है। यही मास्टर है, गाइड है, एन्जिल है, मैसेंजर है। बस यही है, यही है और वही है- यह धुन सबके अंदर लग जाय। इन्हीं दो शब्दों की धुन हो- यही है और वही है। मिल गए-मिल गए.. यह खुशी की तालियाँ बजाएँ। ऐसे अनुभव कराओ। (अ॰वा॰10.1.82 पृ.229 अंत)	Download
139	बाप की प्रत्यक्षता	आने वाले यह दो मास विशेष बुलन्द आवाज से चारों ओर बाप को प्रत्यक्ष करने के नगाड़े बजाने हैं। जिन नगाड़ों की आवाज़ को सुनकर सोई हुई आत्माएँ जाग जाएँ। (अ॰वा॰23.1.73 पृ.14 अंत, 15 आदि)	Download
140	बाप की प्रत्यक्षता	इस शिवरात्रि पर बाप को प्रत्यक्ष करने का कार्य करना है। अथॉरिटी से निर्भय हो वास्तविक परिचय देना है। इस शिवरात्रि उत्सव मनाने समय सब ऐसा प्रोग्राम रखें जिसमें सबका अटेंशन विश्व के रचयिता तथा जिसके द्वारा पार्ट बजाया उस आदिदेव अर्थात् साकार ब्रह्मा को पहचानें। यह शिवरात्रि विशेष बाप को प्रत्यक्ष करने वाली, नवीनता वाली हो। ..... यह शिवरात्रि प्रत्यक्षता की शिवरात्रि करके मनाओ। सबका अटेंशन जाए यह कौन हैं और किसके प्रति सम्बंध जोड़ने वाले हैं, सब अनुभव करें कि जो आवश्यकता है वह यहाँ से ही मिल सकती है। सब सुखों के खान की चाबी यहाँ ही मिलेगी। (अ॰वा॰3.2.79 पृ.266 अंत, 267 आदि)	Download

141	बाप की प्रत्यक्षता	जैसे एक ही सूर्य वा चंद्रमा समय के अंतर में दिखाई तो एक ही देता है ना। ऐसे यह ज्ञान सूर्य के बच्चे कोने-2 से दिखाई दें। ..... सबके संकल्प में, मुख में यही बात हो कि ज्ञान सितारे ज्ञान सूर्य के साथ प्रकट हो चुके हैं। तब सब तरफ का मिला हुआ आवाज चारों ओर गूँजेगा और प्रत्यक्षता का समय आएगा। अभी तो गुप्त पार्ट चल रहा है। अब प्रत्यक्षता में लाओ। इसका प्लैन बनाओ फिर बाप-दादा भी बताएँगे। (अ॰वा॰11.3.81 पृ.40 आदि)	Download
142	बाप की प्रत्यक्षता	कमाल यह है जो विस्तार द्वारा बीज को प्रकट करें । विस्तार में बीज को गुप्त कर देते हैं। अब तो वृक्ष की अंतिम स्टेज है ना। मध्य में गुप्त होता है। अंत तक गुप्त नहीं रह सकता। अति विस्तार के बाद आखरीन बीज ही प्रत्यक्ष होता है ना। मनुष्य आत्माओं की यह नेचर होती है जो वैराइटी में आकर्शित अधिक होते हैं। (अ॰वा॰17.5.72 पृ.281 मध्य)	Download
143	बाप की प्रत्यक्षता	अभी तैयारी तो करनी पड़े ना! जाएँगे, यह नहीं सोचो; लेकिन सबको ले जाएँगे, यह सोचो। सबको साक्षात्कार कराके, तृप्त करके प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजाके फिर जाएँगे। पहले क्यों जाएँ? अब तो बाप के साथ-2 जाएँगे। प्रत्यक्षता की भी वण्डरफुल सीन अनुभव करके जाएँगे ना।(अ॰वा॰26.11.84 पृ.32 मध्य)	Download
144	बाप की प्रत्यक्षता	जब तक इस दैवी संगठन की एकरस स्थिति प्रख्यात नहीं होगी तब तक बापदादा की प्रत्यक्षता समीप नहीं आएगी। (अ॰वा॰14.4.73 पृ.32 अंत)	Download
145	बाप की प्रत्यक्षता	इस शिवरात्रि पर .....ऐसा संकल्प करो कि परिचय के साथ बाप की झलक देखने या अनुभव करने का प्रसाद भी लेवें।(अ॰वा॰5.12.78 पृ.102 अंत,103 आदि)	Download
146	बाप की प्रत्यक्षता	बच्चे ही बाप का शो करेंगे- सन शोज़ फादर। सन का फिर फादर शो करते हैं। आत्मा का शो करते हैं ना। (मु.19.12.70 पृ.3 आदि)	Download
147	बाप की प्रत्यक्षता	बापदादा जानते हैं कि इस ग्रुप में कई ऐसे रत्न हैं जो बापदादा के गले के माला के मणके हैं। ऐसे मणकों को बाप भी सदा विश्व के आगे प्रत्यक्ष करने के वा विश्व के आगे बच्चों द्वारा बाप प्रत्यक्ष होने के कई दृश्य देख भी रहे हैं। अभी प्रत्यक्ष हो रहे हैं और आगे चलके भी होंगे। (अ॰वा॰1.1.79 पृ.167 मध्य)	Download
148	बाप की प्रत्यक्षता	यह आना चाहिए कि यही है, यही है, यही है...। अभी तक तो यह भी है, यही है, नहीं आया है। (अ॰वा॰11.3.02 पृ.74 अंत, 75 आदि)	Download
149	बाप की प्रत्यक्षता	प्रत्यक्ष किसको करना है- बच्चों को या बाप को? बाप को भी बच्चों द्वारा करना है; क्योंकि अगर ज्योतिर्बिंदु का साक्षात्कार भी हो जाए तो कई तो बिचारे, बिचारे हैं ना! तो समझेंगे ही नहीं यह क्या है। अंत में शक्तियाँ और पांडव बच्चों द्वारा बाप को प्रत्यक्ष होना है। (अ॰वा॰16.12.00 पृ.4 अंत)	Download

150	बाप की प्रत्यक्षता	कोई भी रेडियो खोले, कोई भी टी॰वी॰ का स्विच खोले तो यह आवाज आवे- ‘‘हमारा शिवबाबा आ गया।‘‘ तब कहेंगे प्रत्यक्षता का झंडा लहराया। (अ॰वा॰31.12.05 पृ.6 आदि)	Download
151	बाप की प्रत्यक्षता	दादी की जीवन का एक ही संकल्प रहा कि अब जल्दी से जल्दी बाप की प्रत्यक्षता का आवाज फैलाएँ। तो प्रत्यक्षता, दादी की प्रत्यक्षता द्वारा ईश्वरीय विश्व-विद्यालय और बापदादा की प्रत्यक्षता का फर्स्ट चैप्टर, छोटा-सा चैप्टर आरम्भ हुआ है। (अ॰वा॰6.9.07 पृ.1 मध्य)	Download
152	बाप की प्रत्यक्षता	क्वालिटी और क्वांटिटी दोनों की सेवा साथ-2 हो। ... बाप की प्रत्यक्षता तब होगी जब क्वालिटी वाले कार्य को और बाप को प्रत्यक्ष करें। (अ॰वा॰20.3.04 पृ.4 आदि)	Download
153	बाप की प्रत्यक्षता	ब्रह्मा बाप के प्रत्यक्ष होने की भूमि कलकत्ता है....जहाँ से आदि हुई, वहाँ समाप्ति भी हो। (अ॰वा॰18.1.05 पृ.2 अंत)	Download
154	बाप की प्रत्यक्षता	सबके दिल से यह आवाज़ निकले- हमारा बाप आ गया है, मेरा बाप है। ब्रह्माकुमारियों का बाप नहीं, मेरा बाप है। ... जो भी साइंस के साधन हैं उन साधनों में यह नगाड़ा बजता रहेगा- मेरा बाप आ गया। ...जहाँ भी सुनेंगे, एक ही आवाज़ सुनेंगे- आने वाले आ गए। इसको कहा जाता है बाप की स्पष्ट प्रत्यक्षता। (अ॰वा॰18.1.97 पृ.16 अंत)	Download
155	बाप की प्रत्यक्षता	अभी अकेले बाप को नहीं करना है। बच्चों के साथ प्रत्यक्ष होना है। जैसे स्थापना में ब्रह्मा के साथ विशेष ब्राह्मण भी स्थापना के निमित्त बने, ऐसे समाप्ति के समय भी बाप के साथ-2 अनन्य बच्चे भी देव रूप में साक्षात् अनुभव होंगे। (अ॰वा॰13.11.97 पृ.68 मध्य)	Download
156	बाप की प्रत्यक्षता	जानते भी हैं कि इन्हों का बैकबोन कोई अथॉरिटी है; लेकिन वही बापदादा है और हमें भी बाप से वर्सा लेना है... वो अभी होना है। (अ॰वा॰18.1.97 पृ.17 आदि)	Download
157	बाप की प्रत्यक्षता	यहाँ वारिस तैयार करेंगे तब एडवांस पार्टी भी प्रत्यक्ष होगी और बाप के नाम का, प्रत्यक्षता का नगाड़ा चारों ओर बजेगा। अभी तक की रिज़ल्ट में कहते हैं कि यह भी अच्छा काम कर रहे हैं या कोई-2 कहते हैं कि यही कर सकते हैं; लेकिन परम आत्मा की तरफ अटेंशन जाए, परम आत्मा का यह कार्य चल रहा है, वह अभी इनकॉगनिटो (गुप्त) है। (अ॰वा॰31.12.96 पृ.8 मध्य)	Download
158	बाप की प्रत्यक्षता	यह मैं पन का पर्दा थोड़ा आगे आ जाता है, यह पर्दा हट जाएगा तो हर एक से बाप का सा॰ होगा। तब यह नारा लगेगा- साक्षात् बाप आ गए, आ गए। सा॰ दिव्य दृष्टि से नहीं, साक्षात् रूप का सा॰ होगा। सबके मुख से एक ही आवाज निकलेगा- यह तो साक्षात् बाप है। (अ॰वा॰28.2.03 पृ.92 मध्य)	Download
159	शिवबाप की प्रवेशता	ऊँच ते ऊँच बाप को ज़रूर ऊँच ते ऊँच में ही प्रवेश करना चाहिए। मनुष्य समझते हैं ऊँच है श्रीकृष्ण। (मु.11.2.69 पृ.2 मध्य)	Download

160	शिवबाप की प्रवेशता	10 वर्ष (से साथ में) रहने वाले, ध्यान में जाय(जाती थी), मम्मा-बाबा को भी ड्रिल कराते थे(कराती थी)। हेड होकर बैठते थे। उनमें बाबा प्रवेश कर डायरैक्शन देते थे। कितना मर्तबा था। मम्मा-बाबा भी उनसे सीखते थे। आज वह भी हैं नहीं। उस समय यह इतना ज्ञान नहीं था। (मु.25.7.67 पृ.2 अंत)	Download
161	शिवबाप की प्रवेशता	शिवबाबा के अवतरण में तो बिल्कुल फर्क नहीं पड़ सकता। पता भी नहीं पड़ता है कि कब आया। ऐसे भी नहीं साक्षात्कार हुआ तब आया। नहीं, अंदाज कर सकते हैं। बाकी ऐसे नहीं कहेंगे कि उस समय प्रवेश किया। साक्षात्कार तो हुआ कि हम फलाना बनेंगे, दुनिया को आग लगेगी। मिनिट-सेकेंड का हिसाब नहीं बता सकते हैं। उनका तो अवतरण भी अलौकिक है। (मु.12.1.69 पृ.3 अंत, 4 आदि) मु.ता॰1.1.76 पृ.3 अंत,	Download
162	शिवबाप की प्रवेशता	यह ब्रह्मा भी एडॉप्ट किया हुआ है। बाप खुद कहते हैं मैं इस रथ का आकर रथी बनता हूँ। इनको ज्ञान देता हूँ। शुरू इनसे करता हूँ। कलश देता हूँ माताओं को। माता तो यह भी ठहरी ना। पहले-2 यह बनते हैं, फिर तुम। (मु.2.3.73 पृ.2 आदि) मु.2.3.78 पृ.2 आदि ,	Download
163	शिवबाप की प्रवेशता	बाप समझाते हैं इस जन्म के जो भी भक्त हैं उनमें नहीं आता हूँ। मैं उसमें आता हूँ जिसने पहले-2 भक्ति शुरू की है। (मु.26.6.68 पृ.2 अंत)	Download
164	शिवबाप की प्रवेशता	बाप भी समझाते हैं मैं इस पतित तन में प्रवेश करता हूँ। इन द्वारा ही सबको सतोप्रधान बनाता हूँ। (मु.20.1.75 पृ.3 मध्य)	Download
165	शिवबाप की प्रवेशता	बाबा कहते हैं हम भी 60 वर्ष की आयु में बहुत जन्मों के अंत में, इनकी वानप्रस्थ अवस्था हुई तब मैंने प्रवेश किया। (मु.26.11.72 पृ.2 अंत) मु.6.11.02 पृ.3 आदि,	Download
166	शिवबाप की प्रवेशता	बहुत जन्मों के अंत के जन्म के भी अंत में मैं प्रवेश करता हूँ।(मु.26.3.74 पृ.1 अंत)	Download
167	शिवबाप की प्रवेशता	बाप तो कहते हैं मैं तो कोई बैल-गधे आदि में थोड़े ही आऊँगा। जो ऊँच ते ऊँच था फिर 84 जन्म पूरे किए हैं, उनमें ही आता हूँ। (मु.3.6.68 पृ.3 अंत) मु.31.5.99 पृ.4 मध्य,	Download
168	शिवबाप की प्रवेशता	मैं प्रवेश ही इनमें करता हूँ जिसने पूरे 84 जन्म लिए हैं। गाँवड़े का छोरा था। फिर श्याम से सुंदर बनते हैं। ... बाप खुद कहते हैं मैं इनके बहुत जन्मों के अंत में प्रवेश करता हूँ। जो सभी से पतित बना है, फिर पावन भी वही बनेगा। 84 जन्म पूरा इसने ही लिया है। ततत्वम्।(मु.9.9.68 पृ.3 अंत) मु.14.8.04 पृ.4 मध्य,	Download
169	शिवबाप की प्रवेशता	सबसे जास्ती पतित कौन है, यह बाप बतलाते हैं। मैं उस रथ में ही प्रवेश करता हूँ। (मु.26.6.68 पृ.3 अंत)	Download
170	शिवबाप की प्रवेशता	ड्रामा में जिसका पार्ट है उनमें ही प्रवेश करते हैं और इसका नाम ब्रह्मा रखते हैं। ..... अगर दूसरे में आवे तभी भी उनका नाम ब्रह्मा रखना पड़े। (मु.17.3.73 पृ.2 अंत)	Download

171	शिवबाप की प्रवेशता	वानप्रस्थ अवस्था में ही मनुष्य गुरू करते हैं, 60 वर्ष के बाद। इसमें भी 60 वर्ष के बाद बाप ने प्रवेश किया तो बाप, टीचर, गुरू बन गए। (मु.26.12.68 पृ.2 आदि)	Download
172	शिवबाप की प्रवेशता	पतित शरीर का नाम है प्रजापिता ब्रह्मा। इनमें प्रवेश कर कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अंत वाले साधारण मनुष्य में प्रवेश करता हूँ। ...सूक्ष्मवतनवासी पावन ब्रह्मा में नहीं आते हैं। (मु.4.11.65 पृ.1 आदि) मु.6.11.97 पृ.1 मध्य,	Download
173	बच्चों में प्रवेशता	मैं कोई बच्चे में प्रवेश कर किसका भी कल्याण कर सकता हूँ। बाकी पशु में थोड़े ही मैं प्रवेश कर साक्षात्कार कराऊँगा।(मु.6.9.73 पृ.3 अंत)	Download
174	बच्चों में प्रवेशता	बच्चों का सारा अटेंशन जाता है शिवबाबा तरफ। वह तो कब बीमार पड़ नहीं सकते। वह चाहे तो ब्रह्मा तन से, नहीं तो और कोई अच्छे बच्चे द्वारा भी मुरली चला सकते हैं। (मु.17.1.70 पृ.1 मध्यादि)	Download
175	बच्चों में प्रवेशता	बाप भी देखते हैं यह बुद्धिमान पढ़ा-लिखा है, उनको समझाने वाला बुद्धू मिला है तो फिर खुद प्रवेश कर उनको उठा लेंगे। फिर कई समझदार बच्चे जो हैं वह कहते हैं हमारे में तो इतना ज्ञान नहीं था जितना बाप ने बैठ समझाया। कोई को अपना अहंकार आ जाता है। (मु.20.3.68 पृ.3 अंत)	Download
176	बच्चों में प्रवेशता	बाबा कहते हैं भल कैसा भी कोई बच्चा है; परंतु दूसरे का कल्याण करने अर्थ उनमें भी मुझे जाना पड़ता है। बाबा प्रवेश कर मुरली चलाते हैं। (रात्रि क्लास मु.2.1.73 पृ.4 अंत)	Download
177	बच्चों में प्रवेशता	भल छोटी बच्ची हो तो भी इसमें आकर साक्षात्कार करा देता हूँ जो वह चकित हो जावे और फिर ब्रह्मा की बन जाए। बाप से प्रीत बुद्धि हो जाए। (मु.5.8.73 पृ.2 मध्यादि)	Download
178	बच्चों में प्रवेशता	बच्चों द्वारा भी बाप बहुत सर्विस करते रहते हैं। कोई में प्रवेश कर सर्विस करते हैं। सर्विस तो करनी ही है। जिनके माथे मामला वह कैसे नींद करे? (मु.17.1.70 पृ.2 अंत)	Download
179	बच्चों में प्रवेशता	बाप कहते हैं मैं कोई में जाता ही नहीं हूँ।... हाँ, कोई डल बुद्धि बच्चे हैं और कोई अच्छा जिज्ञासु आ जाता है तो उनकी सर्विस अर्थ हम प्रवेश कर दृष्टि दे सकता हूँ। सदैव नहीं बैठ सकता हूँ। .....बहु रूप धारण कर किसका भी कल्याण कर सकते हैं। बाकी ऐसे कोई नहीं कहेंगे मेरे में शिवबाबा है। मुझे शिवबाबा यह कहते हैं। नहीं। (मु.28.9.68 पृ.1 मध्य) मु.9.9.04 पृ.1 अंत,	Download
180	बच्चों में प्रवेशता	बाबा ने समझाया है कोई का कल्याण करने अर्थ में जाता हूँ। आता तो पतित तन में ही हूँ ना। इनमें तो फिर भी ज्ञान है। कोई बिल्कुल इडियट है उनमें भी प्रवेश करता हूँ कोई के कल्याण करने अर्थ, सिर्फ ब्राह्मण हो।(मु.7.3.67 पृ.2 मध्य)	Download
181	बच्चों में प्रवेशता	मैं इनमें प्रवेश करता हूँ फिर चला जाता हूँ। बैल पर सारा दिन कोई सवारी थोड़े ही करते हैं। मुझे जिस समय बच्चे याद करते मैं हाज़िर हूँ। (मु.4.6.66 पृ.3 आदि)	Download

182	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	ब्रह्मा के हाथ में शास्त्र दिखाते हैं। शास्त्र तो एक होना चाहिए न। तो अभी ब्रह्मा के हाथ में है शिरोमणि गीता। बाबा बैठ ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों-ग्रन्थों का सार बताते हैं। (मु.31.7.73 पृ.2 अंत)	Download
183	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	ऐसे नहीं कि मम्मा चली गई तो वह नहीं पढ़ाती है। जैसे बापदादा कम्बाइंड हैं वैसे यह मम्मा-बाबा भी कम्बाइंड हैं। दोनों ने यह रूहानी यूनिवर्सिटी खोली है। दोनों इकट्ठे पढ़ाते हैं। (मु.25.8.70 पृ.2 मध्यांत)	Download
184	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	मैं इस भारत को इन ब्रह्मा-सरस्वती द्वारा और ब्राह्मणों द्वारा भारत को स्वर्ग बनाता हूँ। जो मेहनत करते हैं उन्हों की फिर यादगार बनती है। (मु.5.2.71 पृ.2 मध्य)	Download
185	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	मुख्य है शिवबाबा, फिर ब्रह्मा-सरस्वती युगल। (मु.4.11.78 पृ.2 मध्य)	Download
186	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	मैं साजन बड़ा हूँ तो सजनी भी बड़ी चाहिए। ...सरस्वती है ब्रह्मा मुखवंशावली। वह कोई ब्रह्मा की युगल नहीं है, ब्रह्मा की बेटी है। उनको फिर जगदम्बा क्यों कहते है? क्योंकि यह मेल है न। तो माताओं की सम्भाल के लिए उनको रखा है। ब्रह्मा मुखवंशावली सरस्वती तो ब्रह्मा की बेटी हो गई। मम्मा तो जवान है। ब्रह्मा तो बूढ़ा है। सरस्वती जवान ब्रह्मा की स्त्री शोभती भी नहीं। हाफ पार्टनर कहला न सके। (मु.4.11.73 पृ.2 अंत, 3 आदि)	Download
187	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	आप सभी के मन में तो होगा ही कि हमारी मम्मा कहाँ गई? अभी यह राज़ इस समय स्पष्ट करने का नहीं है। कुछ समय के बाद सुनाएँगे कि वह कहाँ और क्या कार्य कर रही है। स्थापना के कार्य में भी मददगार है; लेकिन भिन्न नाम-रूप से।(अ॰वा॰2.2.69 पृ.33 आदि)	Download
188	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	कोई बुरा काम किया तो बेइज्जती होगी ना। सो भी बाप के आगे। शिवबाबा बैठते हैं ना। तुमको साक्षात्कार करावेंगे। हम इसमें था। तुमको कितना समझाते थे। अभी मैं सम्पूर्ण(ब्रह्मा) में हूँ। तुम बच्चियाँ सम्पूर्ण बाबा पास जाती हो। उस द्वारा शिवबाबा डायरैक्शन आदि देते हैं ना। (मु.7.11.71 पृ.2 आदि)	Download
189	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	ब्रह्मा के रूप में जो आदि से अंत तक हर कर्म में, हर चरित्र में, हर सेवा के समय में साथी रहे हैं वह भविष्य में भी साथी रहेंगे। (अ॰वा॰27.10.81 पृ.82 अंत)	Download
190	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	मनुष्य समझते हैं एडम ब्रह्मा, ईव सरस्वती। वास्तव में यह रॉंग है। निराकार गॉड फादर है तो मदर भी ज़रूर होगी। (मु.18.5.73 पृ.2 मध्य)	Download
191	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	ब्रह्मा-सरस्वती भी वास्तव में मम्मा-बाबा नहीं हैं।(मु.31.3.72 पृ.1 मध्य)	Download
192	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	भोग किसको लगाया जाता है यह भी बाबा समझाते हैं। शिवबाबा तो अभोक्ता है। उनको भोग लगता नहीं। यह भोग लगता है सम्पूर्ण मम्मा-बाबा को। (मु.22.12.71 पृ.3 अंत)	Download

193	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	ब्रह्मा द्वारा स्थापना किसकी? देवता धर्म की। ब्रह्मा सतयुग में तो नहीं है। यहाँ संगम पर ही कहा जावेगा। ब्रह्मा भी ज़रूर चाहिए। ब्रह्मा का सच्चा चित्र कोई पास है नहीं। कोई दाढ़ी वाला दिखाते हैं, कोई कैसा दिखाते। (मु.3.8.72 पृ.4 आदि)	Download
194	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	ब्रह्मा भी बाबा, शिव भी बाबा। विष्णु और शंकर को बाबा नहीं कहेंगे ना। (सम्पूर्ण ब्रह्मा) (मु.15.1.67 पृ.3 अंत)	Download
195	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	बोलो (अपूर्ण) ब्रह्मा कोई हमारा गुरू आदि कुछ भी नहीं है। वो तो दादा है। बाबा भी नहीं है, बाबा से तो वर्सा मिलता है। ब्रह्मा से थोड़े ही वर्सा मिलता है।(मु.3.2.67 पृ.2 अंत)	Download
196	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	बाप खुद आकर ब्रह्मा तन से स्वर्ग स्थापन करते हैं। (मु.24.1.70 पृ.2 अंत)	Download
197	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	यह प्रजापिता ब्रह्मा जो अब व्यक्त है, वह जब सम्पूर्ण बन जाते, पाप कट जाते, तब फरिश्ता बन जाता है। सूक्ष्मवतनवासियों को फरिश्ता कहा जाता है। (मु.21.1.73 पृ.2 मध्यादि)	Download
198	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	यह ज्ञान सूर्य है। गुप्त मम्मा अलग है। इस राज़ को तो कोई मुश्किल समझ और समझा सके। उस मम्मा का नाम अलग है। मंदिर उनके हैं। इस बूढ़े माँ का मंदिर थोड़े ही है। (मु.15.11.72 पृ.3 मध्यांत) मु.17.11.77 पृ.3मध्य,	Download
199	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा ज्ञान देते हैं। इसको ब्रह्मा ज्ञान कहा जाता है। ब्रह्मा को भी ज़रूर किसने दिया होगा ना। ज्ञान सागर तो परमपिता परमात्मा है। वह ब्रह्मा द्वारा आए कर देते हैं। (मु.3.12.71 पृ.1 अंत)	Download
200	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	बच्चे सा. भी करते हैं सम्पूर्ण मम्मा का। ...कहाँ बहुत ज़रूरी होगा तो बाबा भी आवेंगे। (मु.9.3.68 पृ.2 अंत) मु.11.3.04 पृ.3 आदि,	Download
201	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	उनको मात-पिता कहते। तुम मात-पिता जो गाते हैं वह ब्रह्मा-सरस्वती को नहीं कह सकते। ब्रह्मा थोड़े ही वैकुण्ठ रचयिता है। (मु.ता॰11.10.87 पृ.2 अंत)	Download
202	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	भक्तिमार्ग में मेल्स में नारद उत्तम गिना गया है, फीमेल्स में मीरा। ...ज्ञानमार्ग में फिर देखते हो मम्मा-बाबा का नाम बाला है। (मु.29.9.73 पृ.2 मध्यांत)	Download
203	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	मम्मा-बाबा भी जाएँगे, अनन्य बच्चे भी एडवांस में जाएँगे। ...ऐसे नहीं कि मम्मा-बाबा कोई परिपूर्ण हो गए हैं। परिपूर्ण अवस्था अंत में होगी। (मु.ता॰10.11.88 पृ.3 मध्य)	Download
204	सम्पूर्ण/अपूर्ण मम्मा-बाबा	दादा पुरुषार्थी है, सम्पूर्ण नहीं है। (मु.20.7.68 पृ.1 रात्रि क्लास)	Download
205	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	मालूम कैसे पड़ता है कि इनमें बाप भगवान है? जब नॉलेज देते हैं। बच्चों को बैठ समझाते हैं। (मु.26.10.68 पृ.2 मध्य)	Download

206	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	सोमनाथ नाम रखा है; क्योंकि सोमरस पिलाते हैं, ज्ञान धन देते हैं। फिर जब पुजारी बनते हैं तो कितना धन खर्चा करते हैं उनका मंदिर बनाने पर; क्योंकि सोमरस दिया है ना। सोमनाथ के साथ सोमनाथिनी भी होगी। यथा राजा-रानी तथा प्रजा सभी सोमनाथ-सोमनाथिनी हैं। (मु.3.3.70 पृ.2 मध्यादि)	Download
207	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	सोमनाथ का मंदिर कितना बड़ा है। कितना सजाते हैं।...आत्मा की सजावट नहीं है वैसे परमआत्मा (परमात्मा) की भी सजावट नहीं है। वह भी बिंदी है। बाकी जो भी सजावट है वह शरीरों की है। ... अभी तुम (बच्चे) अंदर में जानते हो हम सोमनाथ बन रहे हैं। (मु.5.7.75 पृ.1 मध्यादि-अंत)	Download
208	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	हनुमान का भी दृष्टांत है न। इसलिए तुम्हारा महावीर नाम (तीर्थंकर) रखा है। अभी तो एक भी महावीर नहीं... अभी वीर हैं। पूरा महावीर पिछाड़ी में होंगे (मु.8.1.74 पृ.1 मध्यादि)	Download
209	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	बाप जब आते हैं तो ब्र.वि.शं. भी ज़रूर चाहिए। कहते हैं त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच्य। अब तीनों द्वारा (एक साथ) तो नहीं बोलेंगे ना। यह बातें अच्छी रीति बुद्धि में धारण करने की हैं। (मु.26.2.67 पृ.1आदि)मु.22.2.75 पृ.1 आदि,	Download
210	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	बड़े भाई को हमेशा बाप समान समझते हैं। .....यह सारा ज्ञान के ऊपर है। जिसमें अधिक ज्ञान है वह बड़ा ठहरा। भल शरीर में छोटा हो; परंतु ज्ञान में तीखा है तो हम समझते हैं यह भविष्य पद में बड़ा बनने वाला है। ऐसे बड़ों का फिर रिगार्ड भी रखना चाहिए; क्योंकि ज्ञान में तीखे हैं। कम ज्ञान वाले को उनका रिगार्ड रखना चाहिए। (मु.3.5.73 रात्रि क्ला. पृ.1 मध्य)	Download
211	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	महावीर बनते हैं जो कब इनको माया हिला न सके। वह अचल स्थिरियम हैं, अखण्ड, अचल रहते हैं। अखण्ड अर्थात् शुरू से लेकर चलते आते। (मु.7.11.72 पृ.2 मध्यांत)	Download
212	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	महावीर तो दुश्मन का आह्वान करते हैं कि आओ और हम विजयी बनें। महावीर पेपर को देख घबराएँगे नहीं, चैलेंज करेंगे; क्योंकि त्रिकालदर्शी होने के कारण जानते हैं कि हम कल्प-2 के विजयी हैं। (अ॰वा॰19.12.78 पृ.139 आदि)	Download
213	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	एक शिवबाबा ही सर्व का सद्गति दाता है। ...गाते भी हैं एक राम। शिवबाबा को राम कहते हैं। ...असल नाम है शिव। उनको सोमनाथ भी कहते हैं। सोमरस पिलाया अर्थात् ज्ञान धन दिया। (मु.26.6.71 पृ.2 मध्य)	Download
214	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	थमे रहते हैं, उनको कहेंगे महावीर, हनुमान। तुम हो महावीर-महावीरनियाँ। नम्बरवार तो हैं ना। सबसे पहलवान को महावीर कहा जाता है। आदिदेव को भी महावीर कहते हैं, जिससे यह महावीरनियाँ पैदा होती हैं , जो विश्व में राज्य करती हैं। (मु.16.9.68 पृ.3 मध्यादि)	Download
215	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	अब बाप बैठ समझाते हैं कि मैं कृष्ण नहीं हूँ। मुझे रुद्र वा सोमनाथ कह सकते हैं। (मु.ता॰11.1.73 पृ.2 मध्यांत)	Download

216	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	अच्छे-2 बच्चे जो हैं वह अपनी तैयारी कर रहे हैं। सुदामा को भी ख्याल हुआ- चावल मुट्ठी ले आया। (मु.18.7.69 पृ.2 मध्य) मु.24.8.00 पृ.2 अंत,	Download
217	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	गोया तुम माया पर जीत पाते हो। तो फिर कोई हिला न सकेंगे। हनुमान का भी दृष्टांत है न; इसलिए तुम्हारा महावीर नाम रखा है। (मु.8.1.74 पृ.1 मध्यादि) मु.29.1.99 पृ.1 मध्य,	Download
218	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	तुम सभी पार्वतियाँ हो, अमरकथा सुन रही हो शिवबाबा द्वारा। वह है ऊँच ते ऊँच। ....अमरनाथ है शिवबाबा। अमरनाथ पर बर्फ का लिंग बनाते हैं।...अमरनाथ अथवा शंकर-पार्वती वहाँ कहाँ से आए? (मु.ता॰5.1.72 पृ.1 आदि)	Download
219	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	बाप है रुद्र। रुद्र बाप कहो, शिव कहो, सोमनाथ कहो, उसने ज्ञान यज्ञ रचा है जिसमें तुम बैठे हो। (मु.25.9.73 पृ.2 आदि)	Download
220	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	प्रजापिता नाम बाप का शोभता है। (मु.ता॰11.1.73 पृ.1 आदि)	Download
221	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	शिव-शंकर महादेव कहते हैं। अब कृष्ण कहाँ से आया? उनको तो रुद्र वा शंकर नहीं कहेंगे। (मु.ता॰11.1.73 पृ.1 आदि)	Download
222	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	नेहरु को भी पाकिस्तानी दुश्मन समझते थे। तो वह एफीजी बनाकर जलाते थे। (मु.24.9.73 पृ.1 मध्य)	Download
223	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	उनका नाम है शिव। ... दूसरा कोई नाम देना ही नहीं चाहिए। ...काशी में भी शिव का मंदिर है ना। वहाँ साधु लोग मंत्र जाय जपते हैं- शिव काशी विश्वनाथ गंगा। ...अब मैं तो विश्वनाथ हूँ नहीं। विश्व के नाथ तुम बनते हो, मैं बनता ही नहीं हूँ। (मु.7.8.67 पृ.2 मध्यांत)	Download
224	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	जनक जो सीता का बाप था उसको जीवनमुक्ति एक सेकेण्ड में मिली थी। ... कमल फूल समान पवित्र बनना है जनक मिसल। वही जनक फिर अनु जनक बना। (मु.26.12.73 पृ.1 आदि-मध्य)	Download
225	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	जैसे बंबई में बबूलनाथ कहते हैं अर्थात् काँटों के जंगल को फूलों का बगीचा बनाने वाला। नहीं तो असली नाम उनका है ही शिव। इनमें प्रवेश करते हैं तब भी नाम शिव ही है। (मु.8.9.68 पृ.1 मध्य)	Download
226	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	व्यास कहा जाता है वाचक को, जो मुरली चलाते हैं। (मु.4.11.65 पृ.1 अंत)	Download
227	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	नाम राम का रटते हैं; क्योंकि यह तो कोई जानते नहीं कि ईश्वर का नाम-रूप क्या है। (मु.5.12.71 पृ.1,2) मु.19.12.01 पृ.2 मध्य,	Download
228	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	बाबा कहते हैं तुमको राजतिलक दे रहा हूँ। ...तुमको राजतिलक न दूँगा तो कौन देगा? कहते हैं ना- तुलसीदास चन्दन घिसे... यह बात यहाँ की है। वास्तव में राम शिवबाबा है। (मु.ता॰5.3.73 पृ.3 आदि)	Download

229	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	एक अल्फ का पता नहीं, तो बाकी तो ज़ीरो-2 हो जाता है। अल्फ के साथ ज़ीरो लगाने से फायदा होता है। (मु.14.4.67 पृ.2 मध्य)	Download
230	बाप की पहचान (नाम-रूप से)	आप (बाप) अल्फ ही समझाते हैं। अल्फ से ही वर्सा मिलता है। (मु.29.7.70 पृ.2 अंत)	Download
231	बाप का रूप, वेश-भूषा	बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ साधारण तन में। न बहुत गरीब, न बहुत साहुकार। (मु.21.4.70 पृ.2 आदि)	Download
232	बाप का रूप, वेश-भूषा	शिवबाबा को कोई अहंकार है? है कितनी बड़ी अथॉरिटी। कहते भी हैं मैं साधारण तन में, साधारण घर में आता हूँ। साहुकारों के घर में थोड़े ही आता हूँ। (मु.9.7.71 पृ.2 अंत)	Download
233	बाप का रूप, वेश-भूषा	इनका तो वही साधारण रूप है, वही ड्रेस आदि है। फर्क नहीं। इसलिए कोई समझ नहीं सकते। (मु.11.2.68 पृ.2 आदि)	Download
234	बाप का रूप, वेश-भूषा	वह है निराकारी, निरअहंकारी, कोई भी अहंकार नहीं। कपड़े आदि भी वही हैं, (शरीर रूपी मिट्टी के सिवाय) कुछ भी बदला नहीं है। ... इनका तो वही साधारण तन है, साधारण पहरवाइस है। कोई फर्क नहीं। (मु.30.4.68 पृ.1 अंत) मु.8.4.74 पृ.1 अंत,	Download
235	बाप का रूप, वेश-भूषा	बाप कहते हैं मैं बहुत साधारण तन में आता हूँ (ब्रह्मा अर्थात् बड़ी माँ का तन तो असाधारण था) इसलिए कोई विरला ही पहचानते हैं। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, साथ रहने वाले भी समझते नहीं हैं। (मु.5.2.68 पृ.3 अंत)	Download
236	बाप का रूप, वेश-भूषा	वही महाभारत लड़ाई है। तो ज़रूर भगवान भी होगा। किस रूप में, किस तन में हैं वह सिवाय तुम बच्चों के और किसी को पता नहीं है। कहते भी हैं मैं बिल्कुल साधारण तन में आता हूँ। मैं कृष्ण के (अर्थात् ब्रह्मा के शोभायमान) तन में नहीं आता हूँ। (मु.13.8.76 पृ.3 अंत)	Download
237	बाप का रूप, वेश-भूषा	श्रीनाथ-जगन्नाथ है एक ही चीज़; परंतु जैसा देश वैसा ठाकुर बनाकर उनको भोग लगाते हैं। अगर पकवान आदि खिलावे तो पेट में दर्द पड़ जाए। (मु.20.7.73 पृ.1 मध्यांत)	Download
238	बाप का रूप, वेश-भूषा	फकीर से अमीर बनेंगे। अंदर में यह मस्ती चढ़ी हुई है इसलिए मस्त कलंकीधर कहते हैं। (मु.28.2.68 पृ.1 अंत)	Download
239	बाप का रूप, वेश-भूषा	बेगर बनना मासी का घर थोड़े ही है। बेगर के पास तो (धन, पद, मान, मर्तबा) कुछ भी न हो।(मु.21.1.74 पृ.4 अंत)	Download
240	बाप का रूप, वेश-भूषा	बड़ा पद जो मिला है तो उसमें ही रहते हैं। पैसे वालों को अपने पैसे ही याद पड़ते हैं। ...नहीं तो धन-मर्तबा आदि याद पड़ता रहेगा। (मु.25.1.68 पृ.2 मध्य) मु.26.1.74 पृ.2 मध्यांत,	Download
241	बाप का रूप, वेश-भूषा	जो(जब) गोरा है तो ताज होना चाहिए। साँवरा है तो ताज कहाँ से आवेगा? ..... गाँव का छोरा तो गरीब होगा ना। (मु.8.2.70 पृ.2 मध्य)	Download
242	बाप का रूप, वेश-भूषा	यहाँ भीड़ का कायदा नहीं है। गुप्त वेश में काम चलता रहेगा। (मु.11.1.73 पृ.1 मध्यांत)	Download

243	बाप का रूप, वेश-भूषा	बाप तो है बिल्कुल साधारण ना। ड्रेस आदि सभी वही है, कुछ भी फर्क नहीं। संन्यासी लोग तो फिर भी घर-बार छोड़ गेरु कफनी पहन लेते हैं। उनकी तो वही पहरवाइस है। सिर्फ बाप ने प्रवेश किया है, और तो कोई फर्क नहीं। जैसे बाप बच्चों को प्यार से सम्भालते हैं, पालन-पोशण करते हैं, वैसे भी यह भी करते हैं। कोई अहंकार की बात नहीं। बिल्कुल ही साधारण चलते हैं। बाकी रहने लिए मकान तो बनाना पड़े ना। वह भी साधारण है। (मु.25.4.68 पृ.2 अंत)	Download
244	बाप का रूप, वेश-भूषा	मैं रूप भी हूँ, बसन्त भी हूँ। आत्मा रूप है, उनमें सारा ज्ञान है। वर्षा बरसाते हैं। (मु.ता॰29.12.67 पृ.1 मध्यांत)	Download
245	बाप का रूप, वेश-भूषा	बाबा तो है बिल्कुल ऊँच ते ऊँच। चलन गरीब ते गरीब चलते हैं। बाप गरीब निवाज़ है ना। (मु.25.9.72 पृ.1 मध्यादि)	Download
246	बाप का रूप, वेश-भूषा	जब विनाश शुरू हो जावेगा फिर समझेंगे भगवान ज़रूर गुप्त वेश में हैं। (मु.17.8.65 पृ.2 आदि)	Download
247	बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)	सभी बच्चों पर मालिक को ही तरस पड़ेगा। बहुत हैं जो सृष्टि के मालिक को मानते हैं; परंतु वह कौन है, उनसे क्या मिलता है, वह कुछ पता नहीं है। फर्रुखाबाद में सिर्फ मालिक को मानते हैं। समझते हैं वह मालिक ही हमारा सब कुछ है। (मु.22.2.78 पृ.1 आदि)	Download
248	बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)	जैसे फर्रुखाबाद वाले कहते हैं हम उस मालिक को याद करते हैं; परंतु वास्तव में विश्व का वा सृष्टि का मालिक तो ल.ना. बनते हैं। (मु.12.1.78 पृ.2 अंत)	Download
249	बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)	फर्रुखाबाद में तो मालिक को मानते हैं न। तुमने मालिक का भी अर्थ समझा है। वह है मालिक। हम उनके बच्चे हैं। तो ज़रूर वर्सा मिलना चाहिए न। (मु.7.12.73 पृ.2 मध्य)	Download
250	बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)	जैसे फर्रुखाबाद के रहवासी मालिक को मानते हैं। अनेक मत तो हैं ना। अच्छा, उस मालिक से फिर क्या मिलेगा? कुछ भी पता नहीं। मालिक को कैसे याद करें? उनका नाम-रूप क्या है? कुछ पता नहीं है। मालिक तो सृष्टि का मालिक ठहरा ना। वह हुआ रचयिता। हम हुए रचना। (मु.22.1.72 पृ.1 आदि)	Download
251	बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)	फर्रुखाबाद में बच्चियाँ तो हैं; परंतु अजुन इतनी ताकत नहीं। वहाँ मालिक को मानने वाले हैं तो समझाना चाहिए तुम कहते हो वह मालिक है, बाप फिर कहते हैं तुम मालिक हो। (मु.22.1.72 पृ.3 आदि)	Download
252	बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)	बाबा है बेहद के (की) सारी दुनिया का मालिक, सभी आत्माओं का बाप। बाप को मालिक कहा जाता है। फर्रुखाबाद तरफ मालिक को मानते हैं। घर का मालिक तो बाप ही होता है। बच्चों को बच्चे ही कहेंगे। जब वह भी बड़े होते हैं, बच्चे पैदा करते हैं तब फिर मालिक बनते हैं। यह सभी राज़ समझने की है। (मु.11.4.68 पृ.3 अंत) मु.2.5.69 पृ.3 अंत,	Download

253	बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)	बंदरों की महफिल में आता हूँ। मैं देवताओं की महफिल में कब आता ही नहीं हूँ। जहाँ माल मिलता है, 36 प्रकार के भोजन मिल सकते वहाँ मैं आता ही नहीं हूँ। जहाँ रोटी भी नहीं मिलती बच्चों को, उन्हों को आए गोद में लेकर बच्चा बनाए गोद में लेता हूँ। साहुकारों को गोद में नहीं लेता हूँ। (मु.15.8.76 पृ.3 मध्यादि)	Download
254	बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)	ज्ञान सागर को कोई महल तो नहीं है, झोपड़ी है। ज्ञान सागर झोपड़ी में रहना पसंद करते हैं। (मु.16.9.73 पृ.1 मध्यादि)	Download
255	बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)	इतना ऊँच ते ऊँच (बाप) कैसे छी-2 गाँवरों में आते हैं। ....बच्चों को बहुत ही प्यार से समझाते हैं। (मु.31.7.68 पृ.3 मध्यादि)	Download
256	बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)	बाबा इतना अंग्रेजी नहीं पढ़ा हुआ है। तुम कहेंगे बाबा अंग्रेजी नहीं जानते। बाबा कहते वाह! मैं कहाँ तक... सब भाशाएँ बैठ सीखूँगा। मुख्य है ही हिंदी, तो मैं हिन्दी में ही मुरली चलाता हूँ। जिसका शरीर धारण किया है वह भी तो हिंदी ही जानता है। (मु.26.11.73 पृ.2 मध्य)	Download
257	बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)	अब भगवान तो सभी भाशाओं में नहीं सिखावेंगे। वह तो हिंदी में ही समझाते हैं। जैसे इंगलिश टूटी-फूटी सभी जानते हैं, वैसे ही हिंदी भी टूटी-फूटी सभी जानते हैं। सहज है बहुत। (मु.1.2.72 पृ.2 मध्य) मु.2.2.77 पृ.2 मध्यादि,	Download
258	बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)	सोमनाथ मंदिर में बैठने वाला शिवबाबा आज कहाँ पढ़ा रहे हैं। भक्तिमार्ग में इनको हीरों-जवाहरों के महल दे दिए हैं। कितना मान है। यहाँ इनको पहचानते ही नहीं तो पूरा रिगार्ड में नहीं ठहरते। राजऋशि भारत को स्वर्ग बनाने वाले पढ़ते देखो कितना साधारण हैं जैसे गरीबों का सतसंग होता है। साहूकारों के तो बड़े-2 हॉल होते हैं। (मु.11.3.73 पृ.4 मध्य)	Download
259	बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)	जहाँ बाप का जन्म होता है वह भूमि सभी से ऊँच तीर्थ है। (मु.7.11.72 पृ. 2 अंत)	Download
260	बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)	बाप आते भी हैं मगध देश में, जो कि बहुत गिरा हुआ देश है, बहुत पतित है, खान-पान भी बहुत गन्दा है। (मु.16.9.68 पृ.2,3)	Download
261	बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)	बाप कैसे, कहाँ आते हैं , किसको कुछ भी पता नहीं है। तुम जानते हो मगध देश में आते हैं, जहाँ मगरमच्छ होते हैं। (मु.28.12.68 पृ.3 मध्यादि)	Download
262	बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)	यू.पी. को धर्म युद्ध का खेल दिखाना चाहिए। (अ॰वा॰24.12.79 पृ.146अंत)	Download

263	बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)	फर्रुखाबाद में एक पंथ है, जो ''एक मालिक'' कहते हैं। ...क्या विश्व का, सारी सृष्टि का मालिक है? परमपिता परमात्मा सृष्टि का मालिक है नहीं। (मु.17.12.82 पृ.2 आदि) मु.19.6.97 पृ.2 मध्य,	Download
264	बाप का धाम (लौकिक जन्म स्थली)	बाप कहते हैं मैं भी मगध देश में आता हूँ। (मु.8.6.70 पृ.3 अंत)	Download
265	अलौकिक जन्म स्थली	अहमदाबाद को सभी से ज़्यादा सर्विस करनी है; क्योंकि अहमदाबाद सभी सेंटर्स का बीजरूप है। बीज में ज़्यादा शक्ति होती है। खूब ललकार करो, जो गहरी नींद में सोए हुए भी जाग उठें। (अ॰वा॰24.1.70 पृ.190 मध्य)	Download
266	अलौकिक जन्म स्थली	अहमदाबाद में स्वामीनारायण के 108 मंदिर हैं। करोड़ों पैसे आते होंगे। मिलते तो स्वामीनारायण को होंगे ना। तो (अंत में अहमदाबादी पाण्डव भवन तैयार होने पर विश्व विजेता 108 मणकों से कनेक्शन जोड़ने के लिए) सभी सेंटर्स से भी यहाँ ही आवेंगे ना। (मु.5.3.75 पृ.3 आदि)	Download
267	अलौकिक जन्म स्थली	अहमदाबाद को तो वरदान है, सेवा का फल भी है और सेवा का बल भी है। (अ॰वा॰21.11.98 पृ.9 अंत)	Download
268	बाप के गुण	सागर खारा भी, मीठा भी है। मीठा जल बादल खैंच बरसाते हैं। (मु.29.5.72 पृ.1 मध्य)	Download
269	बाप के गुण	सागर में दो विशेष शक्तियाँ सदैव देखने में आवेंगी।..... (ज्ञान) लहरों द्वारा सामना भी करते हैं और हर वस्तु व व्यक्ति को स्वयं में समा भी लेते हैं। (अ॰वा॰21.9.75 पृ.121 आदि)	Download
270	बाप के गुण	तुम जानते हो कि ऊँच ते ऊँच है भगवान फिर सेकंड नम्बर में ब्रह्मा। उनसे ऊँच कोई होता नहीं। इससे बड़ी आसामी कोई है नहीं; परंतु चलते देखो कितना साधारण हैं। कैसे साधारण रीति बच्चों से बैठते हैं, ट्रेन में जाते हैं। कोई क्या जाने कि यह कौन हैं? (मु.13.8.76 पृ.3 मध्य)	Download
271	बाप के गुण	सूत ही सारा मूँझा हुआ है। सिवाय बाप के कोई उसको सुलझा नहीं सकते। (मु.20.5.65 पृ.5 मध्यांत)	Download
272	बाप के गुण	इन सन्यासियों आदि को अपना नशा कितना रहता है। वह पहले-2 नज़र रखते हैं साहूकारों में, बाबा पहले-2 नज़र रखते हैं गराबों पर। गरीब निवाज़ है ना। (मु.28.6.70 पृ.2 अंत)	Download
273	बाप के गुण	धनवान बाप का बच्चा कब गरीब की एडॉप्शन थोड़े ही कबूल करेगा। (मु.28.1.68 पृ.3 आदि)	Download
274	बाप के गुण	हम उस बाप के बच्चे हैं जिसका कोई बाप नहीं। हमारा टीचर वह है जिसका कोई टीचर नहीं। उनसे वर्सा मिलना है। (मु.19.8.72 पृ.4 मध्य)	Download
275	बाप के गुण	हम नम्बर वन बनते हैं तो फिर सेकिंड-थर्ड की पूजा क्यों करें? (मु.12.8.68 पृ.3 मध्यादि)	Download
276	बाप के गुण	मम्मा-बाबा यह (ल.ना.) बनते हैं तो हम फिर कम बनेंगे क्या? (मु.14.3.70 पृ.3 अंत)	Download

277	बाप के गुण	तो देखो, ऊँच ते ऊँच भगवान और पढ़ाते देखो किन्हों को हैं? अहिल्याओं-कुब्जाओं को।(मु.7.11.73 पृ.3 आदि)	Download
278	बाप के गुण	बाप कहते हैं मैं जानता हूँ तुमको कितने धक्के खाने पड़ते हैं। समझते हैं भगवान कोई न कोई रूप में आवेगा। कब बैल पर सवारी भी दिखाते हैं। अब बैल पर सवारी कोई होती थोड़े ही है। (यह तो अड़ियल स्वभाव की बात है) (मु.17.2.69 पृ.3 मध्य)	Download
279	बाप के गुण	बाप है ज्ञान का सागर, उनके भेंट में फिर है अज्ञान का सागर भक्तिमार्ग के गुरू लोग। (मु.25.2.68 पृ.2 मध्य)	Download
280	बाप के गुण	जैसे आत्मा को देख नहीं सकते हैं, जान सकते हैं, वैसे ही परमात्मा को भी (ज्ञान से) जान सकते हैं। देखने में तो आत्मा और परमात्मा दोनों एक जैसी बिंदी, बाकी तो है सारी नॉलेज । यह बड़ी समझ की बातें हैं। (मु.11.1.66 पृ.3 मध्यांत)	Download
281	बाप के गुण	बिगर अर्थ बकने वाले को चर्या कहा जाता है। ...बाप आकर (भक्तिमार्ग की) इन चर्याई से निकालते हैं (अर्थ बताकर)। (मु.29.1.70 पृ.3 अंत) मु.28.1.75 पृ.3 अंत,	Download
282	बाप के गुण	कभी भी कुछ भी हो जाए बाप नहीं निकालेंगे। बच्चे कहते हैं प्यार करो या ठुकराओ हम तेरे दर से नहीं निकलेंगे। बाप कहते हैं मैं ठुकराता कहाँ हूँ? मैं तो प्यार करता हूँ। (मु.29.4.73 पृ.3 अंत)	Download
283	बाप के गुण	बाप तो कहते मैं बिल्कुल साधारण हूँ। तो साहुकार कोई विरले आते हैं ... परंतु अंत में। (मु.21.1.73 पृ.2 अंत)	Download
284	बाप के गुण	बाप तो कहेंगे ना बाप चमाट भी मारेंगे। मम्मा मीठी होती है। बाकी बाबा कभी-2... परंतु हाथ तो नहीं चलाते। (मु.17.4.72 पृ.3 मध्यांत)	Download
285	बाप के गुण	बाप हैविन का मालिक बनाने लिए पढ़ाते देखो कितना साधारण हैं। ऐसे बाप को याद करना भी भूल जाते हैं। (मु.1.11.73 पृ.3 आदि)	Download
286	बाप के गुण	अभी हम संगमयुग पर हैं। न उस राजाई के हैं, न इस राजाई के हैं। हम बीच में हैं, जा रहे हैं। खिवैया भी है निराकार, बोट भी निराकार है। बोट को खैंच कर परमपिता परमात्मा ले जाते हैं। बाप सभी बच्चों को साथ में ले जावेंगे। (मु.17.1.69 पृ.3 मध्यांत)	Download
287	बाप के गुण	बाप भी है गुप्त, नॉलेज भी गुप्त, तुम्हारा पुरुषार्थ भी है गुप्त। (मु.13.9.68 पृ.2 अंत)	Download
288	बाप के गुण	बाप है ही गरीब निवाज़। भारतवासी ही सबसे गरीब हैं। (मु.7.1.74 पृ.3 मध्य)	Download
289	बाप के गुण	बाबा को घड़ी-2 प्वाइंट रिपीट करनी पड़ती है; क्योंकि नए बहुत आते हैं। (मु.18.2.68 पृ.3 मध्यादि)	Download

290	बाप के गुण	बाबा ने समझाया है गरीब की एक पाई, साहुकार का एक रुपया समान है। उनको वर्सा उतना ही मिलता है। बाप है ही गरीब निवाज़। इसलिए गायन भी है अजामिल जैसे पापी, अहिल्याएँ। साहुकार का नाम नहीं गाया जाता। (मु.29.11.76 पृ.2 मध्यादि)	Download
291	बाप में विशेष शक्तियाँ	तुम्हारे दुश्मन भी बहुत हैं। तुम्हारी सारी दुनिया दुश्मन बनती है; क्योंकि तुम गुप्त रीति अपना राज्य लेती हो। (मु.20.5.76 पृ.3 अंत)	Download
292	बाप में विशेष शक्तियाँ	अभी जो कुछ भी लेना चाहो वह ले सकते हैं, फिर बाद में बाप के रूप का स्नेह बदल कर सुप्रीम जस्टिस का रूप हो जावेगा। जस्टिस के आगे चाहे कितना भी स्नेही सम्बंधी हो; लेकिन लॉ इज़ लॉ। अभी लव का समय है, फिर लॉ का समय होगा। (अ॰वा॰30.5.73 पृ.80 मध्य)	Download
293	बाप में विशेष शक्तियाँ	लक्ष्य तो सबका यह है कि बाप समान बने..... अब प्रैक्टिकल में क्या है? बाप के समान सामना करने की शक्ति नहीं है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अंतर है। ... 50 प्रतिशत अंतर तो बहुत है। ...अंतिम समय का सामना करने लिए अब तैयार होना है ना। (अ॰वा॰13.3.78 पृ.1 आदि)	Download
294	बाप में विशेष शक्तियाँ	स्थापना के आदि समय तो सारी दुनिया एक तरफ और एक आत्मा दूसरी तरफ थी ना। यह तो पीछे सभी सहयोगी बने। पहले निमित्त तो एक आत्मा बनी ना। (अ॰वा॰ 9.4.73 पृ.19 अंत, 20 आदि)	Download
295	बाप में विशेष शक्तियाँ	इस समय विशेष आत्माएँ जस्टिस के रूप में हैं। (अ॰वा॰22.5.73 पृ.1 आदि)	Download
296	बाप में विशेष शक्तियाँ	उस योग और ज्ञान से कुछ बल मिलता है हद का। यहाँ इस योग और ज्ञान से बल मिलता है बेहद का; क्योंकि बाप सर्वशक्तिवान अथॉरिटी है। (मु.19.1.75 पृ.1 आदि) मु.17.1.00 पृ.1 मध्य,	Download
297	बाप के कर्तव्य	बाप के पास तो सिवाय बच्चों के और तो कोई है नहीं जिनको कि याद करें। तुम्हारे लिए तो बहुत हैं। तुम्हारी बुद्धि इधर-उधर जाती है, धंधे आदि में बुद्धि जाती है। हमारे लिए तो कोई धंधा आदि भी नहीं है। तुम अनेक बच्चों के अनेक धंधे हैं। हमारा तो एक ही धंधा है। (मु.18.6.67 पृ.2 अंत) मु.18.6.75 पृ.2 मध्य,	Download
298	बाप के कर्तव्य	फर्स्ट विशेष ता क्या हुई जो आत्माओं को बाप का भी मालिक बनाती है, वो बाप से भी श्रेष्ठ बनते हैं? वह विशेष ता है बाप को प्रत्यक्ष करना, बाप के सम्बंध में समीप लाना, बाप के वारिस बनाना। यह आप पहली रचना का कर्तव्य है। बाप बच्चों द्वारा ही प्रत्यक्ष होते हैं। (अ॰वा॰ 18.6.73 पृ.101 मध्य)	Download

299	बाप के कर्तव्य	विनाश ज्वाला प्रज्वलित कब और कैसे हुई? कौन निमित्त बना? क्या शंकर निमित्त बना या यज्ञ रचने वाले बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने? जब से स्थापना का कार्य-अर्थ यज्ञ रचा तब से स्थापना के साथ-2 यज्ञ कुण्ड से विनाश की ज्वाला भी प्रकट हुई।... तो जो प्रज्वलित करने वाले हैं तो उन्हों को सम्पन्न भी करना है, न कि शंकर को। शंकर समान ज्वाला रूप बनकर प्रज्वलित की हुई विनाश की ज्वाला को सम्पन्न करना है। (अ॰वा॰3.2.74 पृ.13 अंत)	Download
300	बाप के कर्तव्य	बाप विनाश उनसे कराते हैं जिस पर कोई पाप न लगे। (मु.29.4.70 पृ.1 मध्य)	Download
301	बाप के कर्तव्य	सूर्य निकलता है तो उसकी तपत हो जाती है। (मु.22.6.73 पृ.1 आदि)	Download
302	बाप के कर्तव्य	फैमिली प्लानिंग की ड्यूटी तो गीता के कैनन(कायदे) अनुसार बाप की ही है। ... गीता है ही फैमिली प्लानिंग का शास्त्र। (मु.21.4.69 पृ.1 आदि)	Download
303	बाप के कर्तव्य	नए-2 पुरानों से तीखे चले जाते हैं। बाप से पूरा योग लग जाए तो बहुत ऊँचा चला जावेगा। सारा मदार है ही योग पर। (मु.4.9.74 पृ.2 आदि)	Download
304	बाप के कर्तव्य	बाबा कहते हैं बाप को निरंतर याद करना, इसमें तुम मेरे से भी जास्ती तीखे जाते हो; क्योंकि इनके ऊपर तो मामला बहुत है। (मु.2.12.70 पृ.2 मध्यादि)	Download
305	बाप के कर्तव्य	बाप आकर गुलामपने से छुड़ाते हैं। ..... गुरु लोगों की जंजीरों , फिर भक्ति के(की) ज़ंजीरों से बाप आकर छुड़ाते हैं। (मु.25.6.73 पृ.2 अंत)	Download
306	बाप के कर्तव्य	डूबने से ...निकालने वाला एक ही बाप है, फँसाने वाले हैं अनेक। (मु.24.2.69 पृ.3 मध्यादि) मु.30.1.74 पृ.3 मध्य,	Download
307	बाप के कर्तव्य	(आत्माएँ) यहाँ के संस्कार अनुसार ही वहाँ जाकर जन्म लेंगे। जैसे लड़ाई वालों की बुद्धि (में) लड़ाई का ही संस्कार रहते(रहता) है तो वह संस्कार ले जाते हैं, लड़ने बिगर रह न सकेंगे। (मु.9.2.68 पृ.2आदि) मु.6.2.74 पृ.2आदि,	Download
308	बाप के कर्तव्य	वह सिर्फ अपना-2 धर्म स्थापन करते हैं, राजधानी स्थापन नहीं करते हैं। एक परमपिता परमात्मा ही राजधानी स्थापन करते हैं। (मु.3.4.69 पृ.2 मध्यादि)	Download
309	बाप के कर्तव्य	ईश्वर का अंत पाया जा सकता है; परंतु उनकी रचना का अंत पाना मुश्किल है। (मु.25.9.73 पृ.4 अंत)	Download
310	बाप के कर्तव्य	तुम हो जैसे लाइट हाउस, सभी को ठिकाने लगाने वाले। ... ऐसी कोई बात नहीं जो तुमसे लागू नहीं होती है। (मु.14.4.68 पृ.3 अंत)	Download
311	बाप के कर्तव्य	मुख से कब कुवचन न निकलें। बाप की तो बात और है- उनको तो शिक्षा देनी होती है। (मु.3.2.67 पृ.3 आदि) मु.3.2.75 पृ.3 आदि,	Download

312	बाप के कर्तव्य	इनके (ब्रह्मा के) लिए भी कहते हैं इनके ऊपर तो बहुत मामले हैं। (मु.28.11.71 पृ.3 अंत)	Download
313	बाप के कर्तव्य	सभी से जास्ती झंझट बाप के ऊपर रहता है। (मु.28.11.71 पृ.3 अंत)	Download
314	बाप के कर्तव्य	हम महिमा थोड़े ही करेंगे। यह तो उनकी ड्यूटी है पतित से पावन बनाने की। ...मैं पावन बनाने बिगर रह नहीं सकता हूँ। ...सेकेण्ड ब सेकेण्ड जो पास होता, ड्रामा मेरे से कराता है। मैं परवश हूँ। (मु.3.2.84 पृ.2 आदि) मु.16.2.99 पृ.2 मध्य ,	Download
315	बाप की पहचान (ज्ञान सागर बाप)	भल कितने भी बड़े-2 सन्यासी, पंडित आदि हैं; परंतु तीसरा नेत्र देने की ताकत कोई में भी नहीं है। यह तीसरा नेत्र देने लिए ज्ञान सूर्य बाप को आना पड़ता है। (मु.4.10.68 पृ.1 अंत)	Download
316	बाप की पहचान (ज्ञान सागर बाप)	बुद्धि में फुल नॉलेज आने से फुल वर्ल्ड की राजाई मिल जावेगी। (मु.2.1.74 पृ.1 मध्यादि)	Download
317	बाप की पहचान (ज्ञान सागर बाप)	भील अर्जुन से भी तीखा हो गया। बाहर में रहने वालों ने तीर पूरा जीत लिया। तब तो बाप कहते हैं घर वाले इतना उठा न सकेंगे जितना कि बाहर वाले। कहा जाता है घर की गंगा को मान नहीं देते। (मु.3.8.68 पृ.3 मध्यादि)	Download
318	बाप की पहचान (ज्ञान सागर बाप)	जिसमें जास्ती नॉलेज होगी वह ऊँच पद पावेगा। (मु.25.1.68 पृ.1 अंत)	Download
319	बाप की पहचान (ज्ञान सागर बाप)	मैं स्वर्ग का रचयिता तुमको राजतिलक न दूँगा तो कौन देगा? कहते हैं ना तुलसीदास चंदन घिसे...। यह बात यहाँ की है। (मु.5.3.73 पृ.3 आदि)	Download
320	बाप की पहचान (ज्ञान सागर बाप)	जब ज्ञान घिसेंगे तब ही राजतिलक के लायक बनेगें । (मु.8.8.73 पृ.3 अंत)	Download
321	बाप की पहचान (ज्ञान सागर बाप)	बाप में ज्ञान और योग दोनों हैं। (मु.2.1.69 पृ.3 आदि)	Download
322	बाप की पहचान (ज्ञान सागर बाप)	ऐसे नहीं कि मंत्र दे और चला जाता हूँ। बच्चों को देखना भी पड़ता है कि कहाँ तक सुधारा और फिर सुधारते भी हैं। सेकेंड का ज्ञान देकर फिर चले जाएँ तो ज्ञान का सागर नहीं कहा जाए। (मु.9.10.79 पृ.2 मध्य)	Download
323	बाप की पहचान (ज्ञान सागर बाप)	तुम कोई जवाहरी दादा के पास थोड़े ही आए हो। तुम तो शिवबाबा के पास आए हो। ज्ञान का सागर तो वह है ना। (मु.14.12.71 पृ.4 आदि)	Download
324	बाप की पहचान (ज्ञान सागर बाप)	वह परमपिता परमात्मा कहते हैं मैं ज्ञान का सागर हूँ; परन्तु मैं निराकार ऊपर बैठ प्रेरणा से कैसे पढ़ाऊँ! ऐसे तो कब पढ़ाई होती नहीं। प्रोफेसर घर में बैठ जाए तो प्रेरणा से पढ़ा सकेंगे? ज़रूर स्कूल में आना पड़े ना। (मु.ता॰11.8.83 पृ.1 अंत)	Download
325	बाप की पहचान (ज्ञान सागर बाप)	यह नॉलेज मैं ही सम्मुख सुना सकता हूँ। (मु.16.2.74 पृ.3 आदि)	Download
326	बाप की पहचान (ज्ञान सागर बाप)	बाप भी हमको नित्य नई-2 बातें सुनाते जाते हैं। पहले हल्की पढ़ाई थी। अभी तो बाप गुह्य-2 प्वाइंट्स सुनाते जाते हैं। ज्ञान का सागर है ना। (मु.8.8.68 पृ.2 अंत)	Download

327	बाप की पहचान (ज्ञान सागर बाप)	ऐसे बहुत बच्चे हैं जो ब्राह्मणी से भी तीखे हैं। ...जगदीश को भी कोई ने पढ़ाया। वो पढ़ाने वाले से भी तीखा हो गया। (मु.17.8.69 पृ.3 मध्यांत)	Download
328	बाप की पहचान (ज्ञान सागर बाप)	अब सर्विस का लक्ष्य यही हुआ कि बाप (को) प्रत्यक्ष करना। वह तब कर सकेंगे जब पहले अपने को ज्ञान-योग के प्रत्यक्ष प्रमाण बनावेंगे। जितना स्वयं को प्र(त्यक्ष) प्रमाण बनावेंगे उतना बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे। (अ॰वा॰6.8.70 पृ.2 अंत)	Download
329	बाप की विचित्रता	चाहे कितनी भी पब्लिक हो; लेकिन बाप पब्लिक में भी पर्सनल मुलाकात भी करते हैं; लेकिन गुह्यता के रहस्य को कोई समझ नहीं सकेंगे। (अ॰वा॰30.4.77 पृ.113 आदि)	Download
330	बाप की विचित्रता	यह मेरे महावाक्यों की कोई कॉपी नहीं कर सकते। (मु.29.5.71 पृ.1 अंत)	Download
331	बाप की विचित्रता	तुमने बाप द्वारा बाप को जाना है। बाप ने समझाया है फादर शोज़ सन फिर सन शोज़ फादर। ऐसा कायदा है। (मु.15.9.73 पृ.1 आदि)	Download
332	बाप की विचित्रता	बाप है विचित्र तो उनकी नॉलेज भी विचित्र है। (मु.1.5.73 पृ.1 मध्यांत)	Download
333	बाप की विचित्रता	बाप कहते हैं मेरे द्वारा मेरे को जानने से तुम सबको जान जावेंगे; क्योंकि मुझे कहते भी हैं मनुष्य सृष्टि का बीज रूप। (मु.30.11.73 पृ.1 आदि)	Download
334	बाप की विचित्रता	स्थापना की बातें तो वंडरफुल हैं। बाप पहले-2 अपनी पहचान देते हैं। यह समझानी और कोई दे न सके। (मु.ता॰26.2.68 पृ.2 मध्यादि)	Download
335	बाप की विचित्रता	गाया हुआ है जिन्हों को 3 पैर पृथ्वी के न मिले थे वे सारे विश्व के मालिक बन गए। मनुष्य थोड़े ही समझते हैं। (मु.1.5.73 पृ.2 मध्यादि)	Download
336	बाप की विचित्रता	अख़बारों में भूँ-2 करते रहते हैं। करने दो। तुम कुछ भी न करो। नहीं तो फिर (और) ही जास्ती भूँ-2 करेंगे। गाया हुआ है कलंकीधर पिछाड़ी कुत्ते भौंकते हैं। तुम अब कलंकीधर बन रहे हो। पतित मनुष्य तुम्हारे पीछे भौंकेंगे; क्योंकि नई बात है। (मु.26.6.72 पृ.4 अंत)	Download
337	बाप की विचित्रता	एकदम काँटों को बैठ शिक्षा देते हैं। प्रवेश भी काँटे में किया है। तो काँटों पर भी प्यार है ना, तब तो उनको फूल बनाते हैं। .....नम्बर वन काँटे में आकर नम्बर वन फूल बनाता हूँ। (मु.27.2.68 पृ.2 अंत)	Download
338	बाप की विचित्रता	निराकार बाप को सौदागर, जादूगर भी कहते हैं। (मु.8.7.65 पृ.1 अंत)	Download
339	बाप की विचित्रता	मैं जो हूँ, जैसा हूँ, मुझे कोई भी नहीं जानते हैं। जब मैं आकर अपनी पहचान दूँ तब मुझे जाने। (मु.19.1.71 पृ.1 आदि)	Download
340	बाप की विचित्रता	बाप तोबड़ा गरीब निवाज है। गरीबों का ही लेंगे। साहूकारों का लेवें तो फिर इतना देना पड़े। (मु.4.9.74 पृ.3 अंत)	Download

341	बाप की विचित्रता	धरती का करके माप कर भी सकें, सागर का तो कर नहीं सकते हैं। आकाश का और सागर का अन्त कोई पा नहीं सकते हैं। (मु.27.8.69 पृ.2 अंत)	Download
342	बाप की विचित्रता	बाप भी कहते, मेरे को कोई विरला ही जानते हैं। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, तुम बच्चों में भी विरले एक्युरेट रीति जानते हैं। (मु.13.10.68 पृ.2 अंत)	Download
343	बाप की विचित्रता	तुम्हारे मिट-मायट (मित्र-संबंधी) यह नहीं जानते कि तुम क्या पढ़ाई पढ़ते हो। ...क्योंकि यह विचित्र पढ़ाई है ना। विचित्र बाप ही पढ़ाते हैं। (मु.8.11.68 पृ.1 मध्य)	Download
344	बाप की विचित्रता	बाप तो है विचित्र। वह तुम्हारे सामने बैठे हैं, तब तो नमस्ते करते हैं। ...मेरे चित्र का कोई नाम बताओ। बस, शिवबाबा ही कहेंगे। (मु.ता॰24.8.70 पृ.1 अंत)	Download
345	बाप की विचित्रता	वह लौकिक बाप समझेगा बच्चा बड़ा हो अपने धंधे में लग जाए फिर हम बूढ़े होंगे तो हमारी सेवा करेगा। यह बाप तो सेवा नहीं माँगते हैं। यह है ही निष्काम। .....बाप तो कहते हैं मैं निष्काम सेवा करता हूँ। मैं राजाई नहीं करता हूँ। (मु.29.1.81 पृ.2 अंत) मु.14.1.96 पृ.2 अंत, 3 आदि,	Download
346	बाप की लौकिक आयु	बाप आत्माओं को बुलाते हैं यह समझाने लिए कि तुम ज्ञान में आते थे ना। तुमको कितना समझाया था कि बाप को याद करो, पवित्र बनो। फिर भी न माना। अब तुम्हारा पद भ्रष्ट हो गया। आगे जो मरे थे फिर भी बड़े हो कोई 20/25 के ही हुए होंगे। ज्ञान भी ले सकते हैं। (मु.16.2.67 पृ.1 अंत)	Download
347	बाप की अलौकिक आयु	ब्रह्मा की आयु 100 वर्ष (=10वर्ष)। मैं इनके वानप्रस्थ अवस्था (60=6 वर्ष अर्थात् 1976) में प्रवेश करता हूँ। (मु.16.7.68पृ.1मध्यादि)मु.17.7.74 पृ.1मध्य,	Download
348	बाप की अलौकिक आयु	(बेहद के ज्ञान) गर्भ में भी 5/6 मास बाद (अर्थात् सन् 69 से 5/6 वर्ष बाद 1976 के प्रत्यक्षता वर्ष में) आत्मा प्रवेश करती है तब ही चुर्र-पुर्र होती है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। (मु.21.8.68 पृ.3 आदि)	Download
349	बाप की अलौकिक आयु	जबकि गाया हुआ है प्रजापिता ब्रह्मा भी 100 वर्ष बाद चले जाते हैं। बाप आते ही हैं 60 वर्ष के बाद। ब्रह्मा चला जावेगा तो बाप भी चला जावेगा। तो 40 वर्ष बैठ समझाते हैं। (मु.17.9.68 पृ.1 अंत)	Download
350	बाप की फुटकर पहचान	भगवान कोई लाखों-करोड़ों को नहीं पढ़ाते हैं। (मु.7.4.72 पृ.3 आदि)	Download

351	बाप की फुटकर पहचान	यह पाठशाला अजुन बहुत वृद्धि को पावेगी। विघ्न आदि नहीं पड़े तो बढ़ जावे इसलिए यह विघ्न पड़ते हैं। 500 इकट्ठे थोड़े ही बैठ पढ़ते हैं, फिर तो माइक्रोफोन लगाना पड़े। माइक्रोफोन से बुढ़ियाँ क्या समझेंगी; इसलिए लिमिट है। जिनको बाप सम्मुख देख भी सके। बाप देखते हैं तो आत्माओं को देखते हैं, शरीरों को नहीं। ज़ोर से देखेंगे तो उनको शरीर ही भूल जावेगा। चुम्बक है न। तो जैसे अनकॉन्सस होता जावेगा। (मु.27.6.73 पृ.3 अंत) मु.25.6.78 पृ.3 अंत ,	Download
352	बाप की फुटकर पहचान	बड़ी-2 सभाओं में बाबा तो नहीं जा सकता। वो बच्चों का काम है। बच्चों से सवाल-जवाब करेंगे। सन्यासी आदि तो बाप के आगे उठेंगे भी नहीं। उनको तो मान चाहिए। बाबा का पार्ट तो बड़ा वंडरफुल है। (मु.14.10.65 पृ.5 अंत) मु.12.10.72 पृ.2 अंत,	Download
353	बाप की फुटकर पहचान	84 जन्मों का राज़ परमपिता परमात्मा के सिवाय कोई समझा न सके। (मु.24.9.73 पृ.3 मध्यादि)	Download
354	बाप की फुटकर पहचान	दिन-प्रतिदिन देखेंगे बाबा मधुबन से बाहर कहाँ जावेंगे ही नहीं। (मु.29.11.72 पृ.2 आदि)	Download
355	बाप की फुटकर पहचान	सन्यासी लोग शास्त्रों को बहुत मानते हैं। बड़ी गाड़ी अथवा ट्रक्स में भरकर रस्सियाँ डालकर फिर सारी परिक्रमा देते हैं।.....वैसे ही जगन्नाथ में फिर देवी-देवताओं के चित्र हैं। उन्हों को भी रथ में बिठाकर परिक्रमा दिलाते हैं। यह उन्हों का मान है। (बात है संगम की) (मु.28.4.73 पृ.1 मध्यांत)	Download
356	बाप की फुटकर पहचान	यहाँ रहकर पुरुषार्थ करने वालों से वहाँ घर में रह पुरुषार्थ करने वाले तीखे हो सकते हैं। (मु.5.4.71 पृ.2 आदि)	Download
357	बाप की फुटकर पहचान	अरविन्द घोश अकेला भागा था। फिर उसमें आकर अच्छी सोल ने प्रवेश किया। अब कितनी वृद्धि हो गई है। यह तो होता ही है। (मु.13.10.73 पृ.3 मध्यादि)	Download
358	बाप की फुटकर पहचान	बाप कहते हैं जो धक्के खाते हैं वे मुझे नहीं जानते हैं। उनको पता नहीं है कि बाप पढ़ाकर वरसा दे रहे हैं, विश्व का मालिक बनाने। तुम अभी धक्के खाने से छूट गए हो। (मु.2.6.73 पृ.3 मध्य)	Download
359	बाप की फुटकर पहचान	भगवान को जितना रुलाया है उतना और किसको नहीं रुलाया है। (मु.30.9.74 पृ.3 मध्य)	Download
360	बाप की फुटकर पहचान	शिवबाबा कहते हैं हम तो हैं ही रमतायोगी। जिसमें भी चाहूँ तो जाकर कल्याण कर सकता हूँ। (मु.24.4.70 पृ.3 अंत)	Download
361	बाप की फुटकर पहचान	अमेरिका के भी अख़बार में पड़ गया कि एक कलकत्ते का जवाहरी कहता है कि हमको 16,108 रानियाँ चाहिए, अभी 400 मिली हैं। (मु.30.8.73 पृ.3 आदि)	Download
362	बाप की फुटकर पहचान	तुम्हारा परमपिता परमात्मा के साथ क्या संबंध है? जब तक इस बात का एक्युरेट जवाब लिखकर न दें तब तक बाबा का मिलना ही फालतू है। (मु.26.3.87 पृ.3 अंत)	Download

363	बाप की फुटकर पहचान	जैसे अरविन्द घोश था, कितने में महिमा निकली। ...उन द्वारा छोटा मठ स्थापन हुआ। कितनी उनकी महिमा है। शादी की हुई थी, बाल-बच्चे भी थे। (मु.6.8.73 पृ.1 मध्यांत)	Download
364	बाप की फुटकर पहचान	वह है हैविनली गॉड फादर तो ज़रूर हैविन के गेट खोलने आवेंगे। .....फिर हम नर्क में क्यों पड़े हैं? (मु.8.4.71 पृ.2 अंत)	Download
365	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियों को वर्सा देते हैं। ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा ब्राह्मण कुल की रचना रचते हैं। (मु.24.10.66 पृ.3 मध्य)	Download
366	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	प्रजापिता ब्रह्मा वह दोनों तो नामी-ग्रामी हैं। प्रजापिता ब्रह्मा अभी तुमको मिलता है। (मु.19.3.68 पृ.3 आदि)	Download
367	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	बाप और दादा दोनों कम्बाइंड हैं। दो बच्चे इकट्ठे जन्मते हैं ना। दो का पार्ट इकट्ठा है। (मु.15.6.72 पृ.3 मध्य)	Download
368	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	कपिल अर्थात् जोड़ी। बापदादा, मातपिता यह कपिल जोड़ी है ना। (मु.26.5.65, 26.5.72 पृ.2 अंत)	Download
369	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	बाप और दादा दोनों ही निरअहंकारी हैं। (मु.15.7.72 पृ.1 मध्य)	Download
370	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	बाबा तो दो हैं। यह बातें कोई शास्त्र में नहीं हैं। ब्रह्मा का चित्र दिखाते हैं। बाप भी कहते हैं मैं साधारण तन ब्रह्मा द्वारा तुमको पढ़ाता हूँ। इन द्वारा स्थापना कराता हूँ। ... तो बच्चे समझते हैं दोनों को नमस्ते करनी पड़े, बापदादा नमस्ते। (मु.7.2.70 पृ.1 आदि)	Download
371	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	क्रियेटर ब्रह्मा को नहीं कहा जाता। (मु.13.2.67 पृ.2 मध्यांत)	Download
372	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	प्रजापिता ब्रह्मा भी तो अनादि है। आत्माओं का बाप इनमें आए हैं। आकर ब्रह्मा को एडॉप्ट करना पड़ता है। (मु.19.7.73 पृ.1 अंत) मु.20.7.78 पृ.1 अंत,	Download
373	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	समझाया जाता है ब्रह्मा तन से परमपिता परमात्मा ने आकर इन ब्रह्मा को भी एडॉप्ट करते हैं।..... गाया भी हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। ब्रह्मा द्वारा सभी शास्त्रों का सार सुनाते हैं। मु.11.12.83 पृ.1 अंत, 3 आदि ,	Download
374	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	बाप-दादा एक का ही नाम तो कब होता ही नहीं। (मु.6.11.71 पृ.3 मध्यादि)	Download
375	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	प्रजापिता ब्रह्मा है साकार। वह है निराकार और साकार दोनों इकट्ठे हैं। दोनों का हाइएस्ट पोजीशन है। उनसे बड़ा कोई होता ही नहीं और कितनी साधारण रीति बैठते हैं। (मु.16.12.71 पृ.3 अंत)	Download

376	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	ऊँच ते ऊँच शिवबाबा और ब्रह्मा दोनों हाइएस्ट हैं। (मु.13.6.70 पृ.3 अंत)	Download
377	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	गॉड को हाइएस्ट और लोएस्ट थोड़े ही रखना होता है। वो तो मनुष्यों को रखना होता है। (मु.2.2.67 पृ.2 आदि)	Download
378	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	प्रजापिता (ब्रह्मा) को भी क्रियेटर कहते हैं। (मु.27.7.65 पृ.2 आदि)	Download
379	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	सूक्ष्मवतनवासी को तो प्रजापिता नहीं कहेंगे । वहाँ प्रजा होती नहीं। तो ज़रूर प्रजापिता ब्रह्मा यहाँ होगा। वह ही फिर वह अव्यक्त सम्पूर्ण बनेगा। वह तो है अव्यक्त। ज़रूर व्यक्त भी चाहिए, जो फिर अव्यक्त होना है। दोनों अभी दिखाई पड़ते हैं। (मु.24.9.73 पृ.3 मध्य)	Download
380	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	ब्रह्मा तो सूक्ष्मवतन में है; परंतु प्रजापिता ब्रह्मा तो ज़रूर यहाँ का ही होगा न। (मु.25.11.73 पृ.5 मध्यांत) मु.15.11.83 पृ.2 अंत,	Download
381	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	कृष्ण को प्रजापिता नहीं कह सकते। (मु.4.11.73 पृ.1 अंत)	Download
382	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	मुझे प्र॰ ब्रह्मा ज़रूर चाहिए। ... ब्रह्मा का बाप कौन है? कोई बतावे। (मु.4.11.73 पृ.2 मध्य)	Download
383	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	मुझे ब्रह्मा ज़रूर चाहिए, तो प्र. ब्रह्मा भी चाहिए। ... यह मेरा रथ मुकर्रर है। (मु.15.11.87 पृ.3 आदि)	Download
384	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	बापदादा की भी आपस में कभी रूह-रिहान चलती है। (मु.16.3.90 पृ.3 मध्यादि)	Download
385	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	परमपिता परमात्मा ब्रह्मा तन द्वारा आदि स. दे. दे. धर्म की स्थापना करते हैं। (मु.4.6.66 पृ.1 मध्य)	Download
386	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	परमात्मा कहते हैं मैं जिस साधारण तन में आता हूँ उसका नाम ब्रह्मा पड़ता है। वह सूक्ष्म ब्रह्मा है, तो दो ब्रह्मा हो गए। (मु.28.2.98 पृ.2 आ)	Download
387	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	स्वर्ग की स्थापना करना, यह ब्रह्मा का काम नहीं, यह परमपिता परमात्मा का ही काम है। (मु.29.9.73 पृ.1 अंत) मु.ता॰18.9.83 पृ.1 अंत,	Download
388	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	ब्रह्मा है तो शिवबाबा भी है। अगर ब्रह्मा नहीं होता तो ...शिवबाबा बोलेंगे कैसे? ...ऐसे तो नहीं समझेंगे, शिवबाबा ऊपर में है। (मु.7.1.69 पृ.1 आदि)	Download

389	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	जो पिया के साथ है। सो भी दोनों बापदादा बैठे हैं। सम्मुख बैठ सुनते हैं। (मु.10.3.72 पृ.1 अंत)	Download
390	ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा आत्माएँ हैं जुदा-2	यह बाप और दादा दोनों इकट्ठे हैं। ... इनकी आत्मा भी इकट्ठी हैं। (मु.4.1.74 पृ.3 मध्य)	Download
391	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	माता-पिता हैं तो सन्मुख मिलना है। निश्चय किया, मिले नहीं और मर गया तो वर्सा नहीं मिल सकता। ऐसे बहुत हैं जो वर्सा नहीं पाते, प्रजा में चले जाते हैं। बाप कहते हैं निश्चय हो गया यह वही मात-पिता हैं तो सन्मुख में आना पड़े। फिर सर्विस कर आप समान बनाना है। मु.26.7.78 पृ.2अंत, 3आदि,	Download
392	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	ब्रह्मा से तो कुछ भी मिलने का है नहीं। वर्सा बाप से ही मिलता है इन द्वारा। बाकी ब्रह्मा की कोई वैल्यू नहीं है। (मु.3.2.67 पृ.2 अंत)	Download
393	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	रचना से कब वर्सा नहीं मिल सकता। तुम जानते हो ब्रह्मा से कुछ भी वर्सा नहीं मिल सकता। ब्रह्मा वर्थ नॉट ए पैनी हैं। (मु.25.2.67 पृ.1 अंत) मु.26.2.75 पृ.1 अंत,	Download
394	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	शिवबाबा कहते हैं बच्चे, ख्याल रखना वर्सा तुमको हमसे लेना है, ब्रह्मा से नहीं मिलना है। बिल्कुल नहीं मिलता है। स्वर्ग की राजधानी का वर्सा हमसे ही मिल सकता है। रचयिता स्वर्ग का मैं हूँ। इसको हैविनली गॉड फादर कहा जाता है। (मु.1.7.73 पृ.1 मध्यांत) मु.30.6.78 पृ.1 मध्य,	Download
395	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	इस माता को भी छोड़ो, सभी देहधारियों को छोड़ो; क्योंकि अब वर्सा बाप से लेना है। (मु.4.1.73 पृ.2 मध्यादि)	Download
396	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	तुमको मालूम है दो बाप हैं। दो से वर्सा मिलता है। तीसरा फिर होता नहीं। ब्रह्मा से कोई वर्सा थोड़े ही मिलता है। यह तो दलाल हो गया। दो से मिलता है- लौकिक और पारलौकिक। इन द्वारा बाप तुमको सिखलाते हैं, वर्सा देते हैं। (मु.1.2.68 पृ.2 मध्य)	Download
397	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	बाप से हमेशा पूरा वर्सा लेने का पुरुषार्थ करना है। जैसे मम्मा-बाबा भी उस मात-पिता से पूरा वर्सा ले रहे हैं। (मु.17.4.73 पृ.4 अंत)	Download
398	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	बड़ा भाई बाप समान हो सकता है; लेकिन भाई से कोई वर्सा नहीं मिल सकता। (अ॰वा॰3.12.83 पृ.30 अंत)	Download

399	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	धर्म स्थापकों का भी वह निराकार एक बाप है।..... क्राइस्ट को वा ब्र.वि.शं. को बैठ प्रार्थना करने से वह कुछ भी दे नहीं सकते। (मु.29.11.72 पृ.1 मध्य-मध्यांत)	Download
400	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	राजाई भी बाप बिगर तो कोई दे न सके।..... इस ब्रह्मा के पास तो कुछ भी नहीं है।..... इनका चित्र रखने की भी दरकार नहीं। (मु.27.2.70 पृ.2 आदि)	Download
401	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	ब्रह्मा को भी उड़ा देना है। शिव को भी उड़ा दिया। (मु.6.6.72 पृ.2 आदि)	Download
402	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	ब्रह्मा को सर्व का सद्गति दाता, पतित-पावन, लिबरेटर नहीं कहा जा सकता। यह शिवबाबा की ही महिमा है। (मु.6.3.76 पृ.2 आदि)	Download
403	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	फाइनल बाप, बाप है, टीचर है, सतगुरू है, यह निश्चय बुद्धि अभी नहीं है। अभी तो भूल जाते हैं। (सन् 65 की मुरली) (मु.10.12.68 पृ.1 मध्य)	Download
404	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	स्वर्ग का रचयिता कोई ब्रह्मा को नहीं कहा जाता। वास्तव में तुम्हारा गुरू ब्रह्मा नहीं है। सतगुरू है ही एक। यह ब्रह्मा भी उनसे सीख रहा है। ऐसे नहीं कि वो सीख कर मर जावेगा तो हम गद्दी पर बैठेंगे। नहीं, ऐसे होता नहीं। सतगुरू एक ही सतगुरू है। हम सब उनसे सीख कर और सद्गति को पाते हैं। (मु.25.7.65 पृ.2 अंत) मु.28.7.77 पृ.2 अंत,	Download
405	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	सद्गुरू तो एक ही है। ब्रह्मा का भी गुरू वह हो गया। विष्णु का गुरू नहीं कहेंगे। ब्रह्मा का गुरू बन उनको विष्णु देवता बनाते हैं। शंकर का भी गुरू कैसे हो सकता? शंकर तो पतित बनता ही नहीं। उनको गुरू की क्या दरकार? ब्रह्मा तो 84 जन्म लेते हैं। शंकर के थोड़े ही 84 जन्म होते हैं। ब्रह्मा की सद्गति होती है तो जाकर विष्णु बनते हैं। (मु.4.9.72 पृ.3 अंत)	Download
406	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	सतगुरू के रूप में सभी को वापिस ले जाने वाला है। वह तो गुरू एक मर जाए तो फिर दूसरे फ़ॉलोअर को गद्दी पर बिठाते हैं। यह तो व्यभिचारपना हो गया। यह बाबा तो गारंटी करते हैं मैं सभी को ले जाऊँगा। कहाँ? जिसके लिए आधा कल्प भक्ति की है। मुक्तिधाम ले जाऊँगा। (मु.25.4.78 पृ.3 अंत)	Download
407	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	यह मात-पिता, ब्रह्मा-सरस्वती दोनों कल्पवृक्ष के नीचे बैठे हैं, राजयोग सीख रहे हैं। तो ज़रूर उन्हों के गुरू चाहिए। (मु.28.1.73 पृ.2 मध्यादि)	Download

408	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	बाप के तो बच्चे बने हो। टीचर रूप में इनसे शिक्षा पा रहे हो। अंत में सतगुरू बन तुमको सच खंड में ले जावेंगे। तीनों काम प्रैक्टिकल में करते हैं। (मु.17.2.73 पृ.1 आदि)	Download
409	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	वहाँ बाप मिला नहीं, टीचर मिला नहीं, फट से गुरू बन गए। यहाँ कितने कायदे का ज्ञान है। यहाँ तुम्हारा बाप, शिक्षक, गुरू एक मैं ही हूँ। (मु.20.4.72 पृ.2 अंत)	Download
410	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	धर्म स्थापन करने वाले को गुरू कहना नम्बर वन नालायकी है। (मु.30.7.67 पृ.3 अंत)	Download
411	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	ऐसा भी कोई नहीं जो कहे कि मैं बाप भी हूँ, टीचर भी हूँ, गुरू भी हूँ। यह ब्रह्मा भी ऐसे नहीं कह सकते। एक शिवबाबा ही कहते हैं मैं सभी का बाप, टीचर, गुरू हूँ। (मु.19.10.76 पृ.1 मध्यादि)	Download
412	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	यह मूर्ति एक ही है; परंतु हैं तीनों ही अर्थात् बाप भी बनते हैं, टीचर भी बनते हैं, गुरू भी बनते हैं। (मु.28.6.84 पृ.1 आदि)	Download
413	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	जबकि यह खुद कहते हैं मेरे से वर्सा नहीं मिल सकता तो उस गांधी बापू जी से फिर क्या वर्सा मिल सकेगा! (मु.11.10.68 पृ.2 अंत) मु.1.9.04 पृ.3 मध्य,	Download
414	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	ब्रह्मा को भी पावन बनाने वाला वह एक सतगुरू है। सत बाबा, सत टीचर, सतगुरू तीनों इकट्ठे हैं। (मु.ता॰25.9.73 पृ.2 अंत)	Download
415	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	ब्रह्मा को भी वर्सा शिवबाबा से मिलता है। यह भी भाई हो गया। ... तुमको वर्सा मिलता है दादा से। (मु.16.7.73 पृ.2 मध्य)	Download
416	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	क्रियेटर तो एक ही है। बाकी सभी पढ़ रहे हैं। इसमें यह (ब्रह्मा) भी आ गया। फिर भी यह रचना हो गए ना। (मु.8.1.68 पृ.2,3)	Download
417	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	ब्रह्मा कोई क्रियेटर नहीं है। रचयिता तो एक बाप है। (मु.5.3.73पृ.1मध्य)	Download

418	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	.....तुमको मालूम है दो बाप हैं। दो से वर्सा मिलता है। ....ब्रह्मा से कोई वर्सा थोड़े ही मिलता है। यह तो दलाल हो गया। .....इन द्वारा बाप तुमको सिखलाते हैं, वर्सा देते हैं। (मु.ता॰1.2.68 पृ.2 मध्य) मु.ता॰30.1.04 पृ.2 अंत,	Download
419	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	बाबा ने समझाया है क्रियेशन से कोई वर्सा नहीं मिलता है, क्रियेशन को क्रियेटर से वर्सा मिलना है। (मु.30.08.03 पृ.1 अंत)	Download
420	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	बाबा कहता है, यह बाबा भी चला जाए... तो तुम बच्चों को फिर भी नॉलेज तो मिली हुई है कि हमको शिवबाबा से वर्सा लेना है, इनसे तो नहीं लेने का है। मु.30.8.03 पृ.2 मध्य,	Download
421	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	वह लोग समझते हैं यह ब्रह्मा को ही परमात्मा समझते हैं। ....इनसे तो वर्सा नहीं मिलता। (मु.25.3.69 पृ.3 मध्यादि)	Download
422	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	बाबा अनुभव अपना बताते हैं- शुरू में बनारस गए तो दीवालों पर गोले आदि निकालते रहते थे। समझ में कुछ भी नहीं आता था यह क्या है; क्योंकि यह तो जैसे बच्चा बन गए। (मु.21.8.73 पृ.2 आदि)	Download
423	ब्रह्मा बाप, टीचर, सतगुरू नहीं, ब्रह्मा से कुछ भी प्राप्ति नहीं	ब्रह्मा वल्द? क्योंकि ब्रह्मा भी क्रियेशन है ना। (मु.8.9.68 पृ.2 आदि)	Download
424	नया पार्ट	सभी तेरे पर सदके जावेंगे। प्रभाव निकलना तो है ना। अभी तो तेरा बहुत सामना करते हैं; क्योंकि तुम सभी के दुश्मन हो। सभी का विनाश कराय तुम राज्य लेते हो तो तेरे दुश्मन बनेंगे ना। इसमें भी पहले घर के दुश्मन बने। बाबा के भी घर वाले, मित्र-सम्बंधी आदि दुश्मन बने। (मु.17.2.73 पृ.3 आदि)	Download
425	नया पार्ट	जब तक इनका यह शरीर है तब तक नॉलेज देता रहूँगा। राजाई स्थापन हो जावेगी फिर विनाश शुरू होगा और मैं चला जाऊँगा। (मु.1.12.73 पृ.3 आदि)	Download
426	नया पार्ट	टेलिविज़न भी निकलेगा, कहाँ भी बैठ देखते रहेंगे। यह ब्रह्मा है, इसमें शिवबाबा आए हैं, शिवबाबा मुरली चलाते हैं- आगे चल यह भी निकलेगा। (सन् 65 की मुरली) (मु.26.6.70 पृ.3 अंत)	Download
427	नया पार्ट	एक दिन टेलिविज़न भी निकलेगा; परंतु सभी तो देख नहीं सकेंगे। देखेंगे बाबा मुरली चला रहे हैं। आवाज भी सुनेंगे। (मु.23.8.73 पृ.3 आदि)	Download

428	नया पार्ट	बाप नहीं(न हो) तो बच्चों को कैसे सावधान करेंगे? मुरली द्वारा, टेप द्वारा समझावेंगे। फिर टेलीविज़न होगा तो सामने खड़े होकर कहेंगे। नाम भी लेंगे तुम फलाने-2 आपस में लून-पानी हो लड़ते हो। (मु.31.7.68 पृ.2 अंत)	Download
429	नया पार्ट	तुम तो विश्व के भी मालिक बनते हो तो ब्रह्माण्ड के भी मालिक बनते हो; इसलिए बाप तुमको नमस्ते करते हैं। (मु.5.9.70 के बाद रा.क्ला. पृ.1 अंत)	Download
430	नया पार्ट	यह डबली लोहे की। इनमें बैठते-2 आखरीन यह डबली भी सोने की हो जावेगी। हीरे जैसा बन जावेंगे। हीरे जैसा जन्म भी हीरा ही देंगे ना। (मु.2.6.69 पृ.3 मध्य)	Download
431	नया पार्ट	तुम पवित्र बनते हो तो तेरी कितनी महिमा होती है। तेरे द्वारा मनुष्यों का 21 जन्म के लिए कल्याण हो जाता है। सर्व मनोकामनाएँ 21 जन्मों के लिए पूर्ण हो जाती हैं। (मु.17.2.73 पृ.1 मध्य)	Download
432	नया पार्ट	घबड़ाओ मत! बैकबोन बापदादा सामना करने के लिए किसी भी व्यक्त तन द्वारा समय पर प्रत्यक्ष हो ही जावेंगे और अब भी हो रहे हैं। (अ॰वा॰16.1.75 पृ.2 आदि)	Download
433	नया पार्ट	इस ड्रामा में तुम्हारा है हीरो-हीरोइन का पार्ट। तुम विश्व के मालिक बनते हो। यह नशा कब और कोई में हो न सके। (मु.2.5.68 पृ.2 अंत)	Download
434	नया पार्ट	साकार में सर्व आत्माओं की नज़र इस महान स्थान पर ही जा रही है और जाएगी। ... विश्व के इसी श्रेष्ठ कोने से ही सदाकाल का जीयदान मिलना है। ... ऐसे ही यह आध्यात्मिक ख़ज़ानों की प्राप्ति का स्थान जो अभी गुप्त है, इसको अनुभव के नेत्र द्वारा देख ऐसे ही समझेंगे जैसे गँवाया हुआ, खोया हुआ गुप्त ख़ज़ाने का स्थान फिर से मिल गया है। ... इसको तो खूब प्रसिद्ध करो तो विचित्र बाप, विचित्र लीला और विचित्र स्थान यही देख-2 हर्शित होंगे। (अ॰वा॰26.1.83 पृ.57 आदि, मध्य, अंत)	Download
435	नया पार्ट	यह नया ज्ञान है- यह प्रत्यक्ष नहीं हुआ है तो ज्ञान दाता कैसे प्रत्यक्ष हो? पहले ज्ञान आता है फिर दाता आता है। तो ज्ञान दाता ऊँचे ते ऊँचा है या एक ही वह ज्ञान दाता है, यह सिद्ध कैसे होगा? इस नए ज्ञान से ही सिद्ध होगा। आत्माएँ क्या कहतीं और परमात्मा क्या कहता है, यह अंतर जब तक मनुष्यों की बुद्धि में न आए तब तक जो भी तिनके के सहारे पकड़े हुए हैं वह कैसे छोड़ेंगे?...लेकिन जो फाउंडेशन है, नवीनता है, बीज है, वह है नया ज्ञान। ... सत्य ज्ञान की अथॉरिटी है, यह प्रत्यक्षता अभी रही हुई है। जो भी आते हैं वो समझें कि यह नया ज्ञान, नई बात है।(अ॰वा॰1.6.83 पृ.235 आदि)	Download

436	नया पार्ट	आकार रूप में भी मिलन मनाते फिर भी साकार रूप द्वारा मिलने की शुभ आशा सदा ही रहती है। ... हमें तो बोल द्वारा मुलाकात नहीं कराई। बापदादा भी हरेक बच्चे से दिल भर-2 के मिलने चाहते हैं; लेकिन समय और माध्यम को देखना पड़ता है। ... साकार सृष्टि में साकार तन द्वारा मिलना होता है तो साकारी दुनिया और साकार शरीर के हिसाब कोे देखना पड़ता है। (अ॰वा॰24.2.83 पृ.83 आदि)	Download
437	नया पार्ट	फॉलो फादर करना तो आता है ना। ऐसे तो नहीं सोचते हम भी शरीर छोड़ अव्यक्त बन जावें। इसमें फॉलो नहीं करना। ब्रह्मा बाप फरिश्ता बना ही इसलिए कि अव्यक्त रूप का एग्जाम्पल देख फॉलो सहज कर सको। साकार रूप में न होते हुए भी फरिश्ते रूप से साकार रूप समान ही साक्षात्कार कराते हैं ना।... जैसे अव्यक्त ब्रह्मा बाप साकार रूप की पालना दे रहे हैं, साकार रूप की पालना का अनुभव करा रहे हैं, वैसे आप व्यक्त में रहते अव्यक्त फरिश्ते रूप का अनुभव करो। (अ॰वा॰13.3.81 पृ.43 आदि)	Download
438	नया पार्ट	तुमको तो सिर्फ एक ईश्वर से ही पढ़ना है। बाप जो पढ़ावे, सिखावे ओरली पढ़ना है। (मु.17.3.68 पृ.1 आदि)	Download
439	नया पार्ट	कोई भी पार्ट सदा एक जैसा नहीं चलता, बदलता है आगे बढ़ाने लिए। तो अब बापदादा विशेष व्यक्त रूप से अव्यक्त मुलाकात करने का सहज वरदान दे रहे हैं। इस नए वर्ष के पहले मास को विशेष वरदान है। ... अब व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन भी समाप्त होता जावेगा। फिर क्या करेंगे? मिलन नहीं मनावेंगे? अल्पकाल के मिलन के बजाय सदाकाल के मिलन के अनुभवी बन जाएँगे। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे बिल्कुल समीप, सम्मुख मिलन मना रहे हैं। ..... तो इस वर्ष को विशेष पुरुषार्थ में तीव्रता लाने का वर्ष समझ मनाना। (अ॰वा॰24.12.72 पृ.387 आदि)	Download
440	नया पार्ट	बाप भी साकार से आकारी बना, आकारी से फिर निराकारी और फिर साकारी बनेंगे। (अ॰वा॰15.9.74 पृ.131 मध्य)	Download
441	नया पार्ट	अभी यह है बहुत जन्मों के अंत का जन्म। हमने इसमें प्रवेश किया है, प्रवेश कर तुम बच्चों को समझाता हूँ जब तक इनका शरीर है तब तक तुमको ज्ञानामृत पीना है। (मु.9.11.72 पृ.2 मध्य)	Download
442	नया पार्ट	बापदादा साथ देने में नहीं छिपे; लेकिन साकार दुनिया से छिपकर अव्यक्त दुनिया में उदय हो गए। साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, यह तो वायदा है ही। यह वायदा कभी छूट नहीं सकता। इसलिए तो ब्रह्मा बाप इंतजार कर रहे हैं, नहीं तो कर्मातीत बन गए तो जा सकते हैं। बंधन तो नहीं है ना; लेकिन स्नेह का बंधन है। (अ॰वा॰7.5.84 पृ. 298 अंत, 299 आदि)	Download

443	नया पार्ट	साकार सृष्टि पर इस साकारी नेत्रों द्वारा दोनों बाप को देखना, उनके साथ खाना-पीना, चलना, बोलना, सुनना, हर चरित्र का अनुभव करना, विचित्र को चित्र में देखना- यह श्रेष्ठ भाग्य ब्राह्मण जीवन का है। (अ॰वा॰3.5.84 पृ.287 अंत)	Download
444	नया पार्ट	आत्मा ने कहा गॉड फादर। तो ज़रूर मिलना चाहिए। फादर सिर्फ कहे और कब मिले ही नहीं तो वह फादर कैसे हो सकता? सारी दुनिया की जो भी आत्माएँ हैं, सबसे मिलते हैं। सब बच्चों की जो आश है वह पूर्ण करते हैं। (मु.28.6.84 पृ.1 मध्यांत)	Download
445	नया पार्ट	जैसे बाप विचित्र है, विचित्र बाप की लीला भी विचित्र है। दुनिया वाले समझते हैं बाप चले गए और बाप बच्चों से विचित्र रूप में जब चाहें तब मिलन मना सकते हैं। दुनिया वालों की आँखों के आगे पर्दा आ गया। वैसे भी स्नेही मिलन पर्दे के अंदर अच्छा होता है। (अ॰वा॰18.1.79 पृ.231 आदि)	Download
446	नया पार्ट	चारों ओर नाम निकले। इस रेस के कारण एक/दो से आगे बढ़ रहे हैं। विदेश से नाम निकलना है- यह तो ठीक है; लेकिन किस कोने से निकलता, कौन-सा स्थान निमित्त बनता, किस स्थान का व्यक्ति निमित्त बनता है? इसलिए हरेक अपनी धुन में लगे हुए हैं। (अ॰वा॰27.5.77 पृ.176 मध्य)	Download
447	नया पार्ट	आज ख़ास विदेशियों के लिए बापदादा को भी विदेशी बनना पड़ा है। बापदादा विदेशी न बनते तो मिल भी न सकते। विदेशी विशेष आत्माएँ, जो कि विशेष कार्य के निमित्त बनी हुई हैं , ऐसे होवनहार ग्रुप को देखने के लिए व साकार रूप में मिलने के लिए निराकार और आकार को भी साकार रूप का आधार लेना पड़ा। (अ॰वा॰2.8.75 पृ.73 अंत)	Download
448	नया पार्ट	सिवाए निराकार परमपिता परमात्मा के कोई भी ब्र॰कु॰कुमारी को पढ़ा नहीं सकते। ब्रह्मा को भी ज्ञान सागर नहीं कह सकेंगे, इसको प्रजापिता कहेंगे। ज्ञान सागर एक ही निराकार परमपिता परमात्मा को कहा जाता है। वही पतितों को पावन बनाने वाला है; क्योंकि ज्ञान सागर से ही सद्गति होती है। यह है नई बात। (मु.24.8.73 पृ.1 आदि) मु.25.8.78 पृ.1 मध्यादि,	Download
449	नया पार्ट	करनकरावनहार है- तो करनहार का भी पार्ट बजाया और अभी करावनहार का भी पार्ट बजा रहे हैं। बाप का तख़्त होने कारण तख़्तनशीन होने में बोझ अनुभव नहीं होता; क्योंकि बाप का तख़्त है ना। (अ॰वा॰14.2.78 पृ.2 आदि)	Download
450	नया पार्ट	ब्रह्मा बाप साकार रूप से भी अव्यक्त रूप में अभी दिन-रात सेवा में ज़्यादा सहयोगी बनने का पार्ट बजा रहे हैं। (अ॰वा॰7.10.75 पृ.159 आदि)	Download
451	नया पार्ट	साकार में तो फिर भी कई प्रकार के बन्धन थे, अभी तो निर्बन्धन हैं। अभी तो और ही तीव्रगति है- बाप को बुलाया और हाज़िरा हज़ूर। (अ॰वा॰5.12.78 पृ.104 आदि)	Download

452	नया पार्ट	इतनी (इतने) सिकीलधे श्रेष्ठ आत्माएँ हो जो स्वयं भगवान आपको पढ़ाने के लिए परमधाम से आते हैं। (अ॰वा॰12.1.79 पृ.203 आदि)	Download
453	नया पार्ट	साकार के 42-43 वर्ष और अव्यक्त के 10 वर्ष , तो 50 से ऊपर चले गए ना। (अ॰वा॰16.1.79 पृ.226 आदि)	Download
454	नया पार्ट	साकार स्नेह के रिटर्न में साकार रूप है। (अ॰वा॰18.1.79 पृ.229 अंत)	Download
455	नया पार्ट	जैसे सतयुगी शहज़ादियों की आत्माएँ जब आती थीं तो वह भविष्य के रूप प्रैक्टिकल में देखते हुए आश्चर्य खाती थीं ना कि इतने बड़े महाराजे और कार्य क्या कर रहे हैं, विश्व महाराजा और भोजन बना रहे हैं। (अ॰वा॰10.12.78 पृ.116 अंत)	Download
456	नया पार्ट	अमृतवेले रोज़ सफलता का तिलक.....का गायन है ना कि भक्तों को भगवान तिलक लगाने आया। तो इस वर्ष आज्ञाकारी बच्चों को स्वयं बाप आपके सेवा स्थान अर्थात् तीर्थ स्थान पर सफलता का तिलक देने आएँगे। (अ॰वा॰6.2.80 पृ.279 अंत)	Download
457	नया पार्ट	बाप और दादा भी दो हैं। दोनों के कर्तव्य से विश्व परिवर्तन होता है। (अ॰वा॰8.6.72 पृ.298 अंत)	Download
458	नया पार्ट	यह अव्यक्त रूप का मिलन व्यक्त द्वारा भी कब तक? (गुलज़ार दादी खुद ही अव्यक्त हो जाती अर्थात् व्यक्त रूप ज़रूर कोई दूसरा है।) (अ॰वा॰24.12.72 पृ.387 आदि)	Download
459	नया पार्ट	अब तो जब आप समय परिवर्तन की सूचना दे रहे हो तो बापदादा के मिलने का भी परिवर्तन होगा ना। (अ॰वा॰15.2.83 पृ.64 अंत)	Download
460	नया पार्ट	जैसे साकार में याद है ना, हर ग्रुप को विशेष स्नेह के स्वरूप से अपने हाथों से खिलाते थे और बहलाते थे। वही स्नेह का संस्कार अब भी प्रैक्टिकल में चल रहा है। (अ॰वा॰6.1.83 पृ.32 मध्य)	Download
461	नया पार्ट	कर्मबन्धन से मुक्त, सम्पन्न हुई आत्मा, इस कल्प के जन्म-मरण के चक्र को समाप्त करने वाली आत्मा, निराकार बाप की फर्स्ट नम्बर साथी आत्मा, विश्व के कल्याण प्रति निमित्त बनी हुई फर्स्ट आत्मा, स्वयं के प्रति और विश्व के प्रति सर्व-सिद्धि प्राप्त की हुई आत्मा जहाँ चाहे और जितना समय चाहे वह वहाँ स्वतन्त्र रूप में पार्ट बजा सकती है। जब अल्पकाल की सिद्धि प्राप्त करने वाली आत्माएँ अपनी सिद्धि के आधार पर अपने रूप परिवर्तन कर सकती हैं, तो सर्व सिद्धि प्राप्त हुई आत्मा अव्यक्त रूपधारी बनकर जितना समय चाहे क्या वह उतना समय ड्रामानुसार नहीं रह सकती? (अ॰वा॰30.6.74 पृ.83 अंत, 84 आदि)	Download

462	नया पार्ट	कोई-2 बच्चों का संकल्प पहुँचता है कि मियाँ-बीबी तो ठीक; लेकिन मियाँ निराकार और बीबी साकार तो मेल कम होता है।.....इसलिए काज़ी करना पड़ता है; लेकिन मियाँ ऐसे मिला है जो बहुरूपी है। जो रूप आप चाहो तो एक सेकेण्ड में जी हजूर कह हाज़िर हो सकते हैं। (अ॰वा॰28.11.79 पृ.58 मध्य)	Download
463	नया पार्ट	बाप कहते हैं सदा मेरे से जिस भी रूप में चाहो उस रूप में खेल सकते हो। सखा बनकरके खेल सकते हो, बन्धु बन खेल सकते हो, बच्चा बनकर के भी खेल सकते हो, बच्चा बनाकर भी खेल सकते हो। ऐसा अविनाशी खिलौना तो कभी नहीं मिलेगा, जो न टूटेगा, न फूटेगा और खर्चा भी नहीं करना पड़ेगा। (अ॰वा॰7.1.80 पृ.182 अंत)	Download
464	नया पार्ट	'कोई है' यह तो सब समझते हैं; लेकिन यही है और यह एक ही है, यह हलचल का हल नहीं चला है। (अ॰वा॰5.12.84 पृ.50 अंत)	Download
465	नया पार्ट	ईश्वर से वर्सा लेते हैं। वर्सा लेते-2 कोई चले जाते हैं तो ज़रूर उनका कोई पार्ट होगा, इससे भी जास्ती कोई कार्य करना है। मु.30.8.03 पृ.1अंत,	Download
466	नया पार्ट	बाप भी शांति का सागर है ना, जिसका पार्ट ही पिछाड़ी में होगा। (मु.2.5.68 पृ.2 अंत)	Download
467	नया पार्ट	ऐसी कोई बात नहीं जो तुमसे लागू नहीं होती है। तुम सर्जन भी हो, सर्राफ भी हो, धोबी भी हो। सब खासियतें (विशेष ताएँ) तुम्हारे में आ जाते हैं। (मु.ता॰14.4.68, 5.5.69 पृ.3 अंत)	Download
468	नया पार्ट	बाप जिस भाशा में समझाते हैं, उसमें कल्प-2 समझावेंगे। जो इनकी भाशा होगी उसमें ही समझावेंगे ना। आजकल हिंदी बहुत चलती है। (मु.28.9.68 पृ.2 आदि)	Download
469	नया पार्ट	बाप भी विनाश के लिए आए हैं तो आधा पर थोड़े ही जावेंगे। आग लगकर जब पूरी होगी तो चले जावेंगे। ... सबको साथ ले जावेंगे। होना ज़रूर है। (मु.20.9.77 पृ.3 आदि)	Download
470	नया पार्ट	बाप की बायोग्राफी बाप से ही जाने जाते है। अब निराकार शिवबाबा की बायोग्राफी कैसे हो सकती? ज़रूर जब साकार में आए तब बायोग्राफी हो। ....सिर्फ आत्मा की बायोग्राफी नहीं हो सकती। जीवात्मा बने तब पुनर्जन्म में आए और बायोग्राफी भी हो। (मु.20.2.72 पृ.2 मध्यांत) मु.22.2.92 पृ.2 मध्यादि,	Download
471	नया पार्ट	सबसे जास्ती भक्ति किसने की है, ज्ञान में भी वही तीखे जावेंगे, पद भी ऊँच पावेंगे। (मु.22.7.68 पृ.3 मध्यादि) मु.3.7.04 पृ.3 अंत ,	Download
472	नया पार्ट	आप ऐसे नहीं कहेंगे कि ब्रह्मा बाप चले गए। जो वायदा किया है- साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, अगर आदि आत्मा भी वायदा नहीं निभाए तो कौन वायदा निभाएगा! सिर्फ रूप और सेवा की विधि परिवर्तन हुई है।..... सर्व बच्चों की पालना अब भी ब्रह्मा द्वारा ही हो रही है। (अ॰वा॰ता॰ 18.1.91 पृ.1 अंत)	Download

473	नया पार्ट	बाप तो तुम बच्चों से ही बात करते हैं (यह ब्रह्मा से भी नहीं)। आगे तो सबसे मिलते थे, सबसे बात करते थे। अब कमती करते-2 आखरीन तो कोई से बात नहीं करेंगे। सन शोज़ फादर है ना। (मु.17.12.67 पृ.3 मध्य) मु.15.12.85 पृ.3 मध्य,	Download
474	नया पार्ट	अकालमूर्त का बोलता-चलता तख़्त है। (मु.21.7.69 पृ.1 मध्य)	Download
475	नया पार्ट	ऐसे नहीं है बाप चला गया, फिर आवेगा नहीं। ... करनकरावनहार है ना। करता भी है, कराता भी है। (मु.8.3.69 पृ.3 अंत)	Download
476	नया पार्ट	बाप बैठ समझाते हैं, हूबहू जैसे बच्चों को पढ़ाते हैं। (मु.17.9.68 पृ.3मध्य)	Download
477	नया पार्ट	तुम बच्चे ही जानते हो कि बाप फिर से इस तन में आया हुआ है। (मु.20.8.68 पृ.1 आदि)	Download
478	नया पार्ट	बाबा कहते मैं साकार बिगर कैसे समझाऊँगा! इसमें प्रेरणा की तो बात ही नहीं। (मु.25.9.72 पृ.2 अंत)	Download
479	नया पार्ट	यह बाप तो है ही एवरप्योर और है भी गुप्त। डबल है ना। ताकत सारी उनकी है, इनकी (ब्रह्मा की) नहीं। शुरुआत में तुमको उन्होंने कशिश की; क्योंकि वह एवरप्योर है। तुम कोई इनके पिछाड़ी नहीं भागे। (मु.17.2.68 पृ.2 मध्य) मु.14.2.99 पृ.2 अंत, 3 आदि,	Download
480	नया पार्ट	दिल्ली को वरदान है, और उसमें भी आदि रत्न जगदीश को वरदान है स्थापना के कार्य में। (अ॰वा॰23.2.97 पृ.33 अंत, 34 आदि)	Download
481	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फास्ट, यह भी समझाना पड़ता है ना। (मु.15.12.68 पृ.3 मध्यांत) मु.15.12.70 पृ.3 मध्यांत,	Download
482	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	वंडरफुल खेल है न। जो पहले-2 आते हैं वह ही अंत तक रहेंगे। (मु.6.3.74 पृ.2 आदि)	Download
483	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	बहुत-2 अच्छी बच्चियाँ जो मम्मा-बाबा के लिए भी डायरैक्शन ले आती थीं, ड्रिल कराती थीं। उनके डायरैक्शन पर हम चलते थे। सभी से जास्ती दुर्गति में वह चले गए। यह बच्चियाँ भी जानती हैं। (मु.28.5.69 पृ.2 अंत)	Download
484	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	मम्मा-बाबा को ड्रिल सिखलाते थे, डायरैक्शन देते थे- ऐसे करो, नीचे हो बैठे। हम समझते थे यह तो बहुत अच्छा नम्बर माला में आवेंगे। वे भी गुम हो गए। तो यह सब समझाना पड़े ना। हिस्ट्रियाँ तो बहुत बड़ी है। (मु.25.5.68 पृ.2 अंत)	Download
485	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	अच्छे-2 फर्स्टक्लास ध्यान में जाने वाले, जिनके डायरैक्शन पर माँ-बाप भी पार्ट बजाते थे। आज वे हैं नहीं। क्या हुआ? कोई बात में संशय आ गया। (मु.8.7.73 पृ.1 अंत)	Download
486	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	अच्छे-2 बच्चे 5/10 वर्ष रह अच्छे-2 पार्ट बजाते, फिर हार खा लेते हैं। यह है युद्ध स्थल। बाप की याद तो कभी भी छोड़नी नहीं चाहिए। (मु.8.7.73 पृ.1 अंत)	Download

487	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	अच्छी-2 महारथी थीं। मम्मा-बाबा के लिए भी ऊपर से प्रोग्राम ले आती थीं। जिसको बैठ ड्रिल कराते थे। आज वह हैं नहीं। माया खा गई, अजगर ने सारा खाकर हप कर लिया। (मु.2.6.70 पृ.3 मध्य)	Download
488	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	10 वर्ष से (साथ में) रहने वाला और ध्यान में जाती थी। मम्मा-बाबा को भी ड्रिल कराती थी। उनमें बाबा प्रवेश कर डायरैक्शन देते थे। कितना मर्तबा था! आज वह भी हैं नहीं। उस समय यह इतना ज्ञान नहीं था। (मु.23.7.69 पृ.2 अंत)	Download
489	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	ऐसे तो नहीं समझते हो कि यह गायन व पूजन तो पुरानों व अनन्य वत्सों का है। नए-2 तीव्र पुरुषार्थ से चलने वाले बाप-दादा के नयनों में विशेष समाए हुए हैं। जैसे बच्चों के नयनों में सदा बाप समाया हुआ है, सदा साथ का और समीप का अनुभव करते हैं, ऐसे देरी से आते हुए भी दूर नहीं, समीप हैं; इसलिए लास्ट में आने वाले बच्चों को ड्रामानुसार हाई जम्प द्वारा फास्ट अर्थात् फर्स्ट जाने का गोल्डन चांस विशेष मिला हुआ है। (अ॰वा॰22.1.76 पृ.7 अंत, 8 आदि)	Download
490	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	ऐसे नहीं पहले आने वाले ही आगे जावेंगे। बाप कहते हैं पिछाड़ी में आने वालों को तख्त मिलता है तो तीखे हो जाते हैं। पुराने पीछे रह जाते हैं।..... देरी से आने वालों को तीखा दौड़ने का शौक रहता है। पुराने जैसे कि पुरुषार्थ करते-2 थक जाते हैं। (मु.8.3.76 पृ.3 अंत)	Download
491	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	जहाँ भी जिस कोने में बिछुड़े हुए बच्चे हैं वहाँ वह आत्माएँ समीप आनी ही हैं। इसलिए सेवा में भी वृद्धि होती रहती है। कितना भी चाहो शांत करके बैठ जाएँ, बैठ नहीं सकते। सेवा बैठने नहीं देगी, आगे बढ़ाएगी; क्योंकि जो आत्माएँ बाप की थीं वह बाप की फिर से बननी ही हैं। (अ॰वा॰6.1.88 पृ.204 मध्य)	Download
492	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	पिछाड़ी में साक्षात्कार की धुन होगी, जैसे पहले होती थी। महाराजा-महारानी बन पार्ट बजाते थे, आज वह हैं नहीं। एक-2 की दुर्गति की हिस्ट्री सुनो तो तुम वंडर खाओ। (मु.21.9.68 पृ.4 अंत)	Download
493	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	ऐसे भी नहीं कि पुराने जो हैं वही होशियार होंगे। कई नए पुराने से भी तीखे जाते हैं। (मु.13.4.77 पृ.3 आदि)	Download
494	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	पुराने-2 बच्चे कितने अच्छे थे, उनको माया ने हप कर लिया। ...समझ सकते हैं उनमें से फिर आएँगे। ज़रूर स्मृति आएगी कि हम बाप से पढ़ते थे। ... बाबा आने देंगे, फिर भी भल आकर पुरुषार्थ करें। कुछ न कुछ अच्छा पद मिल जाएगा। (मु.9.10.70 पृ.2 मध्य)	Download
495	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	जो नं॰ वन पावन था वही फिर नं. लास्ट पतित बना है। उनको ही अपना रथ बनाता हूँ। फर्स्ट सो लास्ट में आया है, फिर फर्स्ट में जाना है। (मु.21.5.68 पृ.2,3)	Download
496	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	तुम ही पहले-2 आए थे। अभी लास्ट में भी तुम हो। फिर पहले-2 तुम्हीं मनुष्य से देवता बनने वाले हो। (मु.16.7.73 पृ.2 मध्यांत)	Download

497	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	अच्छे-2 बच्चे थे, आज हैं नहीं। वंडर है ना। माया ऐसी दुस्तर है जो बड़े-2 महारथी जिनको हनुमान कहते, वह आज हैं नहीं, अजगर के पेट में चले गए। (मु.30.9.77 पृ.2 मध्य)	Download
498	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	25 वर्ष वाले अभी इतना भी नहीं सीखे हैं कि वह बेहद का बाप है, जिससे वर्सा पाते हैं। ...7 रोज़ वाला भी 25 वर्ष वाले से तीखा चला जाता है। (मु.22.8.73 पृ.2 मध्य)	Download
499	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	तुम बच्चे भी यह समझ रहे हो आत्मा और परमात्मा अलग रहे बहुकाल। तुम्हीं जो पहले अलग हुए हो फिर तुम्हीं आकर मिले हो। (मु.7.7.71 पृ.3 आदि)	Download
500	फर्स्ट सो लास्ट, लास्ट सो फर्स्ट	ब्राह्मण धर्म में तुम कितने जन्म लेते हो? (एक जन्म) कोई दो/तीन जन्म भी लेते हैं ना। (मु.12.3.69 पृ.3 मध्यांत)	Download
501	राम बाप को कहा जाता है	शिवबाबा आया हुआ है। रामनवमी मनाते हैं। ज़रूर आया था, राज्य करके गया था, तो उनका दिवस मनाते हैं। पहले तो रचयिता शिवबाबा आया होगा तब ही स्वर्ग की रचना रची होगी। उनके बाद फिर राम का राज्य चला। (मु.6.4.73 पृ.1 मध्य)	Download
502	राम बाप को कहा जाता है	रावण कोई बलवान नहीं है। राम बलवान है तो रावण भी बलवान है; क्योंकि दोनों ही आधा-2 कल्प राज्य करते हैं। (कौन? शिव!) (मु.4.4.72 पृ.1 आदि)	Download
503	राम बाप को कहा जाता है	राम अर्थात् ईश्वर और रावण, दोनों का चित्र इकट्ठा करना चाहिए। फिर दिखाओ कि यह राम है, यह रावण है। यह स्वर्ग बनाते हैं, यह फिर नर्क बना देते हैं। (मु.2.9.69 पृ.2 आदि)	Download
504	राम बाप को कहा जाता है	जैसे वंडरफुल रावण है, उससे भी वंडरफुल फिर राम शिव है। वो रावण है गुप्त दुश्मन और यह है प्रत्यक्ष दोस्त। (मु.9.10.73 पृ.4 अंत)	Download
505	राम बाप को कहा जाता है	प्रजापिता ब्रह्मा जिसको एडम कहा जाता है उनको ग्रेट-2 ग्रैंड फादर कहा जाता है। मनुष्य सृष्टि में प्रजापिता हुआ। (मु.5.2.71 पृ.1 मध्यांत)	Download
506	राम बाप को कहा जाता है	राम गयो, रावण गयो, जिनके बहु परिवार... रावण का परिवार कितना बड़ा है! तुम तो मुठभर हो। यह सारी रावण सम्प्रदाय है। तुम्हारा राम सम्प्रदाय कितने थोड़े हैं, 9 लाख। (मु.17.2.68 पृ.3 आदि)	Download
507	राम बाप को कहा जाता है	राम-राज्य राम द्वारा ही मिलता है। सतयुग से राम-राज्य शुरू होता है। (मु.17.7.72 पृ.1 अंत)	Download
508	राम बाप को कहा जाता है	मनुष्यों को क्या पता राम आया हुआ है। आवेंगे भी गुप्त वेश में। बाप कहते हैं जिन्होंने कल्प पहले भी न पहचाना है वह कभी नहीं पहचानेंगे। (मु.1.2.71 पृ.4 मध्य)	Download
509	राम बाप को कहा जाता है	वास्तव में राम भी राम (परम)पिता परमात्मा को कहते हैं। (मु.26.7.73 पृ.2 आदि)	Download

510	राम बाप को कहा जाता है	बाप ....जिनको भारतवासी राम भी कहते हैं; परंतु यथार्थ रीति न जानने कारण राम त्रेता वाला समझ लेते हैं। वास्तव में उनकी तो बात ही नहीं (संगम की बात है) (मु.4.2.67 पृ.1 आदि)	Download
511	राम बाप को कहा जाता है	यहाँ राम का मंदिर है ना। राम को काला बना दिया है। राम शायद अकेला है....., शादी न की हुई होगी। सीता साथ में होगी तो शादी किया हुआ कहेंगे। यह सब बातें तुम समझते हो। (मु.7.9.76 पृ.3 अंत)	Download
512	राम बाप को कहा जाता है	सभी हैं सीताएँ, राम है एक। सीता का पति राम और मुझे भी राम कहने कारण मिला दिया है। मेरा नाम वास्तव में राम है नहीं। पूजा कोई राम समझ नहीं करते हैं। शिव वा रुद्र कह पूजा करते हैं। सारा शुट(सूत) ही मुँझा दिया है। बुद्धि का शुट(सूत) मूँझा हुआ है। (मु.19.11.71 पृ.2 अंत) मु.16.11.76 पृ.2 अंत,	Download
513	राम बाप को कहा जाता है	राम अक्षर क्यों कहते हैं? क्योंकि रावण-राज्य है ना। तो इसकी भेंट में राम-राज्य कहा जाता है। राम है परमपिता परमात्मा जिसको ईश्वर भी कहते हैं, भगवान भी कहते हैं। असली नाम है उनका शिव। (मु.10.2.67 पृ.1 मध्यादि)	Download
514	राम बाप को कहा जाता है	स्वर्ग का वर्सा बाप ही आकर देते हैं। पुकारते भी उनको हैं " हे भगवान, हे राम!" (मु.30.1.70 पृ.3 मध्यादि)	Download
515	राम बाप को कहा जाता है	सर्वशक्तिवान तो एक बाप ही है जिसको राम भी कहते हैं। (मु.26.2.68 पृ.3 आदि)	Download
516	राम बाप को कहा जाता है	राम शिव को कहा जाता है। राम-2 जब जपते हैं तो वह त्रेता वाले राम को नहीं याद करते। (संगमी) माला में ऊपर में (कमल) फूल भी दिखाते हैं। (मु.7.11.68 पृ.2 आदि)	Download
517	राम बाप को कहा जाता है	इस समय तुम आत्माएँ राम शिवबाबा श्री-श्री की मत पर चलती हो। (मु.2.3.73 पृ.2 मध्यादि)	Download
518	राम बाप को कहा जाता है	यह राजयोग बाप ही सिखलाते हैं। कृष्ण को बाप नहीं कहेंगे। वह तो बच्चा है। (मु.19.1.75 पृ.2 मध्यांत)	Download
519	राम बाप को कहा जाता है	रावण द्वारा ही विकारी दुनिया होती है। राम बाप आकर सबको पावन बनाते हैं। (मु.27.2.69 पृ.1 मध्यांत)	Download
520	राम बाप को कहा जाता है	राम कहा जाता है बाप को। वह राम नहीं, जिसकी सीता चुराई गई। (मु.6.9.68 पृ.3 मध्य)	Download
521	राम बाप को कहा जाता है	राम कहते हैं तो भी वह एक ही निराकार ठहरा। (मु.26.8.73 पृ.3 आदि)	Download
522	राम बाप को कहा जाता है	बाप राम है राइट्स, रावण है अनराइट्स। (मु. 2.5.68 पृ.2 मध्यादि)	Download
523	राम बाप को कहा जाता है	राम शिवबाबा को कहा जाता है। (मु.7.9.68 पृ.3 आदि)	Download
524	राम बाप को कहा जाता है	बाबा ने समझाया है कि भक्ति को सीता कहा जाता है, भगवान को राम कहा जाता है। (मु.27.8.69 पृ.1 मध्यादि)	Download

525	राम बाप को कहा जाता है	लव-कुश के लिए भी कहानी है ना। लड़ाई के मैदान में राम के बच्चे बेहोश हो गए। राम के बच्चे कोई दो नहीं हैं, यहाँ तो ढेर बच्चे हैं। (मु.ता. 3.8.66 पृ.1 मध्य)	Download
526	राम बाप को कहा जाता है	राम परमात्मा को ही कहते हैं। राम-2 कह फिर पिछाड़ी में शिव को नमस्कार करते हैं। वही परमात्मा है। (मु.8.11.68 पृ.3 मध्यादि) मु.14.10.99 पृ.3 मध्य,	Download
527	राम बाप को कहा जाता है	.....कृष्ण किसका बाप नहीं हो सकता। वह तो छोटा बच्चा है, सतयुग का प्रिन्स है। वह टीचर भी नहीं हो सकता। खुद ही बैठकर टीचर से पढ़ते हैं। (मु.21.10.75 पृ.1 आदि)	Download
528	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	गाते भी हैं सर्व का सद्गति दाता राम; परंतु बंदर बुद्धि होने कारण समझते नहीं हैं कि राम किसको कहा जाता है। ....कहेंगे जिधर देखो राम ही राम रमते हैं। (अभी संगम में) रमते तो मनुष्य हैं ना। (मु.7.3.67 पृ.1 अंत) मु.11.3.75 पृ.1 अंत,	Download
529	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	पतित-पावन भी कहते हैं तो ज़रूर यहाँ आवेंगे ना। पतितों को पावन कोई प्रेरणा से थोड़े ही बनावेंगे। (मु.25.2.68 पृ.2 अंत)	Download
530	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	शिवबाबा पार्ट न बजावे तो फिर कोई काम का न रहा। वैल्यू ही न होती। उनकी वैल्यू ही तब है जबकि सारी दुनिया की सद्गति करते हैं। तब उनकी महिमा होती है। (मु.15.12.68 पृ.1 अंत) मु.16.12.74 पृ.1 अंत,	Download
531	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	एक ही बाप बैठ सभी को पावन बनाते हैं। एक को पावन बनने से सभी पावन बन जाते हैं। एक पतित होते तो सभी पतित हो जाते हैं। (मु.13.4.69 पृ.3 आदि) मु.21.3.74 पृ.3 मध्यादि,	Download
532	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	बाप पतित-पावन आते हैं तो सारी दुनिया के मनुष्यमात्र तो क्या, प्रकृति को भी सतोप्रधान बनाते हैं। (मु.20.1.75 पृ.2 मध्य)	Download
533	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	पतित-पावन बाप के सिवाय न कोई पावन निराकारी दुनिया में जा सकते, न पावन साकारी दुनिया में आ सकते। (मु.16.4.73 पृ.2 मध्यादि)	Download
534	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	जबकि इनको सभी की सद्गति करने आना ही है तो ज़रूर किस रूप में आवेंगे ना। घर बैठे इनको आना है। (मु.7.7.72 पृ.2 अंत)	Download
535	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	बाप कहते हैं मैं सभी धर्मों का सर्वेंट हूँ। आकर सभी को सद्गति करता हूँ। सद्गति कहा जाता है सतयुग को। (मु.22.3.68 पृ.2 आदि)	Download
536	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	बाप तो निराकार है, फिर वह पतित-पावन कैसे ठहरा? क्या जादू लगाते हैं? पतितों को पावन बनाने ज़रूर उनको यहाँ आना पड़े। (मु.7.5.72 पृ.1 मध्यादि)	Download
537	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	सबकी गति-सद्गति दाता एक राम है। गाते हैं पतित-पावन राम, फिर दूसरों को गुरू क्यों बनाते? बाप इनसे लिबरेट करते हैं, गुरुओं की ज़ंजीरों से निकालते हैं। (मु.4.9.73 पृ.3 अंत)	Download

538	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	परमपिता परमात्मा शिव तो घड़ी-2 शरीर नहीं बदलते हैं। वह तो एक ही बार आते हैं। उनको ही पतित-पावन कहा जाता है। कह देते हैं पतित-पावन फिर सीता-राम। अब सीता-राम का भी अर्थ समझना चाहिए। सीता कहा जाता है भक्त को। इनका साजन है भगवान जिसको राम कह देते हैं। मु.2.6.72 पृ.1 आदि,	Download
539	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	दुर्गति से निकाल सद्गति बाप ही देते हैं। वही क्रियेटर, डायरैक्टर, मुख्य एक्टर गाया जाता है। मुख्य एक्टर कैसे है? पतित-पावन बाप आकर पतित दुनिया में सभी को पावन बनाते हैं। तो मुख्य हुआ ना। (मु.17.6.72 पृ.2 अंत)	Download
540	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	पतित-पावन बाप आकर जब पावन बनावे तब हम जा सकते हैं। अब बाप तुम बच्चों को पावन होने की युक्ति बता रहे हैं। (मु.1.11.71 पृ.3 आदि)	Download
541	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	पुकारती हैं- हे पतित-पावन, आओ। तो ज़रूर उनको रथ चाहिए ना जिसमें आकर पावन बनावें। ज्ञान के बाण से तो पावन नहीं बनेंगे। (मु.30.5.70 पृ.2 आदि)	Download
542	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	सभी गाते रहते हैं- पतित-पावन सीता-राम। हम पतित हैं, पावन बनाने वाला बाप है। वह सभी हैं भक्तिमार्ग की सीताएँ, बाप है राम। (मु.31.1.71 पृ.3 मध्य)	Download
543	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	लिबरेटर ज्ञान का सागर शिवबाबा है, ब्रह्मा को नहीं कहेंगे। ब्रह्मा भी उनसे लिबरेट होता है। (मु.3.1.74 पृ.1 अंत) मु.2.1.84 पृ.1 अंत 2 आदि ,	Download
544	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	गाते भी हैं- पतित-पावन, सर्व का सद्गति दाता परमात्मा है। ...पावन दुनिया में एक भी पतित होता नहीं। यह तो है ही पतित दुनिया। पावन एक भी हो न सके। (मु.23.9.71 पृ.1 अंत) मु.27.10.96 पृ.1 अंत,	Download
545	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	एक ही बाप सर्व का सद्गति दाता, पतित-पावन है। ...जगत का बाप, जगत का शिक्षक, जगत का गुरू तो एक ही है। (मु.23.8.67 पृ.1 आदि)	Download
546	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	इस समय सभी रावण के जेल में हैं। ...राम आते हैं रावण के जेल से छुड़ाने। (मु.12.6.69 पृ.2 आदि)	Download
547	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	पहले-2 मुख्य बात बाप समझाते हैं कि पतित-पावन, ज्ञान सागर श्रीकृष्ण नहीं है। (मु.16.4.71 पृ.1 आदि) मु.27.4.01 पृ.1 मध्य ,	Download
548	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	शिवबाबा बाबा भी है, साजन भी है। सभी सीताओं का राम है। वही पतित-पावन है। (मु.16.4.71 पृ.2 अंत)	Download
549	राम बाप ही पतित-पावन सद्गति दाता	सर्व का सद्गति दाता राम गाया जाता है तो वह ज़रूर तब आवेंगे जब सभी दुर्गति में हैं। (मु.12.6.72 पृ.1 अंत)	Download
550	राम मत से राम राज्य	अभी तुम बच्चों को ईश्वरीय मत मिल रही है जिसको राम मत कहा जाता है (कृष्ण मत नहीं)। (मु.12.6.69 पृ.1 आदि)	Download

551	राम मत से राम राज्य	राम-राज्य स्थापन करने के लिए तो बेहद का बापूजी चाहिए, जो राम-राज्य की स्थापना और रावण-राज्य का विनाश करे। (मु.6.7.71 पृ.1 मध्यांत)	Download
552	राम मत से राम राज्य	अगर राम-राज्य में चलना है तो राम की मत पर चलो। (मु.12.5.77 पृ.3 मध्यादि)	Download
553	राम मत से राम राज्य	राम मत से तुमने राज्य लिया है, रावण मत से राज्य गँवाया है। अभी फिर ऊपर चढ़ने लिए तुमको राम मत मिलती है। (मु.7.6.68 पृ.3 मध्य)	Download
554	राम मत से राम राज्य	अभी राम शिवबाबा मत देते हैं। निश्चय में ही विजय है। (मु.10.12.68 पृ.2 मध्य)	Download
555	राम फेल	रामचंद्र ने जीत नहीं पाई इसलिए उनको क्षत्रिय की निशानी दे दी है। (मु.23.7.68 पृ.3 मध्य)	Download
556	राम फेल	तुम सभी क्षत्रिय हो ना, जो माया पर जीत पाते हो।.....राम को बाण आदि दे दिए हैं। हिंसा तो त्रेता में होती नहीं। (तो कहाँ?) (मु.23.7.68 पृ.3 मध्य)	Download
557	राम फेल	रामचंद्र है, इनको भी सज़ाएँ खानी पड़ीं; क्योंकि नापास हुए। इसलिए इनको बाण दिखाते हैं। क्षत्रिय तो हम सब ही वॉरियर्स हैं ना। (मु.5.1.67 पृ.3 मध्यादि)	Download
558	राम फेल	बाप समझाते हैं- ऐसे नहीं कहेंगे रामचंद्र फेल हुआ। नहीं। (यज्ञ में) कोई बच्चे फेल हुए जो जाकर भविष्य में रामचंद्र बनते हैं। राम वा सीता त्रेता में थोड़े ही पढ़ते हैं जो कहें फेल हुए। यह भी समझ की बात है ना। कोई सुने रामचंद्र फेल हुआ तो कहेंगे कहाँ पढ़ते थे? आगे जन्म में ऐसा पढ़कर यह पद पाया है। (मु.9.8.70 पृ.1 मध्यादि)	Download
559	राम फेल	राम-(सीता) को भी पहले ल॰ना॰ का दास-दासी बनना पड़े; क्योंकि ल॰ना॰ फुल पास हुए। वो फेल हुआ (यज्ञ में); इसलिए उनको क्षत्रिय कहेंगे। (मु.21.5.73 पृ.3 अंत)	Download
560	राम फेल	रामचन्द्र भी राजयोग सीखता था, सीखते-2 फेल हो गया; इसलिए क्षत्रिय नाम पड़ा। (मु.31.8.70 पृ.3 मध्यांत)	Download
561	राम फेल	राम फेल हुआ, 33 माक्र्स से कम माक्र्स मिले तो चंद्रवंशी में चला गया। (मु.ता॰15.10.77 पृ.2 अंत)	Download
562	राम फेल	चन्द्रवंशी राम को बाण आदि दिए हैं। वास्तव में ज्ञान बाण की बात है। वह नापास हुआ इसलिए निशानी दे दी है। (मु.ता॰2.12.82 पृ.1 अंत)	Download
563	प्रजापिता (साकार)	ग्रेट-2 ग्रैंड फादर यह टाइटिल हो गया प्रजापिता ब्रह्मा का। ज़रूर ग्रैंड मदर, ग्रैंड चिल्ड्रेन भी होंगे । (मु.19.10.73 पृ.3 अंत)	Download
564	प्रजापिता (साकार)	प्रजापिता को भी क्रियेटर कहते हैं। ब्रह्मा द्वारा मनुष्य सृष्टि पैदा होती है, इसलिए प्रजापिता अर्थात् मनुष्यों का पिता कहा जाता है। (मु.27.7.65 पृ.2 आदि)	Download
565	प्रजापिता (साकार)	ब्राह्मण तब होंगे जब प्रजापिता सन्मुख होगा। अभी तुम सन्मुख हो। (मु.6.8.75 पृ.1 अंत)	Download

566	प्रजापिता (साकार)	अभी तुम प्रजापिता ब्रह्मा के बने हो। तुम जानते हो प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा स्वर्ग ले जाएँगे। (मु.18.4.73 पृ.4 मध्य)	Download
567	प्रजापिता (साकार)	प्रजापिता ब्रह्मा तो ज़रूर चाहिए, यहाँ कल्प के संगम पर होना चाहिए तब तो ब्राह्मणों की नई सृष्टि रची जाए। (मु.16.3.73 पृ.3 मध्य) मु.17.3.78 पृ.3 मध्य,	Download
568	प्रजापिता (साकार)	व्यक्त प्रजापिता ब्रह्मा चाहिए। सूक्ष्मवतन में तो प्रजापिता नहीं होता है। प्रजापिता ब्रह्मा यहाँ चाहिए। (मु.5.8.73 पृ.2 मध्यांत)	Download
569	प्रजापिता (साकार)	ब्रह्माकुमारियों के आगे प्रजापिता अक्षर ज़रूर लिखना है। प्रजापिता कहने से बाप सिद्ध हो जाता है। हम प्रश्न ही पूछते हैं कि प्रजापिता से क्या सम्बंध है; क्योंकि ब्रह्मा नाम तो बहुतों के हैं। कोई फीमेल का भी ब्रह्मा नाम है। प्रजापिता नाम तो किसका होता नहीं। इसलिए प्रजापिता अक्षर ज़रूरी है। (मु.4.9.72 पृ.2 आदि)	Download
570	प्रजापिता (साकार)	प्रजापिता ज़रूर यहाँ ही होगा। उनका अंतिम जन्म लेखराज है। वह तो प्रजापिता बन नहीं सकता। (मु.21.8.73 पृ.5 मध्यांत)	Download
571	प्रजापिता (साकार)	यह तो जवाहरी था, यह कैसे प्रजापति हो सकता? (मु.28.7.72 पृ.4 अंत) मु.29.7.77 पृ.3 अंत,	Download
572	प्रजापिता (साकार)	प्रजापिता ब्रह्मा साधारण मनुष्य बहुत जन्मों के अंत में गरीब हुआ ना। इस समय है ही खादी के कपड़े। (मु.19.10.69 पृ.1 अंत)	Download
573	प्रजापिता (साकार)	वरसा देने लिए ज़रूर ब्रह्मा तन में आवेंगे। यह प्रजापिता ब्रह्मा है। सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा को प्रजापिता नहीं कहेंगे। वहाँ थोड़े ही प्रजा रचेंगे। हम ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ स्थूल में हैं तो प्रजापिता ब्रह्मा भी स्थूल में है। यह राज़ बैठ समझो। (मु.4.11.72 पृ.2 आदि)	Download
574	प्रजापिता (साकार)	पतित शरीर का नाम है प्रजापिता ब्रह्मा। इनमें प्रवेश कर कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अंत वाले साधारण मनुष्य में प्रवेश करता हूँ। पतित शरीर में आते हैं, सूक्ष्मवतनवासी पावन ब्रह्मा में नहीं आते हैं। (मु.4.11.65 पृ.1 आदि)	Download
575	प्रजापिता (साकार)	ब्रह्मा को भी प्रजापिता कहते हैं। प्रजा माना ही मनुष्य सृष्टि। शिव है आत्माओं का बाप। दो बाप तो सभी को हैं; परंतु सर्व आत्माओं का बाप शिव है। (मु.11.11.71 पृ.1 अंत)	Download
576	प्रजापिता (साकार)	प्रजापिता ब्रह्मा के कितने ढेर बच्चे हैं। कितना गृहस्थी है। यह है बेहद का गृहस्थ व्यवहार। (मु.4.12.76 पृ.3 अंत)	Download
577	प्रजापिता (साकार)	शिवबाबा भी है। इतने ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हैं तो ज़रूर अण्डरस्टुड प्रजापिता भी है। (मु.31.1.70 पृ.3 मध्य)	Download
578	प्रजापिता (साकार)	ब्रह्मा नहीं शास्त्रों का सार सुनाता। वह कहाँ से सीखा? उनको भी बाप वा गुरू होगा ना। प्रजापिता तो ज़रूर मनुष्य होगा और यहाँ ही होगा। (मु.21.10.73 पृ.2 अंत)	Download
579	प्रजापिता (साकार)	इतने ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हैं, ज़रूर प्रजापिता भी होगा। (मु.13.2.67 पृ.2 मध्य) मु.31.3.75 पृ.3 अंत,	Download

580	प्रजापिता (साकार)	ऐसे कहाँ भी लिखा हुआ नहीं है कि प्रजापिता ब्रह्मा सूक्ष्मवतनवासी है। सूक्ष्मवतन में थोड़े ही प्रजा होती है। प्रजापिता ब्रह्मा तो ज़रूर यहाँ चाहिए ना। (मु.4.10.77 पृ.2 मध्यांत)	Download
581	प्रजापिता (साकार)	बाप प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्रह्माकुमार-कुमारियों को समझा रहे हैं, शूद्रकुमारियों को नहीं। (मु.14.6.72 पृ.1 मध्य)	Download
582	प्रजापिता (साकार)	पहले-2 जिस द्वारा रचना रचते हैं उनको कहा जाता है प्रजापिता ब्रह्मा। वह है ग्रेट-2 ग्रैंड फादर। शिवबाबा को ग्रेट-2 ग्रैंड फादर नहीं कहेंगे। (मु.3.5.72 पृ.1 अंत, 2 आदि)	Download
583	प्रजापिता (साकार)	प्रजापिता ब्रह्मा कहते हैं; परंतु यथार्थ रीति नहीं जानते। ब्रह्मा किसका बच्चा है? तुम कहेंगे परमपिता परमात्मा शिव ने उनको एडॉप्ट किया है। यह तो शरीरधारी है ना। ईश्वर के(की) औलाद सभी आत्माएँ हैं। फिर शरीर मिलता है तो प्रजापिता ब्रह्मा की एडॉप्शन कहते हैं। वह एडॉप्शन नहीं है। परमपिता परमात्मा ने एडॉप्ट नहीं किया। तुमको एडॉप्ट किया है। तुम हो ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ। शिवबाबा एडॉप्ट नहीं करते हैं। (मु.11.1.71 पृ.3 अंत)	Download
584	प्रजापिता (साकार)	प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे वह भी ज़रूर ब्रह्मा के साथ होंगे। ब्राह्मण कुल भी तो ज़रूर चाहिए। इसको कहा जाता है सर्वोत्तम ऊँच ते ऊँच ब्राह्मण कुल। (मु.4.6.66 पृ.2 मध्यांत)	Download
585	प्रजापिता (साकार)	प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा आकर सर्व की सद्गति करते हैं। उनको ही सब पुकारते हैं। देखते हैं ना। (मु.6.3.76 पृ.1 अंत)	Download
586	प्रजापिता (साकार)	प्रजापिता ब्रह्मा तो यहाँ हैं। तुमको साक्षात्कार होता है व्यक्त ब्रह्मा पवित्र हो जाते हैं तो वहाँ फिर सम्पूर्ण रूप दिखाई पड़ता है। (मु.31.3.72 पृ.2 अंत)	Download
587	प्रजापिता (साकार)	प्रजापिता ब्रह्मा जो होकर गए हैं वह इस समय प्रेजेंट हैं। (मु.11.3.73 पृ.1 आदि)	Download
588	प्रजापिता (साकार)	शिव को वा कृष्ण को प्रजापिता नहीं कहते। यह तो कृष्ण पर झूठा कलंक लगाया है कि उनको 16,108 रानियाँ थीं। यह तो प्रजापिता ब्रह्मा इतने बच्चे और बच्चियाँ पैदा करते हैं। (मु.3.3.73 पृ.2मध्य) मु.3.3.78 पृ.2 मध्यांत,	Download
589	प्रजापिता (साकार)	अब प्रजापिता ब्रह्मा तो मनुष्य सृष्टि में है। (मु.7.12.73 पृ.2 अंत)	Download
590	प्रजापिता (साकार)	यह भी नहीं समझते हैं कि ब्रह्मा ज़रूर साकार में होना चाहिए जिस द्वारा परमपिता परमात्मा सृष्टि रचते हैं। (मु.30.12.98 पृ.2 मध्य)	Download
591	प्रजापिता (साकार)	प्रजापिता ब्रह्मा का निवास स्थान परमधाम को नहीं कहेंगे। वो तो यहाँ पर साकारी दुनिया में होगा ना। सूक्ष्मवतन में भी नहीं होता है। प्रजा तो है ही स्थूलवतन में। (मु.26.12.67 पृ.2आदि) मु.9.12.00 पृ.2 अंत,	Download

592	प्रजापिता (साकार)	आत्माएँ हैं शिवबाबा के बच्चे और फिर साकार में हम बहन-भाई सभी हैं प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे। यह है सभी का ग्रेट-2 ग्रैंड फादर। ...शिवबाबा और प्रजापिता ब्रह्मा- आत्माओं का बाप और सभी मनुष्य मात्र का बाप। (मु.13.1.70 पृ.1 अंत)	Download
593	प्रजापिता (साकार)	प्रजापिता ब्रह्मा है ग्रेट-2 ग्रैंड फादर। मनुष्य सृष्टि काबड़ा तो ब्रह्मा हो गया ना। शिव को ऐसे नहीं कहेंगे, उनको सिर्फ फादर कहेंगे। ...ज़रूर ग्रैंड मदर, ग्रैंड चिल्ड्रेन भी होंगे। (मु.ता॰19.10.73 पृ.3 अंत)	Download
594	प्रजापिता (साकार)	यह भी समझते हैं प्रजापिता ब्रह्मा तो ज़रूर साकारी सृष्टि पर ही होगा। मूँझे हुए हैं। ... वह (साकार) है कर्मबंधन में, वह (अव्यक्त) है कर्मातीत। ... बाप बैठ अर्थ समझाते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा जो मनुष्य था वही फिर फरिश्ता बनता है। (मु.30.1.68 पृ.1 मध्यांत, 2 आदि)	Download
595	प्रजापिता (साकार)	प्रजापिता ब्रह्मा तो ज़रूर यहाँ ही होगा ना। बहुत करके तो इस पर ही मूँझते हैं। (मु.15.10.69 पृ.1 मध्य)	Download
596	प्रजापिता (साकार)	शिव है निराकारी बाप। प्रजापिता ब्रह्मा है साकारी बाप। अभी तुम साकार द्वारा निराकार बाप से वर्सा ले रहे हो। (मु.15.1.67 पृ.3 अंत)	Download
597	प्रजापिता (साकार)	कई बच्चे बापदादा अर्थात् दोनों बाप के बजाए एक ही बाप द्वारा ख़ज़ाने के मालिक बनने के विधि को अपनाते हैं। इससे भी प्राप्ति से वंचित हो जाते हैं। हमारा निराकार से डायरैक्ट कनेक्शन है, ...साकार की क्या अवश्यकता है! लेकिन ऐसी चाबी खंडित चाबी बन जाती है। (अ॰वा॰14.10.81 पृ.58 आदि)	Download
598	प्रजापिता (साकार)	त्रिमूर्ति अक्षर भी ज़रूर लिखना है। प्रजापिता अक्षर भी ज़रूरी है; क्योंकि ब्रह्मा नाम भी बहुतों के हैं। प्रजापिता अक्षर लिखेंगे तो समझेंगे कि साकार में प्रजापिता ठहरा। सिर्फ ब्रह्मा लिखने पर सूक्ष्मवतन वाला समझ लेते हैं। (मु.16.10.69 पृ.2 मध्यादि)	Download
599	ब्रह्मा बड़ी माँ है	तुम्हारी बड़ी मम्मी ब्रह्मा है; परंतु कई बच्चों ने पूरा नहीं पहचाना है। अभी अजन पहचानते रहते हैं। (मु.1.5.73 पृ.2 आदि)	Download
600	ब्रह्मा बड़ी माँ है	भल सरस्वती है; परंतु वास्तव में सच्ची-2 मदर ब्रह्मपुत्रा है। ब्रह्मपुत्रा सबसे, सरस्वती से भी बड़ी है। तो ब्रह्मपुत्रा किसको रखेंगे। नाम रख दिया है ब्रह्मपुत्री। (मु.2.1.75 पृ.2 मध्यादि)	Download
601	ब्रह्मा बड़ी माँ है	बेहद के भी दो बाप हैं तो माँ भी ज़रूर दो होंगी। एक जगदम्बा माँ, दूसरी यह (ब्रह्मा) भी माता ठहरी। (मु.10.2.73 पृ.1 आदि)	Download
602	ब्रह्मा बड़ी माँ है	तुम मात-पिता ... तो माता यह सिद्ध हुई। वह बाप इसमें प्रवेश हो रचते हैं तो यह बूढ़ा प्रजापिता भी ठहरा, फिर माता भी बूढ़ी ठहरी। बूढ़े ही चाहिए ना। (मु.5.1.78 पृ.1 मध्यांत)	Download
603	ब्रह्मा बड़ी माँ है	यह सतगुरू सच बोलते हैं। वह झूठे गुरू तो आधे में ही छोड़ मर जाते हैं। वह थोड़े ही सद्गति देते हैं। मैं तो साथ ले जाऊँगा। कलियुगी गुरू ऐसे कह न सके। (मु.17.6.78 पृ.3 मध्यांत)	Download

604	ब्रह्मा बड़ी माँ है	सद्गति भी सभी की कर देते हैं प्रैक्टिकल में। ऐसे नहीं शिवबाबा चला जावेगा और हम यहाँ ही बैठे रहेंगे, फिर दूसरा गुरू करना पड़ेगा, नहीं। (मु.12.11.68 पृ.1 अंत)	Download
605	ब्रह्मा बड़ी माँ है	यह ब्रह्मा है एडॉप्टेड । प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण। (मु.6.2.71 पृ.1 अंत)	Download
606	ब्रह्मा बड़ी माँ है	बहुत जन्मों के अंत में इनके शरीर को अपना रथ बनाया। एडॉप्ट करते हैं ना। स्त्री को भी एडॉप्ट करते हैं फिर पियर घर का नाम बदल कर ससुर के घर का नाम रख देते हैं। बाप ने भी इनमें प्रवेश किया तो इनका नाम बदल दिया। इनको एडॉप्ट करके जैसे कि घर वाली बना लिया। (मु.5.5.67 पृ.2 अंत) मु.5.5.75 पृ.2 अंत,	Download
607	ब्रह्मा बड़ी माँ है	ब्रह्मा भी रचना है शिवबाबा की। (मु.26.6.70 पृ.1 आदि) मु.26.6.75 पृ.1 आदि,	Download
608	ब्रह्मा बड़ी माँ है	पहले ब्राह्मण बनाते हैं। ब्रह्मा कहाँ से आया? ब्रह्मा को एडॉप्ट किया। जैसे स्त्री को एडॉप्ट किया जाता है, फिर बच्चे पैदा होते हैं। मैंने भी इनको एडॉप्ट किया। इनके मुखकमल से तुमको रचता हूँ। माता चाहिए ना। (मु.28.11.65 पृ.7 मध्यांत)	Download
609	ब्रह्मा बड़ी माँ है	यह ब्रह्मा माता हो गई ....परन्तु फिर माताओं को सम्भालने लिए माता चाहिए। इसलिए एडॉप्टेड गोद ली बच्ची ब्रह्माकुमारी सरस्वती। कितनी गुह्य बातें हैं! (मु.17.4.72 पृ.2 अंत)	Download
610	ब्रह्मा बड़ी माँ है	मुख से स्त्री को क्रियेट किया तो रचता हो गया। कहते हैं यह मेरी है। मैंने इनसे बच्चे पैदा किए हैं। (मु.1.10.75 पृ.1 अंत)	Download
611	ब्रह्मा बड़ी माँ है	ब्रह्मा कोई क्रियेटर नहीं है। (मु.5.3.73 पृ.1 मध्यादि)	Download
612	ब्रह्मा बड़ी माँ है	आप सोचते होंगे कि लोग पुछेंगें कि आपका ब्रह्मा बाबा सौ वर्ष से पहले ही चला गया? यह तो बहुत सहज प्रश्न है, कोई मुश्किल नहीं। सौ के नज़दीक ही तो आयु थी। यह जो सौ वर्ष कहे हुए हैं, यह गलत नहीं हैं। अगर कुछ रहा हुआ है तो आकार द्वारा पूरा करेंगे। सौ वर्ष ब्रह्मा की स्थापना का पार्ट है। वह तो सौ वर्ष पूरा होना ही है; लेकिन बीच में ब्रह्मा के बाद ब्राह्मणों का जो पार्ट है वह अब चलना है। (अ॰वा॰21.1.69 पृ.21 मध्य)	Download
613	ब्रह्मा बड़ी माँ है	फादर निराकार है, ज़रूर वर्सा देंगे तो यहाँ आना पड़े ना, जो अपना परिचय दे। तो ज़रूर इनको माता बनना पड़े। तो यह बड़ी माता हो गई। दादा है निराकार और दादी भी चाहिए तब मम्मा मिली। कितनी वण्डरफुल नॉलेज है। दादी तो कोई बन न सके। इनको ही कहा जावेगा; परन्तु दादी भी मेल हो गया; क्योंकि मुखवंशावली है ना। यह बड़ा वण्डरफुल है! (मु.12.8.73 पृ.3 मध्यांत)	Download

614	ब्रह्मा बड़ी माँ है	बाप तो खुद है फिर इन द्वारा एडॉप्ट करते हैं तो यह बड़ी माता हो गई। फिर पहले नम्बर में सरस्वती को एडॉप्ट किया है। बाप ने इनमें प्रवेश किया है। यह (मम्मा) तो एडॉप्ट है। ...तुम्हारे लिए तो माता-पिता हैं। हमारे लिए तो पति भी हुआ तो पिता भी हुआ। प्रवेश कर अपनी बन्नी (स्त्री) भी मुझे बनाया है । (मु.20.10.73 पृ.2 मध्य)	Download
615	ब्रह्मा बड़ी माँ है	तुम मात-पिता... पीछे तुम कह सकते हो- बापदादा। यह तो मात-पिता में बाप आ जाता है; परंतु नहीं। ...रचना है तो माता ज़रूर चाहिए। अब माता पहले कौन है, यह है गुह्य ते गुह्य बात। ...प्रजापिता ब्रह्मा के साथ कोई प्रजा पत्नी भी चाहिए? नहीं। प्रजा पत्नी नहीं चाहिए; क्योंकि यह मुखवंशावली है। (मु.29.9.78 पृ.1 आदि)	Download
616	ब्रह्मा बड़ी माँ है	यह दादा मम्मी भी है। वह बाप तो अलग है। ...परंतु यह मेल होने कारण फिर माता मुकर्रर की जाती है। (मु.19.1.75 पृ.1 मध्यादि) मु.17.1.00 पृ.1 अंत ,	Download
617	ब्रह्मा बड़ी माँ है	प्रजापिता को भी पिता कहते हैं। तो माता कहाँ? ... यह प्रजापिता भी है तो माता भी है। ...तो यह (ब्रह्मा) माता बन जाती है। ...यह भी एडॉप्ट मदर है। वह है फादर। इसको फिर नंदीगण वा बैल भी दिखाते हैं। गाय को कब भी नहीं दिखाते हैं। (मु.5.12.71 पृ.1 मध्यांत)	Download
618	ब्रह्मा बड़ी माँ है	कहते हैं- तुम मात-पिता... तो यह (ब्रह्मा) माता हो गई। तो इन(के) साथ भी संबंध रखना पड़े। अगर इनसे प्यार गया तो खेल खलास। मात-पिता से गया तो वर्सा कैसे मिले? (मु.13.10.65 पृ.3 मध्य)	Download
619	ब्रह्मा बड़ी माँ है	अब प्रजापिता दोनों बाप ठहरा ना। ...बाप तो माता द्वारा एडॉप्ट करेंगे ना। ...वह है सरस्वती बेटी; परंतु बेटी द्वारा तो एडॉप्ट नहीं किया जाता है। ...उसने इसमें प्रवेश किया है, तब (ब्रह्मा को) खुद कहते हैं तुम हमारा बच्चा भी हो, बन्नी (पत्नी) भी हो। (मु.11.12.71 पृ.1 मध्यांत)	Download
620	ब्रह्मा बड़ी माँ है	बाप तो बाप है और यह (ब्रह्मा) तुम्हारी मम्मा है। कलश पहले इनको (ब्रह्मा को) मिलता है; परंतु सरस्वती की महिमाबढ़ने के लिए उनको आगे रखा है। (मु.15.10.77 पृ.3 आदि)	Download
621	ब्रह्मा टेम्पररी रथ या मुकर्रर रथ या भाग्यशाली रथ	बाबा सारा समय (संगम) इसमें नहीं रहते हैं। हाँ, यह उनका मुकर्रर रथ है। उनको हुसैन का रथ कहा जाता है। (मु.15.8.72 पृ.3 आदि)	Download
622	ब्रह्मा टेम्पररी रथ या मुकर्रर रथ या भाग्यशाली रथ	अकालमूर्त का रथ अथवा तख़्त खास मुकर्रर है। (मु.5.8.73 पृ.2 आदि) मु.8.8.78 पृ.2 आदि,	Download
623	ब्रह्मा टेम्पररी रथ या मुकर्रर रथ या भाग्यशाली रथ	शिवबाबा का यह टेम्पररी रथ है। कहते हैं शिवबाबा को याद कर इनकी गोद में आओ, नहीं तो पाप लग जावेगा। (मु.25.6.66 पृ.3 मध्यांत)	Download

624	ब्रह्मा टेम्पररी रथ या मुकर्रर रथ या भाग्यशाली रथ	मैं भी टेम्पररी इस तन में आया हूँ। (मु.3.9.73 पृ.1 अंत)	Download
625	ब्रह्मा टेम्पररी रथ या मुकर्रर रथ या भाग्यशाली रथ	भल यह शरीर लिया हुआ है। वह भी टेम्पररी। 60 वर्ष तो नहीं लिया है ना। (मु.4.3.69 पृ.1 आदि)	Download
626	ब्रह्मा टेम्पररी रथ या मुकर्रर रथ या भाग्यशाली रथ	स्वयं भगवान के उस मुखकमल से सुनते हो। यह भगवान का लोन लिया हुआ मुख है ना, जिसको गऊ मुख भी कहते हैं। बड़ी माता है ना। (मु.28.5.70 पृ.1 मध्यांत)	Download
627	ब्रह्मा टेम्पररी रथ या मुकर्रर रथ या भाग्यशाली रथ	बाप कहते हैं मैं भी थोड़े समय के लिए लोन लेता हूँ। 60 वर्ष में वानप्रस्थ अवस्था होती है। (मु.26.10.68 पृ.2 मध्यादि)	Download
628	ब्रह्मा टेम्पररी रथ या मुकर्रर रथ या भाग्यशाली रथ	पुरुशों के लिए तो एक जूती गई तो दूसरी-तीसरी जूती ले लेंगे। शरीर को जूती कहा जाता है। शिवबाबा का भी यह लांग बूट है ना। (मु.21.6.74 पृ.3 मध्य) मु.15.6.84 पृ.3 मध्य ,	Download
629	ब्रह्मा टेम्पररी रथ या मुकर्रर रथ या भाग्यशाली रथ	यह जो ब्रह्मा है जिसमें बाप बैठ वर्सा दिलाते हैं, इनका भी शरीर छूट जावेगा। (मु.5.2.71 पृ.2 अंत, 3 आदि)	Download
630	ब्रह्मा टेम्पररी रथ या मुकर्रर रथ या भाग्यशाली रथ	मैं थोड़े समय के लिए इनमें प्रवेश करता हूँ। यह तो पुरानी जूती है। पुरुश की एक स्त्री मर जाती है तो कहते पुरानी जूती गई, अभी फिर नई लेते हैं। यह (ब्रह्मा) भी पुराना तन है ना। (मु.11.7.70 पृ.2 मध्यादि)	Download
631	ब्रह्मा टेम्पररी रथ या मुकर्रर रथ या भाग्यशाली रथ	यह तो शिवबाबा का रथ है ना। सारे वर्ल्ड को हैविन बनाने वाला है। (मु.11.1.75 पृ.3 मध्य)	Download
632	ब्रह्मा टेम्पररी रथ या मुकर्रर रथ या भाग्यशाली रथ	बाप सभी बातों का अनुभवी है। तब तो बाप ने भी उनको अपना रथ बनाया है। गरीबी का, साहूकारी का सभी में अनुभवी है। ड्रामा अनुसार यह एक ही रथ है। यह कब बदल नहीं सकता। (मु.29.7.70 पृ.3 अंत.)	Download
633	ब्रह्मा टेम्पररी रथ या मुकर्रर रथ या भाग्यशाली रथ	शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा का रथ एक ही है तो ज़रूर शिवबाबा भी खेल तो सकते होंगे ना। (मु.13.10.68 पृ.3 आदि)	Download
634	ब्रह्मा टेम्पररी रथ या मुकर्रर रथ या भाग्यशाली रथ	शरीर छूटेगा तब जब बाप का रथ आकर लेंगे। (मु.रात्रि.क्ला.10.5.68 पृ.2 अंत)	Download
635	ब्रह्मा टेम्पररी रथ या मुकर्रर रथ या भाग्यशाली रथ	बंगाल, बिहार का ज़ोन तो शृंगार करना जानता है। ...साकार तन को ढूँढ़ा भी यहाँ से ही है। (अ॰वा॰1.2.79 पृ.258 अंत, 259 आदि)	Download
636	ब्रह्मा टेम्पररी रथ या मुकर्रर रथ या भाग्यशाली रथ	कहते हैं मैं इस रथ का लोन लेता हूँ। भागीरथ भी क्यों कहते हैं? क्योंकि बहुत भाग्यशाली रथ है। यही फिर विश्व का मालिक बनते हैं तो भागीरथ ठहरा ना। (मु.26.9.68 पृ.1 मध्य)	Download

637	ब्रह्मा टेम्पररी रथ या मुकर्रर रथ या भाग्यशाली रथ	यह रथ कायम ही रहता है। ... यह तो मुकर्रर है ड्रामा अनुसार। इनको कहा जाता है भाग्यशाली रथ। ... भाग्यशाली रथ एक कहा जाता है, जिसमें बाप आकर ब्रह्मा द्वारा ज्ञान देते हैं, स्थापना का कार्य करते हैं। (मु.26.8.69 पृ.3 मध्य) मु.11.9.85 पृ.3 मध्यादि,	Download
638	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	देखते हो बाबा ने जिसमें प्रवेश किया है उसमें भी ठाठ की कोई बात नहीं। कपड़े आदि सभी वही हैं। (मु.9.2.71 पृ.1 मध्यादि)	Download
639	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	बच्चे कहते हैं आज हमारे में बाबा आकर मुरली चला गया। क्या तुम्हारे शरीर पर कोई बोझ पड़ा? कुछ भी नहीं। कोई तकलीफ थोड़े ही होती है। (मु.7.5.73 पृ.1 मध्यांत)	Download
640	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	यह बाबा भी जानते हैं हमने यह अपना शरीर रूपी मकान किराया पर दिया है। .....ड्रामाप्लेननुसार उनको और कोई मकान लेना ही नहीं है। कल्प-2 यही मकान लेना पड़ता है। (मु.2.12.68 पृ.2 आदि)	Download
641	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	बाबा तो बड़ी सभाओं में नहीं बैठ समझावेंगे। (मु.4.9.73 पृ.2 मध्य)	Download
642	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	जैसे ब्राह्मणों को बुलाया जाता है, घोस्ट भी आकर प्रवेश करते हैं। तो वह आत्मा हुई ना! घोस्ट अपना कर्तव्य करते हैं तो उनका फिर पार्ट बंद हो जाता। मु.12.7.73 पृ.3 मध्य,	Download
643	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	लाउडस्पीकर पर कब पढ़ाई होती है क्या? टीचर सवाल कैसे पूछेंगे? लाउडस्पीकर पर रिस्पॉण्ड कैसे दे सकेंगे? इसलिए थोड़े-2 स्टूडेंट को पढ़ाते हैं। (मु.15.9.76 पृ.3 आदि)	Download
644	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	मैं सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा देवता में प्रवेश नहीं करता हूँ। मुझे तो यहाँ पतित को पावन बनाना है। मेरे द्वारा ही वो सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा पावन बना है। (मु.4.11.65 पृ.1 मध्यादि)	Download
645	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	ब्रह्मा नाम कब बदल नहीं सकता। ब्रह्मा द्वारा ही स्थापना करते हैं तो दूसरे के तन में थोड़े ही आवेंगे। अगर दूसरे में आवें तभी भी उनका नाम ब्रह्मा रखना पड़े। (मु.17.3.73 पृ.2 अंत)	Download
646	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	मेरा आने का पार्ट एक ही बार संगम पर है। ऐसे भी नहीं कि तुम्हारे बुलाने पर आता हूँ। जब मेरे आने का समय होता तो एक सेकेंड न ऊपर, न नीचे, एक्युरेट टाइम पर आता हूँ। मुझे ऑरगन्स ही कहाँ हैं जो तुम्हारी पुकार सुनूँगा। ... जब समय होता है तो आकर पतितों को पावन बनाता हूँ। ऐसे नहीं कि तुम्हारी रड़ियाँ कोई भगवान सुनते हैं। (मु.5.12.71 पृ.3 मध्यादि) मु.6.12.76 पृ.3 आदि,	Download
647	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	बाप आते भी रात्रि में हैं। कब आते हैं उसकी तिथि-तारीख कोई नहीं है। तिथि-तारीख उनकी होती है जो लौकिक जन्म लेते हैं। यह तो है पारलौकिक बाप। इनका लौकिक जन्म नहीं है। कृष्ण की तिथि-तारीख, समय आदि सभी देते हैं। इनको कहा जाता है दिव्य-जन्म। (मु.9.3.70 पृ.1 आदि)	Download

648	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	बाप कहते हैं ...ड्रामा प्लेन अनुसार जब आना होता है तो चेंज ज़रूर होती है। (मु.22.2.69 पृ.1 मध्यादि)	Download
649	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	ऐसे नहीं कि बाप-दादा का आवाहन कर रहे हैं। नहीं, बाबा का आवाहन तो कर ही नहीं सकते हैं। बाबा को तो आप ही आना है। (मु.12.4.71 पृ.1 आदि) मु.12.4.76 पृ.1 आदि	Download
650	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	ड्रामा में जिसका पार्ट है उनमें ही प्रवेश करते हैं और इसका नाम ब्रह्मा रखते हैं। ..... अगर दूसरे में आवे तभी भी उनका नाम ब्रह्मा रखना पड़े। (मु.17.3.73 पृ.2 अंत)	Download
651	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	मधुबन में बाप स्वयं दौड़ी पहन आता है। (बुलाने से नहीं) (अ॰वा॰5.9.77 पृ.3 मध्य)	Download
652	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	ब्रह्मा तो ठहरा उनका भाग्यशाली रथ। रथ द्वारा ही बाप वर्सा देते हैं। ब्रह्मा वर्सा देने वाला नहीं है, वह तो लेने वाला है। (मु.17.1.70 पृ.1 आदि)	Download
653	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	इनको भाग्यशाली रथ कहते हैं। जिसमें बाप बैठ तुम बच्चों को हीरे जैसा बनाते हैं। (मु.11.6.69 पृ.4 मध्यादि)	Download
654	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	नम्बरवन पूज्य यह है तो नम्बरवन पुजारी भी यह बना है। फिर उनका ही पार्ट है। यह मेरा मुकर्रर तन है। यह चेंज हो नहीं सकता। ऐसे नहीं अब दूसरे को चांस दियो। (मु.10.10.72 पृ.5 आदि)	Download
655	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	अब बाप है तब ही सारी सृष्टि का कल्याण होता है। यह है भाग्यशाली रथ। इनसे कितनी सर्विस होती है। (मु.16.2.67 पृ.3 अंत)	Download
656	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	बाबा का यह रथ है परमानेंट। ब्रह्मा चाहिए ना, जिससे ब्राह्मण रचा जाए। (मु.3.7.72 पृ.2 मध्यांत)	Download
657	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	भागीरथ भी मशहूर है। इन द्वारा बैठ ज्ञान सुनाते हैं। यह भी ड्रामा में पार्ट है। कल्प-2 इस भाग्यशाली रथ पर आते हैं। यह भी तुम जानते हो। यह वही है जिनको श्यामसुंदर कहते हैं। श्रीकृष्ण सुन्दर से श्याम कैसे बनते हैं फिर श्याम के शरीर में कैसे बाप आकर प्रवेश करते हैं यह तुम समझते हो। (मु.25.5.70 पृ.3 मध्यांत)	Download
658	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	भागीरथ भी क्यों कहते हैं? क्योंकि बहुत भाग्यशाली रथ है। यही फिर विश्व का मालिक बनते हैं। तो भागीरथ ठहरा ना। सभी बात का अर्थ समझना चाहिए। (मु.26.9.68 पृ.1 मध्य)	Download

659	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	ब्रह्मा बोले ब्राह्मणों की वृद्धि तो यज्ञ समाप्ति तक होनी है; लेकिन साकारी सृष्टि में, साकारी रूप से मिलन मेला मनाने की विधि, वृद्धि के साथ-2 परिवर्तन तो होगी ना! लोन ली हुई वस्तु और अपनी वस्तु में अंतर तो होता ही है।.....अपनी वस्तु को जैसे चाहे वैसे कार्य में लगाया जाता है। (अ॰वा॰5.4.83 पृ.118 मध्य)	Download
660	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	मुझे ही पतितों को पावन बनाने यहाँ आना पड़ता है। ऐसे नहीं कि ऊपर से प्रेरणा देता हूँ। इनका ही नाम है भागीरथ। तो ज़रूर इनमें प्रवेश करेंगे। (मु.17.10.69 पृ.2 मध्यांत)	Download
661	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	बाबा ही पतित-पावन है; परंतु निराकार है। तो ज़रूर साकार में आकर ही बच्चों को श्रीमत देंगे। बाप कहते हैं यह मेरा शरीर भी ड्रामा में मुकर्रर है। यह बदली हो नहीं सकता। (मु.5.12.71 पृ.3 आदि) मु.6.12.76 पृ.2 अंत,	Download
662	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	मुझे ब्राह्मण ज़रूर चाहिए तो प्रजापिता ब्रह्मा भी चाहिए ना। उनमें आकर प्रवेश करता हूँ। नहीं तो कैसे आऊँगा? मेरा यह रथ रिजर्व है। (मु.13.11.72 पृ.3 मध्य)	Download
663	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	और कोई भी आत्मा मेरे समान शरीर में आ नहीं सकती है। भल धर्म स्थापक जो आते हैं उनकी आत्मा भी प्रवेश करती है; परन्तु वह तो बात ही अलग है। (मु.8.10.68 पृ.1 अंत) मु.8.10.74 पृ.1 अंत,	Download
664	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	इतना ऊँच बाप है तो उनको तो राजा अथवा पवित्र ऋशि के तन में आना चाहिए। पवित्र होते ही हैं सन्यासी। पवित्र कन्या के तन में आवे; परन्तु कायदा नहीं है। बाप सो फिर कुमारी पर कैसे सवारी करेंगे? बाप बैठ समझाते हैं कि मैं किसमें आता हूँ। मैं तो आता ही उसमें हूँ जो कि पूरे 84 जन्म लेते हैं, एक दिन भी कम नहीं। (मु.15.10.69 पृ.2 मध्य)	Download
665	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	शिवबाबा कहते हैं हम तुम बच्चों को सुनाते थे तो यह भी सुनता था। (मु.17.11.76 पृ.2 मध्यांत)	Download
666	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	बाप कहते हैं मैं भी बिन्दी हूँ। तुमको पता भी पड़ता नहीं जो मैं इसमें आकर बैठा हूँ। (मु.15.7.66 पृ.3 मध्य)	Download
667	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	यह भी नहीं जानते कि बाबा ने कब प्रवेश किया। ... बहुत ध्यान में जाते थे। ....वो कोई तिथि-तारीख, वेला नहीं निकाल सकते। कृष्ण को भी पूजते हैं ना। इनका रात्रि को जन्म दिखाते हैं। किस समय, कितने मिनट आदि सारा हिसाब निकालते हैं। (मु.4.6.66 पृ.2,3)	Download
668	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	रूह-रूहान करने मीठे-2 बाबा ने आप सभी बच्चों से मिलने भेजा है। (अ॰वा॰ता॰ 23.1.69 पृ.16 मध्य)	Download

669	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	बाप अनायास ही आ जाते हैं। ढिंढोरा थोड़े ही पिटवाते हैं कि मैं आ रहा हूँ। अनायास ही आ जाते हैं। (मु.31.8.68 पृ.1 मध्यांत) मु.21.8.84 पृ.1 अंत,	Download
670	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	बड़े-2 सभाओं में बाबा नहीं जा सकते। वह बच्चों का काम है। बच्चों से सवाल-जवाब करेंगे। (मु.12.10.72 पृ.2 अंत)	Download
671	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	कोई-2 में भूत आ जाता है। चर्ये-खर्ये बालक में भी कहेंगे शिवबाबा आया है, वह मुरली चलाते हैं। (मु.13.11.72 पृ.2 मध्यांत) मु.15.11.87 पृ.2 मध्य,	Download
672	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	मैं आऊँगा तो ज़रूर अपने ही समय पर। ....जब चाहूँ तब आऊँ, नहीं। (मु.20.2.68 पृ.3 आदि)	Download
673	गुलज़ारमोहिनी में ब्रह्मा बाबा आते, शिवबाबा नहीं	मैं खुद डायरैक्ट आया हूँ। (मु.25.5.69 पृ.2 आदि)	Download
674	गुप्त पुरुषार्थी रूप में बाप	जो अच्छी रीति पढ़ते हैं, पढ़ाते हैं, कुछ समझते हैं, वह छिपी नहीं रहती। (मु.9.2.68 पृ.3 मध्यांत) मु.6.2.74 पृ.3 मध्यांत,	Download
675	गुप्त पुरुषार्थी रूप में बाप	वह तो अपना टाइम पर अपनी सर्विस पर आए खड़े हो जाते हैं। किसको भी पता नहीं पड़ता है। कल्प पहले भी तुम बच्चों को मालूम था नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। कौरवों को पता नहीं था। अभी भी ऐसे हैं। (मु.5.2.68 पृ.1 आदि)	Download
676	गुप्त पुरुषार्थी रूप में बाप	आजकल कई आत्माएँ समझती हैं कि कोई स्प्रिचुअल लाइट गुप्त रूप में अपना कार्य कर रही है; लेकिन ये लाइट कहाँ से ये कार्य कर रही है वो जान नहीं सकते। कोई है, यहाँ तक टचिंग होनी शुरू हो गई है। आखिर ढूँढ़ते-2 स्थान पर पहुँच ही जाएँगे। (अ॰वा॰10.11.87 पृ.124 अंत)	Download
677	गुप्त पुरुषार्थी रूप में बाप	गुप्त वेश में शांतिधाम-सुखधाम की स्थापना हो रही है। (मु.20.9.77 पृ.2 आदि)	Download
678	गुप्त पुरुषार्थी रूप में बाप	बाबा हमेशा कहते हैं स्टेशन पर कोई भी नहीं आवे, कोई हंगामा नहीं। बाप कहते हैं मुझे गुप्त ही रहने दो, इसमें बड़ा मज़ा है। (मु.ता॰25.9.72 पृ.1 आदि) मु.ता॰22.9.07 पृ.1 मध्य,	Download
679	गुप्त पुरुषार्थी रूप में बाप	ब्रह्मा बाप गुप्त रूप में कार्य करा रहा है। अलग नहीं है, साथ ही है, सिर्फ गुप्त रूप में करा रहा है। (अ॰वा॰ता॰ 18.1.99 पृ.42 मध्य)	Download
680	गुप्त पुरुषार्थी रूप में बाप	अभी तुम ही जानते हो बाबा हमको फिर से पढ़ाते हैं और बाप गुप्त वेश में पराए देश में आए हैं । ....बाबा भी गुप्त है। (मु.3.4.69 पृ.1 अंत)	Download
681	गुप्त पुरुषार्थी रूप में बाप	बाप भी गुप्त है, दादा भी गुप्त है। ...बच्चे भी गुप्त हैं। (मु.12.6.72 पृ.1 आदि)	Download
682	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो	इस सृष्टि में हट्टी (सदा) कायम कोई चीज़ है नहीं। सदा कायम तो एक शिवबाबा ही है। बाकी तो सबको नीचे आना ही है। (मु.2.1.75 पृ.3 अंत)	Download

683	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो	रावण है दुश्मन (दुर्जन)। शिवबाबा है सज्जन। (मु.5.1.68 पृ.2 मध्यांत)	Download
684	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो	शिवबाबा को ही रुद्र कहा जाता है। रुद्र ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला निकली तो रुद्र भगवान हुआ। (मु.26.1.70 पृ.2 आदि)	Download
685	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो	शिव पर भी झूठ कलंक लगाए हैं। धतूरा खाता था। कितनी ग्लानि करते हैं। ऐसे मूर्ख बुद्धि मनुष्यों का विनाश हो जावेगा और जो तुम सुज्ञान बनते हो उनको बादशाही मिलेगी। (मु.4.11.78 पृ.3 मध्य)	Download
686	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो	बरोबर भारत स्वर्ग था। अभी नर्क है। एक/दो को डसते रहते हैं। शास्त्रों में दिखाया है ना- बिच्छू-टिंडन पैदा हुए। अभी हैं सभी शिव के(की) औलाद; परंतु इस समय उन्हों के वीर्य से बिच्छू-टिंडन पैदा होते हैं। (मु.28.4.72 पृ.2 मध्य)	Download
687	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो	मेरे नाम तो ढेर रख दिए हैं। कहते हैं हर-हर महादेव। सबके दुःख काटने वाला। वह भी मैं ही हूँ। शंकर नहीं है। (मु.4.11.78 पृ.2 मध्यादि)	Download
688	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो	वास्तव में सबसे पुराना तो शिवबाबा है ना; परंतु किसको पता नहीं। महिमा सारी शिवबाबा की है। वो चीज़ तो मिल न सके। पुराने ते पुरानी चीज़ कौन-सी हुई? नम्बरवन शिवबाबा। (मु.26.5.65 पृ.3 मध्यांत)	Download
689	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो	मैं तो तुमको स्वर्ग की बादशाही देता हूँ। वहाँ भी मैं महलों में नहीं रहता। यहाँ भी मैं महलों में नहीं रहता। गाते हैं ना बम-2 महादेव भर दे झोली; परंतु वह कब और कैसे झोली भरते हैं यह कोई नहीं जानते। झोली भरी थी ज़रूर। चैतन्य में थे। (मु.12.5.72 पृ.2 मध्यांत)	Download
690	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो	तुमको दैवी फूल मिसल बनाकर पार ले जावेंगे, फिर स्वर्ग में तुम कब दुःख न देखेंगे। इसलिए उनको कहते ही हैं दुःख हर्ता-सुख कर्ता। हर-2 महादेव कहते हैं न। महादेव शिव को ही कहेंगे। वह है ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का भी बाप। (मु.6.11.73 पृ.5 मध्य)	Download
691	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो	सबसे जास्ती गाली खाने वाला है शिवबाबा नं॰ वन। सेकेंड नम्बर में गाली खाने वाला है ब्रह्मा। (मु.24.12.73 पृ.2 मध्यादि)	Download
692	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो	वास्तव में मंदिर होना चाहिए एक शिवबाबा का। वही निमित्त बना हुआ है पतितों को पावन बनाने (के लिए)। (मु.1.8.73 पृ.1 अंत)	Download
693	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो	मैं तुम बच्चों (के) पास कितना अच्छा मेहमान हूँ थोड़े दिन का। सुप्रीम बाप, परमपिता, सारे विश्व का मालिक तुम्हारे पास मेहमान है। (मु.6.11.68 पृ.3 अंत)	Download

694	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो	यह ब्रह्मा भीपुरुषार्थी है। शिवबाबा हैपुरुषार्थी । शिवबाबा पुरुषार्थ कराने वाला है। (मु.27.8.73 पृ.1 अंत)	Download
695	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो	सभी जानते हैं परमात्मा की जीवन कहानी। सो भी एक जन्म की नहीं। शिवबाबा के कितने जन्मों की बायोग्राफी है तुमको मालूम है। (मु.11.6.72 पृ.1 मध्यादि)	Download
696	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो	ऊँच ते ऊँच शिवबाबा और ब्रह्मा दोनों हाइएस्ट हैं। (मु.13.6.70 पृ.3 अंत)	Download
697	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो	इस एक आत्मा का ही नाम शिव है। और सभी आत्माओं का अपना-2 शरीर है। शरीर का नाम पड़ता है। परमात्मा के शरीर का नाम नहीं है। .....उनके आत्मा का ही नाम शिव है। वह कब बदलता नहीं। शरीर बदलते हैं तो नाम भी बदल जाते हैं। (जैसे ब्रह्मा से शंकर, फिर विष्णु।) (मु.21.1.70 पृ.2 आदि, 24.1.75 पृ.2 आदि)	Download
698	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो	बाप कहते हैं मैं खुद तुमको वापस ले जाने आया हूँ। मुझे काल-महाकाल कहते हैं। मौत सामने खड़ा है। इसलिए अब तुम मेरी मत पर चलो और पद भी ऊँच लो। जीवनमुक्ति में भी फिर पद है। मुक्ति में भी धर्म स्थापक आदि सभी बैठ जावेंगे। (मु.1.3.72 पृ.2 अंत)	Download
699	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो	हीरे जैसा तो एक ही शिवबाबा है जिसकी जयंती मनाई जाती है। पूछना चाहिए शिवबाबा ने क्या किया? वह तो आकर पतितों को पावन बनाते हैं। (मु.24.3.69 पृ.3 अंत)	Download
700	शिव-शंकर व्यक्तित्व एक, आत्मा दो	तुम यहाँ पुराने घर में रहते हो, फिर स्वर्ग में जाकर अपने घर में रहेंगे। शिवबाबा कहते हैं मैं तो नहीं रहूँगा। (मु.24.5.64 पृ.1 मध्य)	Download
701	जगतपिता-जगदम्बा	पिता है तो माता भी ज़रूर (साकार में) होनी चाहिए, नहीं तो बाप क्रियेट कैसे करें? (मु.20.10.73 पृ.1 मध्य)	Download
702	जगतपिता-जगदम्बा	बाप आकर ज्ञान अमृत का कलश इन माताओं को देते हैं कि मनुष्य को देवता बनावें। लक्ष्मी को नहीं दिया है। इस समय यह है जगतअम्बा। (मु.1.1.84 पृ.2 अंत)	Download
703	जगतपिता-जगदम्बा	मन्मनाभव, मेरे बच्चे बनो। वह तो प्रजापिता ब्रह्मा और जगदम्बा ही कह सकते। (मु.20.3.73 पृ.2 मध्य)	Download
704	जगतपिता-जगदम्बा	माताएँ तो बहुत हैं। एक का करके नाम बाला हो जाता है। तुम तो शक्ति सेना हो। शक्ति डिनायस्टी नहीं कहेंगे। शक्ति सेना की मुख्य हुई जगदम्बा। काली, सरस्वती, जगदम्बा एक के ही नाम हैं। बाकी चण्डिका आदि उल्टे-सुल्टे नाम भी बहुत रख दिए हैं। (मु.3.3.73 पृ.3 आदि)	Download
705	जगतपिता-जगदम्बा	यहाँ तो तुम जानते हो कि यह जगदम्बा-जगतपिता जो स्थापना अर्थ निमित्त हैं, यही फिर पालनकर्ता विष्णुलोक में बनेंगे। (मु.7.3.73 पृ.2 आदि) मु.8.3.78 पृ.1 अंत, 2 आदि ,	Download

706	जगतपिता-जगदम्बा	जगतअम्बा को देवता नहीं कहेंगे, जगतअम्बा जब सम्पूर्ण बन जाती है तो उसके बाद देवता बनती है। (मु.5.10.73 पृ.2 मध्य) मु.6.10.78 पृ.1 अंत,	Download
707	जगतपिता-जगदम्बा	सभी की माता है जगदम्बा; परंतु सारा जगत तो पहचान नहीं सकती है। यह भारत में ही महिमा है जगदम्बा की। (मु.6.8.73 पृ.1 आदि)	Download
708	जगतपिता-जगदम्बा	जो होकर जाते हैं उनकी महिमा गाई जाती है।... जिसको जगतअम्बा कहते हैं वो अपने बच्चों के सम्मुख बैठी है। भक्तिमार्ग में तो ऐसे ही गाते रहते हैं। तुम बच्चों को अभी ज्ञान मिला है अर्थात् जगतअम्बा का परिचय मिला है। जगतअम्बा के नाम से भी भिन्न-2 अनेक चित्र बनाए हैं। वास्तव में है तो एक ही जगतअम्बा। उनको ही काली कहो, सरस्वती कहो, दुर्गा कहो। ढेर नाम रखने से मनुष्य मूँझ गए हैं। तुम जानते हो अम्बा तो एक होनी चाहिए। उनका नाम-रूप भी एक ही होना चाहिए। (मु.15.10.73 पृ.1 आदि) मु.15.10.78 पृ.1 आदि ,	Download
709	जगतपिता-जगदम्बा	बाप है तो माँ ज़रूर (साकार में) है। भारत में जगतअम्बा की जीवन कहानी को कोई जानते नहीं हैं। .....जगतअम्बा के मंदिर भी हैं। यह थी जबकि नई दुनिया की रचना हुई होगी। (मु.5.10.73 पृ.1 आदि)	Download
710	जगतपिता-जगदम्बा	माताएँ तो ढेर हैं; परंतु मुख्य है जगतअम्बा। उनको अब कोई भी नहीं जानते। सन्यासी लोग कभी भी जगतअम्बा के पास नहीं जाएँगे; क्योंकि वह तो माताओं के तिरस्कारी हैं ना। वास्तव में उन्हों का भी उद्धार करने वाली जगतअम्बा और उनकी सेना है। कितना फर्क है! वह समझते स्त्री नर्क का द्वार है तो फिर जगदम्बा के पास भी नहीं जाएँगे। (मु.30.12.83 पृ.1 मध्यादि) मु.20.12.88 पृ.1 मध्य,	Download
711	जगतपिता-जगदम्बा	वास्तव में स्वर्ग का द्वार खोलती है यह जगतअम्बा, फिर पहले-2 वह खुद ही जगत की मालिक बनती है। तो ज़रूर माँ के साथ तुम बच्चे भी हो। उन (जगतपिता-जगदम्बा) का ही गायन है तुम मात-पिता...। (मु.30.12.83 पृ.1 मध्यादि)	Download
712	जगतपिता-जगदम्बा	गीता को ही माई-बाप कहते हैं। बाकी सभी शास्त्र हैं रचना। और शास्त्रों, वेदों को माता नहीं कहेंगे। माता के साथ पिता भी है। पिता ने ही गाई हुई है। (मु.9.7.69 पृ.3 मध्य) मु.21.7.90 पृ.3 मध्य,	Download

713	जगतपिता-जगदम्बा	जगतअम्बा का ऐसा भयानक रूप नहीं होता, न ऐसी बलि लेती है। उनमें भी एक वैष्णों देवी, दूसरी होती है माँसाहारी। ...अब जो माँसाहारी है वह वैष्णों बनती है।... जगतअम्बा जिससे स्वर्ग का वर्सा मिलता है वह सबकी मनोकामना पूर्ण करने वाली है। तो वही .... सच्ची-2 वैष्णों देवी है। हाँ, उसके पिछले जन्म (में) ज़रूर मूत पलीती माँसाहारी थी। ..... लक्ष्मी का मंदिर बड़ा या वैष्णों देवी का बड़ा? ...महिमा किसकी बड़ी? वह है ज्ञान-ज्ञानेश्वरी। लक्ष्मी को ज्ञान-ज्ञानेश्वरी नहीं कहेंगे। इसलिए महिमा जगतअम्बा की है। मेला भी जगतअम्बा का लगता है। लक्ष्मी को दीपमाला पर बुलाते हैं। बाकी जगतअम्बा का मेला मशहूर है। (मु.15.3.77 पृ.1 मध्य, 3 अंत)	Download
714	जगतपिता-जगदम्बा	मुसलमान भी समझते हैं भगवान ने आदम-बीबी द्वारा रचना रची है। (मु.4.3.83 पृ.2 अंत)	Download
715	जगतपिता-जगदम्बा	मुख्य ज़रूर हीरो-हीरोइन की जोड़ी होती है।..... मात-पिता जोड़ी है ना। यह है ही जोड़ी का खेल प्रवृत्तिमार्ग का; परंतु शिवबाबा की वंडरफुल जोड़ी है। ... ब्रह्मा-सरस्वती कह देते हैं; परंतु वह कोई जोड़ी है नहीं। वास्तव में शंकर-पार्वती की भी जोड़ी नहीं है। (मु.9.3.73 पृ.1 आदि)	Download
716	जगतपिता-जगदम्बा	वह है सभी की मनोकामनाएँ पूरी करने वाली। (मु.23.2.73 पृ.2 आदि)	Download
717	जगतपिता-जगदम्बा	पहले-2 तो मैं ब्रह्मा को रचता हूँ फिर जगदम्बा रची जाती है। (मु.23.2.73 पृ.2 आदि)	Download
718	जगतपिता-जगदम्बा	इनके मुख से तुमको जन्म देता हूँ।..... जगदम्बा सरस्वती जिसको कहते हैं वह तो ब्रह्मा की बेटी मुखवंशावली गाई जाती है। अब माता उनको कहें वा उनको(इनको)? मूल(असुल) रीयलिटी में यह (ब्रह्मा साकार) माता है; परंतु तन पुरुश का है तो माताओं के चार्ज में उनको(इनको) कैसे रखा जाए? इसलिए फिर जगदम्बा निमित्त बनी हुई है। बाप कहते हैं मैं इनमें प्रवेश कर इसको(इनको) एडॉप्ट करता हूँ। (मु.19.5.73 पृ.2 मध्यांत)	Download
719	जगतपिता-जगदम्बा	कहते हैं- तुम मात-पिता... बरोबर मात-पिता प्रैक्टिकल में अब हैं। (मु.23.10.72 पृ.3 मध्य)	Download
720	जगतपिता-जगदम्बा	हम जगदम्बा के बच्चे हैं। जगदम्बा नर से नारायण बनाने का कर्तव्य करती है। (मु.ता॰15.3.73 पृ.2 आदि)	Download
721	जगतपिता-जगदम्बा	अब तुम उस मात-पिता के साथ कुटुंब में बैठे हो। श्रीकृष्ण को तो मात-पिता कह नहीं सकते। भल उनके साथ राधे हो तो भी उनको मात-पिता नहीं कहेंगे; क्योंकि वह तो प्रिन्स-प्रिन्सेज़ हैं। (मु.12.1.78 पृ.1 आदि)	Download

722	जगतपिता-जगदम्बा	भारत में कुमारियों की बहुत मान्यता है। ...जगदम्बा भी कुमारी है ना। कुमारी को जगदम्बा कहना इसका भी अर्थ चाहिए ना। जगदम्बा (है) तो जगतपिता भी चाहिए। (मु.ता॰17.8.73 पृ.1 अंत, 2 आदि)	Download
723	जगतपिता-जगदम्बा	दिखाते हैं ज्ञान अमृत का कलश लक्ष्मी के सिर पर रखा है। वास्तव में कलश रखा है अम्बा पर, जो फिर लक्ष्मी बनती है। (मु.7.2.76 पृ.3 आदि)	Download
724	जगतपिता-जगदम्बा	सबसे लकी सितारा जगत अंबा हैं। सम्भालने के लिए मुख्य हैं। इसलिए इन पर कलश रहता है और यह (ब्रह्मा) तो हो गई ब्रह्म पुत्रा मेल के रूप में। ...सरस्वती को ही जगत अंबा कहा जाए। इस मेल को तो जगत अंबा नहीं कहेंगे। (मु.29.9.78 पृ.1 मध्य)	Download
725	जगतपिता-जगदम्बा	वही मात-पिता आकर सुख देते हैं। एडम और ईव तो मशहूर हैं। (मु.21.11.73 पृ.1 अंत)	Download
726	जगतपिता-जगदम्बा	बच्चे समझ सकते हैं आदम-बीबी वास्तव में यह है। बीबी सो आदम है। (मु.29.9.78 पृ.2 मध्यादि)	Download
727	जगतपिता-जगदम्बा	पुकारते भी हैं- तुम मात-पिता... परंतु उसका अर्थ तो कोई भी समझते नहीं हैं। निराकार बाप के लिए समझ लेते हैं। (मु.26.2.67 पृ.1 आदि.)	Download
728	जगतपिता-जगदम्बा	अभी तुम जानते हो जगदम्बा ही लक्ष्मी बनती है, फिर लक्ष्मी ही 84 जन्म ले जगदम्बा बनती है। यह कुल है ना। ब्रह्मा का कुल। (मु.3.2.77 पृ.3 आदि)	Download
729	जगतपिता-जगदम्बा	ज्ञान सूर्य तो है बाप। फिर माता चाहिए ज्ञान चंद्रमा। तो जिस तन में प्रवेश करते हैं वह हो गई ज्ञान चंद्रमा माता। बाकी सभी हैं बच्चे, लकी सितारे। इस हिसाब से जगदंबा भी लकी स्टार हो गई; क्योंकि सभी बच्चे ठहरे ना। (मु.31.1.73 पृ.2 मध्यादि) मु.7.1.03 पृ.2 अंत ,	Download
730	जगतपिता-जगदम्बा	जगत अंबा महावीरनी है ना। आदि देव की बेटी सरस्वती है। (मु.28.9.92 पृ.3 आदि) मु.25.9.07 पृ.3 अंत ,	Download
731	जगतपिता-जगदम्बा	यहाँ तुम किसके सामने बैठे हो? डबल बाप और माँ। वहाँ तो ऐसे नहीं हैं। तुम जानते हो बेहद का बाप भी है। ... मम्मा भी रहती, बड़ी मम्मा कहो, छोटी मम्मा कहो। इतने सब संबंध हो जाते हैं। (मु.30.4.68 पृ.1 आदि)	Download
732	जगतपिता-जगदम्बा	अब बाप माताओं द्वारा स्वर्ग का द्वार खोलते हैं। हैं तो पुरुश भी। माता जन्म देती है तो उनको पुरुश से इज़ाफ़ा जास्ती मिलती है। (मु.10.2.69 पृ.3 मध्यादि) मु.7.1.04 पृ.3 अंत,	Download
733	जगतपिता-जगदम्बा	शिव भगवानुवाच- माताएँ स्वर्ग का द्वार खोलती हैं। ...इसलिए 'वंदे मातरम्' गाया जाता है। वंदे मातरम् तो पिता भी अंडरस्टुड है। बाप माताओं की महिमा को बढ़ाते हैं। पहले लक्ष्मी, पीछे नारायण। यहाँ फिर पहले मिस्टर, पीछे मिसेज़। (मु.10.6.69 पृ.2 अंत)	Download

734	जगतपिता-जगदम्बा	जगदंबा उनका ठाँव है यह स्थूल सृष्टि। यह भी सभी जानते हैं जगदंबा तो यहाँ की रहने वाली होगी। जगत माना मनुष्य सृष्टि। (मु.20.2.72 पृ.1 आदि)	Download
735	जगतपिता-जगदम्बा	महालक्ष्मी की भी पूजा करते हैं। जगतअंबा से कब धन नहीं माँगते। ... यहाँ तो तुम जगदंबा से वर्सा ले रहे हो परमपिता परमात्मा शिव द्वारा। ... जगतअंबा का कितना मेला लगता है, ब्रह्मा का इतना नहीं। .....देवताएँ के मंदिर बहुत हैं; क्योंकि इस समय तुम्हारी महिमा है। (मु.14.5.70 पृ.3 मध्यादि) मु.4.5.00 पृ.3 मध्य,	Download
736	जगतपिता-जगदम्बा	जगदंबा की महिमा है। एक तो नहीं है, तुम सभी ...ब्राह्मण कुल की पालना करती हो। ...चंडिका देवी का भी मेला लगता है। (मु. 22.8.73 पृ.1 मध्यादि)	Download
737	जगतपिता-जगदम्बा	जगदंबा है तो बच्चे भी साथ होंगे। (मु.22.8.73 पृ.3 अंत)	Download
738	जगतपिता-जगदम्बा	गीता है माँ-बाप। गीता से ही राजयोग का व स्वर्ग की राजाई का वर्सा मिलता है। (मु.22.6.73 पृ.2 अंत)	Download
739	जगतपिता-जगदम्बा	शिव के साथ-2 गीता का भी जन्म होता है। (मु.23.7.71 पृ.3 आदि)	Download
740	जगतपिता-जगदम्बा	शिवजयन्ती फिर गीता जयन्ती, फिर ना. जयन्ती। (मु.26.8.69 पृ.2 मध्य)	Download
741	जगतपिता-जगदम्बा	मुख्य है गीता जिससे ब्राह्मण, सूर्यवंशी, चंद्रवंशी धर्म की स्थापना हुई। (मु.28.9.92 पृ.1 अंत)	Download
742	जगतपिता-जगदम्बा	देहली पर सबको चढ़ाई करनी है- देहली की धरणी को प्रणाम ज़रूर करना है। ...देहली के तरफ सभी की नज़र है। बाप की भी नज़र है, तो सर्व की भी नज़र है। (अ॰वा॰ 26.12.78 पृ.155 आदि-अंत)	Download
743	जगतपिता-जगदम्बा	बाप बैठ समझाते हैं दिल्ली में सभी धर्मों की कॉन्फ्रेंस होती है। (मु.1.1.72 पृ.2 अंत)	Download
744	जगतपिता-जगदम्बा	रावण-राज्य में भी दिल्ली कैपिटल है, राम-राज्य में भी दिल्ली कैपिटल रहती है। (मु.5.2.71 पृ.2 मध्यादि)	Download
745	याद किसको करें, किसको नहीं	बाप कहते हैं कि तुम इन (ब्रह्मा) के शरीर को भी याद न करो। शरीर को याद करने से पूरा ज्ञान उठा नहीं सकते। (मु.27.11.77 पृ.3 मध्यांत)	Download
746	याद किसको करें, किसको नहीं	इस मम्मा-बाबा को भी याद न करना है। इनको याद करना यह जमा न होगा। (मु.10.11.78 पृ.2 अंत)	Download
747	याद किसको करें, किसको नहीं	ब्रह्मा को याद करने से विकर्म विनाश नहीं होंगे। कोई न कोई पाप हो जावेगा। इसलिए उनका फोटो भी न रखो। (मु.17.5.71 पृ.4 मध्य)	Download
748	याद किसको करें, किसको नहीं	अगर इस देहधारी को तुम याद करते हो वह तो कॉमन हो जाता है। बाप कहते हैं कब भी देहधारी में तुमको लटकना नहीं है। (मु.6.11.77 पृ.1 आदि)	Download

749	याद किसको करें, किसको नहीं	पांडवों ने बरोबर राज्य लिया; परंतु सुप्रीम पण्डे साथ योग लगाया तब विकर्म विनाश हुए और दूसरे जन्म में राजाई पद पाया। (मु.2.1.74 पृ.2 मध्य)	Download
750	याद किसको करें, किसको नहीं	एक शिवबाबा को याद करना है। वर्सा उनसे मिलना है। माता से वर्सा मिल न सके। माता से जन्म लेते हैं, याद पिता को करना है। इस ब्रह्मा माता को भी उनके पास जाना है। इनकी आत्मा भी तुम्हारे मिसल पुरुषार्थ करती है। (मु.9.1.73 पृ.3 अंत)	Download
751	याद किसको करें, किसको नहीं	कोई भी चित्रों का सुमिरण न करना है। यह शिव का भी जो चित्र है उनका भी ध्यान नहीं करना है; क्योंकि शिव ऐसा तो है नहीं। (मु.2.3.73 पृ.2 अंत)	Download
752	याद किसको करें, किसको नहीं	शिवबाबा ऐसे नहीं कहते कि ब्रह्मा को याद न करो। ब्रह्मा बिगर शिवबाबा कैसे याद पड़ेगा? बाप कहते हैं मैं इस तन में हूँ। इसमें मुझे याद करो। इसलिए तुम बाप और दादा दोनों को याद करते हो। (मु.23.12.68 पृ.3 मध्य)	Download
753	याद किसको करें, किसको नहीं	बिंदी याद न पड़ती है तो अच्छा घर तो याद पड़ता है ना। शांतिधाम और वह है सुखधाम। (मु.4.9.71 पृ.3 अंत)	Download
754	याद किसको करें, किसको नहीं	खत्म होने वाली चीज़ को याद नहीं किया जाता है। नया मकान बनता है तो पुराने (ब्रह्मा तन) से दिल हट जाती है। यह फिर है बेहद की बात। (मु.27.3.71 पृ.2 आदि)	Download
755	याद किसको करें, किसको नहीं	विचित्र के साथ चित्र को याद करने से खुद भी चरित्रवान बन जाएँगे। अगर सिर्फ चित्र और चरित्र को याद करेंगे तो चरित्र की ही याद रहेगी। इसलिए विचित्र के साथ चित्र और चरित्र याद आए। (अ॰वा॰18.1.70 पृ.166 आदि)	Download
756	याद किसको करें, किसको नहीं	ज्ञान तो पूरा है नहीं। ब्रह्मा को याद करने से कोई पाप तो कटते ही नहीं, फिर गृहस्थियों पास ही जाकर जन्म लेते हैं। गृहस्थी पास जन्म ज़रूर लेना ही पड़े। (मु.11.10.68 पृ.2 आदि) मु.11.10.74 पृ.2 आदि,	Download
757	याद किसको करें, किसको नहीं	ज्ञान ब्रह्मपुत्रा वा सरस्वती को भी सुनाया ज्ञान सागर ने। बलिहारी उनकी है। याद उनको करना है। ऐसे नहीं मम्मा-बाबा में मोह रखना है। तुमको देही-अभिमानी बनना है। (मु.6.8.73 पृ.4 अंत)	Download
758	याद किसको करें, किसको नहीं	परमपिता परमात्मा हमको सम्मुख बैठ नॉलेज देते हैं। उस बाप की ही अव्यभिचारी याद रहनी है। और कोई के नाम-रूप की याद नहीं रहती है। (मु.4.8.72 पृ.1 आदि)	Download
759	याद किसको करें, किसको नहीं	अगर ब्रह्मा देहधारी की पूजा करते हैं। वह भी रॉंग है। (मु.29.9.77 पृ.1 मध्य)	Download
760	याद किसको करें, किसको नहीं	इस दादा को भी याद करने से पेट नहीं भरेगा। पेट पीठ से लग जावेगा। (मु.2.10.75 पृ.2 मध्य)	Download
761	याद किसको करें, किसको नहीं	अच्छा, बाप याद नहीं पड़ता है, टीचर को याद करो। टीचर कब भूलेगा क्या? (मु.15.1.73 पृ.1 अंत)	Download

762	याद किसको करें, किसको नहीं	सवेरे उठकर यह सुमिरण करना चाहिए। साजन जो खारे से पार ले जाते हैं उनको याद करना है। (मु.6.11.73 पृ.5 मध्य)	Download
763	याद किसको करें, किसको नहीं	दादा को कब भी याद न करना है। इन दादा द्वारा बाप कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे । अगर इस दादा को याद करेंगे तो एक भी विकर्म विनाश नहीं होगा, और ही बनेंगे। 5 विकार तुम्हारे में होंगे तो विकारी बन जावेंगे। मम्मा को भी याद नहीं करना है। (मु.7.2.70 पृ.2 मध्यादि)	Download
764	याद किसको करें, किसको नहीं	इस शरीर में बैठ कहते हैं- मामेकम् याद करो। (मु.21.8.73 पृ.3 मध्यादि)	Download
765	याद किसको करें, किसको नहीं	तुम .... राम को याद करो तो माला में पिरोने लायक बनो। (मु.20.2.72 पृ.3 आदि)	Download
766	याद किसको करें, किसको नहीं	अब तो सिर्फ तुमको एक्युरेट बाबा को याद करना है। (मु.2.01.98 पृ.3 अंत)	Download
767	याद किसको करें, किसको नहीं	अब तुमको तो माला फेरनी नहीं है। सिर्फ बाप को याद करना है एक्युरेट। (मु.23.12.77 पृ.3 मध्यादि)	Download
768	याद किसको करें, किसको नहीं	यह बाबा उनको याद करेंगे तो कहेंगे- ओ बाबा! हैं दोनों बाबा। राइट अक्षर बाप ही है। वह भी फादर, वह भी फादर। (मु.15.9.76 पृ.1 आदि) मु.2.10.01 पृ.1 मध्य,	Download
769	याद किसको करें, किसको नहीं	बाप समझाते हैं- बच्चे, एक ही अल्फ को याद करना है। अल्फ माना बाबा। (मु.22.7.68 पृ.1 मध्यांत)	Download
770	याद किसको करें, किसको नहीं	अब तुम शिवबाबा को याद करो और घर को याद करो। ... इसमें मुख से कुछ बोलना भी नहीं है। अंदर में सिर्फ याद रहे- बाबा आया हुआ है लेने लिए। (मु.18.11.70 पृ.1 आदि)	Download
771	याद किसको करें, किसको नहीं	उनको याद करने से विकर्म विनाश होंगे। बीच में यह भी है। (मु.7.7.70 पृ.3 आदि)	Download
772	याद किसको करें, किसको नहीं	जबकि बाप को याद करते हो तो ब्रह्मा को भी याद करना पड़े। (मु.16.3.68 पृ.1 मध्यांत)मु.18.3.99 पृ.1 अंत,	Download
773	याद किसको करें, किसको नहीं	माशूक परमात्मा...अब आए हैं। कहते हैं अगर तुम बच्चों को मेरे से मिलना है तो निरन्तर मुझ एक को याद करो। (मु.19.3.77 पृ.1 अंत)	Download
774	याद किसको करें, किसको नहीं	ब्रह्मा की आत्मा को कहते हैं मुझे याद करो। (मु.29.6.77 पृ.1 मध्य)	Download
775	याद किसको करें, किसको नहीं	आजकल तो भक्तिमार्ग बहुत है। आनंदमई माँ को भी माँ-2 करते, याद करते रहते हैं। अच्छा, बाप कहाँ है? माँ-बाप बिगर बच्चा कहाँ से आए? वर्सा बाप से मिलना है या माँ से? माँ को भी पैसा कहाँ से मिलेगा? सिर्फ माँ-2 कहने से ज़रा भी पाप नहीं कटेंगे। ...बाप थोड़े ही कहते हैं माँ को याद करो। बाप तो कहते हैं मुझे याद करो। ...माँ तो फिर भी देहधारी हो जाती है। (मु.8.2.89 पृ.3 मध्य)	Download
776	याद किसको करें, किसको नहीं	बच्चे को बाप और वर्से को पूरा याद करना चाहिए। (मु.15.8.76 पृ.1 अंत)	Download

777	याद किसको करें, किसको नहीं	बाप ही बैठ समझाते हैं कि मुझ अपने बाप को याद करो। तुमको शर्म नहीं आती है? तुम मुझे बार-2 भूल जाते हो। ... बच्चे... लज्जा नहीं आती है? बाप को याद नहीं करते हो? बाप के साथ तुम्हारा प्यार नहीं है! कितना याद करते हो? बाबा, एक घण्टा। अरे, निरन्तर याद करोगे तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। जन्म-जन्मांतर के पापों का बोझा सिर पर है। (मु.22.8.68 पृ.1 अंत)	Download
778	याद किसको करें, किसको नहीं	निराकार को क्यों याद करते हैं? उससे क्या मिलेगा? क्या निराकारी दुनिया में जाएँगे? ...भल सब याद करते हैं; परंतु बिगर परिचय। इस प्रकार याद करने से तो कोई पावन नहीं बनेंगे। यहाँ तो निराकार खुद साकार में आते हैं। (मु.31.8.98 पृ.3 मध्य)	Download
779	याद किसको करें, किसको नहीं	सिर्फ घर को याद करेंगे तो ब्रह्म (के) साथ योग हो गया। उनमें विकर्म विनाश नहीं हो सकते। ... तो बाप कहते हैं उनका योग रॉंग है। (मु.17.3.73 पृ.2 मध्य)	Download
780	याद किसको करें, किसको नहीं	अगर इनको (ब्रह्मा को) याद करेंगे तो कुछ भी नहीं मिलेगा। ....भल समझते हो यह रथ है; परंतु शिवबाबा को छोड़ रथ को ही याद करते रहेंगे तो कुछ भी नहीं मिलेगा, और ही पापात्मा बन पड़ेंगे। शिवबाबा को छोड़ अगर फोटो को याद किया तो समझो और ही गिर पड़ेंगे। (मु.17.2.68 पृ.3 मध्य) मु.8.2.89 पृ.3 आदि,	Download
781	याद किसको करें, किसको नहीं	बाबा समझाते हैं कब भी किसी देहधारी को याद न करना है। 5 तत्वों को भूत कहा जाता है। तो 5 तत्वों के शरीर को याद न करना है। (मु.13.11.72 पृ.1 आदि)	Download
782	याद किसको करें, किसको नहीं	इस मम्मा-बाबा को याद न करना है। इनको याद करने से जमा नहीं होगा। इनमें शिवबाबा आते हैं तो याद शिवबाबा को करना है। (मु.ता॰29.10.88 पृ.2 अंत)	Download
783	याद किसको करें, किसको नहीं	इस मम्मा-बाबा को भी याद न करना है। इनको याद न करना यह जमा न होगा। इनमें शिवबाबा आते हैं तो शिवबाबा को याद करना है। (मु.12.11.73 पृ.2 अंत)	Download
784	याद किसको करें, किसको नहीं	ऐसे नहीं ब्रह्मा को याद करने से कोई वर्सा मिलेगा। धूल भी नहीं मिलेगा। याद करना है शिवबाबा को। (मु.11.4.73 पृ.2 आदि)	Download
785	याद की विधि	बच्चे कहते हैं- बाबा, योग में रह नहीं सकते। अरे, तुमको सम्मुख कहता हूँ मुझे याद करो, फिर योग अक्षर क्यों कहते हो? योग कहने से ही तुम भूलते हो। बाप को याद कौन न कर सकेंगे? लौकिक माँ-बाप को कैसे याद करते हो? यह भी माँ-बाप है। ....यह भी पढ़ते हैं। सरस्वती भी पढ़ती थी। पढ़ाने वाला एक ही बाप है। (मु.22.2.69 पृ.2 अंत) मु.15.1.84 पृ.2 अंत ,	Download

786	याद की विधि	भक्तिमार्ग की बातें सब छोड़ दो। एकदम सब कुछ भूल जाएँ। सब छोड़ दें। काम में लगा देवें तब याद टूटे। इसमें बहुत मेहनत चाहिए यह ऊँच पद पाने लिए। शरीर भी याद न रहे। हम नंगे आए हैं, नंगे जाना है। यह बाप तो बच्चों को बैठ पढ़ाते हैं। (मु.18.3.74 पृ.1 अंत) मु.13.3.84 पृ.1 अंत,	Download
787	याद की विधि	अच्छा, परमात्मा जिसको तुम याद करते हो वह क्या चीज़ है? तुम कहते हो अखंड ज्योति स्वरूप है; परंतु ऐसे है नहीं। अखंड ज्योति को याद करना राँग हो जाता है। याद तो एक्युरेट चाहिए ना। सिर्फ गपोड़े से काम नहीं चलेगा, एक्युरेट जानना चाहिए। (मु.9.5.71 पृ.2 मध्य)	Download
788	याद की विधि	बाबा इनके शरीर में बैठा है तो शरीर ज़रूर याद आवेगा ना। फलाने शरीर वाली आत्मा में यह गुण है। (मु.23.4.68 पृ.1 मध्य)	Download
789	याद की विधि	कोई भी चीज़ जब साकार में देखी जाती है तो जल्दी ग्रहण कर सकते हैं। बुद्धि में सोचने की बात देरी से ग्रहण होती है। यहाँ भी साकार रूप में जिन्होंने साकार को देखा, उन्हों को याद करना सहज है। (अ॰वा॰1.2.71 पृ.25 मध्य)	Download
790	याद की विधि	हर एक को डायरैक्ट बाप से वर्सा लेना है। जितना-2 व्यक्तिगत बाप को याद करेंगे उतना वर्सा मिलेगा। (मु.31.7.68 पृ.1 मध्यादि)	Download
791	याद की विधि	बाप को ऐसे याद करो जैसे कन्या की सगाई होती है। याद बिल्कुल जैसेकि छप जाती है। बच्चा पैदा हुआ और याद छप जाती है। (मु.18.6.67 पृ.1 अंत)	Download
792	याद की विधि	मुख से शिवबाबा कहना भी नहीं है। जैसे आशूक-माशूक याद करते हैं। एक बार देखा, बस। फिर बुद्धि में उनकी ही याद रहेगी। (मु.23.3.70 पृ.3 आदि)	Download
793	याद की विधि	मेरे को निरंतर याद करो। सुमिरण नहीं करना है, याद करना है। याद में और सुमिरण करने में फर्क है। सुमिरण करने में हाथ वा मुख चलता है। (मु.11.2.73 पृ.1 अंत)	Download
794	याद की विधि	तुम जानते हो ब्रह्मा के तन में है तो ज़रूर यहाँ याद करना पड़ेगा। ऊपर में तो है नहीं। यहाँ आया हुआ है पुरुषोत्तम संगमयुग पर। बाप कहते हैं तुमको इतना ऊँच बनाने मैं यहाँ आया हूँ। तुम बच्चे यहाँ याद करेंगे।..... बाप कहते हैं मैं इस तन में हूँ। इसमें मुझे याद करो। (मु.23.12.68 पृ.3 मध्यादि)	Download
795	याद की विधि	भल बिंदी बुद्धि में याद ही नहीं आती। अच्छा, शिव को तो याद करो तो पाप कटे। बड़े रूप पर हिरे हुए हो, बड़ा ही सही। मतलब शिवबाबा को याद करो। भक्तिमार्ग में भी शिव को तो याद करते हो ना। बड़े को भी याद किया तो सभी पाप कट जावेंगे। (मु.17.1.69 पृ.1 मध्यांत रात्रि क्लास)	Download

796	याद की विधि	पूछते हैं हम कैसे याद करें? शिवबाबा को ब्रह्मा तन में याद करें या परमधाम में याद करें? बहुतों को यह प्रश्न उठता है। बाबा कहते हैं याद तो आत्मा को करना है; परन्तु शरीर भी ज़रूर याद पड़ता है। पहले शरीर फिर आत्मा। बाबा इनके शरीर में बैठा है तो शरीर ज़रूर याद आवेगा ना। (मु.23.4.68 पृ.1 मध्य)	Download
797	याद की विधि	जो ऊपर में बाप को याद करते होंगे वह है भक्तिमार्ग; क्योंकि उन्हों को ऑक्युपेशन का पता ही नहीं है। न उनके नाम, रूप, देश, काल का ही पता है। (मु.14.12.68 पृ.1 मध्यादि)	Download
798	याद की विधि	मैं यहाँ इस शरीर में आकर कहता हूँ कि तुमको याद वहाँ करना है जहाँ अभी आना है। ऐसे नहीं यहाँ याद करना है। (मु.16.4.73 पृ.1 आदि)	Download
799	याद की विधि	भट्ठी बनेगी तो तीन दिन अच्छे बीतेंगे। इसमें तो संगठन का सहयोग मिलता है; लेकिन यह आधार भी नहीं। कभी सहयोग मिल सकता है और कभी नहीं भी मिल सकता है। अभ्यास निराधार का होना चाहिए। ..... प्रोग्राम के आधार पर अपनी उन्नति का आधार बनाना यह भी कमज़ोरी है। (अ॰वा॰23.1.74 पृ.7 मध्य)	Download
800	याद की विधि	शरीर को याद कर फिर आत्मा को याद करना पड़ता है। ... दूसरे को करेंट देनी हैं तो फिर रात को सवेरे को याद में रहना होता है। .... आत्मा को देखना माना सर्चलाइट देना। ... जो याद करते हैं तो उनको याद पहुँचती है। (मु.18.3.74 पृ.2 अंत, 3 आदि)	Download
801	याद की विधि	पूरा ज्ञान बुद्धि में बैठा नहीं तो योग भी नहीं लगता। (मु.26.7.71 पृ.3 मध्यांत)	Download
802	याद की विधि	बीच-2 में एक/दो मिनट भी निकालकर इस बिंदी रूप की प्रैक्टिस करनी चाहिए। जैसे जब कोई ऐसा दिन होता है तो सारे चलते-फिरते हुए ट्रैफिक को भी रोककर तीन मिनट साइलेंस की प्रैक्टिस कराते हैं। सारे चलते हुए कार्य को स्टॉप कर लेते हैं। आप भी कोई कार्य करते हो वा बात करते हो तो बीच-2 में यह संकल्पों की ट्रैफिक को स्टॉप करना चाहिए। एक मिनट के लिए भी मन के संकल्पों को चाहे शरीर द्वारा चलते हुए कर्म को बीच-2 में रोककर भी यह प्रैक्टिस करना चाहिए। (अ॰वा॰24.7.70 पृ.1 आदि)	Download
803	याद की विधि	हठयोगी निवृत्ति मार्ग वाले सन्यासी कब प्रवृत्ति मार्ग वालों को राजयोग सिखा नहीं सकते। (मु.20.1.74 पृ.4 मध्यादि)	Download
804	याद की विधि	जितना जो स्वयं सरल होंगे उतना याद भी सरल रहती है। अपने में सरलता की कमी के कारण याद भी सरल नहीं रहती है। सरलचित्त कौन रह सकेगा? जितना हर बात में जो स्पष्ट होगा अर्थात् साफ होगा उतना सरल होगा। जितना सरल होगा उतना सरल याद भी होगी। (अ॰वा॰21.5.70 पृ.253 अंत)	Download

805	याद की विधि	याद में रहते हो यह कोई बड़ी बात नहीं; लेकिन याद के साथ-2 सहजयोगी, निरंतर योगी हो। अगर यह नहीं तो याद भी अधूरी रहेगी। (अ॰वा॰26.12.79 पृ.155 अंत)	Download
806	याद की विधि	आशूक-माशूक का भी एक/दो के शरीर से प्यार होता है। आशूक-माशूक दोनों ही देहधारी होते हैं। आशूक के सामने जैसे कि माशूक खड़ा है। माशूक को फिर आशूक दिखाई पड़ेगा। अभी तुम आशूक हो परमपिता परमात्मा के। एक है माशूक, बाकी सभी आत्माएँ हैं आशूक। अभी वह निराकार बाप तुमको इस साकार द्वारा बैठ मत देते हैं। (मु.5.8.73 पृ.3 मध्यादि)	Download
807	याद की विधि	बाबा टाइम भी देते हैं। अच्छा, रात को 9 बजे सो जाओ फिर 2 बजे, 3 बजे उठकर याद करो। (मु.2.5.70 पृ.1 अंत)	Download
808	याद की विधि	तुमको तो आँख भी बंद नहीं करनी चाहिए। याद में बैठना है ना। आँखें खोलने से डरना नहीं है। आँखें खुली हुई हों और बुद्धि में माशूक ही याद हो। आँखें बंद की तो गोया अंधा हो गया। यह कायदा नहीं है। बाप कहते हैं याद में बैठो। ऐसे थोड़े ही कहते हैं कि आँखें बंद करो। आँख बंद करेंगे वा कांध नीचा कर बैठेंगे तो बाबा कैसे देखेंगे?.....आँखें बंद हो जाता है, कुछ दाल में काला होगा, और कोई को याद करते होंगे। (मु.20.3.67 पृ.3 मध्यांत) मु.28.3.75 पृ.3 मध्य,	Download
809	याद की विधि	लैट्रिन में भी याद कर सकते हो। (मु.22.4.72 पृ.3 अंत)	Download
810	याद की विधि	इसी ब्रह्मा के तन में आए तब तो ब्रह्मा मुख से ब्राह्मण पैदा हों। उन ब्राह्मणों को राजयोग सिखलाते हैं। बाप कहते हैं जो भी आकारी वा साकारी या निराकारी चित्र को नहीं याद करना है। तुमको तो लक्ष्य दिया जाता है। मनुष्य तो चित्र देख याद करते हैं। बाबा कहते हैं चित्रों को देखना बंद करो। यह है भक्तिमार्ग। (मु.2.3.73 पृ.2 मध्य) मु.25.6.92 पृ.2 मध्य,	Download
811	याद की विधि	अभी बाप यथार्थ बात आकर समझाते हैं कि मुझे याद करो। यह है अव्यभिचारी याद। सो भी अर्थ सहित। दुनिया में तो किसको पता नहीं है। तुम जानते हो शिवबाबा बिंदी है। ... अच्छा, बिंदी छोटी लगती है, घर तो बड़ा है ना। तो घर को याद करो। बाबा भी वहाँ रहते हैं। (मु.4.9.76 पृ.3 मध्य)	Download
812	याद की विधि	इसको याद की यात्रा कहा जाता। योग कहने से यात्रा सिद्ध नहीं होता है। (मु.14.7.68 पृ.2 मध्यांत)	Download
813	याद की विधि	बाप को याद न करने में मूँझते, घुटका खाते रहते हैं। तुम इतना समय याद नहीं कर सकते हो? बाबा ने आशिक-माशूक का मिसाल बताया है। वो भल धंधा करते रहते, चर्खा चलाते रहते तो कोई भी समय माशूक सामने खड़ा हो जाता। .....आशिक माशूक को याद करते हैं, वो फिर उनको याद करते हैं। ....यहाँ तुमको सिर्फ एक बाप माशूक को याद करना है। बाप को तो तुम्हें याद नहीं करना है। बाप सबका माशूक है। (मु.2.3.71 पृ.1,2)	Download

814	याद की विधि	तुम बाप को भी भृकुटी के बीच में ही देखेंगे। बाबा भी यहाँ है, तो भाई (साकार की आत्मा) भी यहाँ है। (मु.14.4.68 पृ.2 अंत)	Download
815	याद की विधि	धन्धे आदि से भी कुछ समय निकाल याद कर सकते हो। यह भी अपने लिए धन्धा है ना। कोई बहाना भी करते हैं हमको माथा में बहुत दर्द पड़ गया है। हम छुट्टी लेकर जाते हैं। जाकर बाबा को याद करो। यह कोई झूठ नहीं हैं। सारा दिन ऐसे ही थोड़े ही गँवाना है। (मु.ता॰30.8.69 पृ.2 अंत) मु.ता॰15.9.00 पृ.3 मध्य ,	Download
816	याद की विधि	याद करने लिए कोई बैठना नहीं है। (मु.12.2.73 पृ.2 मध्य) मु.22.12.00 पृ.2 अंत,	Download
817	याद की विधि	एक बार जो चीज़ देखी जाती है तो वह याद रहती है। तो तुम घर बैठे शिवबाबा को याद नहीं कर सकते हो? (मु.12.2.73 पृ.2 मध्य) मु.22.12.00 पृ.2 अंत,	Download
818	याद की विधि	बच्चे कहते हैं- बेहद के बाप को याद कैसे (करें)? अरे, अपन को आत्मा तो समझते हो ना। आत्मा कितनी छोटी बिंदी है तो उनका बाप भी इतना छोटा होगा ना। वह पुनर्जन्म में नहीं आता है, यह बुद्धि में ज्ञान है। बाप याद क्यों नहीं आवेगा? (मु.13.9.68 पृ.3 अंत) मु.3.9.04 पृ.4 मध्य,	Download
819	याद की विधि	उठते, बैठते, चलते बाप को याद करो। क्या स्नान करते, टट्टी करते बाप को याद नहीं कर सकते हो? (मु.7.4.69 पृ.2 अंत) मु.14.2.04 पृ.3 आदि,	Download
820	याद की विधि	ऐसे भी नहीं सुबह को यहाँ आकर बैठने से बैटरी चार्ज हो सकेगी। नहीं, बैटरी चार्ज तो उठते-बैठते, चलते-फिरते हो सकती है, याद में रहने से। (मु.12.4.68 पृ.1 मध्यांत)	Download
821	याद की विधि	प्रश्न उठता ही नहीं- कहाँ याद करूँ, कैसे करूँ?.... बुद्धि में बाप को याद करना है। बाप कहाँ भी जाए, तुम तो बच्चे ही उनके हो ना। बेहद के बाप को याद करना है। (मु.20.7.68 पृ.2 मध्यांत रात्रि क्लास)	Download
822	याद की विधि	सबसे मुख्य बात है बाप को याद करना बहुत प्यार से। जैसे बच्चे माँ-बाप को एकदम लिपट जाते हैं वैसे ही आत्मा को बुद्धि के योग से एकदम बाप के साथ लिपट जाना चाहिए बहुत प्यार से। (मु.19.2.68 पृ.3 आदि) मु.22.2.99 पृ.3 मध्य,	Download
823	याद की विधि	आँखें खुले होते तुम याद कर सकते हो। ध्यान को कोई योग नहीं कहा जाता। ... बाप के कायदे अनुसार याद चाहिए। (मु.2.1.69 पृ.1 मध्य)	Download
824	याद की विधि	कपड़ा सिलाई करते हैं बुद्धियोग बाप की याद में रहे। (रात्रि मु.25.5.68 पृ.4 अंत)	Download

825	याद की विधि	आत्मा सीता है और वह राम है। तो इस पार्ट में भी बहुत मज़ा है। ... आत्मा में दोनों ही संस्कार हैं- कभी मेल का, कभी फीमेल का पार्ट तो बजाया है ना। संगम पर मज़ा है आशिक बन माशूक को याद करना। शक्ति बनकर सर्वशक्तिवान को याद करना। सीता बनकर राम को याद करना। (अ॰वा॰ता॰ 8.10.81 पृ.30 मध्य)	Download
826	याद की विधि	बाबा कहते हैं कोशिश कर तुम निरंतर याद में रहो। ऐसे नहीं कि सेंटर में जाए एक जगह बैठना है। नहीं, चलते-फिरते जो भी समय मिले बाप को याद करते रहना है। (मु.7.6.76 पृ.2 अंत)	Download
827	याद की विधि	तुम कर्मयोगी भी हो। यह बाप ने समझाया है 8 घंटा इस याद में अंत में रह सकेंगे, अभी नहीं। अभी एक घड़ी, आध घड़ी से लेकर चलाते रहो। बाप की याद ऐसी पक्की हो जाए जो कब भूले नहीं। फिर तुम आपे ही उड़ने लग पड़ेंगे। ... साथ/ थोड़ा चार्ट को बढ़ाते जाओ। प्रैक्टिस करो तो टेव पड़ जावेगी। (मु.23.9.71 पृ.3 मध्य) मु.27.10.96 पृ.3 अंत,	Download
828	लक्ष्मी-नारायण	तुम जब(सब) बता देंगे इन ल.ना. का जन्म कब हुआ। आज से 10 वर्ष कम 5000 वर्ष हुआ। फिर कल 9 वर्ष कम 5000 वर्ष (सन् 66 की वाणी है)। (मु.4.3.70 पृ.3 मध्य)	Download
829	लक्ष्मी-नारायण	पहले-2 आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले ल.ना. आवेंगे अपनी प्रजा सहित। और कोई प्रजा सहित नहीं आते। वो एक आवेगा फिर दूसरा-तीसरा आवेगा। यहाँ तुम सब तैयार हो रहे हो। (मु.17.5.65 पृ.1 अंत)	Download
830	लक्ष्मी-नारायण	इन ल.ना. का राज्य कब था? न कलियुग में, न सतयुग में। स्वर्ग की स्थापना ही संगम पर होती है। इतनी कोई औरों की बुद्धि जाती नहीं है। मनुष्य इतने विस्तार में नहीं जाते हैं। (मु.16.11.71 पृ.1 आदि)	Download
831	लक्ष्मी-नारायण	तुम जानते हो कि अभी हम ईश्वरीय सन्तान हैं, फिर हम दैवी सन्तान बनेंगे तो डिग्री कम हो जावेगी। यह (ल॰ना॰) भी डिग्री कम है; क्योंकि इनमें ज्ञान नहीं है। ज्ञान ब्राह्मणों में है। ज्ञान बिगर मनुष्य को क्या कहेंगे? अज्ञानी। इन (ल.ना.) को अज्ञानी नहीं कहेंगे। इन्होंने ज्ञान ही से यह पद पाया है। (मु.4.6.67 पृ.3 अंत)	Download
832	लक्ष्मी-नारायण	कोई मूर्ख थोड़े ही विश्व का मालिक बन सकते हैं। यह ल.ना. मालिक थे ना। इतने समझदार थे तब तो भक्तिमार्ग में भी पूजे जाते हैं। (मु.27.5.68 पृ.1 आदि)	Download
833	लक्ष्मी-नारायण	सतयुग में तो बुद्धू होंगे । इन ल.ना. को कुछ भी नॉलेज नहीं। (मु.17.4.71 पृ.3 अंत)	Download
834	लक्ष्मी-नारायण	अब हीरे जैसा जन्म तो सब कहेंगे इन ल.ना. का ही है। (मु.5.2.67 पृ.1 आदि)	Download

835	लक्ष्मी-नारायण	पुरुषोत्तम संगमयुग पर हीरे जैसा जीवन बनता है। इन (ल.ना.) को हीरे जैसा नहीं कहेंगे। तुम्हारा हीरे जैसा जन्म है। तुम हो ईश्वरीय सन्तान। ....यह दैवी सन्तान। (मु.28.4.68 पृ.2 मध्यादि)	Download
836	लक्ष्मी-नारायण	बरोबर इन ल.ना. का राज्य था सतयुग आदि में। इन ल॰ना॰ को भगवान-भगवती कहा जाता है। (मु.1.11.76 पृ.1 मध्यांत)	Download
837	लक्ष्मी-नारायण	ऊँच ते ऊँच बाप से ऊँच ते ऊँच वर्सा मिलता है। वो है ही भगवान। फिर सेकिंड में हैं ल.ना. विश्व के मालिक। (मु.8.1.67 पृ.2 मध्यांत) मु.8.1.75 पृ.2 मध्यांत,	Download
838	लक्ष्मी-नारायण	अभी तुम आत्माएँ इस शरीर द्वारा विश्व के मालिक बनते हो अर्थात् गॉड -गॉड़ेज बनते हो। बाप तो है गॉड फादर; परंतु भारत में इन ल.ना. को गॉड गॉड़ेज कहते हैं; क्योंकि इन्हों को इतना ऊँच बाप बनाते हैं। (मु.14.12.71 पृ.1 मध्य)	Download
839	लक्ष्मी-नारायण	यह ल.ना. चैतन्य में थे तो सुख ही सुख था। सब धर्मों वाले इनको पूजते, गार्डन ऑफ अल्लाह कहते हैं। (मु.2.10.70 पृ.3 मध्य) मु.30.9.74 पृ.3 मध्य,	Download
840	लक्ष्मी-नारायण	सारी ड्रामा में पार्ट ही ल.ना. का है। (मु.14.5.73 पृ.3 अंत)	Download
841	लक्ष्मी-नारायण	मंदिरों में भी राइट चित्र हैं ल.ना., राम-सीता के, बस। यह है ऊँच ते ऊँच जो प्रारब्ध भोगते हैं। (मु.31.7.73 पृ.2 अंत)	Download
842	लक्ष्मी-नारायण	पहले नं. में ल.ना. जो हैं विश्व के मालिक, उन्हों को भी 84 जन्म लेने पड़ते हैं। मनुष्य सृष्टि में जो हाइएस्ट न्यू मेन है। न्यू मेन के साथ न्यू वूमेन भी चाहिए। (मु.21.12.73 पृ.3 मध्यादि)	Download
843	लक्ष्मी-नारायण	नारायण से पहले तो श्रीकृष्ण है, फिर तुम ऐसे क्यों कहते हो नर से नारायण बने? क्यों नहीं कहते हो नर से कृष्ण बने? पहले-2 नारायण थोड़े ही बनेंगे। पहले तो श्रीकृष्ण प्रिन्स ही बनेंगे ना। ..... बाप कहते हैं अभी तुम (हम बच्चे) नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनने वाले हो। गाया भी जाता है बेगर टू प्रिंस। (मु.16.7.68 पृ.3 मध्य) मु.17.7.74 पृ.3 मध्य,	Download
844	लक्ष्मी-नारायण	यह अभी जानते हैं हम सो ल.ना. बनते हैं, हम सो राम-सीता बनेंगे। (मु.25.5.72 पृ.3 मध्यांत)	Download
845	लक्ष्मी-नारायण	तुम्हारी बुद्धि में सतयुग में ल.ना. का राज्य है, फिर वही त्रेता में भी राज्य करते हैं। (मु.9.11.72 पृ.3 मध्यादि)	Download
846	लक्ष्मी-नारायण	वह तो दान-पुण्य करने से, राजा पास जन्म लेने से प्रिंस बनते हैं, फिर राजा बनते हैं; परंतु तुम इस पढ़ाई से राजा बनते हो। (मु.8.7.68 पृ.2 अंत, 3 आदि)	Download
847	लक्ष्मी-नारायण	तुम बच्चों को सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण यहाँ (संगमयुग पर) बनना है। (मु.23.3.68 पृ.1 अंत)	Download
848	लक्ष्मी-नारायण	इस सहज राजयोग द्वारा इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही यह बनते हैं। (मु.5.12.68 पृ.1 मध्यांत)	Download
849	लक्ष्मी-नारायण	जब जन्मसिद्ध अधिकार है तो जन्म लेने से ही प्राप्त है- तब अधिकारी तो बन ही गए ना। (अ.वा.29.1.75 पृ.30 अंत)	Download

850	लक्ष्मी-नारायण	तुम्हारे पास एम-ऑब्जेक्ट भी है। तुम यह पढ़ाई पढ़कर जाय गद्दी बसाएँगे। बाकी सबको मुक्तिधाम ले जावेंगे। (मु.23.2.75 पृ.1 अंत)	Download
851	लक्ष्मी-नारायण	जानते हो बाबा ऐसा (ल.ना.) बना करके चले जावेंगे। फिर तुम राज्य करेंगे। बाकी मनुष्य शांतिधाम चले जावेंगे। (मु.25.6.69 पृ.3 अंत)	Download
852	लक्ष्मी-नारायण	ल.ना. के चित्र साथ फिर राधे-कृष्ण भी हों तो समझाने में सहज होगा। यह है करेक्ट चित्र। (मु.3.1.78 पृ.3 मध्य)	Download
853	लक्ष्मी-नारायण	बाबा ने कहा था कि जब प्रभातफेरी निकालते हो तो साथ में ल.ना. का चित्र ज़रूर उठाओ। (मु.ता॰24.12.67 पृ.1 मध्यांत)	Download
854	लक्ष्मी-नारायण	यह भी बताया है इन ल.ना. में यह ज्ञान नहीं है। वहाँ तो आस्तिक-नास्तिक का पता ही नहीं रहता। (मु.22.7.68 पृ.2,3)	Download
855	लक्ष्मी-नारायण	बाप समझाते हैं तुम कितने बेसमझ बन गए हो। अब समझदार बनाते हैं। यह (ल.ना.) समझदार हैं, तब तो विश्व के मालिक हैं। बेसमझ तो विश्व के मालिक हो न सकें। (मु.29.7.70 पृ.3 मध्यादि) मु.20.7.04 पृ.3 अंत ,	Download
856	लक्ष्मी-नारायण	यह ल.ना. कितने समझदार थे, राज्य करते थे। बाप कहते हैं ततत्वम्, तुम भी अपने लिए ऐसे समझो। (मु.27.9.75 पृ.1 मध्य)	Download
857	लक्ष्मी-नारायण	विश्व राजन बनना व सतयुगी राजन बनना, इसमें भी अंतर है। (अ॰वा॰ता॰ 28.1.85 पृ.146 मध्य)	Download
858	लक्ष्मी-नारायण	इन ल.ना. का राज्य था ना। वह बने कैसे, कब बनाया, कब कथा सुनाई, कब राजयोग सिखाया- यह तुम अभी समझते हो। (मु.30.1.68 पृ.1 मध्यादि) मु.23.1.84 पृ.1 मध्य,	Download
859	लक्ष्मी-नारायण	इस ड्रामा में तुम्हारा है हीरो-हीरोइन का पार्ट। तुम विश्व के मालिक बनते हो। (मु.2.5.68 पृ.2 अंत)	Download
860	लक्ष्मी-नारायण	विष्णु के दो रूप यह ल.ना. हैं। छोटेपन में राधे-कृष्ण हैं। यह कोई भाई-बहन नहीं हैं, अलग राजाओं के बच्चे थे। वह महाराजकुमारी, वह महाराजकुमार थे, जिनको फिर स्वयंवर के बाद ल॰ना॰ कहा जाता है। (मु.3.9.70 पृ.1,2)	Download
861	लक्ष्मी-नारायण	इन ल.ना., राधे-कृष्ण आदि सभी के मंदिर हैं। ....विष्णु का भी मंदिर है, जिसको नर-नारायण का मंदिर कहते हैं, और फिर ल॰ना॰ का अलग-2 भी मंदिर है। (मु.3.9.70 पृ.2 आदि)	Download
862	लक्ष्मी-नारायण	राधे-कृष्ण साथ फिर ल.ना. का क्या संबंध है, यह बाप ही आकर समझाते हैं। (मु.29.4.71 पृ.1 मध्य)	Download
863	लक्ष्मी-नारायण	ल.ना. को गॉड -गॉड़ेज कहते हैं अर्थात् गॉड द्वारा यह वर्सा पाया है। (मु.7.2.76 पृ.1 मध्यांत)	Download
864	लक्ष्मी-नारायण	ल.ना. का इस समय कोई एक्युरेट चित्र तो नहीं है। फिर प्रैक्टिकल में आवेंगे। (मु.6.4.73 पृ.2 आदि)	Download
865	लक्ष्मी-नारायण	भगवान पढ़ाते हैं तो ज़रूर भगवान ही बनना है; परंतु इनको (सतयुगी) (ल.ना.) भगवान-भगवती समझना रॉंग है। (मु.26.8.68 पृ.2 आदि)	Download

866	लक्ष्मी-नारायण	तुमको मालूम है टिड्डियों का झुंड कितना बड़ा होता है। सबकी यूनिटी होती है। पहले आगे वाला बैठा तो सब बैठ जाएँगे। मधुमक्खियाँ भी ऐसी होती हैं। रानी ने घर छोड़ा तो सब भागेंगी उनके पिछाड़ी । वह जैसे उन्हों का साजन हुआ। उनमें फिर सजनी ही राज्य करती है हमजिन्स पर। (मु.17.11.91 पृ.2 आदि.)	Download
867	लक्ष्मी-नारायण	यह भी तो तुम्हारा अविनाशी ज्ञान सर्जन है। (मु.10.6.87 पृ.2 मध्य)	Download
868	लक्ष्मी-नारायण	जैसे बैरिस्टर कहेंगे हम बैरिस्टर बनाएँगे। ... श्री ल.ना. अथवा उसके डिनायस्टी का वर्सा देने आता हूँ। (मु.10.3.72 पृ.1 आदि)	Download
869	लक्ष्मी-नारायण	राधा कुमारी है, कृष्ण कुमार। तो कृष्ण (को) स्वामी कैसे कहेंगे? जब स्वयंवर बाद ल.ना. बनें तब स्वामी कहा जाए। (मु.29.9.77 पृ.2 मध्य)	Download
870	लक्ष्मी-नारायण	यह ल.ना. हैं जिनको ही इकट्ठा विष्णु का रूप दिखाया है। ल.ना. तो दोनों ही अलग-2 हैं। (मु.21.4.68 पृ.1 आदि)	Download
871	लक्ष्मी-नारायण	जिस शरीर में आकर बैठते हैं वही फिर जाकर नारायण बनते हैं। विष्णु कोई और नहीं, ल.ना. के अथवा राधे-कृष्ण की जोड़ी कहो। (मु.21.5.68 पृ.3 आदि)	Download
872	लक्ष्मी-नारायण	शिवजयंती माना ही स्वर्ग की जयंती, ल.ना. की जयंती। (मु.1.8.68 पृ.3 मध्यांत)	Download
873	लक्ष्मी-नारायण	ल.ना. कहने से तुम चले जाते हो सतयुग में। यह है भी नर से नारायण बनने की कथा। कृष्ण बनने की कथा नहीं कहते। इसको सत्यनारायण की कथा कहेंगे, सत्य कृष्ण की कथा नहीं कहा जाता। (मु.21.8.73 पृ.2 अंत)	Download
874	लक्ष्मी-नारायण	कॉन्ट्रास्ट करना है- यह ल.ना. भगवान-भगवती हैं ना। उनकी भी वंशावली हुई ना। तो ज़रूर सब गॉड -गॉड़ेज होने चाहिए ना। (मु.19.12.70 पृ.1 अंत)	Download
875	लक्ष्मी-नारायण	तुम ब्राह्मण हो ईश्वरीय संतान। सतयुग में ईश्वरीय संतान नहीं कहलाएँगे। (मु.24.5.64 पृ.2 अंत)	Download
876	लक्ष्मी-नारायण	अब समझते हैं कि यह ल.ना. विश्व के मालिक थे, कितने साहूकार थे। आधा कल्प विश्व के मालिक थे। (मु.5.12.71 पृ.1 अंत)	Download
877	लक्ष्मी-नारायण	तुम जानते हो ल.ना. की आत्माएँ भी इस समय हाज़िर-नाज़िर हैं। ..... कृष्ण भी यहाँ ही है। (मु.26.2.73 पृ.1 अंत)	Download
878	लक्ष्मी-नारायण	बाप आ करके हमको विश्व का मालिक बनावेंगे। ... इस जन्म की बात है ना। (मु.ता.रात्रि क्ला.30.4.68 पृ.1 आदि)	Download
879	सारी महिमा संगमयुगी ल.ना. की है	मर्यादा पुरुषोत्तम यह महिमा बच्चे की नहीं होती। महिमा हमेशा राजा-रानी (की) की जाती है। (मु.21.8.73 पृ.2 अंत)	Download
880	सारी महिमा संगमयुगी ल.ना. की है	गायन पहले नम्बर का ही होता है। ... कृष्ण को इतना ऊँच पद कोई ने तो दिया होगा न। (रात्रि मु.31.7.64 पृ.3 मध्य)	Download

881	सारी महिमा संगमयुगी ल.ना. की है	महिमा भी वह होनी चाहिए जो आपके सम्पूर्ण स्वरूप की है। (अ॰वा॰20.1.74 पृ.2 आदि)	Download
882	सारी महिमा संगमयुगी ल.ना. की है	पहले नम्बर वाले की ही पूजा होती है। (मु.22.9.73 पृ.1 अंत, 2 आदि)	Download
883	सारी महिमा संगमयुगी ल.ना. की है	यह ल.ना. पास्ट हो गए हैं, इसलिए उनकी महिमा गाते हैं। (मु.28.2.68 पृ.2 अंत) मु.5.2.99 पृ.2 अंत,	Download
884	सारी महिमा संगमयुगी ल.ना. की है	देखो इन ल.ना. को। ... इन्हों की महिमा भारतवासी जानते हैं। यह स्वर्ग नई दुनिया, नए विश्व के मालिक हैं। (मु.11.3.73 पृ.1 मध्यादि)	Download
885	सारी महिमा संगमयुगी ल.ना. की है	वैल्यू तो उनकी है जो हीरो-हीरोइन का पार्ट बजाते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे बाबा ही हीरो-हीरोइन का पार्ट बजाते हैं। (मु.28.8.71 पृ.2 अंत)	Download
886	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	तुम पदमापदम भाग्यशाली इन देवताओं को कहेंगे। यह कितने भाग्यशाली हैं। यह किसको भी पता नहीं है कि यह स्वर्ग के मालिक कैसे बने। अभी तुमको बाप सुना रहे हैं इस सहज राजयोग द्वारा इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही यह बनते हैं। ..... योगबल से तुम कितने कंचन बनते हो। आत्मा और काया दोनों कंचन बनती है। (मु.5.12.68 पृ.1मध्यांत, अंत)	Download
887	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	देह सहित जो कुछ है वह सब मेरे को दो। मैं तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों को प्योर बना दूँगा और फिर राजाई भी दूँगा। (मु.26.4.71 पृ.3 अंत) मु.25.4.73 पृ.3 अंत,	Download
888	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	जैसे सर्प का मिसाल- एक खाल छोड़ दूसरी लेते हैं। उसको कोई मरना नहीं कहा जाता। ... एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। यह अभ्यास यहीं डालना है। (मु.10.2.67 पृ.2 अंत)	Download
889	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	ऊपर जाना माना ही मरना, शरीर छोड़ना। मरना कौन चाहेगा? यहाँ तो बाप ने कहा है कि तुम तो इस शरीर को भी भूल जाओ। जीते जी मरना तुमको सिखाते हैं जो और कोई सीखा नहीं सकता है। (मु.25.8.68 पृ.2 आदि) मु.25.8.74 पृ.2 आदि,	Download
890	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	बाप बैठ अर्थ समझाते हैं। जैसे सर्प पुरानी खल आपे ही छोड़ देते हैं और नई खल आ जाती है। उनके लिए ऐसे नहीं कहेंगे एक शरीर छोड़ दूसरे में प्रवेश करती है। नहीं। खल बदलने का एक ही सर्प का मिसाल है। वह खल उसको देखने में आते हैं। जैसे कपड़ा उतारा जाता है वैसे सर्प भी खल छोड़ देता। दूसरी मिल जाती है। सर्प तो जीता ही रहता है। ऐसे भी नहीं सदैव अमर रहता है। दो/तीन खल बदली कर फिर मर जावेंगे। (मु.18.7.70 पृ.2 अंत)	Download

891	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	यहाँ तो भले पदमपति हो, तो भी दुःखी होंगे। काया कल्पतरु तो होती नहीं। तेरी काया कल्पतरु होती है। (मु.28.1.73 पृ.2 अंत)	Download
892	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	नानक ने भी कहा न- मूत पलीती कपड़ धोय। लक्ष्य सोप है न! बाबा कहते हैं मैं कितना अच्छा धोबी हूँ। तुम्हारे वस्त्र (आत्मा और शरीर) कितना शुद्ध बनाता हूँ। ऐसा धोबी कब देखा? (मु.21.5.64 पृ.3 अंत)	Download
893	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	बाप कहते हैं मैं यहाँ ही आकर सारी सृष्टि को 5 तत्वों सहित सभी को पवित्र बनाता हूँ। (मु.18.1.71 पृ.2 मध्यांत)	Download
894	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	यह सब कपड़े धोए जाएँगे। यह बेहद की बड़ी मशीनरी है। गाया भी जाता है मूत पलीती कपड़ धोय। इन कपड़े(कपड़ों) की बात नहीं, यह है शरीर की बात। आत्माओं को योगबल से धोना है। इस समय 5 तत्व तमोप्रधान हैं, तो शरीर भी ऐसे ही बनते हैं। पतित-पावन बाप आकर पावन बनाते हैं और पतित खलास हो जाते हैं। (मु.6.8.76 पृ.1 मध्यांत)	Download
895	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	यहाँ आकर सृष्टि को पलटाकर काया कल्पवृक्ष समान बनानी है। तेरी काया बिल्कुल पुरानी हो गई है। इनको फिर ऐसा बनाते हैं जो तुम आधा कल्प मरते ही नहीं हो। भल शरीर बदलते हो; परंतु खुशी से। जैसे पुराना चोला छोड़ नया ले लेते हो। ऐसे नहीं कहेंगे कि फलाना मर गया। नहीं, इसको मरना नहीं कहा जाता। जैसे तेरा यह जीते जी मरना है। तुम मरे थोड़े ही हो। तो तुम शिवबाबा के बने हो। (मु.28.1.73 पृ.1 अंत) मु.27.1.78 पृ.1 अंत,	Download
896	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	यह तो बहुत ही बड़ा वैल्युएबल शरीर है। इस शरीर द्वारा ही आत्मा को बाप से लॉटरी मिलती है। (मु.8.10.68 पृ.1 मध्यांत)	Download
897	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	वह बाप भी है, नैया को पार लगाने वाला खिवैया भी है। ... क्या शरीर को ले जावेंगे? अभी तुम बच्चे समझते हो बरोबर हमारी आत्मा को पार ले जाते हैं। ... इनको वस्त्र भी कहते हैं, नैया भी कहते हैं। (मु.3.11.68 पृ.1 मध्यादि, 2 मध्यांत) मु.3.11.74 पृ.1 मध्य, 2 अंत,	Download
898	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	जैसे सर्प पुरानी खल छोड़ नई ले लेते हैं। तुम भी जानते हो यह पुराना सड़ा हुआ शरीर है। इनको छोड़ना है। (मु.25.6.70 पृ.3 अंत)	Download
899	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	नाम ही है गोल्डन एज। कंचन दुनिया। आत्मा और काया दोनों कंचन बन जाती है। (मु.ता॰1.10.68 पृ.3 अंत)	Download
900	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	आत्मा भी और काया भी कंचन बने इसलिए सवेरे ड्रिल होती है। (मु.ता॰रात्रि क्ला.30.4.68 पृ.2 आदि)	Download
901	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	आत्मा सुधरती-2 पावन हो जावेगी तो फिर यह खल उतार देंगे। .. कंचन काया मिलेगी। सो तब जब आत्मा भी कंचन हो। सोना कंचन हो तो जेवर भी कंचन बनेंगे। (मु.3.5.68 पृ.3 अंत)	Download

902	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	आत्मा समझती है कि जितना याद करते रहेंगे उतना ही शरीर से निकलते जावेंगे। जैसे सर्प का मिसाल देते हैं। मिसाल जो देते हैं उसमें ज़रूर कुछ रहस्य होते हैं। (मु.11.4.68 पृ.1 आदि) मु.6.3.04 पृ.1 मध्य,	Download
903	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	यहाँ बैठे हो, यह तो याद होगा ना- हम आए हैं रिज्युबिनेट होने अर्थात् यह शरीर बदल देवता शरीर लेने। (मु.12.1.69 पृ.1 मध्यादि)	Download
904	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	बाप ही बागवान है, उनको खिवैया भी कहते हैं। ... हरेक की नइया पार कैसे हो, सो तुमको बैठ समझाते हैं। ... नइया आत्मा और शरीर दोनों चीज़ की बनी हुई है। (मु.15.9.71 पृ.2 मध्यादि)	Download
905	कंचनकाया इसी शरीर से यहीं बनेगी	सड़े हुए कपड़ों को सटका लगाने से चीर-2 हो जाते हैं। यहाँ भी ज्ञान की सोंटी लगाओ तो पुर्जा-2 हो जाते हैं। कोई कपड़ा ऐसा मैला है, साफ करने में बहुत टाइम लगता है। फिर वहाँ भी हल्का पद मिल जाता है। बाबा धोबी है। (मु.15.3.71 पृ.2 मध्यांत) मु.13.4.86 पृ.2 मध्यांत,	Download
906	राम-सीता की आत्माएँ माँ-बाप के रूप में दास-दासी	बेहद का बाप बेहद के बच्चों का सर्वेंट है। लौकिक बाप भी सर्वेंट होता है ना। (मु.5.2.68 पृ.1 मध्य)	Download
907	राम-सीता की आत्माएँ माँ-बाप के रूप में दास-दासी	जब सूर्यवंशियों का राज्य चलता है तो राम-सीता को दास-दासी होकर रहना पड़ता है। फिर जब चंद्रवंशियों का राज्य होता है तो वह अपना राज्य ले लेते हैं। (मु.29.7.73 पृ.3 आदि)	Download
908	राम-सीता की आत्माएँ माँ-बाप के रूप में दास-दासी	फादर हमेशा ओबिडियेंट होता है। सेवा बहुत करते हैं। खर्चा कर, पढ़ाकर, फिर सभी धन-दौलत बच्चों को देकर खुद जाए साधुओं का संग करते हैं। (मु.27.6.70 पृ.3 मध्य)	Download
909	राम-सीता की आत्माएँ माँ-बाप के रूप में दास-दासी	वहाँ ...बाप पैर धोकर बच्चों को तख़्त पर बिठाते हैं। (मु.18.8.73 पृ.2 अंत)	Download
910	राम-सीता की आत्माएँ माँ-बाप के रूप में दास-दासी	पिछाड़ी में तुमको सब साक्षात्कार होंगे। फर्स्ट क्लास दास-दासियाँ भी बनेंगी। फर्स्ट दासी कृष्ण का पालन करेगी। (मु.2.3.68 पृ.3 अंत) मु.9.3.74 पृ.3 मध्यांत,	Download
911	राम-सीता की आत्माएँ माँ-बाप के रूप में दास-दासी	बाप हमेशा बच्चों को रचकर और उन्हों की फिर सेवा कर लायक बनाते हैं। बच्चों की कितनी मेहनत से पालना करते हैं। रात-दिन यह चिंतन रहता है कि बच्चों की सेवा कर बच्चों को लायक बनावें। जैसे कि बच्चों के गुलाम बन जाते हैं। तो वह हैं हद की अपनी रचना के गुलाम, यह फिर है बेहद का बाप। (मु.4.6.64 पृ.1 आदि)	Download

912	राम-सीता की आत्माएँ माँ-बाप के रूप में दास-दासी	बाप तुमको पढ़ाते हैं। ओबिडियेंट सर्वेंट बना है। बाप बच्चों का ओबिडियेंट सर्वेंट होता है ना। बच्चे को पैदा कर, उनकी सम्भाल, पढ़ाये,बड़ा बनाकर फिर बूढ़ा होता है। तो सारी मिल्कियत बच्चों को देकर खुद गुरू के किनारे जाकर बैठते हैं। वानप्रस्थी बन जाते हैं। ... तो माँ-बाप दोनों ही बच्चों की सम्भाल करते हैं। समझो माँ बीमार है, बच्चे टट्टी कर देते हैं तो बाप को उठाना पड़े ना। तो बाप-माँ बच्चों के सर्वेंट ठहरे ना।(मु.16.10.68 पृ.1 अंत) मु.15.9.04 पृ.2 मध्य,	Download
913	राम-सीता की आत्माएँ माँ-बाप के रूप में दास-दासी	प्रश्न उठता है राम-सीता सतयुग में आते हैं? हाँ, आते हैं; परंतु नापास होते हैं; इसलिए जो पास हुए ल°ना° हैं उनके आगे भरी ढोते हैं। (मु.7.6.73 पृ.2 अंत) मु.29.5.83 पृ.2 अंत,	Download
914	जुड़वे बच्चे राधा-कृष्ण	वहाँ विधवा आदि बनते ही नहीं। अकाले मृत्यु होती नहीं। जब आयु पूरी होती है तो साक्षात्कार होता है। .....समय पूरा होने से शरीर छूटना है। (मु.28.3.69 पृ.4 मध्यांत)	Download
915	जुड़वे बच्चे राधा-कृष्ण	सतयुग में तुम ही आपस में भाई-बहन थे। ... दूसरा कोई सम्बंध नहीं। (मु.4.5.74 पृ.3 अंत)	Download
916	जुड़वे बच्चे राधा-कृष्ण	वहाँ जास्ती सम्बंध आदि नहीं होते। सम्बंध बहुत ही हल्का होता है। (मु.12.10.68 पृ.3 मध्यांत)	Download
917	जुड़वे बच्चे राधा-कृष्ण	बहुतों का ऐसे हार्टफेल होता है जो पिछाड़ी में कोई की याद नहीं रहती। फिर भी बुद्धि में सम्बंध तो रहता है, जब तक दूसरा शरीर लेवें। (मु.4.3.69 पृ.4 मध्यादि)	Download
918	जुड़वे बच्चे राधा-कृष्ण	अभी तुम ईश्वरीय सन्तान हो। बेहद का बाप है और तुम सब बहन-भाई हो। बस, और कोई संबंध नहीं है। मुक्तिधाम में है ही बाप और तुम सब आत्माएँ भाई-2। फिर तुम सतयुग में जाते हो तो वहाँ एक बच्चा और एक बच्ची। बस। यहाँ तो बहुत संबंध होते हैं - चाचा, काका आदि-2। (मु.29.12.67 पृ.2,3)	Download
919	जुड़वे बच्चे राधा-कृष्ण	वहाँ एक-2 को एक बच्चा, एक बच्ची ...हो तो फिर त्रेता में इतने हो जावेंगे। ... ऐसे नहीं कि उसी समय कोई 5-6 बच्चे पैदा करते हैं। .....सतयुग में इतने बच्चे होते ही नहीं। ....पीछे आस्ते-आस्ते-2 बच्चे जास्ती होते हैं। (मु.23.9.71 पृ.2 आदि) मु.27.10.96 पृ.2 आदि,	Download
920	जुड़वे बच्चे राधा-कृष्ण	वहाँ राम को 4 भाई तो होते नहीं। वहाँ तो बच्चा भी एक होता है। 4 बच्चे तो होते नहीं। (मु.29.9.77 पृ.1 मध्यांत) मु.27.9.07 पृ.1 अंत,	Download
921	भारत कौन?	भारत ही सभी की दुर्गति के निमित्त बना है, फिर सद्गति के लिए भी निमित्त बनता है। (मु.2.1.69 पृ.3 अंत)	Download
922	भारत कौन?	भारत इस सारे विश्व का मालिक था और कोई राजा नहीं था। (मु.9.9.77 पृ.1 अंत)	Download
923	भारत कौन?	भारत प्रिंस था, अभी बेगर है, फिर प्रिंस बनते हैं। बनाने वाला है बाप। (मु.8.2.71 पृ.3 आदि)	Download
924	भारत कौन?	भारत बिल्कुल ही पतित हो गया है। भोगी हो गया है। योगी नहीं कहेंगे। (मु.25.8.73 पृ.6 आदि)	Download

925	भारत कौन?	जब-2 भारत पापात्मा, दुःखी बन जाता है, धर्म ग्लानि हो पड़ती है तो मैं आता हूँ। रूप बदलना पड़ता है। ज़रूर मनुष्य तन में ही आवेंगे। (मु.16.12.73 पृ.1 आदि)	Download
926	भारत कौन?	इस समय सब जीवन बंध में हैं। खास भारत। भारत ही एक सेकेंड में जीवनमुक्ति लेते हैं।(मु.18.7.65, 13.7.72 पृ.1 मध्यांत)	Download
927	भारत कौन?	भारत ही फिर पुरुषोत्तम बनने का है। (मु.23.3.70 पृ.1 मध्यादि)	Download
928	भारत कौन?	बाप ब्रह्मा तन का ही आधार लेते हैं। उनको आना ही भारत में है। बाप का जन्म भी भारत में ही है। ब्रह्मा का भी भारत में है। (मु.29.7.64 पृ.3 अंत) मु.27.7.73 पृ.3आदि,	Download
929	भारत कौन?	भारत सतोप्रधान था फिर 84 जन्म लेने पड़े। सीढ़ी उतर नर्कवासी बने। ...फिर अब तुमको चढ़ना है मुक्तिधाम अपने घर। (मु.19.2.71 पृ.3 मध्यांत)	Download
930	भारत कौन?	सभी से नम्बरवन भारत पावन था। अभी भारत सभी से पतित है। तो उन्हों को मेहनत भी जास्ती करनी पड़ती है। (मु.17.6.72 पृ.2 मध्यांत)	Download
931	भारत कौन?	भारत 100 प्रतिशत श्रेष्ठाचारी था। अभी वही भारत जड़जड़ीभूत तमोप्रधान होने के कारण 100 प्रतिशत भ्रष्टाचारी है। (मु.7.8.73 पृ.3 आदि)	Download
932	भारत कौन?	भारत तो है मोस्ट बेगर। भारत अब काँटों का जंगल है। काँटों की शैया पर दिखाते हैं, भीख माँग रहे हैं। तो यह भी सबसे भीख माँगते रहते हैं। भारत की दुर्दशा है। भारत बिल्कुल सॉल्वेंट था, अभी तो कंगाल है। (मु.3.11.78 पृ.3 अंत)	Download
933	भारत कौन?	भारत खास और दुनिया आम को यह संदेश देना है।(मु.14.2.67पृ.1आदि)	Download
934	भारत कौन?	पूज्य-पुजारी, पावन-पतित भारत ही बनता है। बाकी तो हैं बीच में। ... गाते हैं पतित-पावन, तो ज़रूर पतित हैं ना। भारत पावन था, अब पतित है। (मु.7.9.73 पृ.3 मध्यादि)	Download
935	भारत कौन?	84 का चक्र भी भारत के लिए है। (मु.28.7.73 पृ.1 अंत)	Download
936	भारत कौन?	परमधाम से बाबा भारत में ही आते हैं। बस, भारत कौन सडावे(कहलावे)? ... भारत बहुत साहुकार था। अब तो कंगाल हो गया है। इसलिए भारत को पैसे देते हैं। गरीब को दान दिया जाता है। ... बाप कहते हैं मेरा पार्ट है गरीब भारत को हीरे जैसा बनाना। (मु.2.9.73 पृ.1 अंत)	Download
937	भारत कौन?	तुम कह सकते हो रामायण की कथा सारी भारत पर ही है। सिर्फ समझाने का खिर चाहिए। (मु.12.1.75 पृ.3 अंत)	Download
938	भारत कौन?	भारत को पूरा कलंकित कर दिया है। ..... इतनी रानियाँ थीं, उनको भगाया, मक्खन चुराया, इतने बच्चे थे। वास्तव में यह सभी है प्रजापिता ब्रह्मा की कहानी। उसके बदली कृष्ण को रख दिया है। (मु.5.5.73 पृ.1 आदि-अंत)	Download
939	भारत कौन?	मैं ही ख़ास भारत और आम जो भी हैं सबकी सद्गति करता हूँ। (मु.18.7.65, 13.7.72 पृ.1 अंत)	Download

940	भारत कौन?	यह भारत भगवान की जन्मभूमि है। जैसे इब्राहीम, बौद्ध(बुद्ध) आदि की अपनी-2 जन्मभूमि है।(मु.16.9.73 पृ.3 अंत)	Download
941	भारत कौन?	भारत गिरा है तो सभी गिरे हैं। भारत ही रिस्पॉन्सिबल है अपन को गिराने और दूसरों को गिराने।(मु.18.7.69 पृ.1 मध्यादि) मु.24.8.00 पृ.1 मध्य,	Download
942	भारत कौन?	भारत में शिवजयंती, शिवरात्रि भी मनाते हैं। बाप आते भी भारत खंड में ही हैं। भारत ही अविनाशी खंड है। इनकी महिमा बहुत भारी है। जैसे बाप की महिमा अपरमअपार है, वैसे भारत की महिमा अपरमअपार है। भारत में ही परमपिता परमात्मा आकर सभी मनुष्य मात्र की सद्गति करते हैं, सब को सुख देते हैं। उनका बर्थ प्लेस भारत है। ....भारत प्राचीन देश है। भगवान राजयोग सिखलाने भारत में ही आया था।(मु.29.8.76 पृ.2 अंत)	Download
943	भारत कौन?	यह खेल भारत पर ही बना हुआ है। ....वर्ण भी हैं। नहीं तो 84 जन्मों का हिसाब-किताब कहाँ? (मु.20.3.72 पृ.2 मध्य) मु.21.3.97 पृ.2 अंत,	Download
944	भारत कौन?	भारत हीरे जैसा था, अभी कौड़ी मिसल है। बेगर भारत को फिर सिरताज कौन बनावेंगे? (मु.28.2.68 पृ.3 आदि) मु.5.2.99 पृ.3 आदि,	Download
945	भारत कौन?	पहले-2 एक भारत ही सारे विश्व का मालिक था। ... ऐसा विश्व का मालिक ज़रूर विश्व का रचयिता ही बनावेगा। (मु.ता॰21.3.72 पृ.1 मध्यादि)	Download
946	भारत कौन?	भारत के लिए कहा जाता है भारत सोने की चिड़िया थी। ... यह सब जानते हैं भारत प्राचीन बहुत साहूकार था। अब कितना गरीब बन गया है। (मु.17.11.76 पृ.3 आदि) मु.20.11.96 पृ.3 मध्य,	Download
947	सृष्टि-चक्र - शूटिंग, रिकॉर्डिंग वा रिहर्सल	इस संगमयुग को पुरुषोत्तम संगमयुग व सर्वश्रेष्ठ युग क्यों कहते हो? क्योंकि आत्मा के हर प्रकार के धर्म की, राज्य की, श्रेष्ठ संस्कारों की, श्रेष्ठ सम्बंधों की और श्रेष्ठ गुणों की सर्वश्रेष्ठता अभी रिकॉर्ड के समान भरता जाता है। 84 जन्मों की चढ़ती कला और उतरती कला उन दोनों के संस्कार इस समय आत्मा में भरते हो। रिकॉर्ड भरने का समय अभी चल रहा है। ... आप बेहद का रिकॉर्ड भरने वाले, सारे कल्प का रिकॉर्ड भरने वाले, क्या हर समय इन सभी बातों के ऊपर अटेंशन देते हो? (अ॰वा॰30.5.73 पृ.77 अंत, 78 आदि-अंत)	Download
948	सृष्टि-चक्र - शूटिंग, रिकॉर्डिंग वा रिहर्सल	मुख्य संस्कार भरने का समय अभी है। आत्मा में हर जन्म के संस्कारों का रिकॉर्ड इस समय भर रहे हो। (अ॰वा॰9.5.77 पृ.1 मध्यादि)	Download
949	सृष्टि-चक्र - शूटिंग, रिकॉर्डिंग वा रिहर्सल	यह रिहर्सल होती रहेगी। जब तक राजधानी स्थापन न हुई है तब तक लड़ाई नहीं लग सकती। (मु.4.2.71 पृ.3 मध्यादि)	Download

950	सृष्टि-चक्र - शूटिंग, रिकॉर्डिंग वा रिहर्सल	हर एक मनुष्य मात्र को, हर चीज़ को सतो, रजो, तमो में आना होता है। नई से पुरानी ज़रूर होती है। कपड़ा भी नया पहनते हैं फिर पुराना होता है तो कहेंगे न- पहले सतोप्रधान, फिर ज़रूर सतो, रजो, तमो तुमको ज्ञान मिला है। (मु.13.6.76 पृ.2 अंत)	Download
951	सृष्टि-चक्र - शूटिंग, रिकॉर्डिंग वा रिहर्सल	तुम बच्चों को वहाँ कितनी कशिश हुई? कैसे सब भागे? ... जो भी सारी दुनिया की आत्माएँ हैं उनको पार्ट बजाना है। जैसे नए सिरे शूटिंग होती जाती है; परंतु यह अनादि शूटिंग हुई पड़ी है। (मु.9.9.74 पृ.2 मध्यांत, 3 आदि)	Download
952	सृष्टि-चक्र - शूटिंग, रिकॉर्डिंग वा रिहर्सल	वैसे ये आत्मा भी शरीर के अंदर रिकॉर्ड है, जिसमें सारा पार्ट 84 जन्मों का भरा हुआ है। (मु.8.2.71 पृ.1 मध्यादि)	Download
953	सृष्टि-चक्र - शूटिंग, रिकॉर्डिंग वा रिहर्सल	नम्बरवार कर्मातीत अवस्था हो जावेगी तब लड़ाई शुरू होगी। तब तक रिहर्सल होती रहेगी। (मु.22.6.70 पृ.3 अंत)	Download
954	सृष्टि-चक्र - शूटिंग, रिकॉर्डिंग वा रिहर्सल	तुम हो अभी पुरुषोत्तम संगमयुगी। पुरुषोत्तम संगमयुग ज़रूर लिखना चाहिए। बच्चों को ज्ञान के प्वाइंट याद न होने कारण फिर ऐसे-2 अक्षर लिखना भूल जाते हो।(मु.24.9.69 पृ.1 आदि)	Download
955	सृष्टि-चक्र - शूटिंग, रिकॉर्डिंग वा रिहर्सल	रूह-रूहान सिर्फ इस समय होती है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही बाप आकर रूहों से बात करते हैं। (मु.1.5.68 रा.क्लास पृ.2 आदि)	Download
956	सृष्टि-चक्र - शूटिंग, रिकॉर्डिंग वा रिहर्सल	मनुष्य से देवता किया तो यह हुआ पुरुषोत्तम संगमयुग। (मु.25.5.69 पृ.1 आदि)	Download
957	सृष्टि-चक्र - शूटिंग, रिकॉर्डिंग वा रिहर्सल	कृष्ण को द्वापर में ठोंक दिया है। यह भी अभी तुम जानते हो। (मु.7.7.66 पृ.1 अंत)	Download
958	सृष्टि-चक्र - शूटिंग, रिकॉर्डिंग वा रिहर्सल	शिवबाबा भी प्रभात के समय आते हैं ना। आधी रात नहीं कहेंगे। (मु.20.3.69 पृ.2 मध्यांत)	Download
959	सृष्टि-चक्र - शूटिंग, रिकॉर्डिंग वा रिहर्सल	आत्माएँ परमात्मा अलग रहे बहुकाल ...। ... तुम पूरे 5000 वर्ष रहते हो अलग। (मु.22.7.68 पृ.3 आदि) मु.3.7.04 पृ.3 मध्यांत,	Download
960	सृष्टि-चक्र - शूटिंग, रिकॉर्डिंग वा रिहर्सल	सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पन्न यहाँ बनना है। रिहर्सल यहाँ होगी फिर वहाँ प्रैक्टिकल पार्ट बजाना है। (मु.23.12.58 रा.क्लास पृ.3 अंत)	Download
961	सृष्टि-चक्र - शूटिंग, रिकॉर्डिंग वा रिहर्सल	हर चीज़ पहले सतोप्रधान, फिर सतो, रजो, तमो होती है। (मु.19.8.67 पृ.2 मध्य)	Download
962	सृष्टि-चक्र - शूटिंग, रिकॉर्डिंग वा रिहर्सल	तब तक यह रिहर्सल होती रहेगी जब तक सारी सेना कर्मातीत अवस्था को आ जाए। (मु.23.7.71 पृ.1 मध्यादि)	Download
963	संगम की आयु	बाप कहते हैं जब तक मैं हूँ पुरुषार्थ करते रहो। बाप कितना वर्ष रहेंगे? ...40 वर्ष बैठ समझाते हैं।(मु.17.9.68 पृ.1 अंत)	Download
964	संगम की आयु	तुम बच्चे जानते हो यह पुरुषोत्तम संगमयुग 50 वर्ष का छोटा है। (मु.1.3.68 पृ.2 अंत)	Download
965	संगम की आयु	थोड़ा टाइम 50/60 वर्ष लगते हैं पूरी राजधानी स्थापना में। (मु.26.7.65 पृ.2 आदि, 24.7.72 पृ.2 मध्यादि)	Download

966	संगम की आयु	कलियुग विनाश, सतयुग स्थापन होने में बीच में करीब 50 वर्ष का टाइम लगता है। इसमें थोड़े जो रह जाते हैं, वह फिर अपनी राजधानी बनाते हैं नए सिरे। (मु.11.2.73 पृ.2 मध्यादि)	Download
967	संगम की आयु	इस संगमयुग में बाप आकर 50/60 वर्ष (इनमें) रहकर इनको बदली करते हैं। (मु.26.11.72 पृ.3 आदि)	Download
968	संगम की आयु	बाबा को जान जाए तो श्रेष्ठाचार का वर्सा मिल जाए। श्रेष्ठाचारी बनने में 40/50 वर्ष लगते हैं। (मु.11.9.73 पृ.4 अंत)	Download
969	संगम की आयु	जो 2500 वर्ष में पाप हुए हैं वह 50 वर्ष में तुम भस्म कर सतोप्रधान बन सकते हो। (मु.12.3.68 पृ.2 मध्यांत)	Download
970	संगम की आयु	50/60 वर्ष तो पढ़ाई है। अभी आधा से भी कम पढ़ाई हुई है। (मु.1.8.73 पृ.2 अंत)	Download
971	संगम की आयु	बाप आकर 50 वर्ष में पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि बनाते हैं।(मु.3.6.68 पृ.2 मध्य)	Download
972	संगम की आयु	50 वर्ष नहीं तो करके 100 वर्ष लगते हैं। उत्थल-पाथल पूरी हो फिर राज्य शुरू हो जाते हैं। (मु.25.9.71 पृ.1 मध्य)	Download
973	संगम की आयु	अभी है संगमयुग। इसको 100 वर्ष देना चाहिए। (मु.5.11.71 पृ.3 मध्य)	Download
974	संगम की आयु	इतना 50 वर्ष कोई भी यज्ञ नहीं चलता। ..... तुम्हारा यह यज्ञ 50 वर्ष चलता है। (मु.11.5.73 पृ.2 मध्य)	Download
975	संगम की आयु	बाप कहते हैं मैं आता हूँ 40/50 वर्ष । (मु.9.4.73 पृ.3 अंत)	Download
976	संगम की आयु	संगमयुग कोई बड़ा नहीं है, 50 वर्ष का है। (मु.20.2.73 पृ.2 आदि)	Download
977	संगम की आयु	शिवबाबा तो संगमयुग पर ही 50/60 वर्ष पढ़ाते हैं। (मु.2.3.68 पृ.3 आदि)	Download
978	संगम की आयु	तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40/50 वर्ष लगते हैं। (मु.6.10.74 पृ.2 अंत)	Download
979	संगम की आयु	एक ही कोर्स बहुत बड़ा है, 40-50 वर्ष चलता है। (मु.11.8.83 पृ.2 मध्यांत)	Download
980	संगम की आयु	50/60 वर्ष में बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं। (मु.ता॰8.9.68 पृ.3 मध्यादि)	Download
981	संगम की आयु	50 वर्ष में तुम चढ़ती कला में आ जाते हो। (मु.16.9.71 पृ.1 मध्य)	Download
982	संगम की आयु	कल्प के संगमयुग पर ही कुम्भ का मेला लगता है। वह कुम्भ का मेला 12 वर्ष बाद लगता है। यह बड़ा कुम्भ का मेला है, 5000 वर्ष बाद लगता है। जो 50 वर्ष बाद चलता है और चलता ही रहेगा। (मु.1.10.71 पृ.2 मध्य)	Download
983	संगम की आयु	अभी है पुरुषोत्तम संगमयुग। बहुत छोटा है। 50-60 वर्ष में बिल्कुल अच्छी प्लैनिंग कर देते हैं। (मु.21.4.69 पृ.2 अंत)	Download
984	संगम की आयु	अभी है संगमयुग। इसको 100 वर्ष देने चाहिए। (मु. 5.11.71 पृ.3 मध्य)	Download
985	सतयुगी शूटिंग सन् 1976 तक	सतयुग अंत में वृद्धि होकर 9 लाख से 2 करोड़ हो गए होंगे। (मु.22.3.71 पृ.1 अंत) मु.22.3.76 पृ.1 अंत,	Download

986	सतयुगी शूटिंग सन् 1976 तक	मुरली छपती है। आगे चल कर लाखों-करोड़ों के अंदाज में छपने लग पड़ेंगी। (मु.22.6.68 पृ.4 अंत)	Download
987	सतयुगी शूटिंग सन् 1976 तक	मेरे मुख से दो अक्षर भी सुना तो वह भी स्वर्ग में ज़रूर आवेंगे। आगे चल कर ढेर सुनेंगे। (मु.2.3.68 पृ.3 आदि)	Download
988	सतयुगी शूटिंग सन् 1976 तक	तुम्हारे सेंटर्स लाखों की तादाद में हो जाएँगे। (मु.28.2.71 पृ.3 मध्यादि)	Download
989	सतयुगी शूटिंग सन् 1976 तक	जितने (10 करोड़) देवी-देवताएँ सतयुग-त्रेता के हैं, वह सब गुप्त यहाँ बनने हैं। (मु.11.2.68 पृ.1 अंत)	Download
990	सतयुगी शूटिंग सन् 1976 तक	भारत में 33 करोड़ देवताओं की लिमिट है। (मु.23.3.73 पृ.2 आदि)	Download
991	सतयुगी शूटिंग सन् 1976 तक	यह भी समझाया है 9 लाख होते हैं, फिर मल्टीप्लीकेशन होकर के एक/दो करोड़ हो जावेंगे। (मु.23.9.71 पृ.2 अंत)	Download
992	सतयुगी शूटिंग सन् 1976 तक	वहाँ सारी धरती पर ही शुरू में होते हैं 9/10 लाख। (मु.11.3.67 पृ.3 आदि)	Download
993	सतयुगी शूटिंग सन् 1976 तक	जैसे वह इम्तिहान 12 मास का होता है ना, यह भी ऐसे है, 9 मास हम पढ़े हैं। बाकी 3 मास स्थापना में है। (मु.12.3.69 पृ.1 अंत)	Download
994	सतयुगी शूटिंग सन् 1976 तक	बच्चे जानते हैं पुरुषोत्तम संगमयुग की आयु बहुत थोड़ी है। 40 वर्ष से अभी बाकी 8 वर्ष रही है। ... तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। 32 वर्ष तो चला गया। यह पुरुषोत्तम संगमयुग सबसे हीरे जैसा है। मोस्ट वैल्युएबल है। (मु.18.9.68 पृ.1 आदि)	Download
995	सन् 1977 से ब्राह्मणों की दुनिया में सूक्ष्म स्थापना-विनाश	अभी हम थोड़े ही समय में, 8 वर्ष में, सिर्फ हम ही थोड़े बाकी रहेंगे। और इतने सभी धर्मखण्ड आदि नहीं रहेंगे। हम ही विश्व के मालिक होंगे। (मु.9.7.68 पृ.1 अंत)	Download
996	सन् 1977 से ब्राह्मणों की दुनिया में सूक्ष्म स्थापना-विनाश	एक दिन ऐसा भी आवेगा, जो दुनिया बहुत खाली हो जावेगी। ..... 2/4 वर्ष में सिर्फ भारत ही रहेगा। (मु.14.8.74 पृ.3 अंत)	Download
997	सन् 1977 से ब्राह्मणों की दुनिया में सूक्ष्म स्थापना-विनाश	10 वर्ष से 9 वर्ष , 9 वर्ष से 8 वर्ष बाकी रही हैं। ..... अभी कलियुग का अंत आए हुआ है। ..... ड्रामा फिरता गया है तो फिर ज़रूर रिपीट करेंगे ना। (मु.5.2.68 पृ.2 मध्य)	Download
998	सन् 1977 से ब्राह्मणों की दुनिया में सूक्ष्म स्थापना-विनाश	5 वर्ष अंदर ड्रामाप्लेन अनुसार सारा कार्य होना है। (मु.3.2.71 पृ.1 आदि)	Download
999	सन् 1977 से ब्राह्मणों की दुनिया में सूक्ष्म स्थापना-विनाश	8 वर्ष हैं बाकी। 5 भी हो सकते हैं। 8 से जास्ती होने का तो बिल्कुल दम ही नहीं दिखाई पड़ती है। (मु.12.8.68 पृ.1 अंत) मु.13.8.74 पृ.1 अंत,	Download
1000	सन् 1977 से ब्राह्मणों की दुनिया में सूक्ष्म स्थापना-विनाश	बाकी 8 वर्ष हैं। ऐसे मत समझना 8 वर्ष से 9 वर्ष हो जावेगा। नहीं-2, और ही ... हो जावेगा; परंतु 9 नहीं होंगे। (मु.7.11.68 पृ.3 मध्यांत)	Download
1001	सन् 1977 से ब्राह्मणों की दुनिया में सूक्ष्म स्थापना-विनाश	कोई-2 को स्कॉलरशिप भी मिलती है ना 2/3 वर्ष लिए। जो अच्छी मेहनत करेंगे वह ज़रूर स्कॉलरशिप लेंगे। (मु.17.1.70 पृ.2 मध्यांत)	Download

1002	सन् 1977 से ब्राह्मणों की दुनिया में सूक्ष्म स्थापना-विनाश	दिन-प्रतिदिन जो देरी से शरीर छोड़ते हैं उनको टाइम तो थोड़ा ही मिलता है; क्योंकि टाइम है बाकी एक वर्ष । उसमें जन्म ले क्या कर सकेंगे? (मु.28.2.75 पृ.2 मध्य)	Download
1003	सन् 1977 से ब्राह्मणों की दुनिया में सूक्ष्म स्थापना-विनाश	तुम कहते हो 9 वर्ष बाद विनाश होगा। (मु.24.11.67 पृ.4 आदि)	Download
1004	सन् 1977 से ब्राह्मणों की दुनिया में सूक्ष्म स्थापना-विनाश	8 वर्ष कोई बड़ी बात थोड़े ही है। सारी दुनिया ख़त्म हो जानी है। (मु.13.9.68 रा.क्लास पृ.1 मध्यादि)	Download
1005	ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है	ब्रह्मा की रात सो सरस्वती की भी रात, ब्रह्मावंशियों की भी रात। दिन में फिर सब ब्राह्मण सो फिर देवता बनते हैं। (मु.29.7.64 पृ.3 अंत)	Download
1006	ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है	बरोबर परमपिता परमात्मा ब्रह्मा की रात को ब्रह्मा का दिन बनाने आता है। (मु.20.10.73 पृ.1 मध्यांत)	Download
1007	ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है	प्रजापिता ब्रह्मा मुखवंशावली घोर अंधेरे में थे, तो ज़रूर ब्रह्मा भी घोर अंधेरे में होगा। ब्रह्मा मुखवंशावली सोझरे में है तो ब्रह्मा भी सोझरे में होंगे। गाते तो बहुत हैं। बहुत भटकते हैं दूर-2 पहाड़ों पर, टिकानों, मंदिरों में, मस्जिदों में। (मु.10.10.73 पृ.1 आदि)	Download
1008	ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है	समझाने के लिए हमको कहना पड़ता है। बाकी इसमें घृणा की कोई बात ही नहीं। शास्त्रों में भी है ब्रह्मा की रात अर्थात् घोर अंधेरा। (मु.11.1.66 पृ.1 अंत)	Download
1009	ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है	सद्गुरू और गुरू में रात-दिन का फर्क है। वह ब्रह्मा का दिन कर देते, वह रात कर देते। ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात। तो ज़रूर कहेंगे ब्रह्मा पुनर्जन्म लेते हैं। (मु.28.2.68 पृ.1 मध्यादि)	Download
1010	ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है	जब रात शुरू होती है तो पहले-2 मंदिर बनते हैं। (मु.10.5.73 पृ.3 आदि)	Download
1011	ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है	ब्रह्मा की रात होनी ही है। तुम ब्राह्मणों की अब रात है। बाबा आया हुआ है घोर अंधियारी रात में। यह बातें तुम ही जानते हो। (मु.22.8.73 पृ.3 आदि)	Download
1012	ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है	शिवबाबा आते ही तब हैं जबकि ब्रह्मा की रात्रि होती है। रात के बाद फिर दिन अर्थात् कलियुग का अंत होता है तब सतयुग की आदि होती है। (मु.4.10.73 पृ.1 मध्य) मु.5.10.78 पृ.1 मध्य,	Download
1013	ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है	ब्रह्मा का अथवा तुम ब्राह्मणों का ही दिन और रात गाया जाता है। दिन और रात का ज्ञान भी तुम बच्चों को है। ल.ना. को यह ज्ञान नहीं है।.... ...कलियुग में वा सतयुग में यह ज्ञान किसको होता नहीं। इसलिए गाया जाता है ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात। (मु.10.5.71 पृ.1 मध्यादि)	Download

1014	ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है	अब ब्रह्मा की रात है तो ब्रह्मा भी रात में होगा ना। फिर विष्णु बनेगा तो दिन हो जावेगा। (मु.15.10.77 पृ.3 अंत)	Download
1015	ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है	विष्णु को, शंकर को पतित नहीं कहेंगे। ब्रह्मा है पतित। ब्रह्मा की रात है ना। बाप भी रात को ही आते हैं। शिवरात्रि सो ब्रह्मा की रात्रि हो गई। (मु.7.5.72 पृ.3 आदि)	Download
1016	ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है	यह है ब्रह्मा की रात जिसमें भक्ति के धक्के खाते हैं। चारों तरफ फेरे लगाए; परंतु हरदम दूर रहे। स्वर्ग का मालिक बनाने वाला बाप न मिला। (मु.1.9.65 पृ.3 आदि) मु.3.9.77 पृ.3 आदि,	Download
1017	ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है	ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात। दोनों इक्कल होता है ना। फिर सतयुग दिन के(की) इतनी बड़ी आयु और रात को छोटा क्यों कर दिया है? ब्रह्मा का दिन और रात दोनों बराबर होनी चाहिए ना। (मु.17.9.72 पृ.3 मध्य)	Download
1018	ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है	कहते हैं प्रजापिता ब्रह्मा का दिन फिर रात, तो प्रजा और ब्रह्मा ज़रूर दोनों ही इकट्ठे होंगे ना। तुम समझते हो हम ब्राह्मण ही आधाकल्प सुख भोगते हैं फिर आधाकल्प दुःख। यह बुद्धि से समझने की बात है। (मु.21.11.74 पृ.2 अंत, 3 आदि)	Download
1019	ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है	बाप ने समझाया है आधा कल्प है दिन, आधा कल्प है रात। यह भी ब्राह्मणों की बात है। (मु.2.12.71 पृ.3 मध्य)	Download
1020	ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है	ब्रह्मा का दिन है, दिन में धक्का नहीं खाया जाता। रात अंधेरी में धक्के खाए जाते हैं। ... अब विष्णु की रात अथवा दिन क्यों नहीं कहते? ... ब्रह्मा और ब्रह्माकुमार-कुमारियों के लिए यह बेहद के दिन और रात हैं। शिवबाबा का दिन और रात नहीं कहेंगे। (मु.29.6.77 पृ.2 आदि)	Download
1021	ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है	ब्रह्मा की रात सो ब्राह्मणों की रात, ब्रह्मा का दिन माना ही ब्राह्मणों का दिन। ... यह है बेहद की रात, बेहद का दिन। (मु.25.8.68 पृ.1 अंत) मु.17.8.99 पृ.2 आदि,	Download
1022	ब्रह्मा का दिन और रात संगमयुग में ही होता है	ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात गाया हुआ है। सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा का थोड़े ही दिन और रात बतावेंगे। ... दिन और रात का प्रश्न यहाँ का है। ब्रह्मा की रात माना पतित, फिर वही पावन बनते हैं तो दिन होता है। (मु.25.9.73 पृ.2 अंत) मु.14.9.88 पृ.2 अंत,	Download
1023	चार युगों की शूटिंग में चार बार अवतार	शास्त्रों में फिर युगे-2 कह दिया है, एक-2 युग के बाद अवतार लेते हैं। बाप समझाते हैं मैं युगे-2 नहीं आता हूँ; परन्तु पुरुषोत्तम संगम युगे आता हूँ। (मु.7.9.68 पृ.1 मध्यांत) मु.14.9.74 पृ.1 मध्यांत,	Download
1024	चार युगों की शूटिंग में चार बार अवतार	यह भी नहीं समझते युगे-2 बाप आकर कैसे राजयोग सिखावेगा। (मु.27.5.68 पृ.1 मध्यांत)	Download
1025	चार युगों की शूटिंग में चार बार अवतार	ड्रामा अनुसार कल्प पहले मुआफिक कल्प-3 के संगम पर बाप आकर हमको सिखाते हैं। (मु.7.1.67 पृ.1 मध्य)	Download

1026	चार युगों की शूटिंग में चार बार अवतार	ऐसे थोड़े ही घड़ी-2 अवतार लेकर पढ़ाऊँगा। मैं तो एक ही बार आता हूँ, आकर बड़े ऑलमाइटी अथॉरिटी का मालिक बनाता हूँ। परमधाम से कल्प के संगम युगे-2 आता हूँ। (मु.18.5.73 पृ.2 अंत)	Download
1027	चार युगों की शूटिंग में चार बार अवतार	यह भी समझाया है सतयुग के बाद त्रेता का संगम होता है; परंतु वह युग फिरता है और अभी तो यह कल्प फिरता है। बाप कोई युगे-2 नहीं आते हैं जैसे मनुष्य समझते हैं। बाप कहते हैं जब सभी तमोप्रधान बन जाते हैं, कलियुग अंत होता है उस कल्प के संगमयुग पर आता हूँ। (मु.12.5.73 पृ.1 मध्य)	Download
1028	चार युगों की शूटिंग में चार बार अवतार	बाप कहते हैं मैं कल्प-कल्प-कल्प के संगमयुगे फिर से आता हूँ, आता ही रहूँगा। फिर से तुम बच्चों को राजभाग सिखाऊँगा। (मु.17.2.72 पृ.2 मध्यांत) मु.18.2.92 पृ.2 मध्यांत,	Download
1029	चार युगों की शूटिंग में चार बार अवतार	ऐसा बाबा कल्प-2 कल्प के संगमयुगे, एक ही बार आते हैं। (मु.24.5.64 पृ.3 मध्य)	Download
1030	(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति	जैसे शुरू में एलान निकला कि सभी को इस घड़ी मैदान में आना है, वैसे अब भी रिपीट ज़रूर होना है; लेकिन भिन्न-2 रूप में।(अ॰वा॰20.12.69 पृ.156 मध्य)	Download
1031	(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति	तुम ही पहले-2 आए थे। अभी लास्ट में भी तुम हो, फिर पहले-2 तुम्हीं मनुष्य से देवता बनने वाले हो। देवी-देवता धर्म वाले ही 84 जन्म लेते हैं। (मु.16.7.73 पृ.2 मध्यांत)	Download
1032	(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति	आगे चल तुमको सभी पता पड़ जावेगा, कौन-2 विजयमाला के दाने बनते हैं। पिछाड़ी में बच्चों को बहुत साक्षात्कार होंगे। शुरू में तो थोड़े हुए हैं। (मु.3.8.73 पृ.4 अंत)	Download
1033	(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति	जो आश्चर्यवत् भागन्ति हो जावेंगे वह यह सब नहीं देख सकेंगे। पास्ट भी तुमने देखा और जो नया होगा वह भी तुम देखेंगे। (मु.17.9.73 पृ.3 अंत)	Download
1034	(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति	हंगामा जब होगा तो साकार शरीर द्वारा कुछ कर न सकेंगे और प्रभाव भी इस सर्विस से (मनसा सेवा से) पड़ेगा। जैसे शुरू में भी साक्षात्कार से ही प्रभाव हुआ ना। परोक्ष-अपरोक्ष अनुभव ने प्रभाव डाला। वैसे अंत में भी यही सर्विस होनी है। (अ॰वा॰24.1.72 पृ.1 अंत)	Download
1035	(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति	जैसे शुरुआत में मिसाल हुआ। सभी की बुद्धि में टचिंग होती थी- कुछ प्राप्ति होनी है। यहाँ जावें, देखें और कहाँ-2 से भागते हुए उस आकर्शण मूर्त के सम्मुख पहुंच गए। यह छोटा-सा मिसाल हुआ ना आदि में; लेकिन अंत में विशाल रूप में यह रूहानी सेवा होनी है। जो रूहानी सूक्ष्म मशीनरी की सेवा अभी अव्यक्त रूप में बापदादा कर रहे हैं। (अ॰वा॰4.8.72 पृ.3 मध्य)	Download
1036	(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति	ब्रह्मा के रूप में जो आदि से अंत तक हर कर्म में, हर चरित्र में, हर सेवा के समय में साथी रहे हैं वह भविष्य में भी साथी रहेंगे। (अ॰वा॰27.10.81 पृ.2 अंत)	Download

1037	(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति	आर्यसमाजियों ने एक भाकी का चित्र हाथ कर कितना हंगामा मचाया है। यह भी नूँध है। फिर भी ऐसे होगा। (मु.25.6.66, 25.6.71 पृ.3 अंत)	Download
1038	(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति	हमने कोई को भगाया क्या? किसको भी कहा नहीं कि तुम भाग कर आओ। हम तो वहाँ थे। यह आपे ही भाग आईं। ..... कोई मनुष्य यह सब कुछ थोड़े ही कर सकता है। सो भी ब्रिटिश गवर्मेंट के राज्य में कोई के पास इतने बैठ जाएँ। कोई कुछ कर न सके। कोई आते थे तो एकदम भगा देते थे। बाबा तो कहते थे भल इनको समझाओ, ले जाओ। मैं कोई मना थोड़े ही करता हूँ; परंतु किसकी हिम्मत नहीं होती थी। बाप की ताकत थी ना। नथिंग न्यू। यह फिर भी सभी होगा। (मु.22.4.70 पृ.2 अंत) मु.22.4.75 पृ.2 अंत,	Download
1039	(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति	जैसे शुरू में चलते-फिरते देखते रहते थे। यह ध्यान में जाकर देखने की बात नहीं। जैसे एक साकार बाप का आदि में अनुभव किया वैसे अंत में अभी सबका साक्षात्कार होगा। यह साधारण रूप गायब हो जावेगा। ..... जैसे शुरू में आकारी ब्रह्मा और श्रीकृष्ण का साथ-2 साक्षात्कार होता था, वैसे अभी भी यह साधारण रूप देखते हुए भी दिखाई न दे। (अ॰वा॰10.12.78 पृ.117 आदि)	Download
1040	(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति	जैसे स्थापना के आदि में स्वप्न और साक्षात्कार की लीला विशेष रही, ऐसे अंत में भी यही विचित्र लीला प्रत्यक्षता करने के निमित्त बनेगी। चारों ओर से ''यही है, यही है'', यह आवाज गूँजेगी और यह आवाज अनेकों के भाग्य की श्रेष्ठता के निमित्त होगा। (अ॰वा॰ 31.12.82 पृ.22 मध्य)	Download
1041	(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति	शुरू-2 में अख़बार में निकाला गया था कि ओममंडली इज़ दी रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड । तो यही बात फिर अंत में सबके मुख से निकलेगी। (अ॰वा॰13.9.74 पृ.125 मध्य)	Download
1042	(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति	अभी ऐसा कोई वातावरण बनाओ जो वातावरण चुम्बक जैसा कार्य करे। चारों ओर फैल जाए कि अगर शांति, सुख या प्रेम चाहिए तो यहाँ से मिल सकता है। ..... जैसे स्थापना के शुरू में एक दिन भी कोई सतसंग में आ जाते थे तो पहले दिन ही कुछ न कुछ अनुभव करके जाते थे। जो आदि में वह अंत में विस्तार के रूप में होना है। ऐसा कुछ वातावरण बनाओ। (अ॰वा॰19.11.79 पृ.32 अंत, 33 आदि)	Download
1043	(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति	हम श्रीकृष्ण की आत्मा को मँगा भी सकते हैं। आकर खेलपाल करेंगे, बच्चा गोद माँगेंगे, राय(रास) करेंगे और क्या करेंगे! गोप-गोपियाँ तो यहाँ ही होते हैं। वहाँ तो प्रिंस-प्रिंसेज़ आपस में मिलते हैं तो रास करते हैं। सोने की मुरली बजाते हैं। यह सभी तुम खेलपाल देखेंगे। ....पिछाड़ी में फिर यह सभी पार्ट चलेगा। (मु.7.9.71 पृ.3 अंत)	Download

1044	(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति	जैसे आदि में साकार की लीला देखी ऐसे ही अंत में भी होगी। सिर्फ अभी एडीशन शिवशक्ति स्वरूप का भी साक्षात्कार होगा। फिर भी साकार पिता तो ब्रह्मा है ना। तो साकार रूप में आए हुए बच्चे बाप को देखेंगे और अनुभव ज़रूर करेंगे। (अ॰वा॰18.1.82 पृ. 256 आदि)	Download
1045	(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति	जो आदि में सैम्पल था वह अन्त में प्रैक्टिकल स्वरूप होगा। संकल्प की सिद्धि का साक्षात्कार होगा। (अ॰वा॰ 22.11.72 पृ. 376 मध्य)	Download
1046	(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति	शुरू से लेकर इस समय तक जो नाटक शूट हुआ है उनको फिर रिपीट करना है। (मु.3.1.74 पृ.1 मध्यादि)	Download
1047	(एक कल्प) चारों युगों की शूटिंग में हूबहू पुनरावृत्ति	एक बार जो शूटिंग हुई वही फिर देखेंगे। (मु.28.2.68 पृ.3 मध्यांत)	Download
1048	सृष्टि-चक्र के फुटकर प्वाइंट्स	सभी आते रहते हैं। बीच में जाना तो एक को भी नहीं है। जाना सभी को इकट्ठा ही है, भल सृष्टि खाली तो नहीं रहती है। ... रावण सम्प्रदाय जाते हैं तो फिर लौट नहीं आते हैं। बाकी यह बच जाते हैं। (मु.16.4.68 पृ.2 अंत)	Download
1049	सृष्टि-चक्र के फुटकर प्वाइंट्स	नाटक के पिछाड़ी में वंडरफुल पार्ट होते हैं ना। ..... जिनमें ज्ञान नहीं है वह तो वहाँ ही बेहोश हो जावेंगे। (मु.30.5.72 पृ.3 अंत)	Download
1050	सृष्टि-चक्र के फुटकर प्वाइंट्स	बाबा तो मुख्य बड़े-2 के नाम लेंगे ना। ल.ना., राम-सीता, इस्लामी, बौद्धी सभी वर्थ नॉट ए पैनी हैं। (मु.18.2.73 पृ.3 आदि)	Download
1051	सृष्टि-चक्र के फुटकर प्वाइंट्स	तुम बच्चे अब बाप द्वारा सभी जान गए हो। बाकी जो भी मनुष्य हैं उनको यह पता नहीं कि सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है, कब आरम्भ होता है, कब अंत होती है। इसको तुम बच्चे ही जानते हो नम्बरवार। (मु.18.2.73 पृ.1 आदि)	Download
1052	सृष्टि-चक्र के फुटकर प्वाइंट्स	जब पूरा दुर्गति को पाने का पूरा ग्रहण लगे तब बाप फिर 16 कला सम्पूर्ण बनाने आते हैं। ग्रहण को स्वदर्शन चक्र से निकाला जाता है। (मु.25.11.72 पृ.2 अंत)	Download
1053	सृष्टि-चक्र के फुटकर प्वाइंट्स	भल करके यह जन्म अच्छा है। आगे का जन्म तो अजामिल जैसा होना चाहिए। बाप कहते हैं मैं पतित दुनिया, पतित शरीर में प्रवेश करता हूँ, जो पूरे 84 जन्म भोग तमोप्रधान बने हैं। भल इस समय अच्छे घर में जन्म है; क्योंकि फिर भी बाबा का रथ बनना है। (मु.5.4.72 पृ.2 आदि)	Download
1054	सृष्टि-चक्र के फुटकर प्वाइंट्स	चक्रधारी नहीं तो छत्रधारी भी नहीं। ..... चक्रधारी सदैव माया के अनेक प्रकार के चक्रों से मुक्त होगा। (अ॰वा॰18.9.75 पृ.1 आदि)	Download
1055	सृष्टि-चक्र के फुटकर प्वाइंट्स	जो संगमयुग में नहीं वो दिन-प्रतिदिन तमोप्रधान बनते ही जाते हैं। उस तरफ तो तमोप्रधानता बढ़ती जाती है, उस तरफ तुम्हारा संगमयुग पूरा होता जाता है। यह समझने की बातें हैं ना। (मु.14.4.67 पृ.1 मध्यांत) मु.15.4.75 पृ.1 मध्यांत,	Download

1056	सृष्टि-चक्र के फुटकर प्वाइंट्स	अभी तो मृत्युलोक है। यह मृत्युलोक खत्म हो जावेगा, फिर सतयुग ज़रूर आवेगा। यह चक्र फिरता ही आवेगा। (मु.12.8.73 पृ.4 मध्यादि) मु.5.5.78 पृ.3 अंत,	Download
1057	सृष्टि-चक्र के फुटकर प्वाइंट्स	पार्टधारी एक्टर्स होते हुए भी ड्रामा के क्रियेटर, डायरैक्टर, आदि-मध्य-अंत को नहीं जानते तो वह फर्स्ट क्लास ह्युमन ईडियट है। लिखने में कोई हर्जा नहीं है। (मु.3.2.71 पृ.3 अंत) मु.14.8.76 पृ.3 मध्य,	Download
1058	सृष्टि-चक्र के फुटकर प्वाइंट्स	पुरुषोत्तम वर्ष , पुरुषोत्तम मास, पुरुषोत्तम दिन भी इसी पुरुषोत्तम संगम पर ही होते है। पुरुषोत्तम बनने की पुरुषोत्तम घड़ी भी इस पुरुषोत्तम संगमयुग में है। यह बहुत छोटा लीप युग है। (मु.4.5.74 पृ.2 मध्य) मु.8.4.89 पृ.2 आदि,	Download
1059	सृष्टि-चक्र के फुटकर प्वाइंट्स	इस एक्स्ट्रा समय का भी रहस्य है। पीछे आने वाले उलाहना न दें कि हमें बहुत थोड़ा समय मिला। जैसे सौदे के पीछे एक्स्ट्रा रूंग(घात) दी जाती है- वैसे ड्रामा अनुसार यह समय भी सेवा के प्रति अमानत रूप में मिला हुआ है। (अ॰वा॰16.1.79 पृ.221 आदि)	Download
1060	सृष्टि-चक्र के फुटकर प्वाइंट्स	तुम्हारा यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। यह युग बहुत छोटा होता है। इनमें ही बाप आते हैं पढ़ाने लिए। आने से ही पढ़ाई शुरू हो जाती है। (मु.8.3.69 पृ.1 अंत) मु.8.1.04 पृ.2 मध्य,	Download
1061	कल्प वृक्ष (आत्माओं की प्रवेशता से सम्बन्धित सिद्धान्त)	क्राइस्ट तो बड़ा था। उसमें प्रवेश कर क्रिश्चियन धर्म स्थापन किया। छोटेपन में तो शरीर दूसरे का था। .....नानक में भी बाद में सोल ने प्रवेश कर सिक्ख धर्म स्थापन किया। (मु.15.8.72 पृ.3 आदि)	Download
1062	कल्प वृक्ष (आत्माओं की प्रवेशता से सम्बन्धित सिद्धान्त)	जो-2 धर्मस्थापक होते हैं वो पहले-2 पवित्र होते हैं, फिर अपवित्र शरीर में प्रवेश कर धर्म स्थापन करते हैं। जैसे गुरू नानक को तो बच्चे आदि थे, फिर उनमें पवित्र आत्मा प्रवेश कर सिक्ख धर्म की स्थापना की। मु.17.6.73 पृ.1 अंत,	Download
1063	कल्प वृक्ष (आत्माओं की प्रवेशता से सम्बन्धित सिद्धान्त)	पहले-2 है डीटी डिनायस्टी। फिर इस्लामी, बौद्धी आते हैं अपना-2 धर्म स्थापन करने। ..... बुद्ध धर्म तो पहले होता ही नहीं। ज़रूर यहाँ के कोई में प्रवेश करेंगे। (मु.23.3.68 पृ.2 मध्यादि)	Download
1064	कल्प वृक्ष (आत्माओं की प्रवेशता से सम्बन्धित सिद्धान्त)	नई सोल प्रवेश कर मठ-पंथ स्थापन करती है तो उनका मान हो जाता है। (मु.29.7.73 रात्रिक्लास पृ.1 मध्यादि)	Download
1065	कल्प वृक्ष (आत्माओं की प्रवेशता से सम्बन्धित सिद्धान्त)	सतोप्रधान आत्मा को सज़ा अथवा दुःख कैसे मिल सकता है? (मु.22.8.69 पृ.1 अंत)	Download

1066	कल्प वृक्ष (आत्माओं की प्रवेशता से सम्बन्धित सिद्धान्त)	घोस्ट भी आकर प्रवेश करते हैं, तो वह आत्मा हुई न। घोस्ट अपना कर्तव्य करते हैं तो उनका फिर पार्ट बंद हो जाता। (मु.12.7.73 पृ.3 मध्य)	Download
1067	कल्प वृक्ष (आत्माओं की प्रवेशता से सम्बन्धित सिद्धान्त)	तुम जानते हो क्राइस्ट कोई गॉड का बच्चा नहीं था, क्राइस्ट की आत्मा गॉड का बच्चा थी। (मु.22.10.77 पृ.3 आदि)	Download
1068	कल्प वृक्ष (आत्माओं की प्रवेशता से सम्बन्धित सिद्धान्त)	हाँ धर्म स्थापक दूसरे के शरीर में आ सकते हैं। फिर उनका नाम होता है। पवित्र आत्मा आकर प्रवेश करेगी। जो है वह धर्म स्थापन नहीं करेगी। जो आत्मा प्रवेश करेगी वह स्थापना करेगी। सितम आदि पहली-2 आत्मा सहन करती है। (मु.11.12.77 पृ.2 आदि) मु.9.12.87 पृ.2 आदि,	Download
1069	कन्वर्टेड हिंदू कौन?	देवताएँ हिंदू बन गए हैं। हिंदू से फिर और-2 धर्म में कनवर्ट हो गए हैं। वो भी बहुत ही निकलेंगे। जो अपने श्रेष्ठ धर्म, श्रेष्ठ कर्म को छोड़कर थर्ड क्लास में जाकर प्रवेश हुए हैं वो भी निकल पड़ेंगे। पीछे थोड़ा समझेंगे, प्रजा में आ जावेंगे। देवी-देवता धर्म में सब थोड़े ही आवेंगे। सब अपने-2 सेक्शन में चले जावेंगे। (मु.12.1.67 पृ.2 अंत) मु.13.1.75 पृ.2 अंत,	Download
1070	कन्वर्टेड हिंदू कौन?	भारतवासी ही लायक बनते हैं, और कोई नहीं। हाँ, जो और धर्मों में कनवर्ट हो गए हैं वो आ सकते हैं, फिर इसमें कनवर्ट हो जावेंगे, जैसे उसमें हुए थे। (मु.15.1.67 पृ.1 अंत)	Download
1071	कन्वर्टेड हिंदू कौन?	जो कनवर्ट हुए होंगे वह तो निकल आवेंगे। उनकी क्या फिकरात करनी है? आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाला, बहुत भक्ति करने वाला और धर्म में कनवर्ट हो जाए न सके। वह तो अपने धर्म में ही पक्के रहते हैं। कनवर्ट होते हैं कच्चे पिछाड़ी वाले। (मु.23.2.69 पृ.2 आदि)	Download
1072	कन्वर्टेड हिंदू कौन?	तो क्या यह गुरू लोग तुमको पारसबुद्धि बनावेंगे? वह तो प्रवृत्तिमार्ग को मानते ही नहीं। इनका धर्म ही अलग है। अपना आदि सनातन देवी-देवता धर्म भूल और-2 धर्मों में फँस पड़े हैं।(मु.28.4.68 पृ.2 अंत)	Download
1073	कन्वर्टेड हिंदू कौन?	सभी धर्म वालों से देवता धर्म वालों की आदमशुमारी जास्ती होगी; परंतु वह कन्वर्ट हो गए हैं। ..... इसलिए थोड़ी संख्या हो जाती है। यह भी ड्रामा। इसमें समझने की बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। (मु.25.9.73 पृ.2 मध्य)	Download
1074	कन्वर्टेड हिंदू कौन?	हिंदुओं को मुसलमान लोग काफर कहते हैं; क्योंकि वो अपने धर्म को जानते ही नहीं हैं। कब किसी को मानेंगे, कब किसी को मानेंगे। बहुतों के पास जाते रहेंगे। क्रिश्चियन लोग कब किसी के पास जावेंगे नहीं। (मु.1.3.67 पृ.2 मध्यादि)	Download

1075	कन्वर्टेड हिंदू कौन?	मुख्य है ही 4 धर्म- डीटीज़्म, इस्लामिज़्म, बौद्धिज़्म, क्रिश्चियनिज़्म, बाकी फिर इनसे वृद्धि होती गई है। इन भारतवासियों को पता ही नहीं पड़ता हम किस धर्म के हैं। धर्म का मालूम नहीं है तो धर्म ही छोड़ देते। (मु.21.9.68 पृ.3 अंत)	Download
1076	कन्वर्टेड हिंदू कौन?	ढेर आत्माएँ हैं। एक-2 का थोड़े ही बैठ बतावेंगे। नटशैल में बताते हैं। कितनी डार-टारियाँ निकलते-2 झाड़ वृद्धि को पा लेता है। बहुत हैं जिनको अपने धर्म का पता ही नहीं है। (मु.26.9.68 पृ.3 मध्यांत)	Download
1077	कन्वर्टेड हिंदू कौन?	देखो कितने क्रिश्चियन, बौद्धी, मुसलमान बन गए हैं। उन्हों को ग्लानि की बातें सुनाय-2 अपने धर्म में खैंच लेते हैं।(मु.3.3.76 पृ.3 आदि)	Download
1078	कन्वर्टेड हिंदू कौन?	जो इस कुल का बनने वाला होगा वह तुम्हारी बातें सुनकर सोच में पड़ जावेगा। कहेंगे आपकी बात तो ठीक है। (मु.10.3.69 पृ.2 अंत)	Download
1079	कन्वर्टेड हिंदू कौन?	बहुत बच्चे हैं जो और-2 धर्मों में कनवर्ट हो गए हैं। वह फिर निकलकर अपने असल धर्म में आ जावेंगे। ... जो हिंदू से मुसलमान बनते हैं उनको शेख कहते हैं। शेख मुहम्मद।(मु.12.1.69 पृ.3 मध्य)	Download
1080	कन्वर्टेड हिंदू कौन?	भारत का आदि सनातन धर्म है नहीं। हिन्दू भी बहुत कम हैं , और-2 धर्मों में मिक्स हो गए हैं। नहीं तो सभी से जास्ती आदि सनातन देवी-देवता धर्म के होने चाहिए। (मु.23.9.71 पृ.2 मध्यादि)	Download
1081	विधर्मी ही अधूरे ब्राह्मण बने	आगे चल मालूम पड़ता जावेगा कौन-2 इस कुल के हैं। जो और धर्मोंं में कन्वर्ट हो गए हुए हैं वह भी निकलते आवेंगे। (मु.26.3.70 पृ.3 मध्य)	Download
1082	विधर्मी ही अधूरे ब्राह्मण बने	यह नॉलेज है ही भारतवासियों के लिए। भारतवासी ही पहले नम्बर में स्वर्ग के फूल थे। क्रिश्चियन वा मुसलमान आदि को फूल नहीं कहा जाता। (काँटें हैं क्या?) वह उस गार्डन के फूल नहीं हैं। वह तो आते ही हैं बाद में।(मु.13.4.69 पृ.1 अंत)	Download
1083	विधर्मी ही अधूरे ब्राह्मण बने	यह वर्णन भी संगमयुग पर ही कर सकते हैं कि यह दैवी फूल है या आसुरी फूल है। फूल तो भिन्न-2 हैं; परंतु उनमें वैराइटी बहुत हैं। (मु.23.4.68 पृ.2 आदि)	Download
1084	विधर्मी ही अधूरे ब्राह्मण बने	बाप कहते हैं समझदार देखना हो तो यहाँ देखो...। ... महा मूर्ख देखना हो या महा सुजान देखना हो तो यहाँ देखो। स्वर्ग में भी वह जावेंगे; परंतु प्रजा में जावेंगे। (मु.28.10.72 पृ.3 अंत) मु.12.10.02 पृ.4 आदि,	Download
1085	विधर्मी ही अधूरे ब्राह्मण बने	यह (विनाश) ज्वाला इस ज्ञान यज्ञ से प्रज्वलित हुई है। लड़ाई शुरू यहाँ से ही हुई है। (मु.30.9.77 पृ.1 मध्य)	Download
1086	विधर्मी ही अधूरे ब्राह्मण बने	बाप ...तो भारतवासियों अथवा बच्चों को ही कहते हैं। बच्चे ही तो ग्लानि करते थे। (मु.5.2.72 पृ.1 मध्यांत)	Download

1087	विधर्मी ही अधूरे ब्राह्मण बने	दुश्मन भी तुम्हारे बहुत बनते हैं; क्योंकि तुम खुद कहते हो इस विनाश ज्वाला से यह सभी अनेक धर्म भस्मीभूत होने हैं। (मु.8.7.73 पृ.3 मध्य)	Download
1088	धर्मी कौन, विधर्मी कौन?	तुम हो आदि सनातन देवी-देवता धर्म के पक्के। तुम्हारी बुद्धि में ऊँच ते ऊँच भगवान है। (मु.26.2.68 पृ.1 मध्यादि)	Download
1089	धर्मी कौन, विधर्मी कौन?	अपने घराणे का और प्रजा का अच्छी रीति मालूम पड़ जाता है। साहूकार प्रजा कौन बनेंगे, नम्बरवन देवताएँ कौन बनेंगे, समझ तो सकते हैं ना। तुमको सभी एक्युरेट साक्षात्कार होंगे- यह दास-दासियाँ प्रजा साहूकार होंगे। (मु.21.9.68 पृ.4 अंत)	Download
1090	धर्मी कौन, विधर्मी कौन?	84 जन्म नहीं लिए होंगे तो माया हरा देगी। ..... आगे चल तुम बहुत देखेंगे। (मु.26.12.68 पृ.1 अंत)	Download
1091	धर्मी कौन, विधर्मी कौन?	सन्यासी तो आते ही बाद में हैं। इस्लामी, बौद्धी के भी बाद में आते हैं। क्रिश्चियन से कुछ पहले आते हैं।(मु.17.11.74 पृ.2 मध्यादि)	Download
1092	धर्मी कौन, विधर्मी कौन?	जो जिनकी पूजा करते हैं उस धर्म के वह हैं न। (मु.4.5.74 पृ.3 आदि)	Download
1093	धर्मी कौन, विधर्मी कौन?	अभी बाहर से सभी को धक्का मिलता रहता है। कोई भी बात सुनते नहीं। जहाँ-2 बाहर वाले हैं सभी को भगाते रहते हैं। समझते हैं यह बहुत धनवान हो गए हैं। यहाँ वाले गरीब हो गए हैं। (मु.18.3.68 पृ.2 अंत)	Download
1094	धर्मी कौन, विधर्मी कौन?	भारत में कोई भी आवेगा तो भारतवासी उनको पनाह देंगे। (मु.22.6.65 पृ.3 मध्यांत)	Download
1095	धर्मी कौन, विधर्मी कौन?	दूसरे धर्म वाले आए, तो देखो बाप के सामने ही पार्टीशन हुआ ना। (मु.30.9.71 पृ.1 अंत)	Download
1096	धर्मी कौन, विधर्मी कौन?	पहले-2 आदि सनातन देवी-देवता धर्म की आत्माएँ आती हैं थोड़ी, फिर पिछाड़ी में लायक बनते हैं पहले आने लिए। (मु.6.11.68 पृ.3 मध्यांत)	Download
1097	धर्मी कौन, विधर्मी कौन?	दूसरे कोई धर्म वाले इतने उठावेंगे नहीं। उनकी बुद्धि और तरफ चली जावेगी। इतना कशिश ही नहीं होगी। (मु.17.10.72 पृ.2 मध्य)	Download
1098	धर्मी कौन, विधर्मी कौन?	अधर्मी जो होते हैं वो अनराइटियस काम ही करते हैं। (मु.16.7.65 पृ.3 अंत)	Download
1099	धर्मी कौन, विधर्मी कौन?	जो 84 जन्म लेने वाले न होंगे वह समझेंगे नहीं। (मु.13.7.71 पृ.2 मध्य)	Download
1100	धर्मी कौन, विधर्मी कौन?	समझने वाले ही समझेंगे। न समझने वाले के लिए कहेंगे यह हमारे कुल का नहीं है। बिचारा भल वहाँ आवेगा; परंतु प्रजा में। (मु.21.10.75 पृ.3 आदि)	Download
1101	धर्मी कौन, विधर्मी कौन?	पहले-2 जो भारत का देवी-देवता धर्म है, यह किसने स्थापन किया? ... मुख्य तो वह चाहिए। ... हेड को बुलाना पड़े। फिर उसके बाद इस्लामियों, बौद्धियों की मुख्य चाहिए। (मु.1.1.72 पृ.3 अंत, 4 आदि)	Download

1102	धर्मी कौन, विधर्मी कौन?	पक्के हिंदू होंगे तो अपने आदि सनातन देवी-देवता धर्म को मानेंगे। (मु.19.8.67 पृ.3 मध्य)	Download
1103	रावण कौन?	सच खण्ड तो बाप ही स्थापन करें गे। झूठ खण्ड रावण स्थापन करते हैं। रावण का रूप बनाते हैं, अर्थ कुछ नहीं समझते हैं। किसको भी पता नहीं है कि आखरीन भी रावण है कौन? (मु.8.2.71 पृ.3 मध्य)	Download
1104	रावण कौन?	अभी राम सम्प्रदाय और रावण सम्प्रदाय दोनों ही हैं। संगमुयग पर ही यह सभी होते हैं। (मु.16.4.68 पृ.2 अंत)	Download
1105	रावण कौन?	रावण जब (सत्ता में) आते हैं तो पहले-2 घर में ही लड़ाई शुरू होती है। जुदा-2 हो जाते हैं। आपस में ही लड़ मरते हैं। अपना-2 प्राविंस (ज़ोन) अलग कर देते हैं। (मु.8.8.68 पृ.3 मध्यांत)	Download
1106	रावण कौन?	कोई भी विद्वान, शंकराचार्य आदि से पूछो रावण कौन है? कह देंगे यह तो (विकारों की) कल्पना है। जानते ही नहीं तो और क्या रिस्पॉण्ड देंगे! (मु.20.2.70 पृ.2 आदि)	Download
1107	रावण कौन?	मनुष्यों के योग सिखलाने से तो स्वर्ग से नर्क बन गया। (मु.22.4.72 पृ.3 अंत)	Download
1108	रावण कौन?	रावण आदि यह सभी नाम तो हैं ना। रावण बनाते हैं तो कितने मनुष्यों को बाहर से मँगाते हैं; परंतु अर्थ कुछ नहीं समझते। (मु.23.12.68 पृ.2 अंत)	Download
1109	रावण कौन?	फिर दुर्गति कौन करता है? ज़रूर यह गुरू लोग ही करेंगे। (मु.24.8.70 पृ.1 अंत) मु.24.8.74पृ.1अंत,	Download
1110	रावण कौन?	ज़रा भी लड़ते-झगड़ते हैं तो नास्तिक समझो। बाप को जानते ही नहीं। वह जैसे क्रोध के रम्बे बन जाते हैं, वह आस्तिक नहीं ठहरा। भल कितना भी कहे हमारा बाप में प्यार है; परंतु ईश्वरीय कायदे के बरखिलाफ बात की तो रावण सम्प्रदाय का ही समझो। (मु.24.2.69 पृ.1 अंत)	Download
1111	रावण कौन?	रावण के 10 सिर वाली आत्माएँ हर छोटी-सी परिस्थिति में भी कभी सहयोगी नहीं बनेंगी। क्यों, क्या, कैसे के सिर द्वारा अपना उल्टा अभिमान प्रत्यक्ष करती रहेंगी। ... बार-2 कहेंगे यह बात तो ठीक है; लेकिन यह क्यों, वह क्यों? इसको कहा जाता है कि एक बात के 10 शीश लगाने वाली शक्ति। सहयोगी कभी नहीं बनेंगे, सदा हर बात में आॅपोज़िशन करेंगे। तो आॅपोज़िशन करने वाले रावण सम्प्रदाय हो गए ना। (अ॰वा॰ 3.4.82 पृ.339 मध्य)	Download
1112	रावण कौन?	मनुष्यों से पूछो- आखिर रावण है कौन? कब से इनका जन्म हुआ? कब से जलाते हो? कहेंगे अनादि है। (मु.13.4.84 पृ.2 अंत)	Download
1113	रावण कौन?	रावण जब से आता है तो भक्ति भी उनके साथ है और जब बाप आते हैं तो उनके साथ ज्ञान है। (मु.23.12.68 पृ.2 आदि)	Download
1114	रावण कौन?	यह बेहद की बात है। रावण का राज्य सारी बेहद की दुनिया पर है। हद की लंका आदि की बात ही नहीं। (मु.18.7.69 पृ.1 मध्यांत)	Download

1115	रावण कौन?	रावणराज्य है ना। न राम और राम की बायोग्राफी को जानते हैं। दिन-प्रतिदिन रावण की पाग बढ़ाते ही जाते हैं। (मु.20.2.72 पृ.2 अंत)	Download
1116	रावण कौन?	पार करने वाला एक ही बाप है। तो ज़रूर कोई डुबोने वाले भी होंगे। वह गुरू नहीं हैं जो परमपिता परमात्मा से बेमुख करते रहते हैं। (मु.22.1.72 पृ.3 अंत)	Download
1117	रावण कौन?	इसमें दुख देने वाला कौन है? ...बाप कहते हैं इन गुरुओं को तो पहले छोड़ो। ...बड़े-2 गुरु लोग सभी से बड़े काँटे हैं। परमात्मा को सर्वव्यापी कहना उनसे बड़ा काँटा कोई नहीं। बाप की सारी महिमा ही गुम हो जाती। (मु.27.1.73 पृ.1 मध्य)	Download
1118	रावण कौन?	झूठ खंड स्थापन करने वाला है रावण। ... भक्ति सिखलाने वाले हैं अनेक गुरू लोग। ... सन्यासी उदासी बहुत प्रकार के गुरू लोग होते हैं। (मु.6.8.75 पृ.2 मध्यांत)	Download
1119	रावण कौन?	रावण को जलाने का तो भारत में ही रिवाज़ है। और कोई जगह नहीं जलाते होंगे। ...सबसे जास्ती उत्सव मैसूर का महाराजा मनाते हैं। (मु.24.9.73 पृ.1 मध्यादि)	Download
1120	रावण कौन?	बाप माना वर्सा। बेहद का वर्सा मिलता है। अभी वह रावण ने छीना हुआ है। (मु.16.9.73 पृ.3 आदि)	Download
1121	रावण कौन?	बाप का भी जन्म है तो रावण का भी जन्म होता है। यह किसको भी पता नहीं है। (मु.8.4.71 पृ.2,3)	Download
1122	रावण कौन?	रावण-राज्य तो ज़रूर खलास होना चाहिए ना। यज्ञ में भी प्योर ब्राह्मण चाहिए ना। (मु.11.1.66 पृ.4 मध्यादि)	Download
1123	कामी इस्लामी	विकारी चढ़ न सके। छिपकर आए बैठते थे। कहते हैं वह पत्थर जाकर बना। अब ऐसे नहीं कि मनुष्य पत्थर वा झाड़ जाकर बनते हैं। पत्थरबुद्धि बन गया। (मु.7.9.68 पृ.1 अंत)	Download
1124	कामी इस्लामी	कोई वैश्या है, भल जन्म अच्छे घर में ले फिर भी संस्कार अनुसार वह वैश्या(वैश्याओं) तरफ ही चली जावेगी। ..... बड़े-2 आदमियों की गुप्त रहती है। ज्ञान में आने से भी तो संस्कार बदलते नहीं तो समझते हैं कि यह शायद वैश्या होगी। (मु.14.5.73 पृ.3 मध्य)	Download
1125	कामी इस्लामी	बाहर से भल कितना भी लव करते हैं, अन्दर बिल्कुल डर्टी हैं। (मु.2.5.73 पृ.1 अंत)	Download
1126	कामी इस्लामी	बाप कहते हैं ं जिनका बहुत मान है वह बड़े ते बड़ा भ्रष्टाचारी समझो। (मु.8.4.72 पृ.2 मध्यादि)	Download
1127	कामी इस्लामी	इन सभी सितारों में जास्ती खातिरी होती है कुमारका की। (मु.रात्रि क्लास.25.9.64, 19.8.73 पृ.4 आदि)	Download
1128	कामी इस्लामी	उस समय इस्लामी आए हैं तो उन बाहर वालों ने आकर हिन्दुस्तान नाम रखा। (मु.22.2.74 पृ.1 आदि)	Download
1129	कामी इस्लामी	शास्त्रों (में) फिर लिख दिया है श्राप दिया तो पत्थर बन गया। (मु.21.3.68 पृ.4 आदि) मु.22.3.74 पृ.4 आदि,	Download

1130	कामी इस्लामी	दिन-रात-दिन गुह्य से गुह्य सुनाते रहते हैं। नया कोई यह समझ न सके। भल 25 वर्ष से रहते हैं ; परन्तु बहुत हैं इन गम्भीर बातों को समझते नहीं हैं। (मु.24.5.64 पृ.1 मध्यांत)	Download
1131	कामी इस्लामी	बड़ा पद जो मिला है तो उसमें ही रहते हैं। (मु.25.1.68 पृ.2 अंत)	Download
1132	कामी इस्लामी	इस्लामी देखो कितने काले हैं। इनकी भी फिर बहुत ब्रान्चेज निकलती रहती हैं। मुहम्मद तो बाद में आता है। पहले हैं इस्लामी। (मु.27.8.69 पृ.1 अंत) मु.10.9.85 पृ.1 अंत,	Download
1133	कामी इस्लामी	आगे मनुष्यों की बलि चढ़ती थी। वह भी गवर्मेंट ने बंद किया है। मनुष्यों के माँस को महाप्रसाद समझ बाँटते थे, वह फिर खाते भी थे। अभी बकरे का महाप्रसाद समझते हैं। (मु.8.11.68 पृ.3 अंत)	Download
1134	कामी इस्लामी	माया बड़ी प्रबल है। ... कर्मेन्द्रियाँ धोखा बहुत देती है। ... आँख कर्म इन्द्रियाँ ही सभी से जास्ती धोखा देती हैं। (मु.10.7.69 पृ.1 आदि)	Download
1135	कामी इस्लामी	बाप कहते हैं मैं एक-2 आत्मा को सकाश देता हूँ, सामने बैठ लाइट देता हूँ। तुम तो ऐसे नहीं करेंगे। (मु.ता॰12.4.68, 3.5.69 पृ.4 अंत)	Download
1136	कामी इस्लामी	माया ऐसी है जो एकदम माथा ही खराब कर देती, हार्टफेल कर देती है। (मु.13.11.72 पृ.2 अंत) मु.15.11.87 पृ.2 अंत,	Download
1137	कामी इस्लामी	कोई सितारा बहुत तीखा होता है, कोई हल्का। कोई चंद्रमा के नज़दीक होते हैं। ...उन सितारों को देवता नहीं कह सकते। (मु.ता॰26.9.68 पृ.2 अंत)	Download
1138	कामी इस्लामी	मैं स्वर्ग स्थापन कर रहा हूँ तो माया भी अपना स्वर्ग दिखलाती है। टैम्पटेशन देती है। (मु.26.8.68 पृ.2 मध्य)	Download
1139	कामी इस्लामी	माया भी बलवान है। इतनी बलवान है जो सारी दुनिया को वैश्यालय में डाल दिया है। (मु.2.1.69 पृ.1 मध्यादि) मु.2.11.99 पृ.1 मध्यांत,	Download
1140	कामी इस्लामी	माया के संग में इतना तो तुम गिर पड़े हो कि जिसने तुमको आसमान पर चढ़ाया उनको ही ठिक्कर-भित्तर में ले गए। (मु.17.8.68 पृ.1 अंत)	Download
1141	कामी इस्लामी	माया भुलावेगी, परमपिता परमात्मा से विमुख करेगी। उनका धंधा ही यह है। जब से उनका राज्य हुआ है, तुम विमुख बनते आए हो। (मु.10.3.72 पृ.1 मध्यादि)	Download
1142	कामी इस्लामी	बाप कहते हैं जितना मैं सर्वशक्तिवान हूँ, उतनी माया भी शक्तिवान है। आधाकल्प है राम-राज्य, आधाकल्प है रावण-राज्य। (मु.23.9.71 पृ.3 आदि) मु.27.10.96 पृ.3 मध्य,	Download
1143	कामी इस्लामी	यह बाप चला जावेगा। इनका क्रियाकर्म, सिरोमणि(सेरीमनी) आदि कुछ भी नहीं करना होता है। ...और सभी मनुष्यों की क्रियाकर्म करते हैं। (मु.13.9.67 पृ.2 आदि)	Download

1144	कामी इस्लामी	अभी तो माया भी समझ गई है कि अब हमारा राज्य गया कि गया। ... वह भी ब्राह्मण आत्माओं से, श्रेष्ठ आत्माओं से वार करते-2 थक गई है। (अ॰वा॰ता॰ 14.12.97 पृ.80 अंत)	Download
1145	क्रोधी क्रिश्चियन	शरीर को देखकर कहते हैं यह अमेरिकन है, यह फलाना है। (मु.16.9.68 पृ.1 अंत)	Download
1146	क्रोधी क्रिश्चियन	क्रिश्चियन यहाँ से ही साहूकार बने हैं। क्रिश्चियन और कृष्ण रास मिलती है। पिछाड़ी में फिर उनको आपस में लड़ाकर कृष्ण सभी कुछ ले लेते हैं। (मु.1.5.73 पृ.3 अंत)	Download
1147	क्रोधी क्रिश्चियन	विलायत वाले इतने तमोप्रधान नहीं जितने कि भारतवासी हुए हैं। उन्होंने इतना सुख नहीं देखा है तो तमोप्रधान भी नहीं बने हैं। (मु.29.9.70 पृ.2 अंत)	Download
1148	क्रोधी क्रिश्चियन	क्रिश्चियन का कनेक्शन कृष्ण की राजधानी से बहुत है। वह क्रिश्चियन लोग कृष्ण के(की) राजधानी से बहुत कमाते हैं। पहले कृष्ण की राजधानी को अपने हाथ में ले लेते। फिर देते हैं। कृष्ण कहें अथवा ल.ना. की राजधानी थी न। अभी वही क्रिश्चियन कृष्ण को राजधानी दे देंगे। ... बिल्ली नहीं, बंदर लड़ते हैं। (मु.16.6.73 पृ.1 अंत, पृ.2 आदि)	Download
1149	क्रोधी क्रिश्चियन	क्रिश्चियन डिनायस्टी ने राज्य छीना फिर क्रिश्चियन डिनायस्टी से ही राज्य मिलना है। (मु.17.11.68 पृ.3 अंत)	Download
1150	क्रोधी क्रिश्चियन	क्राइस्ट जब आया उनके पीछे उनकी आत्माएँ आती गईं। उन्हों के पास क्या था? कुछ भी नहीं। जंगल में नंगे रहते थे। पत्तों के कपड़े पहनते थे। उस समय विकार की चेष्टा नहीं रहती थी। (मु.1.3.73 पृ.2 मध्यांत)	Download
1151	क्रोधी क्रिश्चियन	शुरू में थोड़े ही इतने चित्रों आदि के छपाई का काम था। यह क्रिश्चियन लोग जब आए हैं तब से यह शुरू हुए हैं। (मु.27.8.68 पृ.2 अंत)	Download
1152	क्रोधी क्रिश्चियन	क्रिश्चियन लोग ऐसे पक्के होते हैं जो कब दूसरा कोई का शास्त्र, किताब आदि हाथ में भी नहीं लेते। (मु.19.12.70 पृ.3 अंत)	Download
1153	क्रोधी क्रिश्चियन	पहले-2 क्राइस्ट आदि यूरोप तरफ चले गए। (मु.26.7.71 पृ.1 अंत)	Download
1154	क्रोधी क्रिश्चियन	आसुरी मत पर अनेक ढेर के ढेर चित्र बने हैं। (मु.5.5.68 पृ.1 मध्य)	Download
1155	क्रोधी क्रिश्चियन	प्रदर्शनी की राय बाबा ने थोड़े ही निकाली। यह रमेश बच्चे का इन्वेंशन है। ... फिर बाबा भी पास करेंगे। (मु.13.6.72 पृ.2 अंत)	Download
1156	क्रोधी क्रिश्चियन	क्रिश्चियन लोग और किसका लिटरेचर आदि लेते नहीं हैं। उनको अपने धर्म का नशा रहता है। बाप तो कहते देवता धर्म सबसे ऊँच है। वह समझते हमको इन क्रिश्चियन से बहुत मिलता है। (मु.25.11.73 पृ.6 अंत)	Download

1157	क्रोधी क्रिश्चियन	रमेश बच्चा सर्विस में सबसे तीखा है। कहाँ भी मिनिस्टर्स आदि के पास घुस जाता है। ... शंकर द्वारा विनाश भी होने ही वाला है। ... रमेश और ऊशा दोनों को सर्विस का बहुत शौक है। यह वंडरफुल सर्विसेबुल जोड़ी है। (मु.24.1.73 पृ.4 अंत, 5 आदि)	Download
1158	क्रोधी क्रिश्चियन	क्रिश्चियन का भारत से कनेक्शन बहुत है। राजाई भी ली, फिर रिटर्न भी कर रहे हैं। उन्हों को तो भारत की बहुत सम्भाल करनी है। अगर भारत पर कोई चढ़ाई कर ले तो उन्हों के सब पैसे खतम हो जावें। ... इसलिए हर तरह की कोशिश करेंगे भारत को बचाने की। (मु.13.11.73 पृ.2 अंत)	Download
1159	क्रोधी क्रिश्चियन	कहा भी जाता है- इसमें क्रोध का भूत है। ... इस समय सबसे पावरफुल यह क्रिश्चियन लोग हैं । (मु.10.12.83 पृ.1 अंत)	Download
1160	क्रोधी क्रिश्चियन	अगर किस पर क्रोध करते होंगे तो डिस्ट्रक्टिव काम किया ना।....यह माँ-बाप की आबरु (इज़्ज़त) गँवाने वाले प्यादों की लाइन में आ जाते। (मु.3.1.78 पृ.3 अंत)	Download
1161	क्रोधी क्रिश्चियन	क्राइस्ट की कृष्ण के साथ भेंट करते हैं। बुद्ध की नहीं। (मु.6.8.73 पृ.1 मध्य)	Download
1162	क्रोधी क्रिश्चियन	राजाई तुमको ही मिलनी है; क्योंकि कनेक्शन है कृष्णपुरी और क्रिश्चियनपुरी (का)। इन्होंने कृष्णपुरी को क्रिश्चियनपुरी बनाया। कैसे राजाई ली? भारतवासियों को आपस में लड़ा कर। (मु.22.10.77 पृ.2 आदि) मु.27.10.02 पृ.2 मध्य,	Download
1163	क्रोधी क्रिश्चियन	अभी देखेंगे मनुष्यों में सर्वशक्तिवान क्रिश्चियन लोग हैं। वह सभी पर जीत पहन सकते हैं; परन्तु वह मालिक, यह तो कायदा नहीं। ... नहीं तो इन्हों की संख्या सभी से कम होनी चाहिए; क्योंकि लास्ट में हैं; परन्तु 3 धर्मों में यह धर्म सभी से तीखा है। सभी को हाथ कर बैठे हैं। ... इन द्वारा ही फिर हमको राजधानी मिलनी है। कहानी भी है 2 बिल्ले लड़ते हैं, मक्खन तीसरे को मिल जाता है। (मु.11.11.72 पृ.6 अंत) मु.20.11.03 पृ.3 अंत, 4 आदि,	Download
1164	क्रोधी क्रिश्चियन	हिन्दुओं को क्रिश्चियन बनाते हैं तो नन्स बहुत फिरती रहती हैं। (मु.28.9.91 पृ.2 मध्य)	Download
1165	क्रोधी क्रिश्चियन	पैसा कमाने लिए कुछ तो चाहिए न। फिर किस्म-2 के चित्र बैठ बनाए हैं। (मु.18.8.73 पृ.2 मध्यांत) मु.8.8.93 पृ.2 अंत,	Download
1166	क्रोधी क्रिश्चियन	जैसे बाबा रमेश की महिमा करते हैं- प्रदर्शनी विहंग मार्ग की सर्विस का नमूना अच्छा निकाला है। यहाँ भी प्रदर्शनी करेंगे। चित्र तो बहुत अच्छे हैं। (मु.17.12.73 पृ.3 अंत)	Download
1167	क्रोधी क्रिश्चियन	बॉम्बे पहले क्या थी! 100 वर्ष में क्या हो गई है! ... समुद्र को सुखाया है। ....पानी जैसे कमती होता जाता है। (मु.20.9.77 पृ.2 अंत)	Download
1168	क्रोधी क्रिश्चियन	वे क्रिश्चियन लोग तो एक ही भाषण में, ...कितने क्रिश्चियन बना लेते हैं। (मु.7.5.73 पृ.3 मध्यांत)	Download

1169	क्रोधी क्रिश्चियन	क्रिश्चियन की बुद्धि पत्थरबुद्धि नहीं है, जितनी यहाँ वालों की है। वह सुख भी कम तो दुःख भी कम पाते हैं। ...उन्हों की न पारस बुद्धि, न पत्थरबुद्धि होती है। ...साइंस का प्रचार सारा इन क्रिश्चियन से ही निकला है। (मु.ता॰11.4.68 पृ.2 मध्यांत)	Download
1170	क्रोधी क्रिश्चियन	क्रिश्चियन लोग खुद भी समझते हैं- हमको कोई प्रेर रहा है, हम अपने ही विनाश के लिए बनाते हैं। कहते हैं हम ऐसे-2बॉम्बस बना रहे हैं, जो एक दुनिया तो (क्या) 10 दुनियाओं को भी एक बम से खत्म करेंगे। (मु.23.3.68 पृ.4 आदि) मु.12.3.99 पृ.3 अंत,	Download
1171	क्रोधी क्रिश्चियन	बड़े प्रोग्राम प्रभावित करते हैं। नाम बाला होता है। एडवर्टाइज़ अच्छी हो जाती है। ...लेकिन छोटे स्थान और छोटे सेंटर्स या तो छोटे-2 स्नेह मिलन करो वा योग शिविर का छोटा-सा प्रोग्राम रखो। (अ॰वा॰31.1.98 पृ.119 अंत)	Download
1172	क्रोधी क्रिश्चियन	अब यह पोप है क्रिश्चियन धर्म का बड़ा । (मु.16.11.73 पृ.2 अंत)	Download
1173	क्रोधी क्रिश्चियन	यह भी समझाया है घोस्ट नाम बाइबिल में चला आता है। रावण माना घोस्ट। (मु.21.12.73 पृ.2 आदि) मु.16.11.83 पृ.1 अंत,	Download
1174	क्रोधी क्रिश्चियन	इस समय बाहुबल भी है, योगबल भी है। ...यह तो दो क्रिश्चियन आपस में तो विश्व के मालिक बन सकते हैं। इतनी ताकत इन्हों में है; परंतु लॉ नहीं है। (मु.13.11.72 पृ.2 अंत)	Download
1175	क्रोधी क्रिश्चियन	बाप कहते हैं मैं सदैव परमधाम का रहने वाला हूँ। यहाँ पुरानी दुनिया में आकर तुमको वर्सा देता हूँ। फिर भी तुम नाम बदनाम करते हो। तब गाया हुआ है कि सद्गुरू का निंदक सूर्यवंशी राज्य में ठौर न पा सके। (मु.13.11.72 पृ.3 मध्यांत) मु.15.11.87 पृ.3 मध्य,	Download
1176	लोभी मुस्लिम	मुसलमान आदि सबको श्री-2 कहते हैं। (मु.25.2.68 पृ.3 आदि)	Download
1177	लोभी मुस्लिम	मुसलमानों को 300/400 वर्ष हुआ होगा। इनके पहले नहीं कहेंगे कि घोर अंधियारा था। कोई खिटपिट न थी। अभी तो कितना घोर अंधियारा है। मुसलमान बहुत दूर थे (धनबाद में)। (मु.26.3.73 पृ.2 मध्य)	Download
1178	लोभी मुस्लिम	भारत जो है उनका दुश्मन कोई नहीं है। यह तो दूसरे धर्म वाले आकर लड़ाते हैं। जैसे मुसलमान लोग आए, फूट डाल भारत को भी आपस में लड़ा दिया। (मु.28.11.65 पृ.5 मध्य)	Download
1179	लोभी मुस्लिम	मुसलमानों का मजहबी पागलपना यह पुराना है। (मु.13.5.72 पृ.3 मध्यादि)	Download
1180	लोभी मुस्लिम	भल कहते हैं हिंदू-मुस्लिम भाई-2; परंतु अर्थ नहीं समझते। (मु.12.6.68 पृ.3 आदि) मु.14.6.74 पृ.3 आदि,	Download
1181	लोभी मुस्लिम	हिंदू और मुसलमान मिले हुए हैं। (मु.16.2.74 पृ.4 अंत)	Download
1182	लोभी मुस्लिम	हिंदुस्तान में तो हिंदू-मुसलमान दोनों पुराने रहते आते हैं। यह हैं पुराने दुश्मन। अभी उन्हों को कौन भगावे? यवनों और कौरवों की तो लड़ाई है। मु.14.7.73 पृ.2 मध्यादि,	Download
1183	लोभी मुस्लिम	मुसलमान कब आए? कितना वर्ष हुआ होगा? 5/6 सौ वर्ष समझो। (मु.19.6.72 पृ.1 आदि)	Download

1184	लोभी मुस्लिम	मुसलमानों के बहुत हैं। अमरीका में कितने साहूकार हैं। सोने, हीरों की खानियाँ हैं। जहाँ बहुत धन देखते हैं तो उस पर चढ़ाई कर धनवान बनते हैं। (मु.27.8.69 पृ.1 अंत)	Download
1185	लोभी मुस्लिम	सोमनाथ का मंदिर बनाते हो। ... फिर उन्होंने लूटा भी अनेक मंदिरों को होगा। तो सारी बेहद की हिस्ट्री-जाॅग्राफी को तुम जान गए हो। (मु.22.10.77 पृ.3 आदि) मु.27.10.02 पृ.3 मध्य,	Download
1186	लोभी मुस्लिम	देखो, मुहम्मद गज़नवी ने मंदिर को लूटा था ना। अगर उनको यह मालूम होता कि हमारे बाप का मंदिर है तो लूटेंगे थोड़े ही। (मु.28.10.72 पृ.3 आदि) मु.12.10.02 पृ.3 मध्य,	Download
1187	लोभी मुस्लिम	बाबा, हमें टूटी-फूटी रत्न भेज देते हैं। बहुत कट करते हैं। हमारे रत्नों की चोरी हो जाती है। बाबा, हम अधिकारी हैं, जो रत्न मुख से निकलते हैं वह सभी हमारे पास आने चाहिए। (मु.10.3.72 पृ.2 अंत) मु.29.3.02 पृ.3 मध्य,	Download
1188	मोही महर्षि	लड़ाई तो है ही कौरवों और यवनों की। (मु.26.2.71 पृ.2 अंत)	Download
1189	मोही महर्षि	आर्य समाजी और मुसलमान दोनों कट्टर होते हैं। (मु.2.6.71 पृ.3 आदि)	Download
1190	मोही महर्षि	वहाँ लड़ाई शुरू हुई और यहाँ यवनों-कौरवों की लग जावेगी। (मु.14.5.72 पृ.3 मध्यांत)	Download
1191	मोही महर्षि	60/65 वर्ष आगे यह कुछ न था। (मु.29.9.73 पृ.2 अंत)	Download
1192	मोही महर्षि	जो सुधरेली आर्य थे वही अभी अनसुधरेली बने हैं। ... बाकी वह जो आर्य-समाजी हैं वह तो मठ-पंथ है। (मु.18.3.68 पृ.1 मध्य)	Download
1193	मोही महर्षि	गवर्मेंट को लाख-दो की मदद करते हैं तो फिर महाराजा का टाइटल मिल जाता है। वो गवर्मेंट भी टाइटल देती थी- राय साहब, रायबहादुर आदि। यह टाइटल बिकते थे। (मु.9.10.73 पृ.3 अंत, 4 आदि)	Download
1194	मोही महर्षि	राजा लोग भी प्रजा से कर्जा लेते हैं। अभी देखो, प्रजा साहुकार है, गवर्न्मेंट कंगाल है, लोन लेती है। सतयुग में भी ऐसा होता है। जो पिछाड़ी में राजा-रानी बनते हैं उनसे प्रजा बहुत साहूकार होती है। (मु.2.6.73 पृ.3 अंत)	Download
1195	मोही महर्षि	महाराजा का टाइटल तो गया, फिर भी चाहे तो कांग्रेस को लाख-दो देवे तो टाइटल कायम हो सकता है। (मु.12.6.74 पृ.3 अंत)	Download
1196	मोही महर्षि	महर्शि भी कहते, खाओ-पिओ, मौज करो, यह सभी आदत आपे ही मिट जावेंगी। अभी सिवाय योग की(के) तो कब कोई आदत मिट नहीं सकती। मिटाने वाला तो ज़रूर चाहिए ना। (मु.8.4.69 पृ.1 मध्यादि) मु.16.3.74 पृ.1 मध्यादि,	Download
1197	मोही महर्षि	जो अच्छा पहले नम्बर वाला शंकराचार्य होगा वह थोड़े ही भक्ति करता होगा। यह तो भक्ति करते हैं। पहले गवर्मेंट सर्वेंट था, अभी गद्दी मिली हुई है। (मु.28.1.68 पृ.3 अंत)	Download
1198	मोही महर्षि	आर्यसमाजी शास्त्र बहुत पढ़ते हैं। ... आर्यसमाजी किताब बाँटते हैं ना। (मु.25.2.73 पृ.2 आदि, 3 अंत)	Download

1199	मोही महर्षि	कितनी झूठ ठगी लगी पड़ी है। महर्शि आदि का कितना नाम है। ... कोई धर्म को मानते ही नहीं। कहा जाता है रिलीजन इज़ माइट। ... अभी भारत में कोई माइट है नहीं। (मु.28.12.68 पृ.3 मध्यादि) मु.2.12.84 पृ.3 मध्यादि,	Download
1200	मोही महर्षि	बहुतों की बीमारी उथल पड़ती है। मोह जो नहीं था वह भी प्रगट हो जाता है। फँस मरते हैं। ...आर्य समाजी भी हैं हिन्दू। सिर्फ मठ-पंथ अलग कर दिया है। (मु.24.1.68 पृ.2 अंत, 3 मध्यादि) मु.29.1.04 पृ.3 मध्य-अंत ,	Download
1201	मोही महर्षि	हर एक अपने धर्म की बड़ाई करते हैं। हिंदू धर्म वाले ही हैं जो अपने धर्म को नहीं जानते हैं। इसलिए बाप कहते हैं कि इररिलीजियस हैं। धर्म में ही ताकत है। ...जैसे आर्य समाजी हैं। अभी दयानन्द को कितना समय हुआ? पिछाड़ी के छोटे-2 टार-टारियाँ हैं। जैसे मच्छर जन्मते हैं और मरते हैं। लायक नहीं है। शो तो करते हैं ना। (मु.ता॰6.8.73 पृ.1 मध्यांत)	Download
1202	मोही महर्षि	गवर्मेंट तो कोई धर्म को मानती नहीं। खुद भी मूँझ गए हैं। (मु.16.2.74 पृ.2 मध्यांत)	Download
1203	मोही महर्षि	काँगे्रसियों ने फिरंगियों को निकाला तो राजाओं से भी राजाई छीन ली। राजा नाम ही गुम कर दिया है। (मु.11.1.73 पृ.2 मध्यादि) मु.10.1.93 पृ.2 आदि,	Download
1204	मोही महर्षि	आर्य समाजी लोग देवताओं के चित्रों को नहीं मानते हैं। तुम्हारे पास चित्र देखते हैं तब ही बिगड़ते हैं। (मु.5.11.71 पृ.2 मध्य)	Download
1205	मोही महर्षि	यज्ञ में विघ्न पड़ते हैं; क्योंकि राजा-रानी तो कोई है नहीं। प्रजा का प्रजा पर राज्य है। (मु.28.6.78 पृ.1 अंत)	Download
1206	मोही महर्षि	यह है प्रजा का प्रजा पर राज्य। अनेक पंच हैं। नहीं तो 5 पंच होते हैं। यहाँ तो सब पंच ही पंच हैं। (मु.7.12.73 पृ.3 आदि)	Download
1207	मोही महर्षि	वहाँ ँ वज़ीर तो होते ही नहीं। अभी राजाएँ न हैं तो वजीर ही वजीर हैं। अभी तो प्रजा का प्रजा पर राज्य है। (मु.ता॰1.4.69 पृ.2 अंत)	Download
1208	मोही महर्षि	राजाई तो सब खतम हो जानी है, सबको उतार देंगे। फिर प्रजा का प्रजा पर राज्य होगा। कौरव राज्य सारी दुनिया में हो जावेगा। (मु.14.12.67 पृ.2 मध्यांत) मु.13.12.85 पृ.2 अंत,	Download
1209	मोही महर्षि	मनुष्य तो समझते हैं- स्वर्ग-नर्क यहाँ ही है। (मु.16.7.73 पृ.2 आदि)	Download
1210	मोही महर्षि	निमित्त तो इन्वेन्शन जगदीश ने किया। ऐसे ही शुरू से वरदान है इन्वेन्शन करने का। (अ॰वा॰15.2.00 पृ.84 मध्य)	Download
1211	अहंकारी रशियन्स	रशिया और अमेरिका (अहंकारी और क्रोधी रूपी) दो भाई हैं। इन दोनों के ही कॉम्पीटीशन है बॉम्बस आदि बनाने की। ... कहानी भी दिखाते हैं दो बिल्ले आपस में लड़े, मक्खन बीच में तीसरा खा गया।(मु.22.10.68 पृ.2 आदि) मु.23.10.74 पृ.2 आदि,	Download
1212	अहंकारी रशियन्स	योगबल से होती है स्थापना, बाहुबल से होता है विनाश। (मु.11.2.68 पृ.2 मध्यांत)	Download

1213	अहंकारी रशियन्स	इस समय यह अमेरिका, रशिया आदि जो हैं, यह सभी माया का भभका है। ... 100 वर्ष में यह सभी हुए हैं। ...यह है रुण्य के पानी मिसल राज्य। इसको माया का पॉम्प कहा जाता है। ... देह अहंकार तोड़ना चाहिए। (मु.ता॰21.3.72 पृ.2 अंत, 3 मध्यांत) मु.ता॰20.3.07 पृ.3 मध्य-अंत,	Download
1214	अहंकारी रशियन्स	60-65 वर्ष आ(गे) यह कुछ न था। ... साइंस का घमण्ड 100 वर्ष हुआ है। (मु.29.9.73 पृ.2 अंत)	Download
1215	अहंकारी रशियन्स	दिन-प्रतिदिन कितनी खिटपिट है। एक/दो के कितने दुश्मन हैं। घर बैठे ही एक/दो को उड़ा देंगे। (मु.3.1.67 पृ.1 मध्यांत)	Download
1216	अहंकारी रशियन्स	योगबल से होती है स्थापना। बाहुबल से होता है विनाश। (मु.8.3.69 पृ.2 मध्यांत)	Download
1217	अहंकारी रशियन्स	नास्तिक उनको कहा जाता है जो न बाप को, न रचना के आदि-मध्य-अंत को, ड्युरेशन को भी नहीं जानते हैं। (मु.22.7.68 पृ.3 आदि) मु.3.7.04 पृ.3 मध्य,	Download
1218	अहंकारी रशियन्स	देह-अभिमान में आया तो समझो वह नास्तिक है। ... ज़रा भी लड़ते-झगड़ते हैं तो नास्तिक समझो। ... नास्तिक वर्सा थोड़े ही लेंगे। (मु.24.2.69 पृ.1 अंत) मु.1.1.04 पृ.2 मध्यादि,	Download
1219	अहंकारी रशियन्स	उनके पास तो बाहुबल है भी सहज। रशिया और अमेरिका आपस में मिल जाए तो राज्य ले सकते हैं; परंतु ऐसा होता नहीं है। (मु.28.10.72 पृ.3 मध्य) मु.12.10.02 पृ.3 अंत,	Download
1220	अहंकारी रशियन्स	आगे तो सुनते थे रशिया से ज़ार आता है। चढ़ाई करेंगे तो डर जाते थे। अभी तो राजाओं को उतारते ही रहते हैं। पंचायती राज्य हो जाता है। (मु.14.12.67 पृ.2 अंत) मु.13.12.85 पृ.2 अंत,	Download
1221	यादव-कौरव-पाण्डव	तुम कितना भी समझाओ, बुद्धि में बैठेगा नहीं। उन्हों को बाप से प्रीति रखनी नहीं है। इसलिए गायन है कौरवों की विपरीत बुद्धि, पाण्डवों की है प्रीति बुद्धि। (मु.18.11.74 पृ.3 अंत)	Download
1222	यादव-कौरव-पाण्डव	पाण्डव उनको कहा जाता है जो बाप को जानते हैं, बाप से प्रीत बुद्धि हैं। कौरव उनको कहा जाता है जो बाप से विपरीत बुद्धि हैं। (मु.25.12.68 पृ.2 मध्य)	Download
1223	यादव-कौरव-पाण्डव	बाप कल्प-2 आए समझाते हैं। कल्प पूर्व समान समझा रहे हैं। कौरव-पाण्डव दिखाते हैं ना। पाण्डव-कौरव भाई-2 दिखाते हैं। दूसरे गाँव वा देश के नहीं हैं। (मु.20.4.72 पृ.2 आदि)	Download
1224	यादव-कौरव-पाण्डव	एक है यादव मत, दूसरी कौरव मत और यह फिर है पाण्डव मत। पाण्डवों को मिलती है ईश्वरीय मत। (मु.25.5.78 पृ.2 मध्यादि)	Download
1225	यादव-कौरव-पाण्डव	यादव हैं मूसल इन्वेंट करने वाले और कौरव-पाण्डव भाई-2 थे। वह आसुरी भाई, यह दैवी भाई। यह भी आसुरी थे। उन्हों को बाप ने ऊँच बनाकर दैवी भाई बनाया है। (मु.2.11.78 पृ.1 अंत)	Download
1226	यादव-कौरव-पाण्डव	पाण्डव और कौरव यह हैं संगमयुग पर। तुम पाण्डव संगमयुगी हो, कौरव कलियुगी हैं। (मु.19.6.70 पृ.1 अंत)	Download

1227	यादव-कौरव-पाण्डव	पाण्डव सेना में कौन-2 महारथी हैं और कौरव सेना में कौन-2 महारथी हैं? तुम दोनों सेनाओं को जानते हो न। यह भी समझने की बातें हैं। (मु.18.4.73 पृ.4 आदि)	Download
1228	यादव-कौरव-पाण्डव	पाण्डव थे गुप्त। यादव और कौरव प्रत्यक्ष थे। (मु.20.5.73 पृ.3 अंत)	Download
1229	यादव-कौरव-पाण्डव	नाम भी है पाण्डव और कौरव दोनों भाई। वह रावण सम्प्रदाय, यह राम सम्प्रदाय। हैं तो एक ही गाँव के। (मु.7.9.73 पृ.3 मध्यांत)	Download
1230	यादव-कौरव-पाण्डव	पांडवों को तीन पैर पृथ्वी के न मिलते थे। अभी का यह गायन है; परंतु यह किसको पता न है कि वही फिर विश्व के मालिक बने। (मु.18.11.73 पृ.6 अंत)	Download
1231	यादव-कौरव-पाण्डव	कौरव-पांडव भी थे। पांडवों तरफ खुद परमपिता परमात्मा मददगार था। (मु.2.10.71 पृ.1 मध्य)	Download
1232	यादव-कौरव-पाण्डव	नौ रतन दिखाते हैं न। वह कौरव सम्प्रदाय के झूठे रतन। उनके भी नाम निकालेंगे। प्रेसिडेंट, प्राइम मिनिस्टर, होम मिनिस्टर कौरव सम्प्रदाय में कौन-2 बड़े हैं और फिर पाण्डव सम्प्रदाय में कौन-2 बड़े हैं। तो यह समझाना पड़े। (मु.27.12.73 पृ.4 अंत)	Download
1233	यादव-कौरव-पाण्डव	कौरवों और पाण्डवों का अपना-2 झण्डा है। उनको अपनी राजाई, उनको अपनी राजाई है। वह प्रत्यक्ष राज्य है, वह गुप्त राज्य है।(मु.30.1.72 पृ.1 अंत)	Download
1234	यादव-कौरव-पाण्डव	रक्त की नदियाँ यहाँ बहेंगी। यवनों और कौरवों की लड़ाई है। पाण्डव थोड़े ही लड़ते हैं। (मु.7.7.72 पृ.4 अंत)	Download
1235	यादव-कौरव-पाण्डव	पांडवों का स्वयं परमात्मा सारथी था। (मु.20.2.71 पृ.4 आदि)	Download
1236	यादव-कौरव-पाण्डव	अभी तो कौरव राज्य है। यह तो हिस्ट्रियों में भी लगा हुआ है कि पाण्डवों को कौरव बहुत हैरान करते थे; क्योंकि कौरव थे बहुत। पाण्डव थे थोड़े। शास्त्रों में तो बहुत बातें लिख दी हैं। तुम अभी प्रैक्टिकल में देखते हो। राज्य तो दोनों को है नहीं। बाकी कौरव सभा और पाण्डव सभा तो है ना। (मु.3.11.71 पृ.1 अंत)	Download
1237	यादव-कौरव-पाण्डव	पाण्डवों का गायन है! सेवा करने में बहुत मजबूत रहे हैं; इसलिए वह मजबूत शरीर दिखाते हैं; लेकिन हैं मजबूत दिल वाले, मजबूत मन वाले। वह मन व दिल कैसे दिखाएँ? इसलिए शरीर दिखा दिया है। (अ॰वा॰21.10.87 पृ.99 अंत, 100 आदि)	Download
1238	यादव-कौरव-पाण्डव	गाया हुआ है पाण्डवों को 3 पैर पृथ्वी के नहीं मिलते थे। बाप समर्थ तो उनको विश्व की बादशाही दे दी। अभी भी वही पार्ट बजेगा ना। (मु.25.3.71 पृ.3 आदि)	Download
1239	यादव-कौरव-पाण्डव	एक तरफ हैं अंधे की औलाद अंधे। लाठी के लिए चिल्लाते हैं। दूसरे तरफ हैं पाण्डव, जो चिल्लाते नहीं हैं। उन्हों की तरफ साक्षात् परमपिता परमात्मा है जो रास्ता बताते हैं। (मु.14.10.66 पृ.1 मध्य)	Download

1240	यादव-कौरव-पाण्डव	शास्त्रों में भी है कि कौरव-पाण्डव दिन में लड़ते थे, रात को खीरखण्ड हो जाते हैं। सोचते थे हमारे में तो क्रोध का अंग(अंश) आ गया। बाबा, हम आपसे माफी माँगते हैं। (मु.17.2.78 पृ.2 अंत)	Download
1241	यादव-कौरव-पाण्डव	पांडव अर्थात् सदा मजबूत रहने वाले, इसलिए पाण्डवों के शरीर लम्बे-चैड़े दिखाते हैं, कभी कमज़ोर नहीं दिखाते। आत्मा बहादुर है, शक्तिशाली है, उसके बदले में शरीर शक्तिशाली दिखाए हैं। पाण्डवों की विजय प्रसिद्ध है। कौरव अक्षौहिणी होते भी हार गए और पाण्डव पाँच होते भी जीत गए। क्यों विजयी बने? क्योंकि पाण्डवों के साथ बाप है। पांडव शक्तिशाली हैं, आध्यात्मिक शक्ति है; इसलिए अक्षौहिणी कौरवों की शक्ति उनके आगे कुछ भी नहीं है। ऐसे हो ना! कोई भी सामने आए, माया किसी भी रूप में आए तो भी वह हार खाकर जाए, जीत न सके। इसको कहते हैं विजयी पांडव। माताएँ भी पांडव सेना में हो ना। ... जो कमज़ोर होता है वह घर में छिपता है, बहादुर मैदान में आता है। (अ॰वा॰3.2.88 पृ.249 अंत)	Download
1242	यादव-कौरव-पाण्डव	कौरव गवर्मेंट और पाण्डव गवर्मेंट दो हैं ना। सतयुग में तो एक ही गवर्मेंट होती है। तो अब यह पांडव गवर्मेंट है नई। वो तो एक ही कांग्रेस गवर्मेंट है। जब कांग्रेस गवर्मेंट शुरू हुई है तो पांडव गवर्मेंट भी शुरू हुई है। (मु.4.2.67 पृ.1 मध्य)	Download
1243	यादव-कौरव-पाण्डव	पांडवों को देश निकाली मिली थी (निकाला मिला था) तो यह गऊशाला बनी न। (मु.17.5.73 पृ.3 अंत)	Download
1244	यादव-कौरव-पाण्डव	पांडवों के चित्र कितने बड़े-2 हैं। इनका मतलब है यह इतने बड़े विशाल बुद्धि थे, उन्हों की बुद्धि विशाल थी। इन्होंने फिर शरीर को बड़ा बना दिया है। (मु.10.3.69 पृ.2 अंत, 3 आदि)	Download
1245	यादव-कौरव-पाण्डव	यह है गुप्त पांडव गवर्मेण्ट, कोई को भी पहचान में नहीं आ सकती। बाप भी गुप्त, ज्ञान भी गुप्त। (मु.13.3.71 पृ.2 मध्यांत) मु.10.4.86 पृ.2 मध्य,	Download
1246	यादव-कौरव-पाण्डव	तुम हो पांडव सम्प्रदाय। पांडवों का राज्य नहीं था, न कौरवों का राज्य है। (मु.29.7.70 पृ.2 आदि)	Download
1247	यादव-कौरव-पाण्डव	कौरव तो कलियुग में थे। कौरव और यादवों के समय श्रीकृष्ण कैसे आ सकता! (मु.16.2.74 पृ.1 अंत)	Download
1248	यादव-कौरव-पाण्डव	गीता में है ना भारतवासी कौरव, पाण्डव क्या करत भये? बरोबर इन्होंने मूसल निकाले, अपने कुल का विनाश किया। यह सब आपस में दुश्मन हैं। (मु.3.1.67 पृ.1 मध्यांत)	Download

1249	यादव-कौरव-पाण्डव	वो हैं जिस्मानी पंडे है, तुम हो रूहानी। इसलिए तुम्हारा नाम पाण्डव सेना गाया हुआ है। तुम सेना भी हो। पण्डे भी हो। रूहानी यात्रा पर ले जाते हो। तुम्हारी यह पाण्डव गवर्मेंट है; परन्तु गुप्त। पाण्डव गवर्मेण्ट, कौरव और यादव गवर्मेण्ट क्या करत भये? यह इस समय की बात है जबकि महाभारत की लड़ाई का समय भी सिर पर है। (मु.11.4.67 पृ.1 अंत, 2 आदि) मु.1.5.85 पृ.2 आदि,	Download
1250	यादव-कौरव-पाण्डव	यादव, कौरव, पाण्डव किसको कहा जाता है तुम प्रैक्टिकल में देखते हो। यूरोपवासी यादवों ने मूसल निकाले, विनाश हुआ। (मु.7.10.71 पृ.3 अंत)	Download
1251	यादव-कौरव-पाण्डव	साँग बनाते हैं ना। ...पेट से मूसल नहीं, यह बुद्धि से मूसल निकाल रहे हैं, जिससे अपना ही विनाश करेंगे। कौरवों-पाण्डवों की लड़ाई है नहीं। ....तुम हो वैष्णव। लड़ाई होती है यवनों और हिन्दुओं की, जिससे रक्त की नदियाँ बहती हैं। पाण्डव हिंसक लड़ाई कर न सकें। (मु.14.4.71 पृ.3 अंत)	Download
1252	यादव-कौरव-पाण्डव	यूरोपवासी यादव, भारतवासी कौरव और पाण्डव। वह सभी एक तरफ हैं , इस तरफ दो भाई-2 हैं। ... कौरव और पाण्डव एक ही घर के थे। (मु.22.10.71 पृ.2 मध्यादि)	Download
1253	यादव-कौरव-पाण्डव	कौरव-पाण्डव इकट्ठे रहते हैं । भाई-2 हैं ना। (मु.11.3.67 पृ.3 आदि)	Download
1254	यादव-कौरव-पाण्डव	सर्व का सद्गति दाता जो बाप है उनको हम जान गए हैं। ... वह हैं मैजाॅरिटी, तुम्हारी है मैनॉरिटी । तुम्हारी जब मैजाॅरिटी हो जावेगी तब उन्हों को भी कशिश होगी। (मु.28.9.68 पृ.3 अंत)	Download
1255	यादव-कौरव-पाण्डव	गाया हुआ है पाण्डव अर्थात् सदा विजयी। (अ॰वा॰ 25.11.01 पृ.2 आदि)	Download
1256	यादव-कौरव-पाण्डव	तुम्हारी बाप से प्रीत जुटी है तो बाप से वर्सा भी तुमको मिलता है। बाकी यादव-कौरवों की है विपरीत बुद्धि अर्थात् बाप को जानते ही नहीं हैं। (मु.ता॰17.8.73 पृ.1 मध्यादि)	Download
1257	युधिश्ठिर-ब्रह्मा	युद्ध सिखलाने वाले का नाम युधिष्ठिर रखा है। (मु.26.7.71 पृ.3 आदि)	Download
1258	युधिश्ठिर-ब्रह्मा	यह है युधिष्ठिर के औलाद; क्योंकि बाप युद्ध के मैदान में आकर खड़ा कराते हैं। अंधे जब आकर सज्जा(सोझरे) बनें तब युधिष्ठिर के बच्चे बनें। (मु.12.2.69 पृ.2 मध्यांत) मु.12.1.74 पृ.2 मध्यांत,	Download
1259	युधिश्ठिर-ब्रह्मा	मैंने तुमको इस युद्ध के मैदान में खड़ा किया है पाँच विकारों से लड़ने लिए। (मु.21.9.68 पृ.3 अंत, 4 आदि)	Download
1260	भीम-शंकर	भीमसेन ने कीचकों को पकड़ा है। (मु.7.5.73 पृ.2 मध्यांत)	Download
1261	भीम-शंकर	भील बाहर रहने वाला अर्जुन से भी तीखा हो गया। (मु.4.1.74 पृ.2 आदि)	Download
1262	भीम-शंकर	लोगों को परखना और शक्तियों की रखवाली करना पांडवों का काम है। (अ॰वा॰9.6.69 पृ. 75 मध्य)	Download

1263	भीम-शंकर	तुम्हारी जैसी विशाल बुद्धि और कोई हो न सके। (मु.10.3.69 पृ.3आदि)	Download
1264	भीम-शंकर	यह नॉलेज तेरे सिवाय अन्य किसी की बुद्धि में नहीं है। (मु.11.2.73 पृ.2 मध्य)	Download
1265	भीम-शंकर	शंकर समान ज्वाला रूप बनकर प्रज्वलित की हुई विनाश की ज्वाला को सम्पन्न करना है। (अ॰वा॰3.2.74 पृ.13 अंत)	Download
1266	भीम-शंकर	शेर सभी से तीखा होता है। जंगल में अकेला रहता है। हाथी हमेशा झुण्ड में रहता है, अकेला होगा तो कोई मार भी दे। (मु.4.3.73 पृ.3 मध्य)	Download
1267	भीम-शंकर	आधा में जाम, आधा में रैयत। (मु.21.3.68 पृ.4 मध्यांत)	Download
1268	अर्जुन-बुद्ध	जापान में वह अपन को सूर्यवंशी कहलाते हैं। वास्तव में सूर्यवंशी तो देवी-देवताएँ ठहरे। (मु.29.1.70 पृ.1 अंत)	Download
1269	अर्जुन-बुद्ध	अर्जुन के लिए भी कहते हैं न बहुत गुरू किए थे, शास्त्र आदि पढ़े थे। (मु.22.3.73 पृ.3 मध्यादि)	Download
1270	अर्जुन-बुद्ध	बौद्ध धर्म की एक ने स्पीच की और 60/70 हज़ार को बौद्धी बना लिया। (मु.13.3.72 पृ.2 मध्य)	Download
1271	अर्जुन-बुद्ध	बुद्ध का भी, इब्राहीम का भी हिसाब निकालते हैं। करके एक/दो जन्म का फर्क पड़ेगा। (मु.22.11.71 पृ.3 अंत)	Download
1272	अर्जुन-बुद्ध	अर्जुन बहुत शास्त्र पढ़ा हुआ था, तो उनको कहा- यह भूल जाओ और पढ़ाने वाले को भी भूल जाओ। (मु.24.1.65 पृ.3 अंत)	Download
1273	अर्जुन-बुद्ध	बौद्धी धर्म वाले तो बहुत हैं; परंतु उनमें भी मतभेद बहुत हैं। चीनियों की रसम अलग है, तो बुद्ध धर्म की अलग। चीन, जापान की लड़ाई बहुत लगती है। हैं तो एक ही धर्म के। (मु.16.11.73 पृ.2 आदि)	Download
1274	अर्जुन-बुद्ध	बाकी आज से सभी के लिए कौन निमित्त है, वह तो आप जानते ही हैं । दीदी तो हैं , साथ में कुमारका मददगार है।(अ॰वा॰21.1.69 पृ.21अंत, 22 आदि)	Download
1275	नकुल-शंकराचार्य	कोई की बुद्धि में बैठ जाती है तो समझेंगे यह दैवी कुल का है, न कुल का होगा तो समझेगा नहीं। हाँ, आखिर समय पर कहेंगे यह तो ठीक कहते थे। (मु.26.4.71, 25.4.73 पृ.4 मध्यादि)	Download
1276	नकुल-शंकराचार्य	सन्यासी तो आते ही बाद में हैं। इस्लामी-बौद्धी के भी बाद में आते हैं। क्रिश्चियन से कुछ पहले आते हैं। (मु.17.11.74 पृ.2 मध्यादि)	Download
1277	नकुल-शंकराचार्य	सन्यास धर्म के 2 करोड़ एक्टर्स हैं। (मु.29.3.72 पृ.2 अंत)	Download
1278	नकुल-शंकराचार्य	अभी तुम सन्यासियों, राजाओं आदि को इतना उठाए नहीं सकेंगे। जनक, परीक्षित, संन्यासी आदि सभी पिछाड़ी में ही आए हैं। उनको ज्ञान देंगे तो प्रजा निकल आवेगा। (मु.17.10.72 पृ.3 मध्यांत) मु.18.10.77 पृ.3 अंत,	Download

1279	नकुल-शंकराचार्य	शंकराचार्य आदि यह सब भक्त हैं ना। उन्हों को कहेंगे पवित्र भक्त। भक्ति कल्ट तो है ना। जो पवित्र रहते हैं, (उन्हों के) बड़े-2 अखाड़े बने हुए हैं। उनका मान कितना है। (मु.9.11.66 पृ.2 मध्य)	Download
1280	नकुल-शंकराचार्य	सन्यासी एक तरफ पवित्र रह भारत को मदद करते हैं, दूसरी तरफ बाप से बेमुख कर देते हैं। (मु.20.2.83 पृ.3 अंत)	Download
1281	नकुल-शंकराचार्य	कलियुगी गुरू लोग कह देते श्री-श्री 108 जगत गुरू। इसके लिए फिर बाबा ने समझाया है जब अपन को परमात्मा समझ अपनी पूजा बैठ कराते हैं तो उनको हिरण्याकश्यप कहते हैं। (मु.ता॰18.8.73 पृ.2 आदि) मु.ता॰19.8.78 पृ.2 आदि,	Download
1282	नकुल-शंकराचार्य	जिनको सन्यास धर्म में जाना है वह घर में ठहरेंगे नहीं। उनसे सन्यासी बनने का पुरुषार्थ ज़रूर होगा। (मु.7.1.87 पृ.2 अंत)	Download
1283	नकुल-शंकराचार्य	सबसे जास्ती कुंभकरण कौन? जिन कुंभकरणों का मेला लगता है, जो अज्ञान नींद में सोए हुए हैं। (मु.7.1.87 पृ.1 मध्यादि)	Download
1284	नकुल-शंकराचार्य	यह मुफ्त में खा-पी खलास कर देते हैं। जैसे मकर टिड्डी आए फसल को खा चले जाते हैं। यह साधु-संत भी मकर हैं। ...बाप समझाते हैं कि यह भक्तिमार्ग के अनेक गुरु हैं। (मु.ता॰रात्रि क्ला.10.5.68 पृ.2 मध्य)	Download
1285	नकुल-शंकराचार्य	इन सन्यासियों ने भी पवित्रता के आधार पर भारत को थमाया ज़रूर है। ... यह सन्यास धर्म नहीं होता तो भारत एकदम विकारों में जल मरता, पतित बन जाता। (मु.22.6.91 पृ.2 आदि)	Download
1286	नकुल-शंकराचार्य	दिखाते भी हैं- कुमारियों ने बाण मारे हैं भीष्म पितामह आदि को। (मु.2.1.72 पृ.2 मध्यादि)	Download
1287	नकुल-शंकराचार्य	इन भीष्मपितामह आदि को तो पिछाड़ी में ज्ञान मिलना है। (मु.5.2.72 पृ.2 अंत)	Download
1288	सहदेव-सिक्ख	प्रवृत्ति मार्ग दूसरे नम्बर में गुरू नानक का चला है। पंजाब में महाराजा-महारानी भी हुए हैं। (रात्रि मु.9.8.73 पृ.1 अंत)	Download
1289	सहदेव-सिक्ख	सिक्खों की ही डिनायस्टी प्रवृत्ति मार्ग की होती है। और सब हैं निवृत्ति मार्ग वाले। छोटे-2 धर्म हैं। सिक्ख धर्म का अच्छा ही नाम है। गुरू नानक को अवतार मानते हैं। और कोई प्रवृत्ति मार्ग का अवतार सिद्ध ना है सिवाय गुरू नानक के। स्थापना कर फिर बादशाही ली है।(मु.9.10.73 पृ.4 मध्यांत)	Download
1290	सहदेव-सिक्ख	सिक्ख लोग अकाल तख्त पर बैठते हैं। समझते हैं वहाँ से हमको पुलिस नहीं पकड़ेगी; परंतु छोड़ेंगे थोड़े ही। जो बहुत ऊँच बनते हैं वही आकर नीचे भी गिरते हैं। (मु.6.12.71 पृ.3 अंत)	Download
1291	सहदेव-सिक्ख	सच्च खण्ड की स्थापना सिवाय बाप के कोई कर नहीं सकता। एक ही सच्चा बाप है, जिसकी महिमा बहुत गाई हुई है। पहले-2 है देवी-देवता धर्म, सेकिंड नम्बर में फिर है सिक्ख धर्म। इसलिए सिक्ख धर्म बहुत नया है; क्योंकि ब्रदर्स-सिस्टर्स हैं। (मु.10.8.73 पृ.2 मध्यांत)	Download

1292	सहदेव-सिक्ख	नानक ने भी कहा है ना- अमृत छोड़ विश काहे खाए। सिक्ख लोग कंगन पहनते हैं। वास्तव में है यह पवित्रता का कंगन। (मु.23.10.73 पृ.3 अंत)	Download
1293	कल्पवृक्ष के फुटकर प्वाइंट्स	परमपिता परमात्मा आकर ब्राह्मण धर्म, सूर्यवंशी, चंद्रवंशी धर्म स्थापन करते हैं। (मु.13.11.72 पृ.3 मध्य)	Download
1294	कल्पवृक्ष के फुटकर प्वाइंट्स	बड़ का झाड़ होता है। बीज कितना छोटा होता है। उनसे झाड़ कितना लंबा हो जाता है। ...बड़ का झाड़ कइयों ने न देखा होगा। ... अब उनका फाउंडेशन सारा सड़ गया है। ... झाड़ की अब जड़-जड़ीभूत अवस्था है। (मु.10.7.71 पृ.3 मध्य) मु.27.7.91 पृ.2 अंत,	Download
1295	कल्पवृक्ष के फुटकर प्वाइंट्स	3 धर्मों की वृद्धि होती जा रही है। (मु.23.12.73 पृ.2 मध्यादि)	Download
1296	कल्पवृक्ष के फुटकर प्वाइंट्स	क्रिश्चियन धर्म आया तो ऐसे कहेंगे तमोगुणी थे? नहीं, उनको भी सतो, रजो, तमो से पास करना है। (मु.18.11.72 पृ.3 आदि)	Download
1297	कल्पवृक्ष के फुटकर प्वाइंट्स	सब मुख्य-2 आत्माएँ धर्म स्थापक आदि यहाँ ही हैं। (मु.29.9.78 पृ.1मध्यांत)	Download
1298	कल्पवृक्ष के फुटकर प्वाइंट्स	दैवी धर्म का फाउंडेशन ही सड़ गया है। बाकी ऐसे नहीं कहेंगे कि फाउंडेशन था नहीं। ... प्रायः गुम है। (मु.5.12.71 पृ.2 मध्य) मु.19.12.01 पृ.2 अंत,	Download
1299	कल्पवृक्ष के फुटकर प्वाइंट्स	एक परमपिता परमात्मा ही... धर्म भी स्थापन करते हैं तो डिनायस्टी भी स्थापन करते हैं। वह तो धर्म स्थापन करने आते हैं। (मु.3.4.69 पृ.2 मध्यादि)	Download
1300	कल्पवृक्ष के फुटकर प्वाइंट्स	ज्ञान में तो सिर्फ बीज को जानना होता है। बीज के ज्ञान से सारा झाड़ (बुद्धि में) आ जाता है।(मु.29.9.77 पृ.2 मध्यांत)	Download
1301	कल्पवृक्ष के फुटकर प्वाइंट्स	बाप आकर समझाते हैं तुम असल देवी-देवता धर्म के हो। (मु.26.9.68 पृ.3 मध्यांत)	Download
1302	कल्पवृक्ष के फुटकर प्वाइंट्स	क्राइस्ट भी क्रिश्चियन धर्म का प्रजापिता है न। जैसे यह प्रजापिता ब्रह्मा वैसे वह प्रजापिता क्राइस्ट, प्रजापिता बुद्ध। यह सब धर्म स्थापन करने वाले हैं। (मु.16.11.73 पृ.2 अंत)	Download
1303	कल्पवृक्ष के फुटकर प्वाइंट्स	क्राइस्ट है तो वह फिर अंत में आवेगा। (मु.16.11.73 पृ.2 मध्यांत)	Download
1304	कल्पवृक्ष के फुटकर प्वाइंट्स	बाप कहते हैं, मैं पहले छोटा ब्राह्मण धर्म स्थापन करता हूँ। फिर साथ में ब्राह्मणों को देवी-देवता बनाता हूँ। (मु.8.7.73 पृ.3 मध्यांत) मु.27.6.93 पृ.3 अंत,	Download
1305	महाविनाश कब होगा?	विनाश का सारा तैलक (ताल्लुक) तुम्हारी पढ़ाई से है। तुम्हारी पढ़ाई पूरी होगी और वहाँ लड़ाई शुरू होगी। (मु.18.1.71 पृ.3 अंत)	Download
1306	महाविनाश कब होगा?	अभी थोड़ी-2 आग लगेगी, फिर बन्द हो जावेंगे। ..... विनाश के पहले बाप को याद करना है। .....राजधानी पूरी स्थापन हो जावेगी फिर विनाश होगा। (मु.5.9.71 पृ.3 अंत)	Download
1307	महाविनाश कब होगा?	जब पूरी स्थापना हो जाती है तब सभी धर्मों का विनाश हो जाता है। (मु.2.11.68 पृ.2 मध्यादि)	Download

1308	महाविनाश कब होगा?	जब तक सूर्यवंशी राजधानी तुम्हारी स्थापन न हुई है तब तक विनाश नहीं हो सकता। (मु.10.1.73 पृ.3 अंत)	Download
1309	महाविनाश कब होगा?	अभी पुरुषार्थ चलता रहता है। जब विनाश होगा फिर रेस बन्द हो जावेगी। (मु.17.1.74 पृ.3 मध्यांत)	Download
1310	महाविनाश कब होगा?	राजधानी स्थापन हो, बच्चों की कर्मातीत अवस्था हो तब फाइनल लड़ाई होगी। तब तक रिहर्सल होती रहेगी। (मु.10.1.73 पृ.3 अंत)	Download
1311	महाविनाश कब होगा?	एक तरफ पढ़ाई पूरी होगी और विनाश शुरू हो जावेगा। बाकी रिहर्सल तो होती रहेगी। (मु.8.3.73 पृ.4 आदि)	Download
1312	महाविनाश कब होगा?	जब कम्प्लीट दैवी गुण आ जावेंगे तब लड़ाई भी लगेगी। (मु.24.2.69 पृ.3 मध्य)	Download
1313	महाविनाश कब होगा?	जब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तुम लायक बन जावेंगे तो फिर पुरानी दुनिया का विनाश होगा। (मु.16.5.71 पृ.3 आदि)	Download
1314	महाविनाश कब होगा?	आप विशेष आत्माएँ वा सर्वश्रेष्ठ आत्माएँ अपने श्रेष्ठ स्टेज को देख नहीं पातीं। इतनी ही देरी है विनाश आने में। जब तक आप निमित्त बनी हुई आत्माओं को अपनी सम्पूर्ण स्टेज का स्पष्ट साक्षात्कार हो जाए। अब बताओ विनाश में कितना समय है? (अ॰वा॰7.8.78 पृ.1 मध्यांत)	Download
1315	महाविनाश कब होगा?	स्थापना का कार्य सम्पन्न होना अर्थात् विनाशकारियों को आर्डर मिलना है। जैसे समय समीप अर्थात् पूरा होने पर सूई आती है और घंटे स्वतः ही बजते हैं। ऐसे बेहद की घड़ी में स्थापना की सम्पन्नता अर्थात् समय पर सूई का आना और विनाश के घंटे बजना। तो बताओ सम्पन्नता में एवररेडी हो? (अ॰वा॰ 1.1.79 पृ.164 आदि)	Download
1316	महाविनाश कब होगा?	इस तरफ तुम्हारी स्थापना की तैयारी उस तरफ विनाश की तैयारी। स्थापना हो गई तो विनाश ज़रूर होगा। ...बाप आया हुआ है ज़रूर स्थापना करेंगे। (मु.5.8.71 पृ.3 मध्य)	Download
1317	महाविनाश कब होगा?	ऐसा न हो, 2000 का हिसाब ही लगाते रहो। पुरुषार्थ का हिसाब अलग है और सृष्टि परिवर्तन का हिसाब अलग है। ऐसा नहीं सोचो कि अभी 15 वर्ष पड़ा है, अभी 18 वर्ष पड़ा है। 99वें में होगा, 88 में होगा... यह नहीं सोचते रहना। हिसाब को समझो। (अ॰वा॰20.1.86 पृ.179 अंत)	Download
1318	महाविनाश कब होगा?	तुम्हारा इम्तहान तब होगा जब तुम्हारी राजधानी पूरी स्थापन हो जावेगी। फिर और सब खत्म हो जावेंगे। (मु.13.2.68 पृ.1 मध्यांत)	Download
1319	महाविनाश कब होगा?	इस ज्ञान यज्ञ से ही यह विनाश ज्वाला निकली है। पूछते हैं- बाबा, विनाश में कितना समय है? बच्चे, यह तो समझने की बात है। ब्रह्मा की आयु भी पूरी ही है। (मु.27.6.72 पृ.4 मध्य)	Download
1320	महाविनाश कब होगा?	अगर पूछे विनाश कब होगा? बोलो, पहले अल्फ को तो समझो। (मु.24.2.69 पृ.3 आदि)	Download
1321	महाविनाश कब होगा?	अभी ... 8 वर्ष के अंदर हाहाकार हो जावेगा। हाय-2 करते रहेंगे। (मु.28.12.68 पृ.3 मध्य)	Download

1322	महाविनाश कब होगा?	विनाशकारी ग्रुप अब भी एवररेडी है, सिर्फ आर्डर की देरी है। ऐसे स्थापना के निमित्त बने हुए ग्रुप एवररेडी हो? क्योंकि स्थापना का कार्य सम्पन्न होना अर्थात् विनाशकारियों को आर्डर मिलना है।(अ॰वा॰1.1.79 पृ.163 अंत, 164 आदि)	Download
1323	महाविनाश कब होगा?	विनाश होना है अचानक। पूछकर नहीं आएगा कि हाँ, तैयार हो? सब अचानक होना है।(अ॰वा॰ता॰ 23.2.97 पृ.30 मध्य)	Download
1324	महाविनाश कब होगा?	विनाश का समय कभी भी फिक्स नहीं होना है, अचानक होना है। बापदादा ने पहले से ही इशारा दे दिया है। उस समय नहीं उलाहना देना कि बाबा, थोड़ा इशारा तो देते। अचानक होना है, एवररेडी रहना है। (अ॰वा॰ता॰ 3.4.97 पृ.57 मध्य)	Download
1325	विनाश किसका होगा?	भारत में कौन बचेंगे? जो राजयोग सीखते हैं, नॉलेज लेते हैं वही बचेंगे। विनाश तो सबका होना है। (मु.20.1.71 पृ.2 आदि)	Download
1326	विनाश किसका होगा?	जो ज्ञान नहीं लेते उनका विनाश हो जाता है। भक्तिमार्ग का विनाश, ज्ञानमार्ग वालों की स्थापना हो जाती है। वह सज़ाएँ भी खाते हैं। पद भी नहीं पाते। (मु.25.11.72 पृ.2 मध्य)	Download
1327	विनाश किसका होगा?	जंगल को आग ज़रूर लगती है। गुलगुल बगीचे को कब आग नहीं लगती। (मु.11.2.68 पृ.1 मध्यादि)	Download
1328	विनाश किसका होगा?	ऐसे मत समझना कि अभी एकदम खलास होनी है। तुम लोग विचार नहीं चलाते हो। ..... पहले-2 इस्लामी जावेंगे। देखने में भी आता है वहाँ इस्लामियों का बहुत हंगामा है। पहले वह तो मरें। शुरू वहाँ से होना चाहिए। पीछे फिर बौद्धी, फिर क्रिश्चियन जाने चाहिए। हमको बादशाही क्रिश्चियन्स से ही मिलनी है। ..... मुसलमान तो अभी के पड़ोसी हैं। वह हमारे साथ मरेंगे। (मु.13.2.73 पृ.2 मध्य)	Download
1329	विनाश किसका होगा?	जैसे यज्ञ रचने के निमित्त ब्रह्मा बाप के साथ ब्राह्मण बने, तो यज्ञ से प्रज्वलित हुई यह जो विनाश ज्वाला है, इसके लिए भी जब तक ज्वाला रूप नहीं बनते तब तक यह विनाश की ज्वाला भी सम्पूर्ण ज्वाला रूप नहीं लेती है। (अ॰वा॰16.1.75 पृ.14 मध्य)	Download
1330	विनाश किसका होगा?	विनाश तो होगा। सभी खत्म हो जावेंगे। बाकी कौन बचेंगे? जो श्रीमत पर पवित्र रहते हैं वही बाप की मत पर चल विश्व की बादशाही का वर्सा पाते हैं। (मु.5.2.71 पृ.2 आदि)	Download
1331	विनाश किसका होगा?	यह महाभारत लड़ाई तो नामीग्रामी है। गॉड फादर भी यहाँ है ज़रूर। वही ब्रह्मा द्वारा स्थापना कर रहे हैं स्वर्ग की। शंकर द्वारा विनाश भी होना है कलियुग का। (मु.24.10.71 पृ.2 आदि)	Download
1332	विनाश किसका होगा?	आप लोगों ने ही प्रकृति को सेवा दी है कि खूब सफाई करो। उसको लंबा-2 झाड़ू दिया है, सफा करो। ... गोल्डन एज में यह सफाई चाहिए ना। तो प्रकृति अच्छी सफाई करेगी। (अ॰वा॰ 13.2.99 पृ.55 मध्य, 56 मध्य)	Download
1333	महाभारत विनाश	महाभारी महाभारत लड़ाई का समय अभी नहीं है। अभी तो गली-2 में सेंटर होना है। (मु.3.10.72 पृ.2 अंत)	Download

1334	महाभारत विनाश	आपे ही कहेंगे यह तो वही महाभारत लड़ाई है। ज़रूर भगवान भी होगा; परंतु कौन है यह बिचारों को पता नहीं है। ..... हैं ही ...धृतराष्ट्र के औलाद अंधे। (मु.12.2.69 पृ.2 मध्यांत) मु.12.1.74 पृ.2 मध्य,	Download
1335	महाभारत विनाश	तुम्हारी धर्मयुद्ध हुई है विद्वान-पंडितों के साथ। धर्मयुद्ध को लड़ाई नहीं कहा जाता। (मु.24.5.73 पृ.3 आदि)	Download
1336	महाभारत विनाश	महाभारी महाभारत युद्ध भी है। शास्त्रों में नाम भी है, फिर उसको कहते हैं थर्ड वर्ल्ड वार। यह रिहर्सल होती रहेगी। फर्स्ट वर्ल्ड वार, सेकिंड वर्ल्ड वार, थर्ड वर्ल्ड वार, फोर्थ वर्ल्ड वार भी है। (मु.1.7.73 पृ.1 अंत)	Download
1337	महाभारत विनाश	कोई हिन्दू थोड़े ही आपस में लड़ेंगे। यह लड़ाई है ही यवनों और कौरवों की। (मु.6.10.72 पृ.3 अंत)	Download
1338	महाभारत विनाश	महाभारी लड़ाई में मेल्स का नाम है। (मु.25.1.67 पृ.2 अंत)	Download
1339	महाभारत विनाश	कहेंगे, लड़ाई तो विलायत में भी होती है ना। फिर भी इसको महाभारत लड़ाई क्यों कहते हैं? भारत से ही निकलती है। भारत में ही यज्ञ रचा हुआ है। उससे यह विनाश ज्वाला निकलती है। तुम्हारे लिए तो नई दुनिया चाहिए ना। तो उसके लिए पुरानी दुनिया का ज़रूर विनाश ही करना पड़े। तो इस लड़ाई की जड़ ही यहाँ से निकलती है। इस रुद्र यज्ञ से महाभारत महाभारी लड़ाई की विनाश ज्वाला निकलती है। (मु.10.3.67 पृ.3 आदि) मु.8.3.75 पृ.2 अंत,	Download
1340	महाभारत विनाश	दिन-प्रतिदिन प्रकृति द्वारा विकराल रूप परिस्थितियांँ दिखाई देती जावेंगी। अब तक यह साधारण परिस्थितियाँ हैं। विकराल रूप तो अब प्रकृति धारण करेगी, जिसमें विशेष आपदाओं का वार अचानक ही होगा। (अ॰वा॰14.9.75 पृ.109 आदि)	Download
1341	महाभारत विनाश	बहुत हैं जो टूट जावेंगे। थोड़ी आफतें आने दो फिर देखना, कैसे भागते हैं। तुम भागे हो ज्ञान के पिछाड़ी। ज्ञान न होता तो भागते थोड़े ही। तुम इनके पिछाड़ी थोड़े ही भागे हो। इसने जादू आदि कुछ नहीं किया। जादूगर शिवबाबा को कहते थे। (मु.6.11.71 पृ.3 आदि) मु.5.11.76 पृ.2 अंत,	Download
1342	महाभारत विनाश	बड़ी आफतें आनी हैं। मदद उनको मिलेगी जो बाप के बनेंगे। जो अच्छी रीति सर्विस करते हैं उनको अंत में सहायता भी मिलती है। (मु.19.5.72 पृ.3 अंत)	Download
1343	महाभारत विनाश	आफतों आदि में घबराना नहीं चाहिए। अर्थक्विक हो, तूफान लगे, मरते रहेंगे, घबराना नहीं है। यह तो होना ही है। धड़कना न चाहिए। बड़ी आफतें आवेंगी। उपद्रव मचेंगे। हाय-2 होगी। फिर जयजयकार होना है। (मु.8.7.73 पृ.4 अंत) मु.8.7.78 पृ.3 अंत,	Download
1344	महाभारत विनाश	आगे चल दुनिया की हालत बिल्कुल ख़राब होनी है। खाने लिए अनाज नहीं मिलेगा तो घास खाने लगेंगे। फिर ऐसे थोड़े ही कहेंगे, माखन बिगर हम रह नहीं सकते। (मु.5.3.76 पृ.3 मध्यांत)	Download

1345	महाभारत विनाश	जैसे प्रकृति के 5 तत्व विकराल रूप को धारण करेंगे वैसे ही 5 विकार भी अपना शक्तिशाली रूप धारण कर अंतिम वार अति सूक्ष्म रूप में ट्रायल करेंगे अर्थात् माया और प्रकृति दोनों ही अपना फुल फोर्स का अंतिम दाँव लगाएँगे। जैसे किसी भी स्थूल युद्ध में भी अंतिम दृश्य ह्रास पैदा करने वाला होता है और हिम्मत बढ़ाने वाला भी होता है, ऐसे ही कमज़ोर आत्माओं के लिए भी ह्रास पैदा करने वाला दृश्य होगा- मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं के लिए वह हिम्मत और हुल्लास देने वाला दृश्य होगा। (अ॰वा॰ 14.9.75 पृ.110 आदि)	Download
1346	महाभारत विनाश	जब ब्रह्मा बाप समान सब कॉपीयाँ तैयार हो जाएँगी तब बेहद का बारूद चलेगा, पटाखे छूटेंगे और ताजपोशी होगी। तो अब यह डेट फिक्स करो। जब आप सब ब्रह्मा बाप की बिल्कुल फोटो कॉपी होंगे तब ही यह डेट आएगी। (अ॰वा॰24.10.81 पृ.76 अंत)	Download
1347	महाभारत विनाश	अभी टाइम बहुत थोड़ा है। लड़ाई थोड़ी छिड़ी तो फ़ैमिन हो जावेगा। (मु.27.6.72 पृ.4 अंत)	Download
1348	महाभारत विनाश	जब नम्बरवार कर्मातीत अवस्था हो जावेगी तब लड़ाई शुरू होगी। (मु.22.6.70 पृ.3 अंत)	Download
1349	महाभारत विनाश	विनाश ज्वाला भी सामने है। ..... बरोबर महाभारत लड़ाई तो यह वही है। यह नामीग्रामी है। तो ज़रूर इस समय भगवान भी है। (मु.5.10.71 पृ.2 अंत) मु.30.10.01 पृ.3 मध्य ,	Download
1350	महाभारत विनाश	महाभारत लड़ाई भी लिखी हुई है। ... इस ईश्वरीय ज्ञान यज्ञ में सारी सृष्टि स्वाहा हो जावेगी। (मु.15.9.71 पृ.2,3)	Download
1351	महाभारत विनाश	इस महाभारत लड़ाई से ही (स्वर्ग के) गेट्स खुलने हैं। (मु.22.10.71 पृ.2 अंत) मु.5.11.96 पृ.3 आदि,	Download
1352	महाभारत विनाश	कई समझते हैं यह तो सिर्फ कहते रहते हैं कि 'मौत आया कि आया।' होता तो कुछ नहीं। इस पर एक मिसाल भी है ना- उसने कहा शेर है, शेर; परन्तु शेर आया नहीं। आखिर एक दिन शेर आ गया, बकरी सब खा गया। यह सब बातें यहाँ की हैं। एक दिन काल खा जाएगा। (मु.18.12.83 पृ.3 अंत) मु.28.12.03 पृ.4 मध्य,	Download
1353	महाभारत विनाश	अब तो बहुत ज़ोर से लगेगी। करके लड़ाई लग फिर बंद हो जावेंगे; क्योंकि जब राजाई भी स्थापन हो, कर्मातीत अवस्था भी हो ना। ... भंभोर को आग तो लगनी ही है। फटाफट विनाश हो जावेगा। इनको खूनी नाहक खेल कहा जाता है। नाहक सब मर जावेंगे। खून की नदी बहेंगी। फिर दूध की नदी बहेंगी। हाहाकार से फिर जयजयकार हो जावेगी। बाकी सभी अज्ञान अंधेरे में सोते ही खत्म हो जावेंगे। (मु.10.2.69 पृ.3 आ) मु.7.1.04 पृ.3 अंत ,	Download

1354	महाभारत विनाश	अब विनाश तो होना ही है। हंगामा हो जावेगा जो विलायत से फिर आ न सकेंगे। ज़बरदस्त लड़ाई लगेगी फिर वहाँ के वहाँ रह जावेंगे। 50-60 लाख देंगे तो भी मुश्किल आ सकेंगे। (मु.5.2.71 पृ.3 अंत)	Download
1355	महाभारत विनाश	ऐसा विनाश करते हैं जो एकदम खत्म हो जाएँ। हॉस्पिटलें आदि तो रहेंगी नहीं जो दवाई आदि कर सकें। बाप जानते हैं बच्चों को कोई तकलीफ न होनी चाहिए। इसलिए गाया हुआ है नैचुरल कैलेमिटीज़, मूसलधार बरसात...। (मु.18.8.71 पृ.3 आदि) मु.5.9.81 पृ.3 आदि,	Download
1356	महाभारत विनाश	यहाँ ही बैठे-2 सुनेंगे और देखेंगे। हाँ, तुम बच्चों को यहाँ बैठे सा॰ भी हो सकते हैं कि कैसे आग लगती है, क्या-2 होता है। रेडियो में, अख़बारों में भी सुनेंगे। टी॰वी॰ में भी देख सकते हो। आगे चलकर ऐसी-2 चीज़ें निकलेंगी जो घर बैठे दिखाई पड़ेगा। (मु.29.11.76 पृ.2,3) मु.25.12.01 पृ.3 मध्य,	Download
1357	महाभारत विनाश	बरसात, नैचुरल कैलेमिटीज़ आदि भी होंगी। यह भी अचानक होता रहेगा। ... धरती भी ज़ोर से हिलती है। तूफान, बरसात आदि सभी होता है।बॉम्बस भी फेंकते तो हैं ना; परंतु यहाँ एडीशनल है सिविल वार। (मु.21.7.69 पृ.3 मध्य) मु.2.8.85 पृ.3 मध्य,	Download
1358	महाभारत विनाश	अभी बाकी जो एटामिक बम रही पड़ी है वह भी तैयार कोहर(हो कर) बैठे हैं। सभी समझते हैं यह कोई रखने की चीज़ नहीं है, इनसे विनाश होना है ज़रूर। ... महाभारत लड़ाई लगी, 5 पांडव बचे...। वह भी गल मरे; परंतु इसकी रिज़ल्ट कुछ भी नहीं। (मु.23.2.68 पृ.3 मध्यांत) मु.25.2.74 पृ.3 अंत,	Download
1359	महाभारत विनाश	कोई कहाँ, कोई कहाँ विनाश होगा, तो होलसेल से मौत होगा। ...होलसेल महाभारत लड़ाई लगेगी। फिर सभी ख़त्म हो जावेंगे। बाकी एक खंड रहेगा। भारत बहुत छोटा होगा, बाकी सभी खलास हो जावेंगे। (मु.7.1.69 पृ.3 आदि) मु.11.1.06 पृ.3 मध्य,	Download
1360	महाभारत विनाश	हाहाकार बाद फिर जयजयकार होना है। ... कितनी हाहाकार करेंगे, जबकि नैचुरल कैलेमिटीज़ आदि आए। (मु.16.10.69 पृ.2 आदि) मु.1.11.00 पृ.2 मध्य,	Download
1361	माला	ऐसे नहीं कि पिछाड़ी में आने वाले माला का दाना नहीं बन सकेंगे, वह भी बनेंगे। (मु.21.2.69 पृ.1 मध्यांत)	Download
1362	माला	माला में ऊपर में हूँ मैं; फिर दो युगल हैं- ब्रह्मा-सरस्वती। वही सतयुग के महाराजा-महारानी बनने हैं। उन्हों की फिर सारी माला है जो नम्बरवार गद्दी पर बैठते हैं। मैं इस भारत को इन ब्रह्मा-सरस्वती और ब्राह्मणों द्वारा भारत को स्वर्ग बनाता हूँ। (मु.5.2.71 पृ.2 मध्य)	Download
1363	माला	जब ज्ञान कम्प्लीट हो जावेगा तो कोई अनन्य से भूल न होगा। तब माला के दाने बनेंगे। (मु.27.11.71 पृ.3 मध्यादि)	Download

1364	माला	शुरू में बाबा ने बड़ी युक्ति से पद बतलाए। अभी वह हैं थोड़े ही। अब तो फिर नए सिरे माला बननी है। (मु.27.3.70 पृ.3 अंत)	Download
1365	माला	वह शिवबाबा है फूल। उनको अपना शरीर नहीं है। ...माला शरीरधारियों की बनी हुई है। ..... माला हाथ में ले बैठ राम-2 कहते हैं। (मु.4.11.73 पृ.2 अंत)	Download
1366	माला	विष्णु की माला है। वह जोड़ा हुआ प्रवृत्ति मार्ग का विष्णु। (मु.7.11.72 पृ.3 अंत)	Download
1367	माला	आज अच्छे कल गिर पड़ते तो माला बन न सके। आगे माला बनाते थे फिर 3-4 नं. में आने वाले आज हैं नहीं। यह युद्ध का मैदान है ना। (मु.29.9.77 पृ.2 अंत)	Download
1368	माला	जोड़ियों की माला है। सिंगल की माला नहीं होती। सन्यासियों की माला होती नहीं। (मु.8.9.68 पृ.3 आदि)	Download
1369	माला	ऊँच ते ऊँच है बाप। उनकी माला। ऊपर में है रुद्र, वह है निराकार, फिर साकार ल.ना., उनकी भी माला है। ब्राह्मणों की माला अभी बनती नहीं। ...इन बातों में जास्ती प्रश्न-उत्तर करने की भी दरकार नहीं। (मु.16.4.68 पृ.2 मध्यादि) मु.20.4.89 पृ.2 आदि,	Download
1370	माला	माला तो बहुत बड़ी बनती है। उसमें 8, 108 अच्छी मेहनत करते हैं। (मु.7.8.67 पृ.2 मध्यादि)	Download
1371	रुद्रमाला	पहले-2 रुद्रमाला वह बनेंगे जो निरन्तर याद करेंगे। (मु.13.8.73 पृ.2 आदि)	Download
1372	रुद्रमाला	यूँ तो सारी दुनिया रुद्रमाला भी है। प्रजापिता ब्रह्मा की भी माला है। (मु.25.2.68 पृ.1 अंत)	Download
1373	रुद्रमाला	तुमको रुद्रमाला में पिरोना है। ..... यह है रुद्रमाला और ज्ञानी तू आत्माओं की माला। (मु.8.3.73 पृ.3 मध्यांत)	Download
1374	रुद्रमाला	जो शिवबाबा के दिल पर चढ़े तब रुद्रमाला के नज़दीक हों। (मु.10.11.73 पृ.1 अंत) मु.14.11.78 पृ.1 मध्य,	Download
1375	रुद्रमाला	तुम जान गए हो सबसे पार्ट अच्छा उनका है जो पहले शिव की रुद्रमाला में हैं। नाटक में जो बड़े अच्छे-2 एक्टर्स होते हैं, उनकी कितनी महिमा होती है। सिर्फ उनको देखने लिए लोग जाते हैं। (मु.20.2.71 पृ.1 मध्यादि)	Download
1376	रुद्रमाला	विजयमाला के मणके बनना बड़ी बात नहीं है; लेकिन बाप के सिमरने के मणके बनना यही खुशनसीबी है। (अ॰वा॰20.5.74 पृ.47 आदि)	Download
1377	रुद्रमाला	रुद्रमाला है आत्माओं की माला और विष्णु की माला है मनुष्यों की। (मु.5.2.71 पृ.2 मध्य)	Download
1378	रुद्रमाला	तुम बच्चे जानते हो कि एक माला निराकार की। एक है साकार की। ...पहले-2 निराकार का सिजरा बनेगा। (मु.17.8.69 पृ.1 आदि)	Download
1379	रुद्रमाला	रुद्रमाला कितनी ज़बरदस्त है। उनकी भेंट में विष्णु की माला कितनी छोटी होगी। (मु.26.2.72 पृ.2 अंत) मु.26.2.97 पृ.3 मध्य ,	Download

1380	रुद्रमाला	पहले तो रुद्र की माला बनती है। ऊँच ते ऊँच बिरादरियाँ हैं। (मु.17.12.67 पृ.2 मध्यादि)	Download
1381	रुद्रमाला	श्लोक भी है ना...। सारी सृष्टि की आत्माएँ तुम्हारे में जैसे पिराए हुए हैं। यह जैसे माला है। उनको बेहद का रुद्रमाला भी कह सकते हैं। सूत्र में बाँधे हुए हैं । (मु.22.7.68 पृ.2 मध्यांत)	Download
1382	रुद्रमाला	रुद्रमाला (के) बाद होती है विष्णु की माला। ... यह रुद्रमाला फिर विष्णु की माला में पिरोनी है यानी विष्णु के राज्य में जाते हैं। (मु.20.2.72 पृ.3 आदि)	Download
1383	अष्टरत्न व नौरत्न	मुख्य हैं 8 दाने। इम्तहान तो बड़ा भारी है ना। बड़े इम्तहान में थोड़े पास होते हैं; क्योंकि गवर्मेंट को फिर नौकरी देनी पड़े। बाप को भी विश्व का मालिक बनाना पड़े। (मु.27.11.71 पृ.6 मध्य) मु.26.11.76 पृ.3 मध्यादि,	Download
1384	अष्टरत्न व नौरत्न	8 दाना बनना कोई मासी का घर थोड़े ही है। करोड़ों में से 8 रत्न बनते हैं। भारत के(में) ही 33 करोड़ देवताएँ कहते हैं। अगर वह भी कहो तो 33 करोड़ में से 8 फुल प्रूफ निकलते हैं। ज़्यादा करके 108 तो बड़ी भारी मंज़िल है। (मु.26.7.72 पृ.4 मध्यांत)	Download
1385	अष्टरत्न व नौरत्न	अष्ट रत्नों में सिर्फ शक्तियाँ हैं वा पांडव भी आ सकते हैं? जब भाई-2 हैं तो आत्मिक रूप की स्थिति में स्थित हुई आत्मा ही अष्ट रत्न बन सकते हैं। इसमें शक्ति अथवा पांडवों की बात नहीं है, अपितु आत्मिक स्थिति की बात है। (अ॰वा॰18.6.73 पृ.101 मध्य)	Download
1386	अष्टरत्न व नौरत्न	आठ रत्न बनते हैं तो ज़रूर 8 घंटा शिवबाबा को याद करते हों। (मु.17.4.68 पृ.4 मध्यांत) मु.8.5.69 पृ.4 मध्यादि,	Download
1387	अष्टरत्न व नौरत्न	वास्तव में 9 रत्न गाए हुए हैं। सिर्फ इन्होंने गुप्त मेहनत की होगी। (मु.9.2.68 पृ.1 अंत) मु.6.2.74 पृ.1 अंत,	Download
1388	अष्टरत्न व नौरत्न	108 की माला चाहे कोई भी धर्म वाला हो सभी सुमिरते हैं। नौ रत्न की माला भी सुमिरते हैं; क्योंकि उन्होंने सभी पतितों को पावन बनाया है। सभी का कल्याण करने वाले हैं। इतनी तुम सर्विस करते तो इतना मगज भरपूर होना चाहिए। सभी धर्म वाले हमारी माला फेरते हैं। 108 की माला तो कॉमन है। 8 की भी माला क्रिश्चियन लोग उठाते हैं; क्योंकि तुम जो नौ रत्न हो अनन्य। (मु.12.9.73 पृ.3 आदि)	Download
1389	अष्टरत्न व नौरत्न	गायन भी है नौ रत्न। यह कहाँ से आए? सो मनुष्य थोड़े ही जानते हैं। रत्न तो हैं ही, उन्हों को पुरुषार्थ कराने वाला सबसे बड़ा है बाबा। उनको बीच में रखते हैं। आठ रत्न हैं जो रुद्र की माला बनती(बनते) हैं। (मु.24.10.73 पृ.2 अंत)	Download
1390	अष्टरत्न व नौरत्न	अष्ट में भी पहला नं॰ और आठवाँ नम्बर में क्या अंतर है? पूजते तो आठ ही हैं; लेकिन पूजा में भी अंतर, विजय में भी अंतर है। हरेक की विशेष ता भी विशेष है और फिर जो कमी रह जाती है वह भी विशेष है, जिसके आधार पर फिर नं॰ बनते हैं। (अ॰वा॰27.5.77 पृ.177 मध्य)	Download

1391	अष्टरत्न व नौरत्न	विशेष बॉम्बे और देहली में आदि रत्न ज़्यादा हैं। (अ॰वा॰29.11.78 पृ.84 अंत)	Download
1392	अष्टरत्न व नौरत्न	मास्टर ज्ञानसूर्य अर्थात् बाप समान। सितारे होते हुए भी बाप समान स्टेज। वह तो अष्ट रत्न ही प्राप्त करेंगे ना। (अ॰वा॰ 15.9.74 पृ.133 अंत)	Download
1393	अष्टरत्न व नौरत्न	आठ/नौ रतन हैं तो (उन्होंने) राजाई की न। उनमें भी मोस्ट वैल्युएबल, नॉन वैल्युएबल भी दिखाते हैं। (रात्रिक्लास मु.30.1.74 पृ.1 अंत)	Download
1394	अष्टरत्न व नौरत्न	पिछाड़ी में आठ ही विन करेंगे। (मु.17.8.73 पृ.3 अंत)	Download
1395	अष्टरत्न व नौरत्न	अष्ट शक्तियों का प्रैक्टिकल स्वरूप अष्टदेव प्रत्यक्ष होते हैं। (अ॰वा॰23.1.80 पृ.236 मध्य)	Download
1396	अष्टरत्न व नौरत्न	तेज याद करने वाले का ही ऊँच नाम होगा। विजयमाला का दाना बनेंगे। (मु.22.9.69 पृ.3 अंत)	Download
1397	अष्टरत्न व नौरत्न	पूरा पावन बनने वाले ही सूर्यवंशी विजयमाला के दाने बनते हैं। वह धर्मराज के डण्डे नहीं खावेंगे। (मु.27.2.73 पृ.1 अंत)	Download
1398	अष्टरत्न व नौरत्न	एक हैं स्थापना के आदि रत्न और दूसरे हैं सेवा के आरंभ के आदि रत्न। दोनों आदि रत्नों का महत्व है। (अ॰वा॰ 28.2.03 पृ.93 मध्य)	Download
1399	अष्टरत्न व नौरत्न	8 रत्न मुख्य गाए जाते हैं। 8 रत्न और बीच में है बाप। 8 हैं पास विद ऑनर्स, सो भी नम्बरवार। (मु.ता॰3.10.69 पृ.3 आदि)	Download
1400	अष्टरत्न व नौरत्न	8 बहुत अच्छे महावीर हैं, 108 उनसे कम, 16 हज़ार उनसे कम। (मु.24.11.73 पृ.1 अंत)	Download
1401	अष्टरत्न व नौरत्न	पिछाड़ी में 8 विन करते हैं, याद करते-2 सबसे पहले जाते हैं। (मु.ता॰18.8.78 पृ.3 अंत)	Download
1402	अष्टरत्न व नौरत्न	इन्द्र सभा में कोई सब्ज परी, पुखराज परी भी हैं। हैं तो सब मदद करने वाले। जवाहरातों में किसम-2 होती हैं ना। इसलिए 9 रतन दिखाए हुए हैं। (मु.7.2.76 पृ.3 मध्य)	Download
1403	अष्टरत्न व नौरत्न	मुख्य 8 पास होते हैं। फिर 108 की माला बनती है। पुरुषार्थ कर ऊँच पद पाना है। रिजर्व कराया जाता है न। फर्स्ट क्लास, एयर कंडीशन। ऐसी कंडीशन में कुछ गर्म हवा नहीं लगेगी। तुमको कोई भी इस दुनिया के माया का वार न लगे। (मु.6.9.73 पृ.2 आदि)	Download
1404	अष्टरत्न व नौरत्न	साथ में जाने वाले तो धर्मराज को टाटा करेंगे, धर्मराज के पास जाएँगे ही नहीं। (अ॰वा॰ता॰ 9.10.81 पृ.33 मध्यांत)	Download
1405	अष्टरत्न व नौरत्न	जो पूरा पुरुषार्थ कर विजयमाला का दाना बनते हैं वह सज़ाएँ से छूट जाते (हैं)। (मु.8.9.68 पृ.2 अंत)	Download
1406	अष्टरत्न व नौरत्न	माला भी 9 रत्न की बनती है। क्रिश्चियन लोग बाँह में माला डालते हैं। बाकी जीवनमुक्ति वाले, प्रवृत्ति मार्ग वाले ठहरे। उनमें फिर फूल के साथ युगल दाना भी होगा। (मु.21.3.72 पृ.2 मध्य)	Download

1407	अष्टरत्न व नौरत्न	9 रत्न की मुंडी भी बनाते हैं। बहुत एडवर्टाइज़ करते हैं। नाम तो रत्न ही है ना। यहाँ बैठे हैं ना; परंतु उनमें भी कहेंगे- यह हीरा है, यह पन्ना है, यह माणिक, पुखराज, यह पिरोज़ा बैठे हैं। रात-दिन का फ़र्क है। उनकी वैल्यू 100 तो उनकी वैल्यू एक रुपया। बहुत फ़र्क होता है। (मु.ता॰7.9.68 पृ.1 अंत) मु.ता॰9.8.99 पृ.2 मध्य,	Download
1408	अष्टरत्न व नौरत्न	आज बाप के सामने अति सिकीलधे, सदा दिलतख़्तनशीन 9 रत्न सामने हैं। अष्ट और इष्ट आत्माएँ सामने हैं। वह भी जान रहे हैं कि हमें बापदादा याद कर रहे हैं। ..... ऐसे रत्नों की विशेष ताओं की बापदादा सदा माला सिमरण करते हैं। (अ॰वा॰ता॰ 6.10.81 पृ.19 अंत)	Download
1409	100 और 16000	16,108 की माला बहुत बड़ी है। अंत में आकर पूरी होगी। त्रेता अंत तक इतने प्रिंस-प्रिन्सेज़ बनते हैं। कुछ तो नशा है ना। 8 की भी निशानी है। ...यह बिल्कुल राइट है। त्रेता अंत में इतने 16,108 प्रिन्स-प्रिन्सेज़ होते हैं। शुरू में तो नहीं होंगे। पहले थोड़े होते हैं, फिर वृद्धि होती जाती है। वे सभी बनते यहाँ हैं। चांस अभी बहुत अच्छा है; परन्तु मेहनत बहुत है। (मु.9.5.73 पृ.2 मध्यांत)	Download
1410	100 और 16000	राजा-रानी जो बनते हैं उनकी माला बनी हुई है। माला 8 की भी है तो 108 की भी है तो 16108 की भी है। इतनी बड़ी माला कैसे उठा सकेंगे? इसलिए ही 108 की छोटी बनाई है। 108 तो बहुत कम हैं। आधा कल्प में वृद्धि तो होती होगी ना। (मु.1.2.67 पृ.2 मध्य)	Download
1411	100 और 16000	आज भी बाबा बोले, अब माला तैयार करो। माला तैयार होना अर्थात् खेल खतम। ..... ब्रह्मा अपने तीव्र पुरुषार्थ के संस्कार प्रमाण माला बनाने लगे और बाप मुस्कुराने लगे। ..... 100 की माला फिर भी 90% बन गई; लेकिन 8 की माला में बदली बहुत थी। किसको 4 नं. दें, किसको 5 नं॰ दें। (अ॰वा॰18.1.79 पृ.230 अंत-231 आदि)	Download
1412	100 और 16000	चाहे 16000 का लास्ट दाना भी हो; लेकिन उसमें भी कोई न कोई विशेष ता है; इसलिए ही बाप की नज़र उस आत्मा के ऊपर पड़ती है। भगवान की नज़र पड़ जाए वा भगवान अपना बनावे तो ज़रूर विशेष ता समाई हुई है।(अ॰वा॰26.1.88 पृ.233 आदि)	Download
1413	100 और 16000	एक भी पावरफुल संगठन होने से एक-दूसरे को खींचते हुए 108 की माला का संगठन एक हो जावेगा। एक मत का धागा हो और संस्कारों की समीपता हो, तब ही माला भी शोभेगी। (अ॰वा॰9.12.75 पृ.272 मध्य)	Download
1414	100 और 16000	16,108 की माला में जाना, उनसे तो प्रजा में बड़े अच्छे धनवान होते हैं। (मु.8.1.68 पृ.4 मध्य)	Download

1415	100 और 16000	अभी तीव्र पुरुषार्थ की पॉलिश हो रही है। पॉलिश में थोड़ी बहुत कमी छिप जाती है। जब आठ नम्बर हैं तो कुछ तो कमी होगी ना पहले से; लेकिन इतनी नहीं होगी जो स्पष्ट दिखाई दे। (अ॰वा॰19.12.78 पृ.136 अंत)	Download
1416	100 और 16000	ऐसे नहीं है कि प्रवृत्ति वाले 108 की माला में नहीं आ सकते हैं। मन से सरेंडर, सरेंडर की लिस्ट में ही हैं। (अ॰वा॰ 28.2.03 पृ.93 अंत)	Download
1417	100 और 16000	मुख्य है 108 की माला। तो (दिलवाड़ा मंदिर में) 108 कोठरियाँ बना दी हैं। 108 की ही पूजा होती है। (मु.4.11.73 पृ.2 मध्यांत)	Download
1418	100 और 16000	यह नहीं सोचो कि 108 में कितने आएँगे, हम कहाँ आएँगे- यह नहीं सोचो। पहले गिनती करने लग जाते हैं- दादी आएँगी, दीदी आएँगी, फिर दादे भी आएँगे ... हमारा नं. आएगा या नहीं, पता नहीं। ... एक दाना बीच से टूट जाए, निकल जाए तो माला अच्छी नहीं लगेगी। सिर्फ यह नहीं करना, बाकी बाबा की गारंटी है आप ज़रूर आएँगे। (अ.वा. 6.3.97 पृ.40 मध्य)	Download
1419	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	ब्रह्मा की आयु मृत्युलोक में ख़त्म होगी। यह कोई अमरलोक नहीं है।(मु.26.10.68 पृ.2 अंत)	Download
1420	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	बाप तुम बच्चों को 21 जन्मों लिए 100 प्रतिशत हेल्दी बनाते हैं। (मु.21.10.74 पृ.1 मध्यादि)	Download
1421	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	तुम 21 जन्म स्थायी पवित्र रहते हो। (मु.10.11.68 पृ.1 अंत)	Download
1422	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	घर में ही हास्पिटल खोलो। बोर्ड लिख दो- यहाँ से ऐसी दवाई मिलती है, जो तुम भविष्य 21 जन्म कब बीमार नहीं पड़ोगे। (मु.14.10.73 पृ.4 अंत)	Download
1423	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	मैं तुमको 21 जन्म लिए पढ़ाकर स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। सूर्यवंशी-चंद्रवंशी घराने की बरोबर स्थापना होती है। (मु.4.7.71 पृ.2 आदि)	Download
1424	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	अब की कमाई वहाँ 21 जन्म चलती है। (मु.25.2.67 पृ.2 आदि)	Download
1425	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	यह अभी का तुम्हारा पुरुषार्थ भविष्य 21 जन्मों के लिए हो जावेगा। (मु.24.2.75 पृ.3 अंत)	Download
1426	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	ज्ञान गीता एक ही ज्ञान सागर सुनाते हैं, जिससे 21 जन्म सद्गति होती है अथवा 100 प्रतिशत पवित्रता, सुख-शांति, अटल, अखण्ड सतयुगी दैवी स्वराज्य मिलता है 21 जन्मों के लिए। (मु.7.2.69 पृ.1 मध्य)	Download
1427	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	इस अंतिम जन्म के लिए मूत छोड़ो। यह छोड़ो तो 21 जन्मों के लिए तुम्हारी काया कल्पतरु कर दूँगा। है बहुत सहज बात। (मु.20.4.72 पृ.1,2) मु.20.4.77 पृ.2 आदि,	Download

1428	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	तुम ब्राह्मणों का यह एक ही जन्म है। देवता वर्ण में तुम 21 जन्म लेते हो। वैश्य, शूद्र वर्ण में 63 जन्म लेते हो। ब्राह्मण वर्ण का यही एक अंतिम जन्म है, जिसमें ही पवित्र बनना है। ... अभी इस अंतिम जन्म में तुम पावन बनेंगे तो 21 जन्म पावन ही बने रहेंगे। (मु.10.2.67 पृ.1 अंत) मु.12.2.75 पृ.1 अंत,	Download
1429	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	आप सबका वायदा है कि हम बाप द्वारा 21 जन्मों के लिए जीवनमुक्त अवस्था का पद प्राप्त कर रहे हैं, करेंगे ही। ... 21 जन्म में एक जन्म संगम का है। आपका वायदा 21 जन्मों का है, 20 जन्मों का नहीं है। (अ॰वा॰18.1.08 पृ.2 अंत)	Download
1430	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	बाबा की बुद्धि में तो यह सीढ़ी का चित्र बहुत रहता है। ... बच्चे जो विचार-सागर-मंथन कर ऐसे-2 चित्र बनाते हैं, तो बाबा भी उनको शुक्रिया करते हैं या तो ऐसे कहेंगे कि बाबा ने उस बच्चे को टच किया है। (मु.29.2.76 पृ.2,3)	Download
1431	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	सीढ़ी का चित्र तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है समझाने का। जिन्न की भी कहानी बताते हैं। यह सभी दृष्टांत आदि इस समय के ही हैं। तुम्हारे ऊपर ही बने हुए हैं। (मु.18.11.70 पृ.2 अंत)	Download
1432	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	84 जन्म सिर्फ वही लेते हैं जिनका आदि से अंत तक पार्ट है। (मु.11.3.73 पृ.1 मध्यादि)	Download
1433	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	यह 84 जन्मों की कहानी जो बाप सुनाते हैं, यह भी भारतवासियों के लिए है। (मु.9.2.71 पृ.1,2)	Download
1434	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	देवी-देवता धर्म वाले ही 84 जन्म लेते हैं। (मु.16.7.73 पृ.2 अंत)	Download
1435	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	बाप कहते हैं मैंने तुमको राजाई दी। तुम सब धन-दौलत खत्म कर भीख माँग रहे हो। (मु.17.11.76 पृ.3 मध्य) मु.20.11.96 पृ.3 अंत,	Download
1436	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	वह कलियुगी सीढ़ी नीचे उतरते जाते हैं और तुम पुरुषोत्तम संगमयुगी सीढ़ी ऊपर चढ़ते जाते हो। (मु.28.3.89 पृ.2 मध्यादि)	Download
1437	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	काली की भी महिमा गाते हैं- असुरों के संघार करने वाले हैं। ... काली को माता कहते हैं। ... ऐसे नहीं कहेंगे जगदंबा कोई असुरों का संघार करते हैं। (तो काली कौन?) (मु.27.2.72 पृ.1 मध्यादि)	Download
1438	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	बाप कहते हैं मैं सन्मुख आता हूँ। तुम बच्चों को बेगर टू प्रिन्स बनाकर फिर मैं चला जाता हूँ।(मु.16.2.74 पृ.3 आदि) मु. 17.2.99 पृ.3 आदि,	Download
1439	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	यह ब्र.कु.कुमारियाँ। ब्राह्मण वर्ण एक जन्म। यह है मोस्ट वैल्युएबुल जन्म। लीप युग है। (मु.25.9.77 पृ.2 आदि) मु. 29.9.07 पृ.2 अंत,	Download
1440	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	हीरे जैसा जन्म सतयुग में नहीं कहेंगे। हीरे जैसा जन्म इस समय है; क्योंकि इस समय तुम ईश्वरीय सन्तान हो। (मु.26.10.72 पृ.1 अंत)	Download

1441	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	तुम परमपिता परमात्मा शमा के आगे जीते जी मरते हो। तो यह है मरजीवा जन्म। जन्म तो ज़रूर माता-पिता साथ(पास) लिया जाता है। (मु.31.1.73 पृ.1 अंत) मु.7.1.03 पृ.2 आदि,	Download
1442	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	तुम विश्व का मालिक बनते हो 21 पीढ़ी। ... स्वर्ग की बादशाही तुम्हारे लिए है 21 पीढ़ी; क्योंकि तुम काल पर जीत पहन लेते हो।(मु.25.5.69 पृ.2 आदि) मु.16.4.99 पृ.2 मध्य,	Download
1443	सीढ़ी-इक्कीसवाँ जन्म कौन-सा?	श्रेष्ठ सूर्यवंशी-चंद्रवंशी 21 जन्म के लिए महाराजा-महारानी बन जावेंगे। (मु.8.7.73 पृ.2 आदि)	Download
1444	संगमयुगी स्वर्ग का यादगार, गायन, पूजन, त्यौहार, शास्त्र आदि	गीता, भागवत, महाभारत आदि में जो भी लिखा हुआ है उसकी अभी भेंट कर सकते हो कि बाप ने कैसे सहज राजयोग सिखलाया था, जो अभी फिर से सिखला रहे हैं। (मु.19.4.73 पृ.1 आदि)	Download
1445	संगमयुगी स्वर्ग का यादगार, गायन, पूजन, त्यौहार, शास्त्र आदि	भागवत के साथ गीता का, गीता के साथ फिर महाभारत लड़ाई का कनेक्शन है। (मु.21.3.73 पृ.1 मध्यांत)	Download
1446	संगमयुगी स्वर्ग का यादगार, गायन, पूजन, त्यौहार, शास्त्र आदि	अभी तुम समझते हो हमारा ही यादगार दिलवाला, गुरू शिखर है। बाप बहुत ऊँच रहते हैं ना। (मु.19.7.68 पृ.3 मध्य)	Download
1447	संगमयुगी स्वर्ग का यादगार, गायन, पूजन, त्यौहार, शास्त्र आदि	मंदिर भी अभी का पूरा यादगार है। हमने इस संगमयुग पर कर्तव्य किया है उनका यह यादगार मंदिर है। यादगार ईश्वर से शुरू होता है। (मु.19.11.72 पृ.2 आदि)	Download
1448	संगमयुगी स्वर्ग का यादगार, गायन, पूजन, त्यौहार, शास्त्र आदि	जो होकर जाते हैं उनकी यादगार बनाते हैं। .... साधु-सन्त, शास्त्री आदि उनके कोई मंदिर नहीं हैं। देवताओं के मंदिर तो हैं ना। ज़रूर राज्य करके गए हैं, तो उनकी पूजा होती है। (मु.11.2.69 पृ.2 मध्य)	Download
1449	संगमयुगी स्वर्ग का यादगार, गायन, पूजन, त्यौहार, शास्त्र आदि	कलियुग में भी जो रीति-रसम होते हैं वह सभी यहाँ संगम पर ही किस न किस रूप में होते हैं। (अ॰वा॰14.5.70 पृ.2 मध्य)	Download
1450	संगमयुगी स्वर्ग का यादगार, गायन, पूजन, त्यौहार, शास्त्र आदि	ऊपर तुम्हारी पिछाड़ी की रिज़ल्ट की यादगार है। अभी तो ग्रहण लगता है। (मु.15.9.73 पृ.3 अंत)	Download
1451	संगमयुगी स्वर्ग का यादगार, गायन, पूजन, त्यौहार, शास्त्र आदि	अभी जो कुछ होता है वह प्रैक्टिकल सभी कुछ हो रहा है। फिर इनका भक्तिमार्ग में गायन होगा। (मु.29.4.68 पृ.1 आदि)	Download

1452	संगमयुगी स्वर्ग का यादगार, गायन, पूजन, त्यौहार, शास्त्र आदि	त्यौहार भी सभी इसी समय के ही हैं। (मु.11.3.67 पृ.3 अंत)	Download
1453	संगमयुगी स्वर्ग का यादगार, गायन, पूजन, त्यौहार, शास्त्र आदि	संगम पर जो प्रैक्टिकल होता है उसकी यादगार भक्तिमार्ग में त्योहारों के रूप में मनाते हैं। मु.11.9.85 पृ.2 आदि,	Download
1454	संगमयुगी स्वर्ग का यादगार, गायन, पूजन, त्यौहार, शास्त्र आदि	जो अच्छा कर्तव्य करके जाते हैं, उनका यादगार बनाते हैं। एक शिवबाबा ही है जिसका गायन भी होता है और पूजा भी होती है। ज़रूर वो शरीर द्वारा कर्तव्य करते हैं तब तो उनका गायन है। (मु.1.10.66 पृ.1 मध्यांत) मु.19.10.96 पृ.1 अंत,	Download
1455	संगमयुगी स्वर्ग का यादगार, गायन, पूजन, त्यौहार, शास्त्र आदि	इस समय तुमको बाप जो समझाते हैं उनके फिर त्योहार भक्तिमार्ग में मनाए जाते हैं। (मु.ता. 1.5.74 पृ.2)	Download
1456	संगमयुगी स्वर्ग का यादगार, गायन, पूजन, त्यौहार, शास्त्र आदि	यह त्योहार आदि सब इस समय के हैं। (मु.17.11.91 पृ.3 आदि)	Download
1457	संगमयुगी स्वर्ग का यादगार, गायन, पूजन, त्यौहार, शास्त्र आदि	दिलवाड़ा मंदिर में आदि देव का महावीर नाम रख दिया है। अब महावीर तो हनुमान को कहा जाता है। ... इस मंदिर में तुम्हारा हूबहू एक्युरेट यादगार है। ऊपर में स्वर्ग है। (मु.17.11.76 पृ.3 आदि)	Download
1458	संगमयुगी स्वर्ग का यादगार, गायन, पूजन, त्यौहार, शास्त्र आदि	इस समय का ही गायन है गोप-गोपियों अतीन्द्रिय सुख का। (मु.7.7.66 पृ.2 आदि)	Download
1459	संगमयुगी राधे-कृष्ण का स्वयंवर	कृष्ण की राजधानी अपनी, राधे की राजधानी अपनी, फिर उन्हों की आपस में सगाई होती है। कृष्ण और राधे कोई भाई-बहन नहीं हैं। भाई-बहन की शादी तो कब होती नहीं।(मु.31.10.65 पृ.2 आदि) मु.3.11.77 पृ.2 मध्यादि,	Download
1460	संगमयुगी राधे-कृष्ण का स्वयंवर	राधे, कृष्ण के महल में आती थी, फिर उनके साथ प्यार हो गया। ऐसे नहीं, राधे-कृष्ण एक ही बाप के बच्चे थे। नहीं, अलग-अलग थे। राधे आती थी, फिर स्वयंवर हुआ। राधे-कृष्ण कोई भाई-बहन नहीं थे, दोनों अलग-2 अपनी-2 राजधानी में थे। (मु.14.7.73 पृ.3 मध्य)	Download
1461	संगमयुगी राधे-कृष्ण का स्वयंवर	ल.ना. और राधे-कृष्ण का क्या कनेक्शन है? वह राजकुमारी, वह राजकुमार, अलग-2 राज्य के हैं। ऐसे नहीं कि दोनों आपस में भाई-बहन थे। वह अलग अपनी राजधानी में थी, वह अलग अपनी राजधानी का राजकुमार था। उन्हों का स्वयंवर होता है तो ल॰ना॰ बनते हैं। (मु.26.10.73 पृ.2 मध्य)	Download

1462	संगमयुगी राधे-कृष्ण का स्वयंवर	राधे का(के) और श्रीकृष्ण का(के) माँ-बाप राजे-रजवाड़े थे ना। फिर दोनों की शादी हुई है। दोनों अलग-2 गाँव के थे। एक गाँव से दूसरे गाँव ले जाते हैं डोली में बिठाए। फिर शादी होती है वा कोई कहें कृष्ण गया राधे पास उनको ले आने के लिए। फिर डाज(दहेज) में गाँव आदि सब देते हैं ना। (मु.1.9.65 पृ.1 मध्य) मु.3.9.77 पृ.1 मध्य,	Download
1463	संगमयुगी राधे-कृष्ण का स्वयंवर	राधे-कृष्ण ही फिर ल.ना. बने हैं; परंतु वह बच्चे किसके थे, यह किसको पता नहीं है। कृष्ण की महिमा की है, राधे की कहाँ है! दोनों अलग-2 गाँव के प्रिंस-प्रिंसेज़ थे। ..... बगीचे में घूमने-फिरने जाती थी। फिर ड्रामा अनुसार उन्हों की आपस में दिल लगती है और सगाई हो जाती है। राधे-कृष्ण ही स्वयंवर बाद ल°ना° बनते हैं। (मु.13.11.71 पृ.2 अंत)	Download
1464	संगमयुगी राधे-कृष्ण का स्वयंवर	प्रिंस-प्रिंसेज़ की शादी होती है तो 4/5 अपनी ही दासियाँ दे देते हैं; क्योंकि अगर वहाँ पर नई दासियाँ मिलेंगी तो उनसे माथा मारना पड़े सिखलाने के लिए। इसलिए ही अनन्य दासियाँ दे देते हैं कि कोई भी तकलीफ वो फील न करे। सतयुग में तो भाव-स्वभाव होता ही नहीं है।(मु.19.8.68 पृ.3 मध्यादि)	Download
1465	संगमयुगी राधे-कृष्ण का स्वयंवर	स्वर्ग में राधे-कृष्ण होंगे। उन्हों की सगाई कोई पतित बनने लिए थोड़े ही होगी। वह तो पावन हैं ना। पावन होने से वहाँ योगबल से बच्चे पैदा होते। (मु.19.3.77 पृ.2 मध्य) मु.18.3.07 पृ.2 मध्य,	Download
1466	संगमयुगी राधे-कृष्ण का स्वयंवर	स्वर्ग में ल.ना. का राज्य था। अगर राधे-कृष्ण का राज्य कहते हैं तो भूल करते हैं। राधे-कृष्ण का राज्य होता नहीं; क्योंकि दोनों अलग-2 राजाई के प्रिन्स-प्रिन्सेज़ थे। राजाई के मालिक तो फिर स्वयंवर के बाद बनेंगे। (मु.11.9.68 पृ.1 मध्यादि)	Download
1467	संगमयुगी राधे-कृष्ण का स्वयंवर	जमुना के कण्ठे पर राधे-कृष्ण, लक्ष्मी-नारायण थे। ऐसे नहीं राधे-कृष्ण राज्य करते। नहीं, राधे दूसरी राजधानी की थी, कृष्ण दूसरी राजधानी के। दोनों का फिर स्वयंवर हुआ। जमुना के कण्ठे पर रहते थे। यह उन्होंने भूल की है जो सिर्फ राधे-कृष्ण का नाम दे दिया है। स्वयंवर के बाद यही लक्ष्मी-नारायण बनते हैं, फिर इस परिस्तान में रहते थे। (मु.9.2.82 पृ.1 मध्यादि) मु.13.02.97 पृ.1 मध्य,	Download
1468	संगमयुगी कृष्ण जन्म	पहले-2 राधे-कृष्ण हुए। उन्हों को जन्म देने वाले ऊँच नहीं गिने जावेंगे। वह तो कम पास हुए हैं न। महिमा शुरू होती है कृष्ण से। राधे-कृष्ण दोनों अपनी-2 राजधानी में आते हैं। उन्हों के माँ-बाप से बच्चे का नाम जास्ती है। कितनी वंडरफुल बातें हैं! (मु.15.12.73 पृ.3 अंत)	Download

1469	संगमयुगी कृष्ण जन्म	पहले नम्बर में है श्रीकृष्ण। उनको वर्सा मिला है। उसने क्या कर्म किए जो अपने माँ-बाप से भी जास्ती मर्तबा पाया? राधा-कृष्ण के माँ-बाप की इतनी महिमा नहीं है जितनी राधे-कृष्ण की है। यह क्यों हुआ जो बच्चों का नाम जास्ती हो गया? वह महाराजा-महारानी कहाँ के थे जिनके पास राधे-कृष्ण ने जन्म लिया? यह बड़ी समझने की बातें हैं। (मु.22.1.72 पृ.1 अंत)	Download
1470	संगमयुगी कृष्ण जन्म	कृष्ण का कितना नाम गाया जाता है। उनके बाप का नाम ही नहीं। उनका बाप कहाँ है? ज़रूर राजा का बच्चा होगा ना। ....कृष्ण जब है तब थोड़े ही पतित रहते हैं। जब वह बिल्कुल खलास हो जाते हैं तब यह गद्दी पर बैठते हैं, अपना राज्य ले लेते हैं। तब से ही उनका संवत् शुरू होता है। लक्ष्मी-नारायण से ही संवत् शुरू होता है। (मु.29.1.71 पृ.3 अंत)	Download
1471	संगमयुगी कृष्ण जन्म	भल पहले जब कृष्ण जन्मता है उस समय भी दूसरे कोई न कोई थोड़े बहुत रहते हैं जिनको वापिस जाना है। पतित से पावन बनने का यह संगमयुग है ना। जब पूरा बन जाते हैं तो फिर ल॰ना॰ का नया राज्य, नया संवत् शुरू होता है, जिसको विष्णुपुरी कहते हैं। विष्णु के दो रूप ल.ना. से पालना होती है। (मु.3.9.72 पृ.2 आदि)	Download
1472	संगमयुगी कृष्ण जन्म	कृष्ण जन्मता है जैसे रोशनी हो जाती है। चाहते भी हैं कृष्ण जैसा बच्चा मिले। तुम यहाँ आए ही हो प्रिंस-प्रिंसेज़ बनने, बेगर टू प्रिंस बनने। (मु.13.11.71 पृ.4 आदि)	Download
1473	संगमयुगी कृष्ण जन्म	जब कोई भी छी-2 नहीं रहेगा तब कृष्ण आवेगा। (तब) तक तुम आते-जाते रहेंगे। कृष्ण को रिसीव करने वाले माँ-बाप आदि तो पहले ही से चाहिए ना। फिर सब अच्छे-2 रहेंगे बाकी सभी चले जावेंगे। तभी उसको स्वर्ग कहा जावेगा। तुम कृष्ण को रिसीव करने (के) लिए रहेंगे। भल तुम्हारा छी-2 जन्म होगा; क्योंकि रावण-राज्य है ना। शुद्ध जन्म तो हो नहीं सकता। गुल-2 जन्म तो पहले-2 कृष्ण का ही होगा। (मु.4.10.69 पृ.2 अंत)	Download
1474	संगमयुगी कृष्ण जन्म	कृष्ण का जन्म सतयुग में हुआ है। राधे का भी सतयुग आदि में कहेंगे। करके थोड़ा 2/4 वर्ष का फर्क होगा। (मु.18.8.72 पृ.2 अंत)	Download
1475	संगमयुगी कृष्ण जन्म	कृष्णपुरी और कंसपुरी। दिखलाते हैं कृष्ण को उस पार ले गए। है इस संगम की बात। कृष्ण को उस पार नहीं ले गए। यह तो बेहद की बात है। अभी हम उस पार जा रहे हैं ना। (मु.17.11.72 पृ.3 आदि)	Download
1476	संगमयुगी कृष्ण जन्म	देवकी को आठवाँ नम्बर श्रीकृष्ण बच्चा पैदा हुआ। अब आठवाँ नम्बर कृष्ण जन्म लेगा। कब? ...सतयुग में। ... सतयुग में कृष्ण के माँ-बाप को 8 बच्चे तो होते नहीं। ... फिर दिखलाते हैं उनका बाप उनको नदी से पार ले जाता था। (मु.18.8.72 पृ.2 मध्यादि, 3 अंत)	Download

1477	संगमयुगी कृष्ण जन्म	कृष्ण जन्माष्टमी मनाते हैं। अब बच्चा तो माता के गर्भ से ही निकला। फिर दिखाते हैं उनको टोकरी में ले जाते हैं। अब कृष्ण तो वर्ल्ड का प्रिंस है, उनको फिर डर काहे का? वहाँ कंस आदि कहाँ से आए? ..... अभी तुमको अच्छी रीति बैठकर समझाना चाहिए। (मु.20.3.69 पृ.1 अंत)	Download
1478	संगमयुगी कृष्ण जन्म	जयंती भी श्रीकृष्ण की मनाते हो।ल.ना. की क्यों नहीं? पूरा ज्ञान न होने कारण श्रीकृष्ण को द्वापर में ले गए हैं। (मु.1.3.68 पृ.3 मध्यांत)	Download
1479	संगमयुगी कृष्ण जन्म	जब भ्रष्टाचारी सब खत्म हो जाते हैं तब कृष्ण का जन्म होता है। ...गुल-2 जन्म कृष्ण का ही पहले-2 होता है। उसके बाद नई दुनिया वैकुण्ठ कहा जाता। ... कृष्ण से पहले जिनका जन्म होता है वह योगबल का जन्म नहीं कहेंगे। (मु.4.10.75 पृ.2,3)	Download
1480	संगमयुगी कृष्ण जन्म	कृष्ण तो स्वर्ग में अपने माँ-बाप का बच्चा है। ...ज़रूर महारानी के गर्भ से पैदा होता है। ... वो वैकुण्ठ का प्रिन्स है। (मु.22.8.69 पृ.1 मध्य) मु.7.9.85 पृ.1 मध्य,	Download
1481	संगमयुगी कृष्ण जन्म	कृष्ण प्रिन्स कहलाया जाता है तो ज़रूर राजा पास जन्म हुआ है। साहूकार पास जन्म ले तो प्रिन्स थोड़े ही कहलावेगा। ... कृष्ण का कितना नाम बाला है। बाप का ऊँच पद नहीं कहेंगे। वह सेकण्ड क्लास का पद है जो सिर्फ निमित्त बनते हैं कृष्ण को जन्म देने। (मु.21.7.69 पृ.2 मध्य)	Download
1482	संगमयुगी कृष्ण जन्म	पहले सतयुग में ना. होगा। श्री ल. से भी पहले ना. आवेगा। इसलिए वह तोबड़ा होगा ना। इसलिए कृष्ण का नाम गाया हुआ है। ... कृष्ण की ही जन्माष्टमी मनाते हैं, ना. का बर्थ डे नहीं मनाते। यह कोई नहीं जानते कि कृष्ण सो ना.। नाम तो बचपन का ही चलेगा ना। (मु.23.7.71 पृ.2,3)	Download
1483	संगमयुगी बालकृष्ण	कृष्ण की डिनायस्टी नहीं कहेंगे। राधे-कृष्ण तो अलग-2 डिनायस्टी, अलग-2 राजाई के थे। प्रिंस-प्रिंसेज़ थे। अलग रहते थे। इसलिए कृष्ण की महिमा गाते रहते हैं। (मु.12.2.73 पृ.3 मध्यादि)	Download
1484	संगमयुगी बालकृष्ण	राधे-कृष्ण का राज्य नहीं कह सकते, राज्य ल.ना. का कहेंगे। राधे एक घर की, कृष्ण दूसरे घर का तो उनके लिए ऐसे नहीं कहेंगे कि इनका राज्य है। कृष्ण को सभी बहुत प्यार करते हैं, याद करते हैं। राधे को इतना नहीं करते। वास्तव में माताओं की हमजिंस राधे है। उनको जास्ती प्यार करना चाहिए। (मु.13.8.76 पृ.1 आदि)	Download
1485	संगमयुगी बालकृष्ण	कृष्ण को बहुत याद करते हैं। झूले में झुलाते हैं। (मु.13.8.76 पृ.1 मध्यादि)	Download
1486	संगमयुगी बालकृष्ण	पहले नम्बर में है कृष्ण वो है कुमार। इसलिए ही उनकी महिमा जास्ती है। (मु.5.5.67 पृ.2 अंत)	Download
1487	संगमयुगी बालकृष्ण	भारत का पहले नम्बर का प्रिंस है कृष्ण, जिसको झूले में झुलाते भी हैं। (मु.6.4.71 पृ.1 मध्यांत)	Download
1488	संगमयुगी बालकृष्ण	कृष्ण की बहुत ग्लानि की है। (मु.11.8.68 पृ.2 आदि)	Download

1489	संगमयुगी बालकृष्ण	मटकी फोड़ी, माखन खाया- यह सब उस (कृष्ण) के लिए झूठ बोलते हैं। (मु.23.8.68 पृ.3 आदि) मु.23.8.74 पृ.3 आदि,	Download
1490	संगमयुगी बालकृष्ण	कृष्ण को महात्मा, योगेश्वर कहते हैं। (मु.30.6.64 पृ.3 अंत)	Download
1491	संगमयुगी बालकृष्ण	कहते हैं- बाबा, बच्चे बहुत अशांत करते हैं। स्वर्ग में कृष्ण थोड़े ही माँ-बाप को अशांत करेगा। शास्त्र में लिखा है माँ को तंग किया, उनको बाँधा गया। ऐसा हो नहीं सकता। स्वर्ग में कोई किसको जानवर भी तंग नहीं करते हैं तो मनुष्य कैसे करेंगे? (बात संगम की है) (मु.17.5.73 पृ.4 आदि)	Download
1492	संगमयुगी बालकृष्ण	कृष्ण को कितना झुलाते हैं। उनके लिए ही कहते हैं कृष्ण साँवरा और कृष्ण गोरा। (मु.21.7.72 पृ.2 मध्यादि)	Download
1493	संगमयुगी बालकृष्ण	कृष्ण का शरीर सतयुग में होता है (और आत्मा संगम में)। (मु.29.5.73 पृ.1 मध्य)	Download
1494	संगमयुगी बालकृष्ण	दिखाते हैं, गोप-गोपियों ने कृष्ण को डांस कराया। यह बात इस समय की है।(मु.4.4.73 पृ.3 मध्य)	Download
1495	संगमयुगी बालकृष्ण	कृष्ण को योगेश्वर कहते हैं; परंतु वह तो प्रिंस है। योगेश्वर तुम हो, जिनका ईश्वर से सच्चा योग है। (मु.25.9.73 पृ.4 अंत)	Download
1496	संगमयुगी बालकृष्ण	कृष्ण के साथ कितनी सुंदर गइयाँ दिखाते हैं। ... वहाँ की गइयाँ भी बहुत अच्छा दूध देती थीं। ..... वहाँ का नाम भी है कपला गऊ। दिखाते हैं, गइयाँ चोरी कर ले गए। अभी तुम समझते हो तुमको चोरी कर ले जाते थे ना। (मु.18.3.68 पृ.4 आदि)	Download
1497	संगमयुगी बालकृष्ण	माताएँ श्रीकृष्ण के मुख में मक्खन देखती हैं। वह है स्वर्ग रूपी मक्खन। (मु.25.4.77 पृ.2 मध्यांत)	Download
1498	संगमयुगी बालकृष्ण	द्वापर में कृष्ण के साथ कंस, जरासिंधी आदि बैठ दिखाए हैं। वास्तव में इस समय सब हैं राक्षस सम्प्रदाय। (मु.10.10.73 पृ.3 मध्य)	Download
1499	संगमयुगी बालकृष्ण	कृष्ण के लिए भी दिखाते हैं ना उनको रस्सी से बाँध लेते थे। ऐसी चंचलता कोई वहाँ होती नहीं है। (मु.23.9.77 पृ.2 अंत)	Download
1500	संगमयुगी बालकृष्ण	फिर भी ल.ना. से कृष्ण तीखा ठहरा ना; क्योंकि बाल ब्रह्मचारी है ना। (मु.31.3.69 पृ.3 आदि)	Download
1501	संगमयुगी बालकृष्ण	राधे-कृष्ण के माँ -बाप की इतनी महिमा नहीं है, जितनी राधे-कृष्ण की है। (मु.22.1.72 पृ.1 अंत)	Download
1502	संगमयुगी बालकृष्ण	यह नहीं जानते दोनों अलग-2 राजधानी के हैं। फिर उनका स्वयंवर होता है, ल.ना. बनते हैं। यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। (मु.29.1.70 पृ.1 अंत)	Download
1503	संगमयुगी बालकृष्ण	भगवानुवाच..., भूल से ...भगवानुवाच कृष्ण समझ लिया है; क्योंकि कृष्ण हुआ नेक्स्ट टू गॉड ।(मु.16.9.68 पृ.3 अंत)	Download

1504	संगमयुगी बालकृष्ण	कृष्ण को भी श्याम-सुन्दर कहते हैं ना। उनकी आत्मा इस समय काली हो गई है। ....फिर ज्ञान चिता पर बैठने से गौरा बनेंगे। तुम अभी पवित्र बनने से 21 जन्म सुन्दर बनेंगे, फिर श्याम बन जावेंगे। ... श्याम से सुन्दर बनना सेकेण्ड का काम है। सुन्दर से श्याम बनने में आधा कल्प लग जाता है। (मु.ता॰19.3.77 पृ.3 मध्य) मु.ता॰18.3.07 पृ.3 अंत,	Download
1505	संगमयुगी बालकृष्ण	कृष्ण के लिए भी कहते हैं सांवरा और गोरा। यह समझानी है इस समय की तुम्हारे लिए। ....काम चिक्षा पर बैठने से सांवरा बन गया, फिर उनको गाँव का छोरा भी कहा जाता है। बरोबर था ना। कृष्ण तो हो न सके। इनके ही बहुत जन्मों के अन्त में बाप प्रवेश कर गोरा बनाते हैं। (मु.29.12.67 पृ.1 अंत) मु.8.12.00 पृ.2 मध्य,	Download
1506	संगमयुगी बालकृष्ण	कृष्ण को कहा जाता है श्याम-सुंदर। ... सतयुग से कलियुग में कैसे आते हैं, तुमको नं.वन से लेकर मालूम पड़ा है। ... उनकी जन्मपत्री मिल गई तो सारे चक्र की मिल गई। (मु.11.4.68 पृ.3 मध्यांत)	Download
1507	संगमयुगी बालकृष्ण	कृष्ण के बचपन से लेकर बड़ेपन तक सारी 84 जन्मों की कहानी तुम बच्चे समझ जाते हो। (मु.ता॰12.4.68 पृ.1 अंत) मु.ता॰4.3.04 पृ.2 आदि,	Download
1508	संगमयुगी बालकृष्ण	श्रीकृष्ण को ल.ना. से भी ऊँच समझते हैं; क्योंकि वह फिर भी शादी किए हुए हैं। कृष्ण तो जन्म से ही पवित्र है इसलिए कृष्ण की बहुत महिमा है। श्रीकृष्ण को ही झूले में झुलाते हैं। (मु.25.3.69 पृ.3 मध्यांत)	Download
1509	संगमयुगी बालकृष्ण	सबसे पुराने ते पुराना यह है कृष्ण। नए ते नया भी कृष्ण ही था। ... सांवरा कृष्ण देखकर भी बहुत खुश होते हैं। झूले में भी सांवरे को ही झुलावेंगे। उनको क्या पता कि गोरा कब था....। कृष्ण को कितना प्यार करते हैं। राधा ने क्या किया? (मु.17.8.68 पृ.3 अंत)	Download
1510	संगमयुगी बालकृष्ण	कृष्ण भी राजयोग सीख रहे हैं। ... राधे-कृष्ण कोई आपस में बहन-भाई नहीं थे। (मु.22.8.73 पृ.3 मध्यांत)	Download
1511	संगमयुगी बालकृष्ण	कृष्ण तो संगम पर हो नहीं सकता। हाँ, कृष्ण की आत्मा ज़रूर है। वह भी सीखकर फिर औरों को सिखलाती है। यह है मुख्य। पहला नंबर प्रिन्स। ... राधे भी साथ में है; परंतु फर्स्ट प्रिन्स यह है, राधे तो फिर भी बाद में जन्म लेती है। (मु.11.12.71 पृ.2 आदि)	Download

1512	संगमयुगी बालकृष्ण	राधे-कृष्ण के माँ-बाप इतने माक्र्स नहीं उठा सकते, जितने राधे-कृष्ण उठाते हैं। उनके माँ-बाप इतने ऊँच नहीं बनते हैं। ऊँच यह पढ़ाई पढ़ते हैं। फिर जन्म तो ज़रूर किसके पास लेना पड़े। तो जिसके पास जन्म लिया उनका इतना नाम नहीं होता। यह सभी बातें बुद्धि में अच्छी रीत रखनी पड़ती हैं। पहले तो ज़रूर उनके माँ-बाप आते होंगे। फिर यह बच्चे का नाम बाला होता है। यह बातें बड़ी गुप्त हैं । (मु.11.12.71 पृ.2 अंत)	Download
1513	संगमयुगी बालकृष्ण	पहले नं. में है श्रीकृष्ण फर्स्ट प्रिंस। श्री नारायण तो बाद में बनता है जब बड़ा होता है। वह भी 15/20 वर्ष कम हो जाती(जाते) हैं। उनको भी पूरे 84 जन्म नहीं कहेंगे। नं. वन है श्रीकृष्ण।(मु.28.8.71 पृ.1 मध्यांत)	Download
1514	संगमयुगी राधा-कृष्ण के फुटकर प्वाइंट्स	बाप के नेक्स्ट (दूसरा नम्बर) है कृष्ण। वह परमधाम का मालिक, तो यह विश्व का मालिक। सूक्ष्मवतन में तो कुछ होता ही नहीं है। (मु.6.1.69 पृ.3 मध्यांत)	Download
1515	संगमयुगी राधा-कृष्ण के फुटकर प्वाइंट्स	कृष्ण को भगवान क्यों कह देते? क्योंकि भगवान ने कृष्ण को ऐसा बनाया है। इसलिए उनको भी भगवान-भगवती कह देते हैं। कहेंगे, उन्हों को ऐसा किसने बनाया? भगवान ने। (मु.9.6.69 पृ.4 आदि)	Download
1516	संगमयुगी राधा-कृष्ण के फुटकर प्वाइंट्स	कृष्ण भगवान है नहीं। वह तो सबसे जास्ती अर्थात् पूरे 84 जन्म लेते हैं। इस समय वह कहाँ होगा? ज़रूर बेगर होगा। जैसे क्राइस्ट के लिए भी कई समझते हैं कि वह बेगर के रूप में है। (मु.13.9.68 पृ.2 मध्य)	Download
1517	संगमयुगी राधा-कृष्ण के फुटकर प्वाइंट्स	कृष्ण को तो कोई भी जान लेंगे। सभी विलायत वाले भी उनको जानते हैं, लॉ र्ड कृष्ण कहते हैं ना। ... अभी भगवान को भला लॉ र्ड कहा जाता है क्या? लॉ र्ड कृष्ण कहते हैं। लॉ र्ड का टाइटल वास्तव में बड़े आदमी को मिलता है। (मु.13.10.68 पृ.1 मध्य)	Download
1518	संगमयुगी राधा-कृष्ण के फुटकर प्वाइंट्स	समझते हैं कृष्ण गीता का भगवान था। उसके समय महाभारत की लड़ाई लगी थी। फिर जय-जयकार हुआ था और वैकुण्ठ के द्वार खुले थे। कृष्ण ने जाकर पहले राज्य किया था। (मु.26.9.73 पृ.3 आदि)	Download
1519	संगमयुगी राधा-कृष्ण के फुटकर प्वाइंट्स	अभी तो कृष्ण को भी डुबो देते। यहाँ कृष्ण की पूजा कर फिर कृष्ण को डुबो दिया है। (मु.23.8.74 पृ.2 अंत)	Download
1520	संगमयुगी राधा-कृष्ण के फुटकर प्वाइंट्स	कृष्ण के मंदिर को भी सुखधाम कहते हैं। (मु.12.8.68 पृ.3 मध्यादि)	Download
1521	संगमयुगी राधा-कृष्ण के फुटकर प्वाइंट्स	पूरे कर्मातीत अवस्था वाले राधे-कृष्ण ही हैं। (मु.4.10.75 पृ.3 आदि)	Download

1522	रावण-राज्य की शूटिंग (1) अर्धविनाश (2) सोमनाथ स्थापना	भक्तिमार्ग में सोमनाथ का मंदिर बनता है। सो भी कुछ समय बाद में बनता होगा, फिर पूजा शुरू होगी। (मु.24.8.73 पृ.2 मध्यांत)	Download
1523	रावण-राज्य की शूटिंग (1) अर्धविनाश (2) सोमनाथ स्थापना	जो सम्पूर्ण निर्विकारी होकर जाते हैं उनके मंदिर बनाकर विकारी लोग उनकी जाकर पूजा करते हैं। (मु.16.10.73 पृ.1 आदि)	Download
1524	रावण-राज्य की शूटिंग (1) अर्धविनाश (2) सोमनाथ स्थापना	चैतन्य देवताओं के जड़ मंदिर बनाकर उन्हों को फिर विकारी लोग पूजते हैं। (मु.6.3.73 पृ.3 मध्य)	Download
1525	रावण-राज्य की शूटिंग (1) अर्धविनाश (2) सोमनाथ स्थापना	देवी-देवताएँ वाममार्ग में आते हैं तो सोमनाथ का मन्दिर बनाते हैं । (मु.19.8.73 पृ.1 मध्य) मु.12.8.83 पृ.1 मध्यांत,	Download
1526	रावण-राज्य की शूटिंग (1) अर्धविनाश (2) सोमनाथ स्थापना	तुमको पहले-2 पूजा करनी होती है अव्यभिचारी एक शिवबाबा की। सोमनाथ की मंदिर बनाने की और किसकी ताकत नहीं है। (मु.6.3.70 पृ.3 मध्यांत)	Download
1527	रावण-राज्य की शूटिंग (1) अर्धविनाश (2) सोमनाथ स्थापना	जिन्होंने ही पूरे 84 जन्म लिए हैं उन्होंने ही जास्ती बुलाया है। वही शिव अथवा सोमनाथ मंदिर की स्थापना करते हैं। (मु.ता॰25.9.73 पृ.1 आदि)	Download
1528	रावण-राज्य की शूटिंग (1) अर्धविनाश (2) सोमनाथ स्थापना	ऐसे नहीं कि फट से मंदिर, चित्र आदि बन जाते हैं। वह तो आस्ते-2 (धीरे-2) बाद में बनते जाते हैं। पहले-2 शिव का बनेगा। वह भी पहले घर में सोमनाथ का मंदिर बनाते हैं। (मु.11.11.73 पृ.1 अंत)	Download
1529	गणेश-हनुमान की पूजा	बॉम्बे में गणेश पूजा बहुत होती है। लाखों खर्चा करते हैं। (मु.29.10.73 पृ.3 आदि)	Download
1530	गणेश-हनुमान की पूजा	बाप ने समझाया है भक्ति वास्तव में प्रवृत्तिमार्ग वालों को ही करनी है। (मु.4.10.75 पृ.3 मध्य)	Download
1531	गणेश-हनुमान की पूजा	पूजा भी पहले शुरू होती है अव्यभिचारी। पहले शिव की ही पूजा करते हैं। उनके मंदिर बनाते हैं, फिर ल.ना. के बनावेंगे। ... फिर राम-सीता के मंदिर बनाने लग पड़ेंगे। फिर कलियुग में देखो-गणेश, हनुमान, चण्डिका देवी आदि-2 का अनेकानेक देवियों आदि के चित्र बनाते रहते हैं। (मु.9.2.71 पृ.2 आदि) मु.6.9.96 पृ.2 मध्य,	Download

1532	गणेश-हनुमान की पूजा	पुजारी बनते हो तो पहले-2 शिव की पूजा करते हो। देवताओं की पूजा को भी व्यभिचारी पूजा कहेंगे। सतयुग में वो सतोप्रधान, फिर सतो, फिर देवताओं से भी उतरकर पानी के(की), मनुष्यों की, पक्षियों की पूजा करने लग पड़ते हैं । (मु.27.8.69 पृ.1 मध्यांत)	Download
1533	गणेश-हनुमान की पूजा	आजकल तो देखो हनुमान बंदर आदि की भी पूजा करते रहते हैं। जानवर की पूजा करनी है तो सबसे अच्छा मोर है। (मु.7.8.67 पृ.3 अंत) मु.21.8.85 पृ.3 अंत,	Download
1534	गणेश-हनुमान की पूजा	देवताओं को तो फिर भी वैकुण्ठ में देखेंगे। हनुमान तो फिर भी वैकुण्ठ में नहीं होगा। (मु.17.8.69 पृ.3 मध्यांत)	Download
1535	गणेश-हनुमान की पूजा	पहले-2 अव्यभिचारी भक्ति शुरू हुई। अभी कितनी व्यभिचारी भक्ति है। शरीरों की भी पूजा करते हैं, उनको भूत पूजा कहा जाता है। शरीर 5 भूतों का बना हुआ है। (मु.11.8.91 पृ.2 मध्य)	Download
1536	गणेश-हनुमान की पूजा	भक्ति तो जन्म-जन्मांतर करते आए हैं। अब कितने व्यभिचारी भक्त हैं। शरीरों की भी पूजा करते रहते हैं। इनको भूत पूजा कहा जाता है। शरीर 5 भूतों का बना हुआ है ना। (मु.23.7.71 पृ.2 अंत)	Download
1537	चित्रकला प्रदर्शनी	आसुरी मत पर अनेक ढेर के ढेर चित्र बने हैं। (मु.8.5.74 पृ.1 मध्यांत)	Download
1538	चित्रकला प्रदर्शनी	भक्तिमार्ग में मनुष्यों की बुद्धि में अनेकों की याद आती है। शिव के मंदिर में जाओ तो वहाँ और भी ढेर चित्र रखे हुए होंगे। तो व्यभिचारी ठहरे ना। (मु.29.2.68 पृ.2 मध्य)	Download
1539	चित्रकला प्रदर्शनी	बहुत चित्र होने से मनुष्यों का खयालात सारा चित्रों में ही चला जाता है। ..... पहाका है ना टू मैनी क्वीन्स...। (मु.23.2.69 पृ.2 अंत)	Download
1540	चित्रकला प्रदर्शनी	सभी के चित्र रखते रहेंगे तो उनको क्या कहेंगे? व्यभिचारी भक्ति ठहरी ना। (मु.19.12.70 पृ.3 अंत)	Download
1541	चित्रकला प्रदर्शनी	अभी तो देखो- देवताओं के चित्र कितने जगह रख दिए हैं। (मु.17.9.68 पृ.2 मध्यादि)	Download
1542	चित्रकला प्रदर्शनी	चित्र आदि जो भी बनाए हैं बेसमझी के। (मु.13.3.71 पृ.2 मध्य)	Download
1543	चित्रकला प्रदर्शनी	प्रदर्शनी पर कितना खर्च करते है! लिखते भी हैं अच्छा प्रभावित हुआ। (मु.10.6.76 पृ.3 आदि)	Download
1544	चित्रकला प्रदर्शनी	प्रदर्शनी आदि द्वारा प्रजा तो ढेर बनती रहती है। (मु.4.1.74 पृ.3 मध्यांत) मु.27.1.99 पृ.4 आदि,	Download
1545	चित्रकला प्रदर्शनी	प्रदर्शनी अथवा म्युज़ियम में शांति थोड़े ही रहती है। वहाँ तो बहुत ही आवाज हो जाता है। उनको स्कूल नहीं कहा जाता। वह जैसे मेला हो जाता है। ..... इसलिए तुम कहते हो एकांत में आ करके समझना। (मु.4.10.68 पृ.1 अंत)	Download

1546	शास्त्र निर्माण	ऐसे नहीं कि द्वापर से ही शास्त्र शुरू होते हैं। नहीं। बाद में बनते हैं। पहले तो चित्र बनते, फिर उनकी जीवन कहानी बनाते हैं। पहले चित्र बनावे, तब फिर शास्त्र बनावे। टाइम लगता है। दो/पाँच सौ बरस बाद में बैठ शास्त्र बनाए हैं। (मु.9.8.64 पृ.3 अंत) मु.7.8.73 पृ.3 मध्यादि,	Download
1547	शास्त्र निर्माण	वेदों-शास्त्रों (को) कहा जाता है भक्ति मार्ग, ज्ञान नहीं। (मु.ता॰31.8.68 पृ.2 मध्य)	Download
1548	शास्त्र निर्माण	यह सभी धर्मशास्त्र बनते ही बाद में हैं। कितने अनेक मठ-पंथ हैं। सभी के अपने-2 शास्त्र हैं । (मु.19.2.70 पृ.3 आदि)	Download
1549	शास्त्र निर्माण	मनुष्यों की बुद्धि में भक्तिमार्ग के शास्त्रों की बातें ही भर गई हैं । शास्त्र ही बैठ पढ़कर सुनाते हैं। ... वास्तव में भारत के इतने शास्त्र होनी(ने) न चाहिए। (मु.17.9.68 पृ.2 मध्यादि)	Download
1550	शास्त्र निर्माण	शास्त्र पढ़ते ही हैं भगवान को पाने लिए और भगवान कहते हैं मैं किसको भी शास्त्र पढ़ने से नहीं मिलता। (मु.27.7.70 पृ.2 अंत)	Download
1551	शास्त्र निर्माण	दिन-प्रतिदिन बड़े किताब बनाते जाते हैं। कितनी बायोग्राफी बनाते जाते हैं! (मु.24.5.64 पृ.1 अंत)	Download
1552	शास्त्र निर्माण	जीवन कहानी में ही नाम बदल लिया है। बाप के बदले बच्चे का नाम डाल दिया है। (मु.7.8.74 पृ.3 आदि)	Download
1553	शास्त्र निर्माण	गीता में सिर्फ नाम बदल लिया है। संगम होने कारण यह भूल कर दी है। (मु.8.7.73 पृ.2 मध्य)	Download
1554	शास्त्र निर्माण	व्यास भगवान ने तो वहाँ भी भ्रष्टाचारी लिख दिया है। ... अपने बड़ों को गालियाँ देना, यह भारत में ही होता है। (मु.5.1.72 पृ.2 अंत)	Download
1555	मेला में मैला	मेले-मलाखड़े सब दुर्गति में ले जाने वाले हैं। बाप तो बच्चों को समझावेंगे ना। (मु.25.11.72 पृ.2 अंत)	Download
1556	मेला में मैला	अभी तो भक्ति की कितनी धूम-धाम हो गई है। मेले-मलाखड़े आदि भी लगते रहते हैं, तो मनुष्य जाकर दिल बहला कर आवें। (मु.22.5.69 पृ.1 अंत)	Download
1557	मेला में मैला	जो कुम्भकरण के अज्ञान नींद में बहुत सोए हुए हैं वही कुम्भ का मेला बनाते रहते हैं। यह नागे साधु लोग कुम्भ का मेला लगवाते हैं। इनकी बहुत नेशनलिटी और हैं। उन्हों की फिर मीटिंग होती है। (मु.6.1.72 पृ.1 आदि) मु.7.1.77 पृ.1 आदि,	Download
1558	मेला में मैला	मेले-मलाखड़े में कितने मैले हो जाते हैं। मिट्टी बैठ कर ज़ोर से मलते हैं। (मु.ता.1.5.74 पृ.2)	Download
1559	मेला में मैला	उन मेलों पर तो मनुष्य मैले जाकर होते हैं। पैसे बरबाद करते रहते हैं, मिलता तो कुछ भी नहीं। (मु.14.5.70 पृ.2 अंत)	Download
1560	मेला में मैला	कुम्भ के मेले में बहुत छोटे-2 नागे लोग आते हैं। दवाई खा लेते हैं, जिसकि कर्मेन्द्रियाँ ठंडी पड़ जाती हैं। (मु.31.8.68 पृ.2 अंत)	Download

1561	तीर्थ यात्राएँ	बाप कहते हैं जो धक्के खाते हैं वे मुझे नहीं जानते हैं। उनको पता नहीं है कि बाप पढ़ाकर वर्सा दे रहे हैं विश्व का मालिक बनाने। तुम अभी धक्के खाने से छूट गए हो। (मु.2.6.73 पृ.3 मध्य)	Download
1562	तीर्थ यात्राएँ	जिस्मानी पण्डों को तीर्थ कितने याद पड़ते हैं; क्योंकि घड़ी-2 जाते हैं। (मु.4.9.73 पृ.1 मध्य)	Download
1563	तीर्थ यात्राएँ	परमात्मा कोई पहाड़ (पर) तो नहीं बैठा है। जाते हैं अमरनाथ, बदरीनाथ। अभी वहाँ रखा क्या है? जड़ चित्रों का दर्शन करने जाते हैं; क्योंकि वह पवित्र हैं। (मु.4.9.73 पृ.3 आदि)	Download
1564	तीर्थ यात्राएँ	बाबा थोड़े ही तुमको कहेंगे कि जिस्मानी यात्रा पर चलो या जाओ। (मु.ता॰13.5.73 पृ.1 मध्यांत)	Download
1565	तीर्थ यात्राएँ	वहाँ तीर्थ यात्राओं पर जाते हैं तो कितने पैसे खर्च करते हैं। ... बड़े-2 आदमी, राजाएँ आदि भी जाकर दान-पुण्य करते हैं। ... वह हैं जिस्मानी यात्राएँ, तुम्हारी है रूहानी यात्रा। (मु.7.7.66 पृ.2 अंत)	Download
1566	हाय शिवबाबा बचाओ...	बाप कहते हैं इस समय हरेक दुर्योधन और द्रौपदियाँ हैं। दुर्योधन, द्रौपदी को नगन करते हैं। ... द्रौपदियाँ तो वास्तव में सभी ठहरीं। कुमारी अथवा माता सभी द्रौपदियाँ हैं। कीचक तो ढेर हैं जो पिछाड़ी पड़ते हैं। ... कीचक आदि की अभी की बात है। (मु.7.5.73 पृ.2 मध्य)	Download
1567	हाय शिवबाबा बचाओ...	विघ्न भी इसमें पड़ते हैं; क्योंकि बाप पवित्र बनाते हैं। द्रौपदी ने भी पुकारा....। सारी दुनिया में द्रौपदियाँ और दुर्योधन हैं। (मु.26.3.89 पृ.2 आदि)	Download
1568	संगमयुगी स्वर्ग	यह है ही उल्लुओं की दुनिया। सतयुग है अल्लाहों की दुनिया। भगवती-भगवान को अल्ला कहेंगे। (अभी तो) सभी उल्टे लटके हुए हैं। (मु.5.3.73 पृ.1 मध्यांत) मु.5.3.78 पृ.1 मध्यांत,	Download
1569	संगमयुगी स्वर्ग	गाते हैं ना पियर घर से चली ससुर घर। तो तुम्हारा यह है ब्रह्मा का पियर घर। तुम अभी स्वर्ग, ससुर घर जावेंगे। (मु.1.4.73 पृ.3 आदि)	Download
1570	संगमयुगी स्वर्ग	वहाँ भी बाप साथ होगा। यहाँ सरस्वती साथ ब्रह्मा है। वहाँ भी ज़रूर दोनों चाहिए। निशानी चाहिए। (मु.4.7.77 पृ.2 मध्यादि)	Download
1571	संगमयुगी स्वर्ग	सतयुग में लॉ नहीं, काल खा गया। वहाँ ऐसे नहीं कहेंगे। एक खाल छोड़ दूसरी ले लेते हैं, जैसे सर्प खाल बदलते हैं। वहाँ सदैव खुशी ही खुशी रहती है। (मु.12.2.73 पृ.3 अंत)	Download
1572	संगमयुगी स्वर्ग	वहाँ तो पवित्र रहते हैं। शादी बड़ी धूम-धाम से होती है। महाराजा-महारानी बनते हैं। सारी दुनिया कहती है सतयुग हैविन, वायसलेस वर्ल्ड है। (मु.18.4.73 पृ.2 अंत)	Download
1573	संगमयुगी स्वर्ग	जब सतयुग था तो चढ़ती कला थी और बाकी सब आत्माएँ मुक्तिधाम में थीं। (मु.22.2.71 पृ.2 मध्यादि)	Download

1574	संगमयुगी स्वर्ग	सतयुग में पहले-2 डीटी डिनायस्टी का राज्य होगा। उनके गाँव होंगे। छोटे-2 इलाके होंगे। यह भी विचार-सागर-मंथन करना है। साथ-2 शिवबाबा से बुद्धियोग लगाना है। हम याद से ही बादशाही लेते हैं। (मु.5.4.71 पृ.2 अंत)	Download
1575	संगमयुगी स्वर्ग	सतयुग में तुम विष्णु के गले का हार बनते हो, जिसकी वैजन्तीमाला बनी हुई है। पहले रुद्रमाला में पिरोते हो। यह है ही रुद्र राजसूय ज्ञान यज्ञ। (मु.11.9.73 पृ.1 मध्य)	Download
1576	संगमयुगी स्वर्ग	हर 5000 (वर्ष) बाद बाप आते हैं। भारत ही पैराडाइज़ बनते हैं। कहते भी हैं क्राइस्ट से इतने वर्ष पहले पैराडाइज़ था, स्वर्ग था। अभी नहीं है। (मु.1.2.71 पृ.3 अंत)	Download
1577	संगमयुगी स्वर्ग	यह संगम की दरबार सतयुगी दरबार से भी ऊँची है। ... सतयुगी ताज इस ताज के आगे कुछ नहीं है। (अ॰वा॰14.5.70 पृ.251 मध्य)	Download
1578	संगमयुगी स्वर्ग	संगमयुगी स्वर्ग, सतयुगी स्वर्ग से भी ऊँचा है। (अ॰वा॰20.11.85 पृ.48 मध्य)	Download
1579	संगमयुगी स्वर्ग	सतयुग में ल.ना. के हीरे-जवाहरों के महल थे। (मु.3.4.71 पृ.3 मध्य)	Download
1580	संगमयुगी स्वर्ग	थोड़े ही दिन इस दुनिया में हो, फिर तुम बच्चों को यह स्थूलवतन भासेगा ही नहीं, सूक्ष्मवतन और मूलवतन ही भासेगा। (मु.7.3.67 पृ.2 अंत)	Download
1581	संगमयुगी स्वर्ग	कृष्ण का राज्य जमुना नदी किनारे कहा जाता है। दिल्ली को ही परिस्तान कहा जाता है। इस समय है कब्रिस्तान।(मु.7.4.73 पृ.2 मध्यांत)	Download